न'नी सिद्धयोग-संग्रह

रचयिता :—

आयुर्वेदीय विश्वकोष, सर्प-विष-विज्ञान, यूनानी द्रव्य-गुण-विज्ञान,
यूनानी निघंटु आदर्श, यूनानी योग-सागर, वैद्यकीय मान-तौल,
रोग नामावलि कोष, यूनानी वैद्यकका इतिहास, पुरुष-रोग-विज्ञान
(वाजीकरणतन्त्र) इत्यादि बहुशः प्रकाशित - अप्रकाशित
विशाल ग्रन्थोंके यशस्वी लब्धप्रतिष्ठ लेखक—

वैद्यराज बाबू दलजीत सिंहजी,

(आयुर्वेदीय विश्वकोषकार)

रायपुरी-चुनार, मिर्जापुर (यू० पी०)।



प्रकाशक—

श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन,

कलकत्ता, पटना, झाँसी और नागपुर।

[४०००] सन् १९४७ [मूल्य—२॥)

प्रकाशक—
वैद्यराज पं० रामनारायण शर्मा, वैद्यशास्त्री
अध्यक्ष—श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन,
कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर।

मुद्रक—
ठा० राम सिंहासन सिंह
श्रीवैद्यनाथ प्रेस,
...कुआं, पटना

प्रकाशकका निवेदन



"सिद्धयोगसंग्रह" के प्रकाशनके बादसे ही पूज्य श्रीयादवजीकी इच्छा थी कि एक संग्रह यूनानी सिद्धयोगका भी प्रकाशित हमें करना चाहिये। वास्तवमें यूनानी चिकित्सापद्धति आयुर्वेदके बहुत समीप है। ओषधि-निर्माण की पद्धति, निदान-पद्धति, व्यवहार-पद्धति आदि यूनानी तथा आयुर्वेदकी बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं। वात, पित्त, कफके सिद्धान्तको भी यूनानी चिकित्सा-पद्धति स्वीकार करती है। इसलिये यूनानी योगोंकी जानकारीसे वैद्योंको पर्याप्त लाभ हो सकता है। इस विचारसे इस ग्रन्थका प्रकाशन किया गया है।

इसके पहले भी इसके लिये प्रयास किया गया है और इस विषयकी बड़ी बड़ी पुस्तकें छप चुकी हैं। लेकिन उन पुस्तकोंकी लिपि हिन्दी होनेपर भी भाषा ऐसी है जिसे सब कोई नहीं समझ सकता। इसलिये उन पुस्तकोंसे कोई खास लाभ नहीं हो सका। इस ग्रन्थको संस्कृतमें भी लिखा जा सकता था, लेकिन उससे सर्वसाधारणका तो कोई कल्याण नहीं होता। इसीलिये प्रस्तुत पुस्तकको सहज और सरल भाषामें लिखवाया गया है। इसके लेखक वैद्यराज बाबू दलजीत सिंहजीसे आयुर्वेद संसार अच्छी तरह परिचित है। आपने "आयुर्वेदीय विश्व-कोष" लिखकर आयुर्वेद जगतकी प्रचुर सेवा की है। आपका प्रस्तुत ग्रन्थ भी वैद्यों तथा जनसाधारणका महान कल्याण करेगा और आपकी कीर्तिको स्थायित्व प्रदान करेगा।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है; प्रगति और समन्वयका युग है। हमें आयुर्वेदको उज्ज्वल बनाना है। उसके भण्डारको भरना है। इस कार्यमें जिन चिकित्सा पद्धतियोंसे हमें सहायता मिले, उनका स्वागत करना चाहिये। इस ग्रन्थके प्रकाशनमें इसी भावका प्राधान्य रहा है। आशा है इससे वैद्यबन्धु तथा साधारण जन उचित लाभ उठायेंगे।

पटना,
१५-१२-४८

विनीत—
रामनारायण शर्मा, वैद्यशास्त्री।

लेखकका निवेदन

इस पुस्तिकाके लेखन-प्रकाशनके पीछे इसका एक छोटासा इतिहास है। ऐतिहासिक अवशेष स्पष्टतया बतलाते हैं कि किसी पुराणकालमें आर्यवैद्यकीय चिकित्सा न तो केवल व्यवहारोपयोगी थी, अपितु इस शास्त्रके सिद्धान्त निश्चित और जगन्मान्य थे तथा शास्त्र सर्वाङ्गविकसित एवं सम्पूर्ण था और मिस्री, यूनानी, ईरानी आदि अन्य सभी वैद्यक पद्धतियोंने समय-समयपर इससे आलोक प्राप्त किया था। मध्ययुगमें मुसलमानोंने हिन्दुस्तानपर आक्रमण किया और वे क्रमशः यहांके निवासी बन गये और उनकी जो वैद्यकपद्धति (अर्थात् यूनानी) थी उसका प्रचार इस देशमें हुआ। समयके अनुसार वह उस समय काफी समृद्ध थी। दूसरा बलवत्तर आक्रमण पाश्चात्य गोरकायोंने किया और उनके आगमनके साथ उनकी वैद्यकपद्धति (एलोपैथी) का प्रसार इस देशमें हुआ। इस प्रकार इस समय हमारे देशमें प्रत्यनीक चिकित्साकी आयुर्वेदीय, यूनानी और एलोपैथी—यह तीन वैद्यकपद्धतियां प्रचलित हैं और तीनों ही अलग-अलग मानव-स्वास्थ्यके कल्याणमें संलग्न हैं। यद्यपि तत्कालीन परिस्थिति और उपलब्ध साधन-सामग्री (वैज्ञानिक तत्त्व) इनके परिणामसे प्रत्ययोंमें भेद होने और उन प्रत्ययोंकी मीमांसा करती हुई बुद्धिके अनुसार प्रमेयोंमें भेद होनेसे इन तीनोंके मूलभूत सिद्धान्त एवं विचारसरणी परस्पर भिन्न हैं; तथापि इन तीनोंमें अपनी कुछ-न-कुछ विशेषताएं हैं और इन तीनोंको चिकित्साका मूलसूत्र हेतु-व्याधि प्रत्यनीक है। इस विषयमें तीनों एक मत, अस्तु समान हैं। इसके अतिरिक्त आयुर्वेदके क्रमविकासमें समयके फेरसे पूर्वके लगातार नृशंस आक्रमणोंके कारण इसका जो ध्वंस हुआ था और इसमें जो कमी आ गई थी उसमें समयके अनुसार शेष दोनोंने बहुत कुछ जोड़ा—उसका बहुतांशमें उद्धार (संशोधन-संस्कार), पुनरुज्जीवन, सम्पूरण तथा वृद्धि एवं विकास किया। उनके इस कार्यसे हम आर्यवैद्यकानुरागियोंको अपनी पद्धतिकी उन्नतिकी प्रेरणा मिली, जिसके लिये हम सबको उनका आभार मानना चाहिये।

प्रकृतिके नियम अटल हैं और वैज्ञानिक तत्त्व सभी देश और जातिके लिये समान हैं। उनमें भी जो भेद है वह हमारे तद्विषयक दृष्टिकोणके कारण है; क्योंकि हर एकका तद्विषयक दृष्टिकोण उनके प्रत्ययानुसार भिन्न होता है। जरा विचार करें, जगत्में कोई ऐसी ओषधि है, जो केवल खास आयुर्वेदीयकी एलोपैथीकी

सकती है। सत्य तो यह है कि वस्तु तो एक ही है; किन्तु उसका उपयोग करनेमें भेद होते हैं और वे भेद जिन कल्पनाओं या प्रत्ययोंसे निश्चित किये जाते हैं उन कल्पनाओंके सिद्धांतोंके समुच्चयानुसार एलोपैथी, आर्यवैद्यक इत्यादि चिकित्सापद्धतियोंमें भेद उत्पन्न होते हैं। यदि शुद्ध अन्तःकरणसे देखें तो उनमें कोई वास्तविक भेद नहीं है।

अस्तु, आयुर्वेदोन्नतिके लिये हमारा कर्तव्य यह है कि पूर्वग्रह, वैयक्तिक अभिनिवेश, हठवाद, संकीर्णता एव पक्षपात, शब्दच्छल, प्रत्ययावहेलन, अन्धानुकरण इत्यादिको एकदम छोड़कर पहले हम प्रयोजक, प्रत्ययनिष्ट एवं सत्यव्रत बनें। फिर उन चिकित्सापद्धतियोंका स्वतन्त्रतया (ऐकांतिक) प्रामाणिक अभ्यास करें और उनमें जो-जो विशेष एवं उत्तम विषय हों उन्हें अच्छी तरह समझकर पूरा आत्मसात् कर लेवें। फिर अपनी पद्धतिके मूलभूत सिद्धांतोंके अनुसार प्रत्यक्ष अवलोकन और प्रयोग द्वारा उनमेंसे जो सही ठहरें उनको पक्षपात रहित होकर निःसंकोच अपनी पद्धतिमें ग्रहण कर लेवें। यही प्रगति तथा उन्नतिका प्रधान साधन है। इससे हम अपनी पद्धतिको सम्पूर्ण, समुन्नत और समृद्ध एवं समयोपयोगी बना सकते हैं। इस प्रकार एक ऐसी सर्वग्राही, सर्वप्रिय और सर्वाङ्गपूर्ण आर्यवैद्यकपद्धतिके निर्माणमें सहायता मिलेगी, जिसे हम वास्तविक राष्ट्रीय वैद्यकपद्धति कह सकते हैं और जिसकी आज अनिवार्य्य आवश्यकता है। इसके लिये आवश्यकता इस बातकी है कि सर्वप्रथम उन पद्धतियोंके अपनी पद्धतिसे तुलना करनेवाले स्वतन्त्र ग्रन्थ उभयज्ञ योग्य विद्वानों द्वारा अपनी भाषामें लिखे जायं। प्रसन्नताका विषय है कि कई जगहोंसे ऐसे प्रयत्न प्रारम्भ भी हो गये हैं। यह आयुर्वेदोन्नतिके लिये शुभ लक्षण हैं।

उपर्युक्त बातोंको ध्यानमें रखकर ही मैंने आजसे २५-३० वर्ष पूर्व "आयुर्वेदीय विश्वकोष" का प्रणयन प्रारम्भ किया था। अबतक उसके तीन ही भाग प्रकाशित हो पाये थे कि संसारव्यापी महासमरका आरम्भ हो गया। उस बीच इसका प्रकाशन कठिन समझ कर मैंने यूनानी ग्रन्थमाला द्वारा यूनानी वैद्यक विषयक साहित्यको जो अभीतक अछूता पड़ा था, आयुर्वेद और यूनानी तथा कहीं-कहीं पाश्चात्य शास्त्रोंके तुलनात्मक हिंदी लेखोंके सांचेमें ढालनेका प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया, जिसके फलस्वरूप अद्यावधि यूनानी द्रव्यगुण-विज्ञान, यूनानी योगसागर, यूनानी वैद्यकका इतिहास, यूनानी चिकित्सा-विज्ञान, रोगनामावलि कोष आदि ग्रन्थ लिखकर प्रकाशनार्थ प्रस्तुत हैं।

इस बीच बम्बईके सुप्रसिद्ध वैद्य, आयुर्वेद मार्तण्ड श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य महोदय लिखित द्रव्यगुण-विज्ञान ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। उसमें हिंदू

विश्वविद्यालयके आयुर्वेद कालेजके प्रिंसिपल श्रीयुत डाक्टर पाठक महोदयका "आयुर्वेदिक तथा आधुनिक द्रव्यगुण-विज्ञानपर तुलनात्मक विचार" शीर्षक लेख परिशिष्ट रूपमें छपा है। आपने अपने ग्रन्थमें देनेके लिये उसीके समान यूनानी द्रव्यगुणविज्ञानविषयक लेख लिख भेजनेके लिये मुझे पत्र लिखा। तदनुसार मैंने जो लेख लिखा बहुत विस्तृत होनेके कारण आपने उसे पृथक् ग्रन्थरूपमें प्रकाशनकी सद्भावना प्रगट की। अस्तु, वह आपहीके सत्प्रयत्नसे निर्णयसागर प्रेस द्वारा प्रकाशित हो रहा है। आपने यूनानी योगसागरके प्रकाशनके लिये जो यूनानी सिद्धयोगोंका बृहत् संग्रह है, श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवनके अध्यक्ष माननीय वैद्यराज पं० रामनारायणजी को लिखा। परन्तु यह ग्रन्थ बहुत विस्तृत है और उसका प्रकाशन आज कागजके इस संकटकालमें बहुत ही कठिन है। अस्तु, उनके लिखनेपर मैंने उसका एक छोटा सा सुसारसंग्रह तैयार करके प्रकाशनार्थ साधिकार दे दिया। यही वह "यूनानी सिद्ध-योग-संग्रह" है जो उनके प्रयत्नसे उनके हेड आफिस पटनासे प्रसिद्ध हुआ है।

यह संग्रह कैसा हुआ है, इसका निर्णय मैं पाठकोंके ऊपर छोड़ता हूँ। फिर भी इसके सम्बन्धमें यह बतला देना कदाचित् अनुचित न होगा कि आयुर्वेदीय सिद्धयोगोंका जैसा उपयोगी संग्रह श्री यादवजी लिखित "सिद्ध - योग - संग्रह" है, यूनानी सिद्धयोगोंका वैसा ही उपयोगी संग्रह यह यूनानी सिद्धयोगसंग्रह है।

यूनानी चिकित्सापद्धतिका महत्व सभी जानते हैं। हिन्दुस्तानमें इस चिकित्सापद्धतिकी सेवाओंको भुलाया नहीं जा सकता। इसके नुसखे आयुर्वेदीय नुसखोंकी भांति ही लाभदायक, तुरंत फायदा करनेवाले तथा सस्ते होते हैं। इसके अतिरिक्त यह चिकित्सापद्धति आयुर्वेदकी ही देन है और बहुत कुछ इसका ढंग सिद्धांतादि आयुर्वेद जैसा ही है। अस्तु, इसमें आये हुए योगोंका हम अपनी पद्धतिमें निःसकोच उपयोग कर लाभ उठा सकते हैं। इस सग्रहमें आये हुए नुसखे या तो प्राचीन यूनानी हकीमोंकी वंशपरम्परामें अनुभूत होते आये हैं या ये स्वयं वा दूसरोंके द्वारा हजारों बार परीक्षामें आ चुके हैं। इनके उपादान ऐसे हैं जो सुगमतापूर्वक मिलनेवाले—सुलभ एवं निश्चित हैं। निर्माण विधि सरल है। गुण-उपयोग वे ही दिये गये हैं जो बार-बार अनुभवमें आ चुके हैं। गुण वर्णनमें व्यर्थके विस्तारसे बचनेका भरसक प्रयत्न किया गया है। किसी योगको सत्यता और प्रामाणिकताके लिये इतने लक्षणोंका होना पर्याप्त है। अस्तु, इन निश्चित फलदायक योगोंका उपयोग कर यदि वैद्य बन्धुओंने कुछ भी लाभ उठाया, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

अन्तमें मैं श्रीयुत वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य महोदयका बहुत आभार मानता हूँ, जिनके सुझाव एवं प्रयत्नसे यह ग्रन्थ इतना शीघ्र प्रकाशित हो सका है। वैद्य रामनारायणजी भी हमारे विशेष धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने कागजके इस संकटकालमें इस ग्रन्थको इतना शीघ्र और उत्तम रूपमें प्रकाशित किया। मेरे कनिष्ठ भ्राता आयुर्वेदाचार्य कविराज रामसुशील सिंह शास्त्री (ए० एम० एस०) भी कम धन्यवादके पात्र नहीं हैं जिन्होंने प्रूफ संशोधन आदि कार्योंमें मेरी बड़ी सहायता की है। सर्वान्तमें मैं उन सभी यूनानी ग्रन्थकर्त्ताओंका हृदयसे आभार मानता हूं, जिनके ग्रन्थोंसे मुझे प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रूपसे इस ग्रन्थके लिखनेमें कुछ भी सहायता मिली है।

दीपमालिका सं० २००२ वि०
आयुर्वेदानुसन्धान प्रासाद
रायपुरी, चुनार,
मिर्जापुर (यू० पी०)

निवेदक—
वैद्यराज बाबू दलजीत सिंहजी
(आयुर्वेदीय विश्वकोषकार)

यूनानी सिद्धयोग-संग्रहके योगोंकी

वर्णानुक्रमणिका

यूनानी सिद्ध-योग-संग्रह

ज्वराधिकार १

१—कुर्स काफूर लूलुवी

द्रव्य और निर्माणविधि—

अनविध मोती, वंशलोचन, कतीरा, गेहूंका सत (निशास्ता)—प्रत्येक ६ माशा, गुलाबका फूल, सफेद चन्दन, निलोफरका फूल, सूखी धनियाँ, रक्तचन्दन, छिले हुए खुरफेके बीज, तरबूजके बीजकी गिरी, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी—प्रत्येक एक तोला डेढ़ माशा और काफूर कैसूरी (कपूरका एक भेद) २। माशा। इनको कूट-छानकर इसबगोलके लबाबमें घोटकर चक्रिकाएँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—४ माशेकी मात्रामें उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण और उपयोग—तीव्र ज्वर, राजयक्ष्मा और उरःक्षत एवं इनसे होनेवाले अतिसारमें उपयोगी हैं।

२—कुर्स तबाशीर मुलय्यिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

वंशलोचन श्वेत (तबाशीर सफेद) १ तोला ॰ माशा, खुरासानी तरंजबीन (खुरासानी यवासशर्करा) १०॥ माशा, गेहूंका सत (निशास्ता), मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, खीरा और ककड़ीके बीजकी गिरी, बबूलका गोंद (समग़ अरबी), कतीरा, पोस्तेका दाना—प्रत्येक ३॥ माशा। इनको कूट-छानकर इसबगोलके लबाबमें टिकिया बना लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा यह औषध खाकर ऊपरसे ६ माशा गावजबानका अर्क (अर्क गावजबान) पी लेवें।

गुण और उपयोग—राजयक्ष्मा, उरःक्षत, मिआदी बुखार (तपे मुहरिका), शुष्क कास और सीनेकी कर्कशताके लिये परमोपयोगी है, मृदुसारक और संतापहारक भी है एवं तृषाको भी शमन करता है।

३—कुर्स तबाशीर काफ़ूरी लूलुवी

द्रव्य और निर्माणविधि—

अनबिध मोती, सफेद वंशलोचन, अन्तर्धूम जलाया हुआ मीठे पानीका केंकड़ा, काहूका बीज, सफेद पोस्तेका दाना (तुख्म खशखाश सफेद), कुलफेका छिला हुआ बीज और कतीरा—प्रत्येक १ तोला १॥ माशा, कहरुबा शमई, सत मुलेठी, गुलाबकी कली—प्रत्येक ६ माशा, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी १ तोला, बबूल का गोंद और अन्तर्धूम जलाया हुआ प्रवालमूल (बुस्सद)—प्रत्येक ४॥ माशा, केसूरी कपूर (काफ़ूर केसूरी) ३॥ माशा, केशर और कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम—प्रत्येक ७॥ रत्ती। इनको कूट-छानकर हरे बारतंगके स्वरससे टिकिया बना-सुखाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—३ माशा उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह योग राजयक्ष्मा, उरःक्षत, क्षयज अतिसार, यकृज्जन्य अतिसार, रक्तातिसार और रक्तष्ठीवन इत्यादि विकारोंमें बहुधा प्रयोग किया जाता है। उक्त रोगोंमें लाभकारी सिद्ध हुआ है। अतिसारमें विशेष लाभकारी है।

४—कुश्ता हड़ताल

द्रव्य और निर्माणविधि—

धतूरके बीज, अफसंतीन—प्रत्येक एक छटाँक। इनको कूटकर एक सेर जलमें भिगो रखें। फिर मल-छानकर स्वरसमें एक सेर सफेद हड़ताल पीसकर डाल दें। जब स्वरस सूख जाय, तब हड़ताल पीसकर अलग रख लें। इसके पश्चात् उसे गुरुचके रसमें टिकिया बनाकर भूभल (गरम राख) की आँचमें भून लें।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती भस्म अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—सूजन और वातज वेदनामें गुणकारी है।

विशेष उपयोग—कफज्वर और मलेरिया (विषम ज्वर) के लिये रामबाण औषध है।

५—जवाहरमोहरा अंबरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

अनबिध मोती, माणिक (याकूत), पुखराज, पन्ना, जहरमोहरा खताई, फिरोजा, प्रवालमूल (बुस्सद), बंशलोचन, कहरुबा, सोनेका वरक, चाँदीका वरक—प्रत्येक ६ माशा; अंबर ४ माशा, कस्तूरी, शिलाजीत (मोमियाई)—प्रत्येक ३

माशा ; दरियाई नारियल और जदवार (निर्विषी)–प्रत्येक १॥ माशा ; अर्क केवड़ा, अर्क गुलाब (गुलाब), अर्क बेदमुश्क–प्रत्येक ४ तोला । प्रथम अंबर और कस्तूरी को छोड़कर शेष समस्त द्रव्योंको अलग-अलग खरल करके मिला लें । पीछे अंबर और कस्तूरी मिलाकर खरल करके एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लें ।

मात्रा और अनुपान—आधीसे १ गोली अर्क बेदमुश्क, अर्क केवड़ा और अर्क गुलाबमें हल करके पिलायें ।

गुण तथा उपयोग—हृदय, मस्तिष्क, ओज (रूह) और दृष्टिको शक्ति प्रदान करता है तथा विषोंका अगद है, दिलकी धड़कन, दुःख और चिंता, अर्श, उन्माद, मरक ज्वर, मसूरिका, रोमान्तिका और गर्भाशयके रोगोंमें लाभकारी है । यह गर्भकी रक्षा करता और तारुण्य शक्तियोंको स्थिर रखता है ।

६—रईसा

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबके फूल १॥ तोला, गावजबान १ तोला ४। माशा, काहूके छिले हुए बीज, खरबूजेकी बीजकी गिरी, कद्दूके बीजकी गिरी, खीरेकी बीजकी गिरी, कुलफाके बीज—प्रत्येक १४ माशा ; श्वेत चन्दन, छोटी इलायचीके बीज, वंशलोचन–प्रत्येक ६ माशा ; अगर (ऊद हिंदी), दरूनज अकरबी, श्वेत बहमन, नरकचूर (जुरंबाद)–प्रत्येक २ तोला ८ माशा ; मुक्ता, जलाया हुआ प्रवालमूल (बुस्सद सोख्ता), कहरुवा, अन्तर्धूम जलाया हुआ नहरका केंकड़ा, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, रक्त चन्दन, कपूर–प्रत्येक ४ माशा ; केशर ९। माशा, कस्तूरी आधा माशा, अंबर अशहब १ माशा, सेव, अनार, बिही इनमेंसे प्रत्येकका सत (रुब्ब) कुल औषध-द्रव्योंके सम-प्रमाण लेकर चाशनी (किवाम) बनाकर औषध-द्रव्योंका बारीक चूर्ण मिला लें ।

मात्रा और अनुपान—तीन माशा यह औषध प्रातःकाल ताजे जलसे सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग—उष्ण (पित्त) प्रकृतिशीलताके लिये अत्युपयोगी है । हृदयका दौर्बल्य, हृदयकी धड़कन और राजयक्ष्मा (तपेदिक) में लाभकारी है । निर्बलताको बहुत शीघ्र दूर करके शक्ति प्रदान करती है । वातिक ज्वरोंको नष्ट करती है । शैखुर्रईसने अपने प्रयोगमें आनेवाले योगोंमें इसका उल्लेख किया है ।

७—शर्बत एजाज़

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब २० दाना, लिसोढ़ा (सपिस्ताँ) ६० दाना, कतीरा, बबूलका गोंद–

प्रत्येक १० माशा, बिहीदाना १ तोला ५॥ माशा, मुलेठी, खतमी बीज, खुब्बाजी बीज, निलोफर पुष्प, बनफशाके फूल–प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती, अडूसेके पत्र आधा सेर, चीनी (कंद सफेद) १ सेर। कतीरा और बबूलके गोंदको छोड़कर शेष समस्त द्रव्योंको उबालकर छान लेवें। पीछे चीनी (कन्द सफेद) मिलाकर यथाविधि चासनी (किवाम) करें। अन्तमें बबूलका गोंद और कतीराका कपड़छान चूर्ण मिलावें।

मात्रा और अनुपान—प्रति दिन २ तोला शर्बत एजाज़ १२ तोला अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—शुष्क कासके लिये यह शर्बत लाभकारी है।

विशेष उपयोग—राजयक्ष्मा और उरःक्षतमें विशेष गुणकारी है।

८—शर्बत गिलोय

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिला और अधकुट किया हुआ ताजा गुरुच १२ तोला, गुलाबके फूल, निलोफरके फूल–प्रत्येक ४ तोला। सबको एक रात जलमें भिगोकर सबेरे उबाल कर छान लेवें। इसमें पुटपाक किये हुए (मुशव्वी) कद्दूका रस, पुटपाक किये हुए (मुशव्वी) खीरेका रस–प्रत्येक एक पाव और खट्टे अनारका रस १० तोला मिलाकर मिश्री (नबात सफेद) में शर्बतकी चाशनी कर लें।

मात्रा और अनुपान—१ तोलासे २ तोला तक यह शर्बत अर्क मकोय और अर्क कासनी—प्रत्येक ६ तोलामें मिलाकर ६ माशा खाकसीका प्रक्षेप देकर पिलाएँ।

गुण तथा उपयोग—जीर्ण ज्वरोंमें यह शर्बत परम गुणकारी सिद्ध हुआ है।

९—शर्बत बज़ूरी (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

सौंफ, कासनीके बीज, खरबूजाके बीज, खीरा-ककड़ीके बीज, गोखरू, कासनी मूल, सौंफकी जड़ (मिश्रेयामूल)—प्रत्येक १५ तोला, चीनी (कंद सफेद) एक सेर ४ छटांक। यथाविधि शर्बत प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—एक तोला शर्बत अर्क गावजबान ५ तोलामें मिलाकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रप्रवर्तक है और यकृत्, वृक्क एवं वस्तिस्थ मलोंका मूत्रमार्गसे उत्सर्ग करता है। पूयमेह (सूजाक) के लिये परमोपयोगी है। ज्वरके शेष रहे हुए संतापांशको शमन करनेके लिये गुणकारी सिद्ध हुआ है।

१०—शर्बत बजूरी मोतदिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

खरबूजाके बीज, खीराके बीज, ककड़ीके बीज, कासनी बीज, मिश्रयामूल (सौंफकी जड़)—प्रत्येक ५॥ माशा, कासनीमूल ११। माशा । समस्त द्रव्योंको यवकुट करके रातको जलमें भिगो रखें । सवेरे उबालकर छान लेवें । पीछे उसमें ६ तोला चीनी (शकर सफेद) मिलाकर चाशनी करें ।

मात्रा और अनुपान—४ तोला शर्बत, १२ तोला अर्क गावजबानमें मिलाकर पिलाएँ ।

गुण तथा उपयोग—पूयमेह (सूजाक) के लिये परम गुणकारी है । मूत्रल है । यकृत, वृक्क और बस्तिका शोधन करता है । शरीरमें शेष रहे हुए ज्वरांशको निवारण करता है ।

११—हब्ब जवाहर

द्रव्य और निर्माणविधि—

बबूलका गोंद ६ माशा, गिल अरमनी, जहरमोहरा (पिष्टी)–प्रत्येक १॥ तोला, वंशलोचन, मुक्ता (पिष्टी), श्वेत चन्दन और सूखी धनियाँ–प्रत्येक ३ तोला ; बिनौलेकी गिरी, बादामकी गिरी–प्रत्येक ६ तोला, कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी) ६ माशा । समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर मूंगके दानेके प्रमाणकी गोलियाँ बनायें और उनपर चाँदीका वरक चढ़ा लें ।

मात्रा और अनुपान—दो माशा गोलियाँ लेकर १० तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग—यह उत्तमांगोंको बलप्रद है, राजयक्ष्मा तथा उरःक्षतमें लाभकारी है और पित्तातिसारको रोकती है ।

१२—हब्ब जवाहर काफूरी

द्रव्य और निर्माणविधि-

अनबिंध मोती, पन्ना, अनारके दानाकी आकृतिका रक्तवर्ण माणिक (याकूत रुम्मानी), जहरमोहरा, लाल (लाल बदख्शाँ), कहरवा, श्वेत संगयशब और कैसूरी-कपूर (काफूर कैसूरी)–प्रत्येक ३॥ माशा, अञ्जबारकी जड़की छाल, गिल अरमनी और श्वेत चन्दन–प्रत्येक २। माशा, मुलेठीका सत, बबूलका गोंद, कतीरा, निशास्ता (गेहूंका सत), अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा, गुल निलोफर,

श्वेत वंशलोचन, सफेद पोस्तेकी डोंडी और गावजबान पुष्प–प्रत्येक ४॥ माशा, केशर ३॥। रत्ती । रत्नोंको गुलाबके अर्क (गुलाब) में खरल करके पिष्टी बनायें । फिर शेष द्रव्योंको कूट-छानकर सबको मिलाकर बिहीदानेके लुआबमें घोंटकर मूंगके दानेके प्रमाणकी बटिकायें बाँध लेवें ।

मात्रा और अनुपान–दो तोला अर्क गावजबान या दो तोला सेब या अनारके शर्बतके साथ सवेरे या जब आवश्यकता हो सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग–उत्तमांगोंको बल देनेवाला और राजयक्ष्मा तथा उरः-क्षतके लिये गुणकारी है । यह शोणितस्थापक है और अतिसारको बन्द करता है ।

१३—हब्ब जवाहरमोहरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

रक्त माणिक (याकूत अहमर), नीलम, पुखराज पीत, पन्ना हरित, अबीध मोती, रक्त प्रवालमूल (बुस्सद अहमर), हरा संगे यशब, यमनी अकीक, रक्त अकीक, धोया हुआ लाजवर्द, जहरमोहरा खताई (फादजहर मादनी), चाँदीका वर्क और रूमी मस्तगी–प्रत्येक १ माशा, सोनेका वर्क १॥ माशा, दरियाई नारियल १॥ माशा, असली जदवार (निर्विषी) १॥ माशा, उत्तम सत शिलाजीत (मोमियाई) १॥ माशा । अर्क गुलाब (गुलाब), अर्क बेदमुश्क और अर्क केवड़ा में दो सप्ताह खरल करके मोठके दाना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें ।

मात्रा और अनुपान–एक गोली माजून जालीनूस लुलुवी ४ माशा या दवाउलमिस्क मोतदिल जवाहरवाली ३। माशा या खमीरा गावजबान सादा एक तोलाके साथ खायें ।

गुण तथा उपयोग—यह उत्तमांगोंको विशेष रूपसे शक्ति प्रदान करती है और नष्टप्राय शक्तिको पुनः पूर्ववत् करती है ।

१४—हब्ब जवाहर मुवल्लिफ

द्रव्य और निर्माणविधि—

बबूलका गोंद ३ माशा, जहरमोहरा, गिल अरमनी–प्रत्येक ६ माशा, मुक्ता, वंशलोचन, श्वेत चन्दन और सूखी धनियाँ–प्रत्येक १॥ तोला, कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी) ४॥ माशा, कद्दूकी गिरी और बिनौलेकी गिरी–प्रत्येक ३ तोला । समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर चना प्रमाणकी बटिकायें बनायें और उनपर चाँदीका वर्क चढ़ा लें ।

मात्रा और अनुपान—एक माशासे दो माशा तक अर्क निलोफरके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियां उत्तमांगोंको बल देनेवाली हैं और अतिसारको बन्द करती हैं।

विशेष उपयोग—उरःक्षत और राजयक्ष्मामें अतीव लाभकारी हैं। (ति०फा०)

१५—हब्ब तपे मुजिमन

द्रव्य और निर्माणविधि—

बच्छनाग (गोदुग्धमें शोधित), पीपल, काली मिर्च, टङ्कण (अग्निपर खील किया हुआ) और शुद्ध शिगरफ। सबको समभाग लेकर बारीक पीसकर ज्वार या चनाके दानाके प्रमाणकी गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और अनुपान—एक गोलीसे २ गोलीतक उपयुक्त अनुपानके साथ खिलायें ; यथा पित्तज्वरमें कुलफेके बीजोंके शीरे (जलमें पिसे हुए दूधिया रस) के साथ, राजयक्ष्मा और प्रसूत एवं कामावसाय (जोफ बाह) में मधुके साथ, प्रवाहिका अर्थात पेचिशमें बूरा (शकर सुर्ख) के साथ, अतिसारमें केवल अहिफेनके साथ, विसूचिकामें आर्द्रक स्वरस (अदरकका शीरा) के साथ सेवन करें। अर्दितमें एक-दो गोली तिलके तेलमें घिसकर वक्रीभूत अवयवपर लेप लगावें और एक गोली खिलावें।

गुण तथा उपयोग—यह दोषज जीर्णज्वरोंको निवारण करनेवाली प्रधान औषधि है। पित्तज, वातज और कफज जीर्ण ज्वरोंमें उपयुक्त अनुपानके साथ इसका व्यवहार करावें। यह राजयक्ष्मा, प्रसूत, कास, प्रतिश्याय और क्लीबता (जोफबाह) में अतिशय गुणकारी है। अर्दितमें भी इसे खाने और लगानेसे बहुत उपकार होता है।

वक्तव्य—कासमें इसे भृष्ट कुलफेके बीजके शीरेके साथ देवें।

१६—हब्ब बुखार (ज्वरघ्नी वटी)

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुक्ताशुक्ति-सुधा (मोतीकी सीपका चूना), गोदुग्धमें शुद्ध किया हुआ आमलासार गंधक, शुद्ध पारद, नरकचूर, सुहागा (अग्निपर खील किया हुआ), पीपल और सोंठ-प्रत्येक १ तोला। गंधक और पारदको तीन दिन तक शुष्क खरल करें। इस प्रकार बनी हुई कज्जलीमें शेष द्रव्योंका चूर्ण डालकर इतना खरल करें कि गोलियां बँधने लगें। तब कालीमिर्च प्रमाणकी गोलियां बांधकर छायामें सुखा लें।

मात्रा और अनुपान—बालकोंको एक गोली, बड़ों (वयस्क) को दोसे चार गोलीतक तीन नग रेहाँ (ममरी) के पत्र-स्वरस (शीरा बर्ग रेहाँ) या सादा जलके साथ दें। उष्ण प्रकृतिवालोंको कुलफाके बीजोंके शीराके साथ और कफज व्याधियोंमें बिना अनुपानके सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—राजयक्ष्मा और पित्तज्वरों (तपं मुहरिका सफरावी) को छोड़कर शेष समस्त प्रकारके ज्वरोंके लिये यह अन्यर्थ महौषधिसे कम नहीं है। ज्वरोंके सिवाय अन्यान्य कफज व्याधियों तथा अर्दित, पक्षवद्ध और विसूचिका एवं अजीर्ण और शूल (कुलंज) में भी अतीव गुणकारी है।

सन्निपात (सरेसाम)

१—हब्ब हयात-बख्श

द्रव्य और निर्माणविधि—

वायबिडंग, शुद्ध भिलावाँ, सोंठ, पीपलामूल, पीली हड़का बक्कल, चीता, अतीस, तज खुरासानी, शुद्ध बच्छनाग—प्रत्येक ३ माशा। सबको महीन पीसकर घीकुआरके गूदेमें मिलाकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—४ गोली कोष्ण अर्क गावजबान ६ तोलाके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—उपद्रव स्वरूप (गैर हकीकी) सरेसाम, उदरशूल, कास, कृच्छ्रश्वास और सर्पदंशमें लाभकारी है।

२—हुकना लय्यिना (मृदुसारिणी बस्ति)

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब, लिसोढा (सपिस्ताँ), जौकुट किया हुआ निष्तुषीकृत यव, गुल बनफशा, गेहूँकी भूसी, खतमीका शुष्क पुष्प और नाखूना (इकलीलुलमलिक)—प्रत्येक १ मुष्टिका भर और अंजीर ५ नग। सबको डेढ़ सेर जलमें क्वाथ करें। जब आधा रह जाय, तब उतार कर बूरा (शकर सुर्ख) १७॥ माशा, रोगन बनफशा, रोगन बादाम और तिल तैल—प्रत्येक ३ तोला, काँजी १७॥ माशा मिलाकर रखें।

सेवन विधि—इसे कुनकुना (कोष्ण) करके दो बार बस्ति करें।

उपयोग—यह सरेसाम (प्रलापक सन्निपात) और समस्त उष्ण व्याधियों में लाभकारी है। ज्वरमें भी इससे उपकार होता है।

वक्तव्य—इसमें अमलतासका गूदा मिला लेनेसे इसकी शक्ति और तीव्र हो जाती है।

३—लखलखा (आघ्राणौषध)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गिल अरमनी, श्वेत चन्दन, निलोफर पुष्प—प्रत्येक १ माशाको हरे धनियेंके रस, हरे खीरेके रस, लम्बा कद्दू अर्थात् लौआके रस और अर्क केवड़ा—प्रत्येक ४ तोलामें पीसकर चौड़े मुंहकी शीशीमें डालकर सुंघाएं ।

गुण तथा उपयोग—हर प्रकारके सरेसाम (प्रलापक सन्निपात) में लाभकारी है ।

४—सफूफ सरेसाम (सन्निपातहर चूर्ण)

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी, तरबूजके बीजकी गिरी और कुलफाके बीज—प्रत्येक २ तोला । सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें ।

मात्रा और अनुपान—एक तोला प्रतिदिन १२ तोला यवमंड (माउश्शईर) के साथ खिलायें ।

गुण तथा उपयोग—पित्तज और रक्तज उष्णताजन्य सन्निपातोंके लिए परीक्षित है ।

श्वसनक सन्निपात (न्युमोनिया) तथा पार्श्वशूल या उरोशूल

१—कुश्ता बारहसिंगा (सावरशृङ्ग-भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि—

बारहसिंगाको तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े बना लें । फिर उन टुकड़ोंको मिट्टीकी कुल्हियामें डालकर ऊपरसे इतना अर्कक्षीर डालें कि वह खूब तर हो जाय । पीछे कुल्हियाका मुंह चिकनी मिट्टीसे बंद करके उसे सुखा लें । फिर उसे गड्ढेमें रख कर १५ सेर उपलोंकी अग्नि दें । स्वांगशीतल होनेपर निकालकर पीस लें और फिर दोबारा इसी प्रकार अर्कक्षीरमें तर करके अग्नि दें । तीसरी बार यथापूर्व अग्नि दे लेनेपर सेवन-योग्य भस्म प्रस्तुत होगी । इस प्रकार तैयार हुई ३ माशा भस्ममें २४ नग सोनेका वर्क मिलाकर खरल करें ।

मात्रा और अनुपान आदि—एक रत्ती सवेरे और एक रत्ती सायंकाल सौंफ और अजवायनके अर्कके साथ सेवन करायें । व्याधि तीव्र होनेपर तीन-तीन घंटा उपरांत १-१ रत्ती देवें और शीतल जलसे परहेज करायें ।

गुण तथा उपयोग—न्युमोनिया (श्वसनक ज्वर), [illegible]), उरोशूल, वास्तविक पार्श्वशूल भेद (सौसा), महाप्राचीरा-शोथ [illegible]री है । वातजवेदना, संधिशूल, कृच्छ्रश्वास और कफज कासके लिये अ[illegible]

७—रोगन खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

एरण्ड तैल, अतसी तैल, तुवरी तैल (रोगन तारामीरा), अकरकरा, अजवायन, मालकँगूनी, हरमैल बीज-प्रत्येक ५ तोला। प्रथम शुष्क द्रव्योंको यवकुट करके डेढ़ सेर जलमें ४ पहरतक भिगोकर क्वाथ करें। जब छठवाँ हिस्सा जल शेष रह जाय तब मल-छानकर छने हुए जल (काढ़े) में उपर्युक्त तीनों तैल मिलाकर मंदाग्निपर पकायें। जब जलांश जल जाय, तब उतारकर पुनः कपड़ेमें छान लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार वेदनास्थलपर मर्दन करके गरम रूई बाँध दें।

गुण तथा उपयोग—शरीरगत प्रत्येक भाँतिकी वेदनाके लिए गुणकारी है।

विशेष उपयोग-यह संधिवात (वजउल मफासिल), वातज पार्श्वशूल और कफज पार्श्वशूलके लिये विशेष लाभकारी है। इसके कतिपय बारकी मालिशसे उपकार हो जाता है।

८—शर्बत जातुर्रिया

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब ३० दाना, लिसोढा (सपिस्ताँ) ५० दाना, खतमी बीज और खुब्बाजी बीज-प्रत्येक १॥ तोला, अंजीर २० दाना, जूफा और मुलेठी (छिली हुई)-प्रत्येक ३ तोला, हंसराज (परसियावशाँ) २॥ तोला, चीनी (कंद सफेद) ५॥ सेर। कंद सफेदको छोड़कर शेष अन्य द्रव्योंको रातको एक सेर जलमें भिगो कर सवेरे क्वाथ करें। जब आधा जल शेष रह जाय तब उतारकर मल-छानकर चीनी (कंद सफेद) मिलाकर चासनी करके शर्बत बनायें।

मात्रा और अनुपान आदि—३ तोला शर्बत सवेरे और ३ तोला सायंकालको ५ तोला अर्क गावजबानके साथ देवें। साधारण प्रतिश्याय (नजला और जुकाम) और कासमें केवल जल ही मिलाकर देना पर्याप्त है।

गुण तथा उपयोग-यह कास, प्रतिश्याय (नजला और जुकाम), न्युमोनिया (जातुर्रिया) और श्वासके लिये उत्कृष्ट भेषज है। यह शरीरगत द्रवोंको उत्सर्ग-योग्य बनाता (मुंज्जिज) और उनका छेदन करता (मुकत्तिअ) है। फुफ्फुस और वक्षको मलोंसे शुद्ध करता है।

विशेष उपयोग—श्वसनक ज्वर (न्युमोनिया) और पार्श्वशूलकी अव्यर्थ महौषधि है।

आन्त्रिक ज्वर (मोतीझरा)

१—अक्सीर इस्हाल मुबारकी

द्रव्य और निर्माणविधि—

शङ्खको आवश्यकतानुसार लेकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े बनायें और एक मिट्टी के सकोरेमें रखकर पाँच सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर खरल कर लें।

मात्रा और अनुपान आदि—दिनमें चार बार एक-एक रत्तीके प्रमाणसे बताशा आदिमें रखकर उपयोग करायें और ऊपरसे इन अर्कोंके दो-दो घूंट पिलाते रहें—अर्क मकोय, अर्क सौंफ, अर्क पुदीना–प्रत्येक १२ तोला, अर्क इलायची, अर्क दालचीनी और अर्क इजखिर–प्रत्येक ५ तोला। लाल शर्बत असली ५ तोला, सत पुदीना २ रत्ती सबको एक बोतलमें मिला लें।

गुण तथा उपयोग—यह औषधि मुबारकीके दस्तोंको बन्द करती है। इससे मुबारकी बड़े जोर-शोरसे निकलना प्रारम्भ हो जाती है और आध्मान आदि नहीं होता।

वक्तव्य—जब मुबारकीमें दस्त प्रारंभ हो जाते हैं, तब यह एक अरिष्ट लक्षण समझा जाता है; क्योंकि उन्हें बन्द करनेसे आध्मान हो जाया करता है। इस औषधिका यह विशेष प्रभाव है कि दस्तोंको तो रोकती है; परन्तु आध्मान नहीं होने देती। (ति० फा०)

२—खमीरे मरवारीद

द्रव्य और निर्माणविधि—

जहरमोहरा और बिल्लीलोटन (बादरंजबूया)-प्रत्येक २ तोला, अनबिंध मोती, बहमन श्वेत, बहमन रक्त, तोदरी श्वेत, तोदरी रक्त, बिल्लीलोटन बीज (तुख्म बादरंजबूया), केशर, अंबर अशहब, शुद्ध कस्तूरी–प्रत्येक एक तोला, गावजबान पुष्प और कुलफा (छिला हुआ)–प्रत्येक १० तोला, अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क–प्रत्येक १ सेर, चीनी (कन्द सफेद) ५२ सेर। यथाविधि खमीरा प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा खमीरा किसी उपयुक्त अनुपानसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदय और मस्तिष्कको बल देनेवाला और शामक

है। यह विद्वेष (वहशत) और दिलकी धड़कनको दूर करता और मोतीझरामें उपकारी है।

विशेष उपयोग—हृदयको बल देनेवाला और प्रफुल्लित करनेवाला (मनः प्रसादकर) है।

३—खमीरे मरवारीद (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

जहरमोहरा, बिल्लीलोटन (बादरंजबूया)–प्रत्येक ४ तोला, अवीध मोती, बहमन श्वेत व रक्त, तोदरी श्वेत व रक्त, बिल्लीलोटनके बीज, केशर, अम्बर अशहब, कस्तूरी–प्रत्येक २ तोला, गावजबान पुष्प, कुलफा, बनफशा–प्रत्येक २० तोला, अर्क बेदमुश्क, अर्क गुलाब–प्रत्येक २ सेर, चीनी (कन्द सफेद) ५१ सेर। यथाविधि खमीरा कल्पना करें।

मात्रा और अनुपान—१॥ माशा उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदय और मस्तिष्कको बल प्रदान करनेवाला एवं शामक है। यह विद्वेष (वहशत) और दिलकी धड़कनको दूर करता और मोतीझरा (आन्त्रिक ज्वर) में अतीव गुणकारी है।

४—खमीरे मरवारीद बनुसखा कलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुक्ता (पिष्टी) १ तोला, संगेयशब (व्योमाश्म पिष्टी), कहरुवा (पिष्टी), श्वेत चन्दन, वंशलोचन–प्रत्येक ६ माशा, अनार, सेब और बिहीका सत (रुब)–प्रत्येक ५ तोला, अर्क केवड़ा आवश्यकतानुसार, चीनी (कन्द सफेद) १ पाव, शुद्ध मधु ५ तोला, चाँदीका वरक ६ माशा, सोनेका वरक १॥ माशा। इनसे यथाविधि खमीरा प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—३ माशा खमीरा गर्जरार्क, क्षीरार्क या किसी और उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह खमीरा दिल और दिमागको शक्ति प्रदान करता है। हृदय-दौर्बल्य और हृत्स्पन्दनके लिये लाभकारी है; अतिसारकी अधिकता और अत्यधिक रक्तस्रावजन्य दौर्बल्य तथा सामान्य सार्वदैहिक दौर्बल्यको निवारण करता है।

विशेष उपयोग—मोतीझरा (टायफाइड) और मसूरिका (चेचक) में विशेष उपकारी है।

राजयक्ष्मा-उरःक्षताधिकार २

१—अर्क तपेदिक खासुलखास

द्रव्य और निर्माणविधि—

बेदसादा (वेतस) के पत्र ꠰॥ सेर, छिली हुई मुलेठी ꠰। पाव भर। दोनोंको पुटपाककृत कद्दू (कद्दू मुशव्वी) का रस, पुटपाककृत तरबूजका रस, पुटपाककृत खीरेका रस—प्रत्येक २ सेर, ताजा कसेरूका रस, हरे पालककी पत्तीका रस—प्रत्येक १ सेरमें तर करके सवेरे विलायती मुलेठीका सत, असली गुडूचीका सत्व देशी—प्रत्येक १ तोला, नैचेके मुंहमें रखकर यथाविधि अर्क खीचें।

मात्रा और अनुपान आदि—६ तोला अर्क २ तोला शर्बत उन्नाबमें मिलाकर प्रति दिन पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह राजयक्ष्मा और उरःक्षतके लिये अतीव गुणकारी है। केवल ज्वरांश हो या उरःक्षतके साथ ज्वर हो इन उभय दशाओंमें लाभकारी है।

२—अर्क बेदसादा (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

बेदसादा (वेतस) के पत्र ꠰१ सेर रातको जलमें भिगोकर सवेरे दस बोतल अर्क खीचें। फिर इस अर्कमें उतना ही बेदसादाके पत्र भिगोकर दोबारा दस बोतल अर्क प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—३ तोला यह अर्क सायंकाल या प्रातःकाल २ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—हृदयगत उष्मा, विक्षेप (वहशत) और दिलकी धड़कनको दूर करता है। उष्ण व्याधियोंमें उपकारक है। राजयक्ष्मामें विशेष-रूपसे लाभ पहुंचाता है। साधारण अर्ककी अपेक्षा यह अर्क अत्यधिक गुणकारक है।

३—अर्क हराभरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

रक्त चन्दन, खस, पद्माख, नागरमोथा, ताजा गुरुच, पित्तपापड़ा (शाहतरा), नीमकी छाल, निलोफर पुष्प, कासनी बीज, सौंफ, कद्दू के बीज, नेत्रबाला, धनियाँ, तुलसी बीज, बहेड़ाकी जड़, इक्षुमूल, यवासाकी जड़, कासनीकी जड़,

धमासा, मुंडी, मुलेठी, छोटी इलायची और पोस्तेकी डोडी—प्रत्येक १ तोला यथाविधि अर्क खींचें।

मात्रा और अनुपान—६ तोला अर्क उपयुक्त भेषजके साथ उपयोग करें।

अपथ्य—इसके सेवन-कालमें उष्ण एवं रूक्ष द्रव्योंसे परहेज करें।

गुण तथा उपयोग—राजयक्ष्मा और उरःक्षतमें असीम लाभकारी है। मूत्रदाह, सूजाक (औपसर्गिक पूय मेह) और दिलकी धड़कनके लिये भी गुणकारी है और उत्तमांगोंको बल प्रदान करनेवाला है।

विशेष उपयोग—राजयक्ष्मा और उरःक्षतके लिये विशेष गुणकारी है।

वक्तव्य—दिल्लीके ख्यातिनामा यूनानी चिकित्सक जनाब मसीहुलमुल्क हकीम अजमल खॉं महोदयके चिकित्सालयमें यह प्रचुर प्रयोगमें आता है। यह राजयक्ष्माकी प्रधान औषधि है।

४—कुर्स सरतान

द्रव्य और निर्माणविधि—

अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा ७॥ तोला, वंशलोचन, कहरुवा, पोस्त खशखाश (पोस्तेकी डोंडी), कपूर, संगजराहत, गिल अरमनी—प्रत्येक ३ माशा; निशास्ता (गेहूंका सत), खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी—प्रत्येक १ तोला; गुलाबके फूल, मुलेठीका सत, कतीरा, बबूलका गोंद, कुलफेके बीज (भृष्ट)—प्रत्येक ८ माशा, अहिफेन १ माशा। सबको कूट-छानकर बीहदानाके लुआब से चक्रिका बनायें।

मात्रा और अनुपान—४ माशाकी मात्रामें यह औषध १२ तोला अर्क गावजबानके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह राजयक्ष्मा, उरःक्षत और रक्तष्ठीवनमें लाभकारी है और कासघ्न है

५—कुर्स सिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध कपूर, बबूलका गोंद, गेहूंका सत (निशास्ता गंदुम), गुडूची सत्व और शकरतीगाल—प्रत्येक समभाग लेकर महीन चूर्ण बना गावजबानके पत्रके लुआबसे टिकिया बनाएँ।

मात्रा और अनुपान—दो टिकिया प्रति दिन सवेरे रोगीको सेवन करायें।

गुण तथा उपयोग—उरःक्षतके लिये असीम गुणकारी है।

६—कुश्ता अकीक

द्रव्य और निर्माणविधि—

रक्त अकीक २ तोलाको डेढ़ पाव बबूलके पत्तेकी लुगदीमें रखकर ऊपरसे कपड़मिट्टी करके दस सेर उपलोंकी अग्नि देवें।

वक्तव्य–रक्त अकीकको कीकरकी पत्तीकी लुगदीके स्थानमें पुदीनाकी लुगदी में भी रख सकते हैं।

मात्रा और अनुपान–१ रत्तीसे २ रत्तीतक मुफर्रेह बारिद ५ माशा या लऊक आब तुर्बुज ५ माशाके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग–उरःक्षतके लिये लाभकारी है। फुफ्फुसीय व्रणको भर देता है और रक्तागमको बंद करता है।

७—कुर्स तबाशीर काफूरी लूलवी मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

अबीध मोती, बंशलोचन, अन्तर्धूमदग्ध केंकड़ा, सफेद पोस्तेका दाना (तुख्म खशखाश सफेद), काहूबीज, छिले हुए कुलफेके बीज और कतीरा–प्रत्येक १०॥ माशा, कहरुबा शमई, गुलाबके फूल–प्रत्येक ६ माशा ; खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी २२॥ माशा, बबूलका गोंद और अन्तर्धूमदग्ध प्रवालमूल (बुस्सद सोख्ता) प्रत्येक ४॥ माशा ; कपूर २॥ माशा, केसर १॥ माशा, कैंचीसे कतराहुआ अबरेशम १॥ माशा, हाइपोफास्फेट आफ लाइम ६ माशा—सबको कूट-पीसकर यथाविधि टिकियाँ बनाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान–५ माशा सवेरे और ५ माशा शामको उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग–राजयक्ष्मा, उरःक्षत, दिलकी धड़कन, रक्तष्ठीवन, रक्तवमन और क्षयज अतिसार प्रभृति तीव्र व्याधियोंमें लाभकारी और सिद्ध भेषज है।

८—दवाए मस्लूल

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुडूची-सत्व, बारीक पिसा हुआ जहरमोहरा, अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा, बंशलोचन, संगजराहत (दुग्धपाषाण), कतीरा, बबूलका गोंद, सफेद कत्था, गिल मख्तूम, मग्ज बीहदाना, गेहूंका सत (निशास्ता), सफेद खशखाश (श्वेत खसबीज), खतमी बीज, गिल अरमनी, मीठे बादामकी गिरी,

दम्मुल अख्वैन (खूनाखराबा) और मुलेठीका सत–प्रत्येक ३॥ माशा ; कपूर कैसूरी (काफूर कैसूरी) १ माशा–सबको कूट-छानकर बीहदानाके लुआबमें चना प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ ।

मात्रा और अनुपान—एक गोली ८ तोला अर्क हराभराके साथ या छागीदुग्ध या गर्दभीक्षीर १५ तोलाके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—उरःक्षत और फुफ्फुस रोगोंमें अतीव गुणकारी है ।

९—दवाए हाबिसुद्दम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुलफाके बीज २ तोला, नौसादर ६ माशा—इनको दो मिट्टीके प्यालोंमें रखकर उनका मुंह मुलतानी मिट्टीसे भलीभाँति बन्द करें और एक पहर जंगली उपलोंकी अग्नि दें । इसके बाद निकालकर चूर्ण बना लें ।

मात्रा और अनुपान—६ माशा चूर्ण अञ्जबारके शर्बतके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—रक्तष्ठीवनमें लाभकारी है । उरःक्षत रोगमें मुंहसे अधिक रक्त आनेको रोकती है ।

१०—दियाकूजा मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्तेकी डोडी (कोकनार) सम्पूर्ण ३० नग, बीहदाना १३॥ माशा, सफेद खतमीके बीज, छिली हुई मुलेठी, शुद्ध नहरका केंकड़ा–प्रत्येक २२॥ माशा । इनको वर्षाजल या गावजबानार्क ꠲१ सेरमें रात्रिके समय भिगोकर रख दें । सवेरे खूब पकायें । अर्द्धावशेष रहनेपर उतारकर छान लें । फिर इसबगोलका लुआब ३॥। तोला और चीनी ꠲॥ मिलाकर खमीराके समान गाढी चाशनी (पाक) कर लें । चाशनीके अन्तमें अकाकिया, गुडूचीसत्व और वंशलोचन–प्रत्येक ४॥ माशा ; बबूलका गोंद, कतीरा सफेद–प्रत्येक २२॥ माशा ; केसर, खुरासानी अजवायन–प्रत्येक १॥ माशा ; कहरबा शमई, अवीध मोती–प्रत्येक २। माशा । इन सबको खरल करके थोड़ा-थोड़ा डालकर और हिला-हिलाकर भलीभाँति मिला लें । अन्तमें शीतल होनेपर एक्सट्रैक्ट आफ माल्ट विद काडलिवर आइल समभाग मिलाकर रख लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशा गदही या छागी दुग्धके साथ उपयोग करें । इसके बाद रोगीकी सहनशक्तिका विचार करते हुए क्रमशः बढ़ाते जायँ और २ तोला तक पहुंचायें ।

गुण तथा उपयोग—राजयक्ष्मा, उरःक्षत, प्रतिश्याय (नजला व जुकाम), कास और समस्त फुफ्फुस रोगोंमें गुणदायक है। हृदय और फुफ्फुसको शक्ति भी देता है।

११—माजून दिक़ व सिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्तेकी डोंडी (कोकनार), पोस्तेका दाना-प्रत्येक ५ तोला, खीरा-ककड़ी के बीजकी गिरी, बीहदानेका मग्ज, कद्दूका मग्ज (गिरी), बबूलका गोंद, कतीरा, कासनी बीज, अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा, छिले हुए काहूके बीज, श्वेत चंदन, सूखी धनिया, गेहूँका सत (निशास्ता), वंशलोचन, गिल अरमनी, हंसराज (परसियावशाँ), मुलेठी (छिली हुई), खरबूजेके बीजकी गिरी, मुलेठीका सत, सूक्ष्म और बृहदेला, तरबूजके बीजकी गिरी, गावजबान पुष्प, केसर, बनफसा-पुष्प, कपूर—प्रत्येक २ तोला ; गुलकन्द, मवेज मुनक्का (बीज निकाली हुई दाख), किशमिश—प्रत्येक ५ तोला ; बादामकी गिरी २० तोला, शर्बत बनफसा ऽ॥।, शर्बत निलोफर ऽ॥।, मिश्री ऽ॥।, अर्क बेदमुश्क ऽ॥।, मुक्ता, कहरुवा (तृणकान्त) और माणिक (इनकी पिष्टियाँ)—प्रत्येक १ तोला। इनसे यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा माजून अर्क हराभराके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—राजयक्ष्मा और उरःक्षतमें अतीव गुणकारी है। हृदय और उत्तमांगोंको बल प्रदान करती है।

१२—लऊक़ तुर्बुज (लऊक नजली आबतुर्बुजवाला)

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्ताके दाने (तुख्म खशखाश), बबूलका गोंद, क़तीरा और गेहूँका सत (निशास्ता)-प्रत्येक १४ माशा, कद्दूकी गिरी, खीरा-ककड़ीकी गिरी, कुलफाके बीज, काहूके बीज—प्रत्येक १॥ तोला, मीठे बादामका मग्ज (गिरी) ३ तोला, बादामका तेल ६ तोला, यवासशर्करा (तरंजबीन) १४ तोला, तरबूजका रस १० तोला। कद्दूकी गिरीसे बादामका मग्जपर्यंत समग्र द्रव्यका शीरा (जल या अर्क में पीसकर लिया हुआ क्षीरवत् घोल) निकालें और उसमें यवासशर्करा घोलकर छान लें। फिर तरबूजका रस मिलाकर चाशनी (किवाम) बनावें। पीछे पोस्ता के दानेसे गेहूँका सत तकके द्रव्य और बादामका तेल मिलाकर रखें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा दिनमें तीन-चार बार चाट लिया करें।

गुण तथा उपयोग—उरःक्षत और शुष्क कास एवं नजलाके लिये परम गुणकारी है।

१३—लऊक बीहदाना

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीहदाना, इसबगोल और खतमी बीज-प्रत्येक ३ तोलाका लुआब निकाल कर मीठे अनारके रस, ककड़ीके रस, लौआके रस, कुलफाकी पत्तीके फाड़े हुए रस-प्रत्येक २० तोलामें सम्मिलित करें। फिर छानकर आध सेर चीनी मिलाकर चाशनी करें। चाशनीके अन्तमें बबूलका गोंद, कतीरा, छिली हुई बादामकी गिरी; श्वेत खसबीज (तुख्म खशखाश सफेद)-प्रत्येक २ तोला, मुलेठीका सत, शकरतीगाल-प्रत्येक ६ माशा बारीक पीसकर मिला दें।

मात्रा और अनुपान—६ माशासे लेकर १ तोलातक दिन भरमें कई बार चटायें।

गुण तथा उपयोग—शुष्क कास और उरःक्षतमें अतिशय गुणकारी है।

१४—सरतानी

द्रव्य और निर्माणविधि—

बबूलका गोंद, मिश्री, कतीरा सफेद, गुलाबके फूल, बंशलोचन-प्रत्येक ४ माशा, मुलेठी ५ माशा, गेहूँका सत (निशास्ता), कुलफा-प्रत्येक ७ माशा, रक्त चन्दन, पीत चन्दन, श्वेत चन्दन-प्रत्येक २ माशा; काहू बीज ३ माशा, मुलेठीका सत ५ माशा, कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी) १ माशा, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, खस बीज (तुख्म खशखाश), खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी, खरबूजाके बीजकी गिरी-प्रत्येक ६ माशा; जलाया हुआ केंकड़ा (सरतान सोख्ता) १ तोला। इन सबको कूट-छान कर इसबगोलके लुआबमें टिकिया बना लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशाकी मात्रामें १२ तोला अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—राजयक्ष्मा, उरःक्षत और कास रोगनाशक है।

वक्तव्य—उपर्युक्त योगोंके अतिरिक्त ज्वराधिकारमें दिये हुए कुर्स काफूर लूलुवी, कुर्स तबाशीर मुलय्यिन, कुर्स तबाशीर काफूरी लूलुवी, रईसी, शर्बत एजाज, हब्ब जवाहर, हब्ब जवाहर काफूरी, हब्ब जवाहर मुवल्लिफ, हब्ब जवाहर-मोहरा प्रभृति योग भी इस रोगमें उपकारी हैं।

ऊर्ध्वजत्रुरोगाधिकार ३

१—मस्तिक-शिरोरोग

शिरोरोग वा शिरोशूल—

१—अतरीफल जमानी

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत त्रिवृत् (सफेद निसोथ), शुष्क धनियाँ ७॥ तोला ; पीली हड़का बक्कल, काबुली हड़का बक्कल, काली हड़, पुटपाक विधिसे शुद्ध किया हुआ अर्थात् मुशव्वी (भुल-भुलाया हुआ) सकमूनिया और बनफसापुष्प—प्रत्येक ३ तोला ९ माशा ; बहेड़ाका बक्कल, गुठली निकाला हुआ आमला (आमला मुकश्शर), वंशलोचन, गुलाबके फूल, निलोफर पुष्प—प्रत्येक २२॥ माशा ; श्वेत चन्दन, कतीरा—प्रत्येक १२॥ माशा। द्रव्योंको कूट-छानकर ११ तोला ३ माशा बादामके तेलमें स्नेहाक्त (चर्ब) करें। पीछे उन्नाब, लिसोढ़ा (सपिस्ताँ)—प्रत्येक १०० नग, बनफसा पुष्प २ तोला ९ माशाको जलमें क्वाथ करें और उसको छानकर औषधसे ड्योढ़गुना प्रमाणमें हड़के मुरब्बाका शीरा मिलाकर अतरीफल प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—रातको सोते समय ७ माशा अतरीफल १२ तोला अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—मस्तिष्कका शोधन करता है। शिरोरोग, शूल, मलावष्टम्भ (कब्ज), मालीखोलिया, सदा बना रहनेवाले प्रतिश्याय (नजला दायमी) और वाष्पारोहणके लिये अतीव गुणकारी है।

२—अतरीफल मुलय्यन

द्रव्य और निर्माणविधि—

काबुली हड़का बकला, पीली हड़का बकला, काली हड़, आमला (मुकश्शर अर्थात् गुठलीरहित), श्वेत त्रिवृत् (निशोथ)—प्रत्येक १॥ तोला, रेवन्दचीनी, सौंफ, मस्तगी, उस्तूखूदूस—प्रत्येक ३॥। तोला, भुलभुलाया हुआ (मुसव्वी) सकमूनिया ७॥ तोला। इनको कूट-छानकर आवश्यकतानुसार बादामके तेलमें स्नेहाक्त (चर्ब) करके तिगुने मधुके साथ विधिवत् अतरीफल बनायें।

मात्रा और अनुपान—रातको सोते समय ६ माशा अतरीफल १२ तोला सौंफके अर्कके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—मलावष्टम्भ (कब्ज) के लिये गुणकारी है। आमाशय और आन्त्रशूलमें लाभकारी है। प्रधानतया कब्ज वा मलावरोधजनित मस्तिष्करोगोंके लिये लाभकारी है। पुराने शिरोशूलमें अतीव गुणकारी सिद्ध हुआ है।

विशेष उपयोग—कब्जनिवारक है।

३—अयारिज फैकरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

बालछड़, मस्तगी, दालचीनी, ऊदबलसाँ, हब्ब बलसाँ, तज (सलीखा), तगर (असारून)—प्रत्येक १ माशा ; सकोतरी एलुआ (सिब्र सकोतरी) १६ माशा। इनको कूट-पीसकर सौंफके अर्कमें घोंटकर वटिकायें बनायें।

मात्रा और अनुपान आदि—सोते समय सात गोलियाँ १० तोला सौंफके अर्कके साथ उपयोग करायें।

गुण तथा उपयोग—श्वास, पोथकी (जरबुल् जफ्न), शिरोगौरव, प्रारम्भिक लिंगनाश (नुजूलुल् माऽ), पक्षवध और मस्तिष्कके समस्त कफज रोगोंको लाभ पहुंचाता है।

विशेष लाभ—शिरोरोग और शिरोगौरवनाशक है।

४—कुर्स मुसल्लस

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुरमकी (बोल), अहिफेन, खुरासानी अजवायनके बीज, केशर, लुफाहकी जड़की छाल—प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा ; कुन्दुर, अन्जरूत, आमला, गिल अरमनी—प्रत्येक ७ माशा। सबको कूट-छानकर अर्क गुलाब और काहूके रसमें तिकोनी टिकियाँ बनाएँ।

मात्रा और सेवन-विधि—एक टिकिया पीसकर कनपुटी और मस्तक पर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—निद्राजनक है। शिरोशूल और अर्धावभेदकके लिये लाभकारी है।

५—माजून सुदाअ

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेतचन्दन, कतीरा—प्रत्येक ३ तोला ; पीली हड़का बकला, गुलाबके फूल प्रत्येक ६ तोला ; आमला ५ तोला, काबुली हड़का बकला, काली हड़, गुलबनफशा, भुना हुआ अमलतासका गूदा—प्रत्येक २ तोला ; बीचसे अस्थि निकाला हुआ और छिला हुआ त्रिवृत् अर्थात् निसोथ (तुर्बुद मुजव्वफ खराशीदा), सूखी धनियाँ—प्रत्येक ८ तोला ; बादामका मग्ज ६ तोला, पोस्तेका दाना (खशखाश) ३ तोला । सब द्रव्योंको अलग-अलग बारीक पीसकर ५ तोला बादामके तेलमें स्नेहाक्त (चर्ब) करें । फिर ‌ऽ॥। तीन पाव मिश्रीकी चासनी करके उसमें मिला लें ।

मात्रा और अनुपान—१ तोला सबेरे और १ तोला सायंकाल गोदुग्धके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—चिरज शिरोशूलमें लाभकारी है और कासको भी लाभ पहुँचाती है ।

६—शर्बत आमला

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलकी स्वरस १ सेर, गोदुग्ध २ सेर दोनोंको मिलाकर कलईदार देगचीमें अग्निपर पकायें । जब दूध फट जाय तब अग्निसे उतारकर टपका (मुकत्तर कर) लें और आमलकी स्वरसके समप्रमाण चीनी मिलाकर शर्बतकी चाशनी कर लें ।

मात्रा और अनुपान—२ तोला उक्त शर्बत ६ तोला सौंफके अर्क या ३ माशा खमीरए गावजबान अंबरीके साथ या किसी अन्य उपयुक्त अनुपानके साथ सम्मिलित करके सेवन करें ।

गुण और उपयोग—शिरोभ्रमण (दौरान सिर) के लिये अत्युपयोगी है । दिमागमें ताजगी, उल्लास, और शक्ति उत्पन्न करता है ।

७—हब्ब अयारिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

हब्ब बलसाँ, ऊद बलसाँ, ईरसा, तगर (आसारून), तज कलमी, शुद्ध केसर, पीत एलुआ (सिब्रजर्द), मस्तगी रूमी, बालछड़ (संबुलत्तीब) सम-

प्रमाण लेकर सबको बारीक करके शुद्ध मधु या सौंफके अर्कमें घोटकर चना प्रमाण की वटिकायें बना लें।

मात्रा और अनुपान आदि—पाँच या सात वटिकाएँ रातको सोते समय जल या अर्क सौंफ १२ तोलाके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—समस्त कफज शिरोव्याधियोंके लिये लाभकारी है। प्रारंभिक लिंगनाश (नुजूलुलमाऽ), सार्वदिक प्रतिश्याय (दायमी नजला) और अर्धावभेदकमें विशेष रूपसे लाभकारी है।

८—हब्ब बनफशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

अस्थि दूर किया हुआ (मुजव्वफ) श्वेत त्रिवृत् (निसोथ), मुलेठीका सत, गुलाब के फूल, बनफशा पुष्प—प्रत्येक ७ माशा; सकमूनिया, गारीकून—प्रत्येक ३॥ माशा। सबको कूट-छानकर ताजा जलमें घोटकर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा सवेरे ताजा जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—शिरोशूल और उष्ण (अर्थात् पित्तज और रक्तज) नेत्राभिष्यंदके लिये लाभकारी है। वक्ष और मस्तिष्कस्थ मलोंका शोधन करता है।

९—हब्ब शिफा

द्रव्य और निर्माणविधि—

धतूर बीज ३। तोला, रेवंदचीनी २॥ तोला, सोंठ १। तोला, बबूलका गोंद १। तोला। बबूलके गोंदको जलमें घोलकर शेष द्रव्योंको कूट-छानकर उसमें मिलायें और चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—एक गोली सवेरे और एक गोली सायंकालको जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—शिरोशूलको मिटाती है। समस्त शीतल (अर्थात् वातज और कफज) और प्रायः उष्ण व्याधियोंमें लाभकारी है। जीर्णज्वरके लिये गुणकारी है। यौवनको स्थिर रखती और स्वास्थ्यकी रक्षा करती है। इसके उपयोगसे अहिफेन सेवनकी आदत छूट जाती है।

सूर्यावर्त्त-अर्धावभेदक—

१—अतरीफल फौलादी

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवेज मुनक्का), सैंधवलवण, पीपल—प्रत्येक १४ माशा, पीली हड़का बकला, लौह भस्म—प्रत्येक २ तोला ४ माशा ; सतावर ३॥ तोला, मुलेठी ४ तोला ८ माशा, सूखा आमला १० तोला। इनमें कूटने योग्य द्रव्योंको कूट-छानकर बादामके तेलमें स्नेहाक्त करें और मवेज (मुनक्का) पीसकर मिश्री २० तोला, शुद्ध मधु ३० तोलाकी चाशनीमें अतरीफल बना लें।

मात्रा और अनुपान प्रतिदिन सवेरे ५ माशा अतरीफल ताजा जलके साथ या रात्रिमें सोते समय १२ तोला अर्क गावजबानके साथ खायँ।

गुण तथा उपयोग—नेत्ररोग जैसे—लिंगनाश (नुज़ूलुलमाऽ अर्थात् मोतियाबिंदु) विशेषतया अर्धावभेदकके लिये अतिशय गुणकारी है। वातार्श और रक्तार्श एवं अग्निमांद्य-अजीर्णके लिये लाभकारी है।

२—सफ़ूफ़ असाबा व शक़ीक़ा

द्रव्य और निर्माणविधि—

उस्तूखूदूस ६ तोला, शुष्क धनियाँ ४ तोला और कालीमिर्च ७२ नग सबको कूट-छानकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन विधि—दश माशा चूर्ण सूर्योदयसे पूर्व जलसे फाँकें।

गुण तथा उपयोग—आवेग रोकनेके लिये परीक्षित है। शिरोशूल, अर्धावभेदक और अनन्तवात (असाबा) में लाभकारी है।

३—हब्ब शक़ीक़ा

द्रव्य और निर्माणविधि—

अहिफेन, कपूर, खुरासानी अजवायन—प्रत्येक १ माशा। सबको जलमें पीसकर मसूर प्रमाणकी वटिकायें बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ या २ गोली गुलरोगनमें हल करके नाकमें टपकायें। कर्णशूलमें कानके भीतर डालें।

उपयोग—अर्धावभेदक और कर्णशूल नाशक है।

अनन्तवात (असाबा)—

१—तिरियाक असाबा

द्रव्य तथा निर्माणविधि और सेवनविधि आदि—

उस्तूखूद्दूस ६ माशा, शुष्क धनियाँ ४ माशा, कालीमिर्च ६ दाना। सबको डेढ़ छटाँक जलमें पीसकर सूर्योदयसे पूर्व बिना मीठा मिलाये पिलायें। परन्तु औषध सेवनोपरांत बताशा या किंचित् मिश्री खिलावें। क्योंकि कभी-कभी इसे पीनेके पश्चात् कै हो जाती है। यह तिरियाक अर्धावभेदक और अनन्तवात (असाबा) उभय रोगोंके लिये परम गुणकारी एवं सिद्ध भेषज है।

२—हब्ब असाबा

द्रव्य और निर्माणविधि—

सर गुल बनफशा ७॥ माशा, भुलभुलाया हुआ (मुसव्वी) सकमूनिया १ माशा और अस्थि निकाला हुआ और छीला हुआ अकबराबादी त्रिवृत् वा निसोथ (तुर्बुद अकबराबादी मौसूफ) ४ माशा। सबको बारीक पीसकर कतीरा के लुआबमें गूँधकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनाकर सायामें सुखायें।

मात्रा और अनुपान—७ गोलियाँ प्रति दिन-रातको सौंफके अर्कसे खायें।

उपयोग—अनन्तवातमें गुणकारी है।

३—नसवार

द्रव्य, सेवनविधि इत्यादि—

समुन्दरफल, दक्खिनी कालीमिर्च-प्रत्येक १ नग और नौशादर २ माशा। तीनोंको बारीक पीसकर सूर्यकी ओर मुख करके नस्य लें।

मस्तिष्क दौर्बल्य—

१—अतरीफल उस्तूखूद्दूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का बकला, काबुली हड़का बकला, काली हड़, बहेड़ाका छिलका, गुठली निकाला हुआ सूखा आमला, बसफाइज, रूमीमस्तगी, अफ्तीमून (विलायती अकाशबेल), किशमिश, बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवेज मुनक्का)—प्रत्येक २ तोला १०॥ माशा ; श्वेत त्रिवृत् (निसोथ) और उस्तूखूद्दूस—प्रत्येक ५ तोला

६ माशा। सब द्रव्योंको कूट-छानकर हड़ोंके चूर्णको मीठे बादामके तेलसे स्नेहाक्त (चर्ब) कर लें। पीछे द्रव्योंके प्रमाणसे तिगुना शुद्ध मधु मिलाकर अतरीफल बना लें।

मात्रा और अनुपान—३॥ माशा यह अतरीफल अर्क गावजबान १२ तोलाके साथ रातमें सोते समय या तड़के सवेरे खिलायें।

गुण तथा उपयोग—आमाशय और मस्तिष्कको मलोंसे शुद्ध करता है। वातज और कफज व्याधियोंमें अतीव गुणकारी है। इसके निरन्तर सेवनसे बाल काले रहते हैं।

२—अतरीफल दिमाग-अफरोज

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का बकला २ तोला, बहेड़ाका बकला २ तोला, गुठलीविरहित आमला (आमला मुकश्शर) २ तोला, उस्तूखुदूस २ तोला, मीठे बादामका मग्ज ५ तोला, मीठे कद्दू के बीजकी गिरी (मग्ज) ६ तोला, तरबूजके बीजकी गिरी ६ तोला, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी ६ तोला, नारियलकी गिरी (खोपरा) ६ तोला, सफेद पोस्तका दाना (तुख्म खशखाश सफेद) २ तोला, चाँदीके वरक २५ नग, मिश्री २ सेर और बादामका तेल ५ तोला। इनसे यथाविधि अतरीफल प्रस्तुत करें।

मात्रा—१ तोलासे २ तोला तक।

उपयोग—मस्तिष्कका शोधन करता है।

३—कुश्ता मिरजान जवाहरवाला

द्रव्य और निर्माणविधि—

प्रवालशाखा १ तोला, माणिक ३ माशा, अंबर १ माशा, चाँदीके वरक ३ माशा, सोनेके वरक १ माशा, पन्ना ५ माशा। सबको १० तोला केतक्यर्कमें खूब खरल करके टिकिया बनाकर कपड़मिट्टी करके १० सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—इसमेंसे दो चावल भस्म १ तोला सादा खमीरा गावजबानके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—उच्च श्रेणीका मस्तिष्क बलदाता (मेध्य) है। प्रतिश्याय (नजला व जुकाम), कास, शिरोशूल और विस्मृति आदि मस्तिष्क-दौर्बल्यजनित व्याधियोंमें लाभकारी है। शुक्रमेहमें भी उपकारी है। यकृत् और हृदयको भी बल प्रदान करता है।

४—खमीरा अबरेशम (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम ८४ तोला, जलमें डूब जानेवाला वजनी काला अगर (ऊद गरकी) ८ माशा, बालछड़ (संबुलुत्तीब), मस्तगी, बिजौरा फल-त्वक् (पोस्त तुरंज), लौंग, इलायची दाना, तमालपत्र (साजिज हिंदी)—प्रत्येक १० माशा ; श्वेत चन्दन १ तोला। समस्त द्रव्योंको कपड़ेमें बाँधकर अर्क गावजबान, अर्क गुलाब, मीठे सेबका स्वरस, मीठे अनारका रस, मीठे बिहीका रस—प्रत्येक २८ तोला और वर्षा जल ४ सेरमें क्वाथ करें। जब जल शुष्क हो जाय तब ꠳। पाव भर मधु और डेढ़ पाव मिश्री मिलाकर खमीराकी चासनी बना लें।

मात्रा और अनुपान—डेढ़ माशा खमीरा १२ तोला अर्क गावजबानके साथ या अन्य उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—हृदय और मस्तिष्कको बल प्रदान करता है। दृष्टिके लिये लाभकारी है। इसके उपयोगसे दिलकी धड़कन और विद्वेष (वहशत) के विकार दूर हो जाते हैं।

५—खमीरे गावजबान

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजबान (पत्र) २॥ तोला, गावजबान पुष्प, छिली हुई शुष्क धनियाँ (कश्नीज खुश्क मुकश्शर), श्वेत बहमन, रक्त बहमन, श्वेत चन्दन, कंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, बालंगू बीज, फरंजमुश्क (रामतुलसी बीज) और बिल्लीलोटन (बादरंजबूया)—प्रत्येक १ तोला। इन्हें रातको २ सेर जलमें भिगोएँ। सवेरे क्वाथ करें। जब तृतीयांश जल शेष रह जाय तब मल-छानकर १ सेर चीनी और ꠳। पाव भर शुद्ध मधु मिलाकर चाशनी करें।

मात्रा और अनुपान—१ तोला खमीरा चाँदीका वरक लपेट कर १२ तोला अर्क गावजबान या ताजा जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—दिल और दिमागको पुष्ट बनाता है। दृष्टिको लाभ पहुंचाता, प्यास बुझाता और विद्वेष (वहशत) को दूर करता है।

६—खमीरे गावजबान अंबरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजबान पत्र ३ तोला, गावजबान पुष्प, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम,

शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, बिल्लीलोटन, उस्तूखूदूस, बालंगू बीज, तुख्म फरंजमुश्क (रामतुलसी बीज), श्वेत तोदरी और रक्त तोदरी—प्रत्येक १ तोला, अंबर १॥ तोला, चाँदीके वरक ६ माशा, चीनी ऽ१ सेर, मधु ऽ। पाव भर। इनसे यथाविधि खमीरा बनायें।

मात्रा और अनुपान—प्रति दिन ५ माशा खमीरा, १२ तोला अर्क गावजबान या ताजा जलके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह खमीरा दिल और दिमाग तथा दृष्टिको शक्ति प्रदान करता है तथा दिलकी धड़कनको दूर करता है। विद्यार्थी और दिमागी काम करनेवाले लोगोंके लिये उत्कृष्ट भेषज है।

७—माजून फलासफा

द्रव्य और निर्माणविधि-

बाबूना १॥ तोला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, गुठली निकाला हुआ आमला (आमला मुकश्शर), काली हड़, चीता, जरावंद मुदहरज (ईश्वरमूल भेद), सालम मिश्री, बाबूनाकी जड़, चिलगोजाकी गिरी, ताजा खोपरा—प्रत्येक ३ तोला और बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवेज मुनक्का) ६ तोला। सबको कूट-छानकर द्विगुण मधुकी चाशनीमें मिलायें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा माजून सौंफका अर्क और मकोयका अर्क ६-६ तोलाके साथ प्रातःकाल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—श्रेष्ठ एवं उत्तमांगोंके लिये लाभकारी है। हृदय, मस्तिष्क और यकृत्को शक्ति प्रदान करती है, पाचनशक्तिको सुधारती है, सहवासशक्तिकी वृद्धि करती (बाजीकरण) है; विस्मृति रोगको दूर करती और स्मरणशक्तिको बढ़ाती (मेध्य) है। कटिशूल और यकृच्छूलके लिये गुणकारी है। मुखकी दुर्गंधि नाश करती और दाँतोंको दृढ़ करती है।

८—माजून मुकव्वी दिमाग

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का बकला ३ तोला, बहेड़ाका बकला ३ तोला, आमला (गुठली रहित) ३ तोला, उस्तूखूदूस १ तोला, छिली हुई धनियाँ (कश्नीज मुकश्शर) २ तोला, बादामकी गिरी ६ तोला, कद्दूके बीजकी गिरी ६ तोला, तरबूजके बीजकी गिरी ६ तोला, खरबूजाकी बीजकी गिरी ६ तोला, खीरा-ककड़ीके बीज की गिरी ६ तोला, नारियलकी गिरी ६ तोला, श्वेत खसबीज ६ तोला, चाँदीका

वरक २ नग और मिश्री ऽ१ सेर। प्रथम तीनों द्रव्योंको कूट-छानकर बादामके तेलसे स्नेहाक्त (चर्ब) कर लें। शेष द्रव्योंको कूट-छानकर पृथक रखें। फिर मिश्री की चाशनी करके उसमें चाँदीके वरक हल करके शेष द्रव्योंके बारीक कपड़छान चूर्णको भलीभाँति मिला लें।

मात्रा और अनुपान—१ तोला सबेरे और १ तोला रातमें सोते समय १० तोले गावजबानके अर्कके साथ उपयोग करें। एक पाव दूधके साथ भी उपयोग कर सकते हैं।

उपयोग—मस्तिष्कको बल प्रदान करता है।

९—हरीरा तकवियत दिमाग

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठे बादामकी गिरी ५ दाना, मीठे कद्दू के बीजकी गिरी ३ माशा, तरबूज के बीजकी गिरी ३ माशा, बबूलका गोंद ३ माशा, गेहूंका सत (निशास्ता) ३ माशा और मिश्री २ तोला। इनको जलमें पीसकर मन्दाग्निपर रखें। जब गाढ़ा होजाय तब उतारकर सेवन करें।

वक्तव्य—यह मस्तिष्ककी रूक्षता, प्रतिश्याय (नजला) और शुष्क कासके लिये भी बहुत गुणकारी है। नजला (प्रसेक) और पतले दोषोंके गिरनेकी दशामें इसमें सफेद खशखाशके बीज ३ माशा और पोस्तेकी डोडी (कोकनार) १ नग और योजित करें। यदि अधिक स्निग्धता (तरतीब) इष्ट हो तो १० तोला छागीदुग्ध या गोदुग्ध उसमें और योजित कर दिया करें। यदि आमाशय निर्बल हो तो इसमेंसे गेहूंका सत (निशास्ता) और बबूलका गोंद निकाल दें और छोटी इलायचीके बीज १ माशा और योजित करें।

१०—हलवा बादाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठे बादामकी छिलका दूर की हुई गिरी १ पावको ऽ१ सेर गोदुग्धमें बारीक पीसकर शीरा निकालें। इसमें गायका मक्खन १ पाव, चीनी १ सेर, इसबगोलकी भूसी १० तोला योजित करके सबको भली-भाँति मिलायें और कोयलोंकी मृदु अग्निपर कलईदार देगचीमें इतना पकायें कि हलवाकी भाँति गाढ़ा हो जाय।

मात्रा और अनुपान—२ तोलासे ३ तोला तक एक पाव गोदुग्धके साथ सवेरे खायें।

गुण तथा उपयोग–दिमागको पुष्ट करता और रूक्षता एवं मस्तिष्कदौर्बल्य-जनित शिरोभ्रमण (दौरान सिर) को निवारण करता है। शुक्रप्रमेहके लिये परम गुणकारी एवं सिद्ध भेषज है।

अनिद्रा—

१—ख्वाब आवर

द्रव्य और निर्माणविधि—

हरी धनियाँका रस २ तोला, शुद्ध सिरका, रोगन गुल (गुलाबपुष्पतैल), श्वेत चन्दन, काहूका बीज, निलोफर बीज, कुलफाके बीज—प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा, अहिफेन ४ रत्ती, केसर ४ रत्ती। द्रव्योंको पीसकर मिला लें। अग्निपर न रखें। केवल खरल करके लेप प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि–आवश्यकतानुसार मस्तकपर धीरे-धीरे मर्दन करें।

गुण तथा उपयोग–नींद लानेके लिये श्रेयस्कर उपक्रम है।

२—रोगन मुजर्बा राजी

द्रव्य और निर्माणविधि-

धतूर, कृष्ण खर्बक–प्रत्येक १ भाग, पोस्तेकी डोंडी, खुरासानी अजवायन, काहूके बीज—प्रत्येक २ भाग। सबको अधकुट करके जलमें पकायें। जब औषधद्रव्य जल जायँ तब हाथसे मलकर छान लें और तिलका तेल डालकर मृदु अग्निपर पकायें। जब पानी जल जाय और तेल मात्र शेष रह जाय तब उतार कर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—सोते समय सिरकी चँदिया, हाथकी हथेलियों और पैरके तलवोंपर मलें।

गुण तथा उपयोग—अत्यन्त अनिद्रा रोगमें उपकारी है।

३—रोगन लुबूब-सबआ (बीजोत्थ स्नेहसप्तक)

द्रव्य और निर्माणविधि—

फिन्दकका मग्ज, पिस्ताका मग्ज (गिरी), मीठे बादामका मग्ज, चिलगोजा का मग्ज, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, अखरोटका मग्ज (गिरी) और निष्तुषीकृत तिल (कुन्जद मुकश्शर)। इनको समप्रमाण लेकर कूटकर गरम करके यथाविधि निचोड़ कर तेल निकाल लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन थोड़ा सा तेल सिरपर अभ्यंग कराके खूब शोषित करायें ।

गुण तथा उपयोग—यह तेल मस्तिष्कमें स्निग्धता (तरी) उत्पन्न करके रूक्षताका निवारण करता है और नासिकागत व्रणका पूरण करता है ।

विशेष उपयोग—अनिद्राको दूर करता और गम्भीर निद्रा उत्पन्न करता है।

४—शर्बत गावजबान (जर्दीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजबान ३ तोला ६ माशा, बिल्लीलोटन १ तोला १०॥ माशा, गुलाब के फूल, चन्दन (तराशए संदल), बालछड़, छडीला—प्रत्येक १३॥ माशा । सबको अर्कगुलाब ꠱॥ आध सेर और वर्षाजल ꠱॥ आध सेरमें रात्रिभर भिगोकर सवेरे इतना पकायें कि तीन पाव जल शेष रह जायँ। फिर छानकर मिश्री ꠱॥ आध सेर मिलाकर शर्बतकी चाशनी कर लेवें। इस चाशनीमें प्रति तोला शर्बतके हिसाबसे २॥ रत्तीके लगभग क्लोरल हाइड्रेट (Chloral hydrate) किंचित् गावजबानार्कमें विलीन करके मिला दें ।

मात्रा और अनुपान—२ तोलासे ४ तोला तक अकेले या गावजबानार्क इत्यादिमें मिलाकर पिलायें ।

गुण तथा उपयोग—क्लम, श्रांति और चिंताके कारण या ज्वरकी प्रारंभावस्थामें यदि अनिद्राका विकार हो जाय तो यह शर्बत असीम गुणकारी सिद्ध होता है । इससे गंभीर निद्रा आती है और दिमागको बहुत आराम मिलता है । यह वेदनाको शमन करता है। धनुर्वात, मृगी, अपतन्त्रक आदि आक्षेपयुक्त व्याधियोंमें भी इससे बहुत उपकार होता है ।

विस्मृति—

१—अक्सीर हाफिजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठे बादामका छिलका उतारा हुआ मग्ज, छिलका उतारा हुआ कद्दूके बीजका मग्ज, सौंफ, सफेद खशखास-प्रत्येक ५ तोला ; छोटी इलायचीके बीज २ तोला, रौप्य भस्म ५ माशा, कूजा मिश्री २ तोला । सबको महीन पीसकर चूर्ण बना लें ।

मात्रा और अनुपान-रात्रिमें सोते समय १ तोला चूर्ण पाव भर-गोदुग्ध से खा लिया करें ।

गुण तथा उपयोग—स्मरणशक्तिको बढ़ाता है। दिमाग (मस्तिष्क) को पुष्ट करता है। सार्वदिक (दायमी) जुकाम, नजला और मस्तिष्कगत रूक्षताके लिये अतीव गुणकारी है।

२—माजून निसयाँ

द्रव्य और निर्माणविधि-

कुन्दुर, वचा, नागरमोथा (सोद कूफी)—प्रत्येक ३ तोला ; सोंठ, कालीमिर्च—प्रत्येक १॥ तोला ; शुद्ध मधु समस्त द्रव्योंसे द्विगुण लेकर चाशनी करें और समस्त द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण चाशनीमें मिलाकर रखें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा यह माजून १० तोला गावजबानार्कके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—विस्मृतिके लिये उपयोगी है और मस्तिष्क-बलदायक है।

३—माजून बोलस

द्रव्य और निर्माणविधि-

भल्लातकी (भिलावाँ), विलायती अफतीमून (अकाशबेल)—प्रत्येक ३ तोला ; तज, जरावन्द मुद्हरज (ईश्वरमूल भेद), बच, केसर, दालचीनी, मस्तगी—प्रत्येक २। तोला ; मीठा कुट (कुस्त शीरीं), सुदाब बीज, श्वेत मिर्च-प्रत्येक ३ तोला ; चलनीसे चाला हुआ गारीकून ६ तोला, पीला एलुआ २२ तोला, समस्त द्रव्योंके प्रमाणसे तिगुना मधु। औषधद्रव्योंका कपड़छान चूर्ण बनाकर मधुकी चाशनीमें मिला लें।

मात्रा और अनुपान—३ माशासे ७ माशा तक गावजबानार्क या ताजा जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—मस्तिष्कको बल प्रदान करता, विस्मृतिको निवारण करता तथा स्मरणशक्तिको पुष्ट करता है।

४—माजून बराय निसयाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुन्दुर, कालीमिर्च, नागरमोथा, बोल (मुरमक्की), केसर—प्रत्येक भाग ; मधु समस्त द्रव्योंके प्रमाणसे तिगुना। यथाविधि माजून प्रस्तुत करें स्मरण

 कर्त्ता

मात्रा और अनुपान—३॥ माशा प्रमाण ताजा जल या मिश्रेयार्क (अर्क सौंफ) आदिके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—विस्मृति रोगके लिये शैखुर्रईस बूअलीसीना द्वारा परीक्षित उत्कृष्ट योग है ।

५—माजून लुबूब

द्रव्य और निर्माणविधि—

अम्बर अशहब, सोनेका वरक, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, इजखिर, बिल्लीलोटन, अगर (ऊद), काबुली हड़का बकला, दारचीनी, कुन्दुर, माईं—प्रत्येक ४॥ माशा ; पिस्ताकी गिरी, खोपराकी गिरी (मग्ज नारजील मुकश्शर), बादामकी गिरी, एक प्रकारके हरा दाना (हब्बतुल् खजरा) की गिरी, फिन्दककी गिरी, चिलगोजाकी गिरी—प्रत्येक ६ माशा ; शुद्ध श्वेत मधु २२॥ तोला । यथाविधि माजून प्रस्तुत करें ।

मात्रा और अनुपान—४॥ माशा प्रतिदिन सेवन करें ।

गुण और उपयोग—यह हकीम उलवीखाँका परीक्षित है । मस्तिष्कको पुष्टि प्रदान करती है । विस्मृति, मूर्खता और बुद्धिभ्रंश प्रभृति शीतल मस्तिष्क व्याधियोंमें उपकारी है ।

६—सफूफ हिफ्ज

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुन्दुर २ तोला, मस्तगी १४ माशा, पीपल, अम्बर, गावजबान (लिसा-उस्सौर), बिल्लीलोटन—प्रत्येक ३॥ माशा ; काकनज ३। तोला, चीनी समस्त द्रव्योंके सम प्रमाण । सबको महीन पीसकर चीनी मिलाकर चूर्ण बना लें ।

मात्रा और अनुपान—७ माशाकी मात्रामें उष्ण जलसे सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम शरीफखाँका परीक्षित विस्मृति रोगके लिये अतीव गुणकारी है । मस्तिष्कका शोधन करता और शरीरकी प्रकृतोष्मा (हरारते गरीजी) को बढ़ाता है ।

उन्माद एवं मालीखोलिय—

१—दवाए जुनून (दवाउश्शिफा)

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी चन्दन (सर्पगन्धा ?—जो बिहार और बंगालमें मिलती है) को साया से सुखाकर महीन चूर्ण बना लिया जाय ।

मात्रा और सेवन विधि—सवेरे और सायंकाल दो-दो माशा साधारण जलके साथ दें।

गुण तथा उपयोग—उन्माद, अपस्मार और अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में अतीव लाभकारी है। शामक और स्वापजनक है।

वक्तव्य—तिब्बिया कालेज लाहौरके भूतपूर्व प्रिन्सिपल स्वर्गवासी डाक्टर जेबुर्रहमान महाशय इसका प्रचुरतासे प्रयोग करते थे।

हिन्दुस्तानी दवाखाना दिल्लीकी यह प्रख्यात औषधि है जहाँ इसे "दवा-उश्शिफा" भी कहते हैं। वैद्योंके बीच यह सर्पगन्धाके नामसे प्रसिद्ध है। इसकी वैज्ञानिक संज्ञा रावूल्फिया सर्पेंटिना (Rauwolfia Serpentina) है। हमारे चुनार और काशीके आस-पास इसीकी एक अन्य जाति प्रचुरतासे उपलब्ध होती है। इसे यहांके निवासी पागलकी बूटी और वैज्ञानिक परिभाषामें रावूल्फिया कैनेसेंस (Rauwolfia Canescens) कहते हैं। मेरे अनुभवमें यह उपयुक्त बूटीसे गुणमें किसी प्रकार हीन नहीं है।

२—मत्बूख अफतीमून

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफ्तीमून (पोट्टलिकाबद्ध), सनाय मक्की—प्रत्येक २ तोला; गावजबान, पित्तपापड़ा (शाहतरा), बस्फाइज फुस्तकी (छिली हुई अधकुटी), उस्तूखूदूस, ऊदसलीब, कन्तूरियून सुद्र, बिल्लीलोटन, बनफशापुष्प, निलोफरपुष्प, मकोय, हंसराज (परसियावशाँ), कासनी मूलत्वक, मिश्रेया (सौंफ) मूलत्वक, मुलेठी, कासनी बीज, खीरा-ककड़ीके बीज, खरबूजाके बीज, पीली हड़का बकला, काबुली हड़का बकला, काली हड़, गुलाबके पुष्प—प्रत्येक ६ माशा; उन्नाब १० दाना, लिसोढ़ा २० दाना। कूटने योग्य द्रव्योंको यवकुट करके अफतीमूनको छोड़कर शेष समस्त द्रव्योंको १॥ पाव जलमें क्वाथ करें। आगामी सुबह पोटलीको खूब मलकर छान लें और कुनकुना करके अमलतासका गूदा और यवास शर्करा—प्रत्येक ४ तोला; खुरासानी शीरखिश्त, सूर्यतापी गुलकन्द—प्रत्येक ३॥ तोला उसमें घोलकर छान लें।

मात्रा और अनुपान—यह एक मात्रा है। ऐसा एक मात्रा काढ़ा ४॥ माशा मीठे बादामका तेल मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम उलवीखांके पिता हकीम मीरमुहम्मद हादीका अन्वेषण और परीक्षा किया हुआ योग है। दग्ध दोषोंका उत्सर्गकर्त्ता

और विरेचनकर्त्ता है और विषादोन्माद या मद (मालीखोलिया), विद्वेष (वसवास), उन्माद और अपस्मार इत्यादि वातिक व्याधियोंमें लाभकारी है ।

३—मुफर्रेह

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुक्ता, तृणकान्त (कहरुवा), प्रवालमूल (बुस्सद)—प्रत्येक ५। माशा ; कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, जलाया हुआ नहरी कैंकड़ा—प्रत्येक ५ माशा ; गावजबान १७॥ माशा, सोनेके वरक १॥ माशा, फरंजमुश्क बीज, बादरुज बीज, बिल्लीलोटन बीज–प्रत्येक १०॥ माशा ; श्वेत और रक्त बहमन, अगर(ऊदहिन्दी), धोया हुआ (मगसूल) हज्र अरमनी, धोया हुआ (मगसूल) लाजवर्द, मस्तगी, तज, दालचीनी, केसर, इलायची दाना (क्षुद्रैला बीज), वृहदैला, कबाबचीनी–प्रत्येक ४॥ माशा ; अफ्तीमून ८॥। माशा, उस्तूखूदूस १०॥ माशा, बनफशई जदवार ४॥ माशा (इसके अभावमें प्रतिनिधि स्वरूप नरकचूर अर्थात् जुरंबाद ६ माशा डालें) ; दरूनज ६ माशा, कासनी बीज १७॥ माशा, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी १४ माशा, यवासशर्करा ३ तोला, गुलाबके फूल १४ माशा, कस्तूरी ६ माशा, कपूर ४॥ माशा, अम्बर अशहब ३॥ माशा, संबुल हिन्दी, साजिज (तेजपत्ता)–प्रत्येक ७ माशा ; शुद्ध मधु समस्त द्रव्योंके प्रमाणसे तिगुना। इनसे यथाविधि माजून बना लें और ४० दिन उपरांत सेवन करें ।

मात्रा–४॥ माशा ।

गुण तथा उपयोग—इस योगके प्रवर्तक शैख बू अलीसीना और परीक्षक हकीम मोमिन अली इत्यादि हैं। यह वातिक एकांतप्रियता (तवहहुस) और मालीखोलियाके प्रायः भेदोंमें लाभकारी है । यह उत्तमांगोंको बल प्रदान करता है तथा आमाशयिक व्याधियों और दिलकी धड़कनके लिये भी असीम गुणकारी है ।

वक्तव्य—यदि रोगीकी प्रकृति उष्णता-प्रधान हो, तो केसर और कस्तूरीको घटाकर योगमें २। माशा कर दें और अफतीमून बिलकुल न डालें । इसके स्थानमें सनाय मक्की १४ माशा और पित्तपापड़ा (शाहतरा) आदि डाल दें एवं गुलाबके फूल ३ तोला, कुलफाके बीज २। तोला, वंशलोचन १७॥ माशा, काहू बीज ३॥ माशा और चन्दन १०॥ माशा और सम्मिलित करें । यदि शीतलताका प्रावल्य हो तो इसमें बिजौरेका छिलका, ऊदबलसाँ, सोंठ और पीपल–प्रत्येक १० माशा और जुंदबेदस्तर ६ माशा समाविष्ट कर दें और कपूर घटाकर १। माशा कर दें ।

हकीम अली गीलानी इसमें याकूत रुम्मानी ४॥ माशा और समाविष्ट किया करते थे।

४—मुफर्रेह याकूती

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुवर्ण भस्म ५ रत्ती, माणिक पिष्टी (याकूत महलूल), गावजबान, कासनी बीज, मुश्क काफ़ूर (कपूर भेद), श्वेत बहमन, ऊद कमारी (अगरु भेद), हज्र अरमनी, धोकर शुद्ध किया हुआ (मगसूल) लाजवर्द, तज, दारचीनी, केसर, क्षुद्रैला, बृहदैला, जदवार (निर्विषी)—प्रत्येक १० रत्ती, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा–प्रत्येक ११ रत्ती ; अवीध मोती पिष्टी (महलूल), कहरुवा पिष्टी, प्रवालमूल पिष्टी (बुस्सद महलूल)–प्रत्येक १ माशा ६ रत्ती ; अफ्तीमून २४ रत्ती, फरंजमुश्क बीज, बादरूज बीज, उस्तूखूदूस–प्रत्येक ३॥ माशा; खीरेके बीज, गुलाबके फूल–प्रत्येक ४॥ माशा ; दरूनज, बालछड़, यवास शर्करा, अम्बर अशहब—प्रत्येक १ माशा ६ रत्ती ; शर्बत सेब, शर्बत अनार—प्रत्येक ५ तोला ; शुद्ध मधु १० तोला। यथाविधि माजून कल्पना करें।

मात्रा और अनुपान—एक माशा प्रति दिन 'अर्क माउलजुब्न खास' के साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग–यह उत्तमांगोंको पुष्टि और शक्ति प्रदान करती है, मनः-प्रसाद उत्पन्न करती और वातिक अन्यथा ज्ञान (वसवसों) को दूर करती है। उन्माद, मालीखोलिया (मद) और अखिल मस्तिष्क रोगों एवं वातव्याधियोंमें उपकार करती है।

५—याकूती अम्बरईस

द्रव्य और निर्माणविधि—

याकूत रुम्मानी (अनारके दानेके समान रक्तवर्ण माणिक), गावजबान पुष्प, कासनी बीज, तिब्बती कस्तूरी, कपूर कैसूरी—प्रत्येक ४॥ माशा ; अवीध मोती चमकदार बड़े दानेका, कहरुवा शमई–प्रत्येक ६॥। माशा ; कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा–प्रत्येक ६ माशा ; स्वर्ण भस्म २। माशा, फरंजमुश्क बीज, बादरूज बीज, उस्तूखूदूस–प्रत्येक १०॥ माशा ; श्वेत बहमन, अगर (ऊदखास), अरमनी पाषाण (हज्र अरमनी), लाजवर्द, तज, दारचीनी, केसर, क्षुद्रैला, बृहदैला, जदवार खताई—प्रत्येक ४॥ माशा ; अफतीमून ११ माशा, दरूनज अकरबी, बालछड़, यवास शर्करा, अम्बर अशहब–

प्रत्येक ७ माशा; खीरेके बीजकी गिरी, गुलाबके फूल—प्रत्येक १८ माशा; अर्क गुलाब ३॥ तोला, शर्बत हुम्माज (चुक्र शार्कर), शर्बत सेब, मीठे अनार का शर्बत—प्रत्येक ११। तोला; मधु आवश्यकतानुसार। यथाविधि माजून प्रस्तुत करके चीनी या सोने-चाँदीके पात्रमें चालीस दिन तक सुरक्षित रखें। इसके पश्चात् सेवन करें।

मात्रा और अनुपान—३॥ या ४॥ माशा माजून ५ तोला गावजबानार्क या ५ तोला गुलाबार्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह उन्माद, भ्रम वा अन्यथा ज्ञान (वसवास) और अखिल वातिक रोगोंके लिये लाभकारी है तथा मस्तिष्क और हृदयको पुष्टि प्रदान करती है।

६—रोगन

द्रव्य और निर्माणविधि—

कद्दूके बीजकी गिरी, काहू बीज, खशखाश बीज (पोस्तेका दाना), बादाम की गिरी, छाँटा हुआ (मुकश्शर) तिल, खीरेके बीजकी गिरी, बारतंगके बीजकी गिरी। इनको सम प्रमाण लेकर तेल निकालें।

सेवन-विधि और मात्रा—आवश्यकतानुसार रोगीका सिर मुँड़वाकर उस पर यह तेल अभ्यंग करायें और उसकी नासिका तथा कानमें डालें।

गुण तथा उपयोग—समस्त प्रकारके उन्माद और मालीखोलियामें नींद लानेके लिये यह तेल हितकारक है।

७—हब्ब लाजवर्द

द्रव्य और निर्माणविधि—

धोया हुआ लाजवर्द १०॥ माशा, लौंग, सकमूनिया, अनीसून—प्रत्येक ३॥ माशा; गारीकून १७॥ माशा, बसफाइज १४ माशा, अयारिज फैकरा २१ माशा। इन सबको अजमोदा (करफ्स) के रसमें पीसकर वटिकायें बना लें।

मात्रा और अनुपान आदि—१०॥ माशा प्रमाणमें यह औषध माउलज्जुब्न या अर्क माउलज्जुब्न खासके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—उन्माद, मालीखोलिया और अखिल वातिक रोगोंमें उपकारी है। मान्य हकीम शरीफ खाँ महाशय इसका व्यवहार करते थे।

८—अर्क माउलजुब्न खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का बकला, काबुली हड़का बकला, काली हड़का बक्कल, हरा गिलोय, महानिंब (बकाइन) पत्र, बकाइनकी छाल, नीमकी छाल, निंब बीज, विजयसार पुष्प, गावजबान, कासनी बीज, कासनीमूल, हिरनखुरी, इमलीके बीजकी गिरी, आमलेके बीजकी छिली हुई गिरी (मग्जतुख्म आमला मुकश्शर), हड़का छिलका, सूखी धनियाँ, मौलश्री वृक्षत्वक्—प्रत्येक १० तोला ; पित्तपापड़ा (शाहतरा), चिरायता, सरफोंका, मेंहदीके पत्र, अबरेशम, लाल चन्दनका बुरादा, श्वेत चन्दन का बुरादा, शीशमका बुरादा, शुष्क मकोय, गुलाबके फूल, झरबेरीकी जड़की छाल, भंगमूल, बहेड़ाकी जड़की छाल, चमेली पत्र, आबनूसका बुरादा, उन्नाब, इक्षुमूल—प्रत्येक ५ तोला ; अमलतासका गूदा आधा सेर, माउलजुब्न (छेनेका पानी) ऽ। एक पाव और मजीठ ऽ। एक पाव । इन सबको मिलाकर ४० बोतल अर्क यथाविधि प्रस्तुत करें ।

मात्रा और सेवन-विधि—१० तोला अन्यान्य उपयुक्त औषधियोंके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—हर प्रकारके उन्माद, मालीखोलिया और अखिल वातिक रोगोंमें असीम गुणकारी है ।

अपस्मार (मृगी)—

१—अयोलीमिया

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़, काबुली हड़, बहेड़ा, आमला, उस्तूखूदूस—प्रत्येक ३ तोला ; ऊदसलीब १॥ तोला, अकरकरा १॥ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवेज मुनक्का) ऽ॥ सेर । समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर और मवीज मुनक्काको सिलपर पीसकर मिला लें और थोड़ा गरम करके रख लें ।

मात्रा और अनुपान—७ माशा जलसे सेवन करें ।

उपयोग—अपस्मारको दूर करता है ।

२—माजून जबीब

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफ्तीमून, उस्तूखूदूस, अकरकरा, बसफाइज फुस्तुकी—प्रत्येक ३ तोला। सबको कूट-छानकर गुठली निकाला हुआ मुनक्का (जबीब) १॥ पाव या बन-पलाण्डुकृत सिकंजबीन (सिकंजबीन अंसली) १॥ पावमें मिलाकर माजून बनाएँ।

मात्रा और अनुपान—१ से १॥ तोलातक प्रति-दिन उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून मृगीके लिये प्राचीन परीक्षित योगोंमें से है। हकीम मुहम्मद जकरिया राजीने इसको विशेषतः परीक्षित बतलाया है। इसके अतिरिक्त यह मस्तिष्कके कतिपय अन्यान्य वातिक रोगोंमें भी उपकारी है।

३—अक्सीर मरअ

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखिया, मानवकपालास्थिकी भस्म, अकरकरा, हिंगु, ऊदसलीब, जद-वार खताई—प्रत्येक ७ माशा; आमलासार गन्धक १॥। माशा, सोंठ ३॥ माशा, शर्करा ४ माशा। इन सबको भृङ्गराज स्वरस (शीरा भंगरा) में तीन-दिन लगातार खरल करके १-१ रत्तीकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान—१ गोली सवेरे और १ गोली सायंकाल ६ तोला अर्क मुंडीके साथ खिलायें।

उपयोग—अपस्मारमें अतीव उपयोगी है।

नेत्रगत रोग

नेत्राभिष्यन्द—

१—हब्ब सब्ज

द्रव्य और निर्माणविधि—

यमनी फिटकिरी (शिब्ब यमानी) २ तोला ४ माशा, अहिफेन १ तोला २ माशा, शुद्ध रसवत ४॥। तोला, केसर ५ रत्ती, नीमकी पत्ती ५ नग। इन सबको पीसकर लोहेकी कढ़ाहीमें थोड़ा जल डालकर लोहेके दस्तासे खूब घोटें। इसके बाद अग्निपर पकायें। जब गोली बँधने योग्य हो जाय, तब चना प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

सेवन-विधि और मात्रा—आवश्यकतानुसार अथवा १ गोली जलमें घिसकर पपोटोंपर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—वेदना शमन करती और रोगोत्पादक दोषको विलीन करनेके लिये परमोपयोगी है। नेत्राभिष्यंद और सिराजालक अर्थात् जाला (सबल) के अन्तमें अत्यन्त गुणकारी और परीक्षित है।

२—हब्ब सुर्ख़

द्रव्य और निर्माणविधि—

गेरू ४ तोला ८ माशा, अहिफेन १४ माशा, सोंठ, बबूलका गोंद—प्रत्येक २॥ माशा। इनको कूट-छानकर हरे धनियेके रस या पोस्त (पोस्तेकी डोंडी) के पानीमें घोंटकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—एक गोली जलमें घिसकर सवेरे, दोपहर और सायकाल पपोटोंपर सुहाता गरम लेप करें।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यन्दके लिये लाभकारी है। नेत्रकी लाली और वेदनाको दूर करती और दोषोंको विलीन करती है।

३—हब्ब क़्याह

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसवत ४ तोला [illegible] माशा, भुनी हुई फिटकरी [illegible] तोला [illegible] माशा, अहिफेन १ तोला २ माशा, नीमके पत्र ४ नग, केसर ४ रत्ती। इन सबका यथाविधि गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक गोली पोस्तेकी डोंडी (पोस्त ख़शख़ाश) के पानीमें घिसकर पपोटोंपर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियाँ नेत्रगत वेदना और लालिमाको दूर करती हैं। नेत्रके सिराजालक (सबल) के लिये लाभकारी हैं और दोषोंको भी विलीन करती हैं।

विशेष उपयोग—नेत्राभिष्यन्दके लिये विशेष उपयोगी है।

४—शियाफ़ अहमर लैयन

द्रव्य और निर्माणविधि-

धोया हुआ मसूराकृति शादनज (शादनज अदसी मग़सूल) २ तोला

११ माशा, जलाया हुआ तांबा २ तोला ४ माशा, अवीध मोती १ तोला २ माशा, बोल (मुरमक्की), कतीरा, बबूलका गोंद—प्रत्येक ७ माशा ; केसर, दम्मुल अख्वैन—प्रत्येक २॥ माशा । इन सबको खरल करके वर्ति (शियाफ) बना लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार नेत्रके ऊपर लगायें ।

गुण तथा उपयोग—पश्मशात सुलाक) और पलकोंके भारीपनको लाभकारी है तथा नेत्राभिष्यन्दकी अन्तिम अवस्थामें उपकारक है ।

५—पोटली

द्रव्य और निर्माणविधि—

पठानी लोध्र, फिटकिरी, मुरदासंग, हलदी, जीरा,—प्रत्येक ४॥ माशा ; अफीम चनाके बराबर, कालीमिर्च ४ नग, नीलाथोथा उड़दके दानाके बराबर । इन सबको पीसकर मलमलकी पोटलीमें बांध लें और पोस्तेकी डोंडीके पानीमें भिगोकर पीडित नेत्रपर टकोर करें ।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यंदके लिये परम हितकारी एवं परीक्षित है ।

६—अतरीफल कशनीजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़, काबुली हड़, काली हड़, गुठली निकाला हुआ आमला, बहेड़ेका बकला, शुष्क धनियाँ—प्रत्येक ५ तोला । इनको कूट-कपड़छानकर बादामके तेलमें मर्दन (स्नेहाक्त वा चर्ब) करके तिगुने मधुके साथ यथाविधि अतरीफल बनायें ।

मात्रा और अनुपान—रातको सोते समय ७ माशा अतरीफल १२ तोला अर्क गावजबानके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—आमाशयस्थ बाष्पोत्पत्तिके लिये लाभकारी है और उसके कारण, नेत्र, कर्ण एवं शिरमें प्रकट होनेवाली वेदनाके लिये हितकर है । नेत्राभिष्यन्दमें विशेष रूपसे लाभ पहुंचाता है । इसके अतिरिक्त मस्तिष्क एवं नेत्रको बल देनेवाला है ।

पोथकी (र'हे)—

१—शियाफ तूतिया जदीद

द्रव्य और निर्माणविधि—

तूतिया, फिटकिरी, पोटासी नाइट्रास—प्रत्येक ७॥ तोला ; कपूर ३॥ माशा ।

सबको भलीभाँति मिलाकर वर्तिकाएँ बना लें। आवश्यकता होनेपर नेत्रमें लगायें। परन्तु इससे पूर्व नेत्रमें कोकेन-द्रव डालकर उनको अवसन्न कर लें।

गुण तथा उपयोग—प्रतिश्यायजनित नेत्राभिष्यन्द, नेत्रगत जीर्ण लालिमा और कुकरों (पोथकी) में लाभकारी है।

२—मरहम चश्म

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध चाक्सू ६ माशा, शुद्ध अन्जरूत २ माशा, भुनी हुई फिटकिरी २ माशा, कज्जल २ माशा, जस्तेका फूला २ माशा, मिश्री २ माशा, नीमकी कोंपल ३ नग, २ नग छोटी इलायचीके बीज, येलो आक्साइड आफ मरकरी ४ रत्ती। इन सबको खूब खरल करके २॥ तोला वेजेलीनमें भलीभाँति मिलाकर रख लें।

सेवन-विधि और मात्रा—काजलकी भाँति पपोटे उलट कर उनपर लगा दिया करें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रकण्डू, नेत्रगत लालिमा, पोथकी (कुकरे) और अन्तिम नेत्राभिष्यन्दमें उपकारक एवं परीक्षित है।

३—सुरमे जाफरानी

द्रव्य और निर्माणविधि—

केसर, अहिफेन—प्रत्येक १॥ माशा ; जंगार, काला सुरमा, समुंदरझाग, लौंग, सोनामक्खी, रूपामक्खी, हरा कांच—प्रत्येक ३ माशा ; यशद भस्म ५ तोला। समस्त द्रव्योंको सुरमाकी भाँति महीन खरल करके रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक सलाई प्रति दिन नेत्रोंमें लगाया करें। यदि रोगीकी बुरी हालत हो तो पलकोंको उलटकर यह सलाई कुकरोंपर मल दें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रव्रणशुक्र (व्याजत्रण) अर्थात् फूली और पोथकी (रोहे) के लिये अतीव गुणकारी है। कास्टिक आदि प्रसिद्ध डाक्टरी भेषजोंसे भी उत्कृष्टतर है।

वक्तव्य—'अकसीर जरबुल अजफान' नामसे भी इसका उल्लेख हुआ है।

अर्म (जफरा-नाखूना)—

१—शियाफ जफरा मुज्मिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

जलाई हुई रूई २ तोला, जंगार ७ माशा और वरकी हड़तालका

(सत्व) ३ माशा । समस्त द्रव्योंको पीसकर एक सप्ताह मद्यमें तर रखें। पीछे वर्तिका बनाकर रख लें ।

सेवन-विधि—मद्यमें घिसकर नेत्रमें लगायें ।

गुण तथा उपयोग—अत्यन्त दुश्चिकित्स्य और हठीले प्रकारके अर्मरोगको नाश करता है ।

सिराजालक (सबल—जाला)—

१—सुरमे सबल

द्रव्य और निर्माणविधि-

फुलाया हुआ यशद, काला सुरमा—प्रत्येक २ तोला ; श्वेत सुरमा ४ माशा, जंगार ३ माशा, अहिफेन १ माशा, समुंदरझाग ४ माशा । प्रत्येक द्रव्यको अलग-अलग कूट-पीसकर कपड़छान कर लें । फिर उसे एक दिन नीबूके रसमें खरल कर लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—एक सलाई प्रति दिन नेत्रमें लगायें ।

गुण तथा उपयोग—यह सुरमा धुंध, जाला, नेत्रस्राव और नेत्रगत कण्डू को लाभ पहुंचाता है ।

विशेष उपयोग—जाला दूर करनेकी प्रधान औषधि है ।

नेत्रव्रणशुक्र (बयाजचश्म—फूली)—

१—कुहल गुलकुञ्जद (कुहल यास्मीन-राज़ना)

द्रव्य और निर्माणविधि—

तिलके फूलोंकी कलियाँ, चमेलीकी कलियाँ, कालीमिर्च—प्रत्येक ४०० नग ; भुनी हुई फिटकिरी ३॥ तोला । इनको खूब बारीक खरल करें जिसमें सुरमा सा हो जाय ।

मात्रा और सेवन-विधि—तीन-तीन सलाई सवेरे, दो पहर और सायंकाल नेत्रमें लगायें ।

गुण तथा उपयोग—फूलेको नष्ट करनेके लिये परीक्षित और प्रयोगसिद्ध है। नेत्रके फूले और छालेको काट देता है । अर्म (नाखूना) को दूर करता है ; इन रोगोंमें यह अतीव गुणकारी प्रमाणित हुआ है ।

२—अकसीरुलऐन

द्रव्य और निर्माणविधि—

चूड़ीका हरा काच, लाहौरी साबुन, लौंग, हाथीका नख—प्रत्येक ६ माशा; सेंदूर ३ माशा। प्रत्येक द्रव्य अलग-अलग पीसकर मिलाएं और दोबारा खरल करके सुरमा बनायें।

मात्रा और सेवन विधि—सवेरे और रात्रिको सोते समय सलाईसे सुरमा की भाँति नेत्रमें लगायें। जबतक पूर्ण लाभ न हो, बराबर लगाते रहें।

गुण तथा उपयोग—हर प्रकारके जाले और फूलेके लिए अनुपम औषधि है।

लिंगनाश वा तिमिर (नुज़ूलुल्माऽ—मोतियाबिंदु)—

१—अकसीर नुज़ूलुलमाऽ (कुहल साबुन)

द्रव्य और निर्माणविधि—

साबुन ५ तोला १० माशा, नीलाथोथा, राल—प्रत्येक ३॥ माशा। साबुनको छुरीसे टुकड़े-टुकड़े करके लोहेके बरतनमें डालकर अग्निपर रखें। नीलाथोथाको लोहेके इमामदस्तामें पीसकर तौलें और साबुनमें डालें जिसमें साबुन और नीलाथोथा जलवत् हो जायँ। इसके बाद राल डालकर खूब तीव्र अग्नि कर दें और लोहेके डंडे (दस्ता) से हिलाते जायँ। जब औषधका रंग काला हो जाय तब उतारकर रख लें। आवश्यकता होनेपर पोस्ताके दानाके बराबर लेकर सीपीमें डालें और थोड़ा जल डालकर घिसकर उपयोग करें।

सेवन विधि—सवेरे और सायंकाल एक-एक सलाई नेत्रमें लगायें;

गुण तथा उपयोग—दृष्टिको शक्ति देता, नेत्रस्राव और तिमिर (तारीकी चश्म) को लाभकारी है। (प्रारम्भिक मोतियाबिंदु (नुज़ूलुल्माऽ) को रोकता है। तिमिरनाशक है।)

२—सुरमे नुज़ूलुलमाऽ

द्रव्य और निर्माणविधि—

अकीक यमनी, चीनी ममीरा (मामीरान चीनी), मण्डूर, छिला हुआ चाकसू, ताँबेका बुरादा—प्रत्येक ३ माशा। सबको खरल करके सुरमा बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—सवेरे बिछौनेसे उठकर और रातको सोते समय एक सलाई नेत्रमें लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह सुरमा प्रारम्भिक मोतियाबिंदुमें लाभकारी है।

३—हब्ब नुजूलुलमा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़के बीजकी गिरी, आमलाके बीजकी गिरी सम भाग लेकर जलमें तीस पहर तक खरल करके चना प्रमाणकी वटिकाएँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—तीन गोली तक रात्रिमें सोते समय प्रति दिन खायें।

गुण तथा उपयोग—मोतियाबिंदुके प्रारम्भमें यह गोलियाँ परम हितकारी हैं। इनके उपयोगसे पानी रुक जाता है। अन्तमें भी इनके उपयोगसे लाभ होता है।

नक्तान्ध्य ((अशा, शबकोरा—रतौंधी)—

१—सुरमा

द्रव्य और निर्माणविधि—

गोलमिर्च १ माशाको बकरीके पित्तमें और आँबाहलदी १ माशाको नीबूके रसमें भिगोकर शुष्क करें। फिर संगबसरी (खपरिया) ७ माशाको चार बार अग्निमें लाल करके नीबूके रसमें बुझायें। खिरनीके बीजकी गिरी, चमेलीकी कली—प्रत्येक ७ माशाको सौंफके रसमें खरल करके फिर पूर्वोक्त समस्त द्रव्य मिलाकर सुरमा तैयार करें और यथाविधि सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—तिमिर (तारीकी चश्म), नक्तान्ध्य (रतौंधी) और जालेको लाभकारी है।

२—कुहल अशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीपल, कालीमिर्च, कमीला सम भाग लेकर बारीक पीस लें और यथाविधि नेत्रमें सुरमा करें।

गुण तथा उपयोग—रतौंधीके लिये लाभकारी एवं अनुभूत है।

दृष्टिदौर्बल्य या दृष्टिमांद्य—

१—रोशनाई

वक्तव्य—यह यूनानी भाषाका शब्द है जिसका अर्थ दृष्टि पैदा करनेवाला है। इसके आविष्कर्त्ता फीसागोरस (Pythagoras) हैं। यह अरस्तोदून नामी एक रोगीके लिये निर्माण किया गया था जिसको दृष्टिमांद्यका रोग था जो इसके उपयोगसे आराम हो गया।

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीपल, एलुआ, बालछड़, लौंग—प्रत्येक १५॥ माशा, धोया हुआ सादनज, जलाया हुआ ताँबा, रूपामक्खी, सेंधानमक, बूरएअरमनी (इसी नामसे प्रसिद्ध)—प्रत्येक १४ माशा ; श्वेत मिर्च, काली मिर्च, समुंदरझाग—प्रत्येक १॥ माशा ; केशर, नौशादर—प्रत्येक ३॥ माशा ; इनको लेकर खूब खरल करें जिसमें धूलकी तरह महीन हो जाय।

मात्रा और सेवन-विधि—सलाईसे नेत्रमें लगायें।

गुण तथा उपयोग—दृष्टिदौर्बल्य, जाला, नाखूना (अर्म), फूला और रोहों (पोथकी) को लाभकारी है।

२—नूरुल्ऐन

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर, अहिफेन, मुक्ता—प्रत्येक १ माशा ; भुनी हुई फिटकिरी, काला सुरमा, चीनी ममीरा (मामीरान चीनी)—प्रत्येक ६ माशा। सबको गुलाब पुष्प और चमेली पुष्प पाँच-पांच तोलामें खरल करके रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—रातको सोते समय और सवेरे उठकर यशदकी शलाकासे नेत्रमें लगायें।

गुण तथा उपयोग—दृष्टिदौर्बल्य, नेत्रकण्डू और धुंधके लिये हितकारी है।

३—सुरमे अजीब

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली कौड़ी, क्षुद्र सीप (सदफ खुर्द), मिश्री, भिड़का छत्ता—प्रत्येक ४ माशा ; भुना हुआ नीलाथोथा, भुनी हुई फिटकिरी—प्रत्येक २ माशा ; पीपल

२ नग, श्वेत मिर्च १४ नग, शीतलचीनी ६ माशा, अहिफेन १ माशा, जंगार ३ माशा, यशद भस्म ३ तोला। पीली कौड़ी और क्षुद्र सीप (सदफ खुर्द) को आगके अंगारोंपर डालें और जल जानेपर निकाल लें। नीलाथोथा और फिटकिरीको टुकड़े-टुकड़े करके तवेपर भून लें। यशद भस्म इस प्रकार बनायें कि यथावश्यक यशद लेकर लोहारकी भट्टीमें डाल दें और लोहेकी सीखसे हिलायें। जो अंश खिलकर ऊपर आ जाय उसे ग्रहण कर लें और शेषको फेंक दें। अब इन समस्त द्रव्योंको छानकर काँसीके पात्रमें नीमके सोंटेसे जिसके नीचे (सिरेपर) पैसा लगा हुआ हो, दो दिन तक खरल करें। बीचमें चांगरी (खटकल बूटी) का फाड़ा हुआ रस डालते जायँ।

मात्रा और सेवन-विधि—रात्रिमें सोते समय एक-एक सलाई उभय नेत्रोंमें लगाया करें।

गुण तथा उपयोग—जाला, फूला, धुंध, आँख आना (नेत्राभिष्यन्द), नेत्रस्राव (दमआ), नेत्रकण्डू, दृष्टिदौर्बल्य और कुकरों या रोहों (पोथकी) के लिये लाभकारी भेषज है।

विशेष उपयोग : नेत्रकण्डू और धुंधके लिये ईश्वरीय वरदान है।

४—सुरमे मुकव्वी बस्र

द्रव्य और निर्माणविधि—

असफहानी सुरमा २ तोला, नीलके बीज, कबाबचीनी—प्रत्येक ६ माशा; पारद २ माशा। समस्त द्रव्योंको सुरमाकी भाँति खरल करें। खरल होनेपर बारीक किया हुआ कपूर २ माशा, रूह केवड़ा २ तोला डालकर दो घंटा तक और खरल करें।

मात्रा और सेवन विधि—सवेरे और शाम दोनों समय एक-एक सलाई उभय नेत्रोंमें लगायें।

गुण तथा उपयोग—दृष्टिदौर्बल्यके लिये हितकारी है।

विशेष उपयोग—यदि वृद्ध स्त्री-पुरुष इसका सदैव प्रयोग करें, तो उनके दृष्टि-दौर्बल्यके लिये इसे ईश्वरका आशीर्वाद ही समझना चाहिये।

पक्ष्मशात (सुलाक)—

१—शियाफ अहमर हाद

द्रव्य और निर्माणविधि—

शादनज अदसी मगसूल (धोया हुआ मसूराकार शादनज) १॥। तोला,

भुनी हुई फिटकिरी, जलाया हुआ तांबा—प्रत्येक ७ माशा ; जंगार ८॥। माशा, बबूलका गोंद १ तोला ५॥ माशा, अहिफेन १॥। माशा, केसर ५॥। रत्ती, बोल (मुरमक्की) ५॥। रत्ती, सकोतरी एलुआ १॥। माशा । इनको कूट-छानकर गोंदके लुआबमें मिला लें और टिकिया बना रखें ।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार गुलाबार्कमें घिसकर पपोटों पर लगायें ।

गुण तथा उपयोग—पन्मशातमें परीक्षित और जाला एवं फूलामें लाभकारी है ।

२—रोगन मुलाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीलाथोथा १४ माशा और जायफल १ नग दोनोंको २१ माशा कच्चे सूत से चतुर्दिक् खूब लपेटकर २८ तोला घी में तर करके दो घंटेतक रख छोड़ें । फिर कांसीके पात्रमें उक्त गोलेको जलायें और जले हुए सूतको चाकूसे तराशें । शेष घी को भी इसी गोलेमें डालकर उक्त सूतको भलीभाँति जला लें । फिर ढाकके सोटेमें तांबका पसा लगाकर उससे सप्ताह पर्यंत कांसीके पात्रमें खूब घोटकर रख लें । आवश्यकता पड़नेपर नेत्रोंमें लगायें ।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम अकमलखां महाशयका परीक्षित है । पन्मशात, जाला और नेत्रके प्रायशः रोगोंमें बार-बार अनुभवमें आ चुका है ।

३—दवाए मुलाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

मनुष्यके सिरके बाल साफ करके इतना जलायें कि पीसने योग्य हो जायँ । फिर जस्तेको जलाकर उसमें पीसी हुई लोधकी चुटकी डालते जायँ और हिलाते जायँ, यशद (जस्ता) भस्म हो जायगा । जलाई हुई सुपारी, जलाई हुई जोंक, कपूर, छिला हुआ चाकसू और नीला थोथा—इन सातों द्रव्योंको कांसेकी थालीमें तांबेका पैसा लगा हुआ नीमके सोंटेसे तीन दिन गोघृतके साथ घोटें और प्रति दिन पलकोंपर लेप लगायें ।

उपयोग—इसके लगानेसे पलकोंके बाल उग आते हैं । पलकोंकी लालिमा और भारीपन दूर हो जाता है ।

अर्जुन (तरफा—नेत्रगत रक्तमय बिंदु)—

१—नुसखा शियाफ तरफा

द्रव्य और निर्माणविधि—

मैनसिल ५ माशा, अञ्जरूत, ममीरा, शादनज, एलुआ, चाँदीका मैल—प्रत्येक १॥ माशा ; चीनी ३ माशा। समस्त द्रव्योंको महीन पीसकर अंडेकी सफेदीमें मिलाकर वर्ति बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—थोड़े जलमें घिसकर एक-दो बूंद नेत्रमें टपकायें।

उपयोग—नेत्रगत खूनी बिंदु दूर हो जाता है।

नेत्रगत नाड़ीव्रण (गर्ब—कोयेका नासूर)—

१—मरहम गर्ब

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुंदुर, बोल (मुरमकी), शुद्ध अञ्जरूत, दम्मुलअख्वैन, सफेदा काशगरी-प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा। इन सबको महीन पीसकर १ तोला मोम और ३ तोला गुलरोगनमें पिघलाकर औषधियोंको मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—इस मलहममें जरासी रूई आप्लुत करके नासूर के स्थानमें स्थापन करें।

उपयोग—नासूरको भरता है।

२—शियाफ गर्ब

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

पीत एलुआ, कुंदुर, शुद्ध अञ्जरूत, गुलनार, दम्मुलअख्वैन (खूनाखराबा), काला सुरमा, यमनी फिटकरी (शिब्ब यमानी)-प्रत्येक ३॥ माशा ; जंगार १ रत्ती। समस्त द्रव्योंको बारीक पीसकर गुलाबार्कमें गूंधकर वर्ति बना लें।

सेवन-विधि—सेवनसे पूर्व नासूरको पूय और दूषित मांसादिसे शुद्ध कर लें। फिर इसका उपयोग करें।

उपयोग—नासूरको भरनेके लिये बहुत गुणकारी है।

कर्णगत रोग

कर्णशूल—

१—रोगन गोश

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफसंतीन रूमी १ तोला, हल्दी, छिला हुआ लहसुन, तिक्तकुट (कुस्तसलख), बादामकी गिरी—प्रत्येक २ तोला ; अजवायन, सोंठ, मुलेठी, हींग, बूरए अरमनी, इन्द्रायनका गूदा, अकरकरा—प्रत्येक ६ माशा ; श्वेत पलांडु (सफेद प्याज) २ नग। इन द्रव्योंको अधकुट करके रात्रिमें वृषपित्त (आब-पित्ता-गाव) में तर करें। सवेरे मरज़न्जोशपत्र-स्वरस, करेलापत्र-स्वरस, मूली-स्वरस—प्रत्येक २ तोला ; अंगूरी सिरका ५ तोला ; तिल तैल ५ छटाँक मिलाकर पकायें। जब औषधद्रव्य जल जायँ तब छानकर तेलको सुरक्षित रक्खें।

मात्रा और सेवन-विधि—केवल एक बूंद सुहाता गरम करके कानमें डालें।

वक्तव्य—कानमें कठिन प्रदाह वर्तमान होनेपर इसका उपयोग न करें।

गुण तथा उपयोग—यह कर्णगत कृमियोंको नष्ट करता है, फुंसियोंको मिटाता है, कर्णक्ष्वेड प्रभृति (दुवी व तिनीन) और कानके हर प्रकारके शूलके लिये लाभकारी है। इसके अतिरिक्त उच्चश्रवण (सिक्ल समाअत) और बाधिर्यको भी जो सहज न हो लाभकारी है।

विशेष उपयोग—कर्णशूलके लिये विशेष उपयोगी है।

कर्णस्राव, पूतिकर्ण, कर्णशोथ और कर्णक्ष्वेड—

१—रोगन गोश

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफसन्तीन रूमी ४ माशा लेकर ५ तोला सिरकामें चार पहरतक भिगो रखें। फिर पकाकर छान लें। पीछे कडुए बादामका तेल ५ तोला डालकर दो बार अग्निपर रक्खें। जब सिरका जल जाय और तेल मात्र शेष रह जाय तब उतार लें।

मात्रा और सेवन विधि—प्रातःसायंकाल दो-दो बूंद सुहाता गरम कानमें डालें।

गुण तथा उपयोग—यह कर्णव्रण, कर्णशोथ और कर्णगौरव (सिक्ल गोश) में लाभ करता है। यह कर्णक्ष्वेड (दवी व तिन्नीन) में लाभकारी है।

विशेष उपयोग—यह कर्णशोथ और कर्णव्रणके लिये परीक्षित एवं अन्वर्थ महौषधि है।

२—मरहम सब्ज

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

जंगार, मधु, सिरका, कुंदुर—प्रत्येक १ तोला लेकर जलमें इतना पकायें जिसमें मधुकी चाशनीपर आ जाय। फिर मोम १ तोला और गुलरोगन २ तोला और मिला लें और तूलपिचु (फतीला) को इसमें आप्लुत करके कानमें स्थापन करें। यदि रोहिणी (खुनाक) और कंठमाला आदिके कारण यह रोग हो, तो उनकी चिकित्सा करनी चाहिये।

गुण तथा उपयोग—चिरज कर्णगत व्रणमें लाभकारी है।

वाधिर्य—

१—रोगन आजम

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफसंतीन रूमी, हल्दी, छिलका उतारा हुआ लहसुन—प्रत्येक ६ माशा; कड़ुआ कुट, कड़ुए बादामकी गिरी—प्रत्येक १ तोला; अजवायन, सोंठ, मुलेठी—प्रत्येक ३ माशा; हींग (अंगोजा), बूरएअरमनी, इन्द्रायनका गूदा—प्रत्येक १॥ माशा; अकरकरा १ माशा; सफेद प्याज १ नग। इन सबको यवकुट करके रात्रिमें गोपित्तके पानीमें भिगोयें जिसमें द्रव्य तर हो जायँ। सवेरे, सुदाबपत्र-स्वरस, मरजन्जोशपत्र-स्वरस, करेलापत्र-स्वरस, मूलक-स्वरस, सुदर्शनपत्र-स्वरस—प्रत्येक १ तोला; तीक्ष्ण मद्य २॥ तोला; तिल-तैल एक छटांक परस्पर मिलाकर पकायें जिसमें जलांश जलकर तेल मात्र शेष रह जाय। पीछे ऊपरके द्रव्य डालकर जलायें और छानकर तेलको शीशीमें रख लें।

मात्रा और सेवन विधि—दो-तीन बूंद सुहाता गरम कानमें टपकायें।

गुण तथा उपयोग—यह कर्णशूल, उच्च-श्रवण (सिक्ल समाअत) और कर्णक्ष्वेड (भनभनाहट) को लाभकारी है।

२—रोगन समाअत कुशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

खट्टे अनारका रस (गूदासहित निचोड़ें) १० तोलामें इसके छिलकोंको पकायें और मलकर छान लें। फिर शुद्ध सिरका ६ माशा, रोगन कुंदुर ३ माशा मिलाकर पकायें। जब पानी जल जाय और तेलमात्र शेष रह जाय तब तेलको छानकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—दिनमें दो-तीन बार इसके सुहाते गरम बिंदु कानमें डालें।

गुण तथा उपयोग—उच्चश्रवण (सिक्लसमाअत जो उग्र व्याधियोंके परिणाम स्वरूप आविर्भूत हो जाता है) को दूर करनेके लिये यह तेल बहुत गुणकारी है। श्रवणशक्तिको तीव्र एवं पुष्ट और बाधिर्यको निवारण करता है।

नासागत रोग

पीनस और पूतिनस्य—

१—नफूख बखर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादर २ माशा, करंजकी गिरी (कंजा) २ माशा, समुंदरफलकी गिरी २ माशा, कपूर १ माशा—इनको पीसकर नासिकामें प्रधमन करें।

नासाकृमि—

१—सऊत बराय किर्मबीनी.

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

पीला एलुआ १ माशा, कपूर १ माशा, हींग, १ माशा—इनको शरीफाके हरे पत्तेका रस १ तोला और आड़ू (शफ्तालू) के हरे पत्तेका रस १ तोलामें पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर नासिकामें टपकायें। यदि गुलरोगनके स्थानमें तारपीनका तेल सम्मिलित करें तो अधिक लाभ हो।

नासार्श—

१—मरहम बवासीरुल अन्फ

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

मोम १० तोला और आर्द्र बिरोजा १ तोलाको १॥ तोला गुलरोगनमें पिघलायें। फिर जंगार २ माशा, नीलाथोथा २ माशा, बोल (मुरमकी) २ माशा, पीला एलुआ २ माशा, भुना हुआ छुहागा २ माशा, भुनी हुई यमनी फिटकिरी (शिब्ब यमानी) २ माशा और सेंदूर २ माशा—इनको पीसकर मिलायें और उपयोग करें।

नासागत रक्तपित्त (रुआफ-नकसीर)—

१—नफ़ूख हाबिस रुआफ

द्रव्य और निर्माणविधि—

जलाया हुआ कागज, जलाया हुआ रेशमका वस्त्रखण्ड, जलाया हुआ चमड़ा, हरा माजूफल, कुंदुर, संगजराहत, दम्मुलअख्वैन (खूनाखराबा), गिल अरमनी, अकाकिया, चक्कीकी भाड़न (गुब्बार आसिया)—प्रत्येक सम भाग। इनको महीन पीसकर एकजीव कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—इसमेंसे एक चुटकी लेकर प्रधमनयन्त्रमें रखकर नासिकामें प्रधमित करें अथवा बकरीके दूधमें हल करके नासिकामें टपकायें।

गुण तथा उपयोग—नासागत रक्तपित्त (नकसीर) के रोकनेके लिये आशु-प्रभावकारी एवं सिद्ध भेषज है।

घ्राणाज्ञान (खशम)—

१—रोगन खशम

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

मेथी २ माशा और कलौंजी २ माशा—इनको पीसकर २ तोला जैतूनके तेलमें हल करके नासिकामें टपकायें।

मुखगत रोग

ओष्ठव्रण—

१—मरहम काफूर

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

कपूर २ माशा, मुरदासंग और सफेदा काशगरी—प्रत्येक १४ माशा ; श्वेत मोम २ तोला ४ माशा, तिल तैल ५ तोला १० माशा। तेलको गरम करके उसमें मोम पिघलायें और अन्य-द्रव्योंको कूट-छानकर उसमें मिलायें। शीतल होनेपर एक अंडेकी सफेदी मिलाकर शीतल होनेपर काममें लेवें।

उपयोग—इसके लगानेसे ओष्ठव्रण आराम होता है।

मुखपाक—

१—सफूफ कुलाअ

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबके पुष्प, श्वेत कत्था, कलमी शोरा, छोटी इलायचीके बीज—प्रत्येक २ माशा, शुद्ध कपूर १ माशा और नीलाथोथा ८ रत्ती। प्रथम नीलाथोथाको तवेपर रखकर भून लें। फिर शेष समस्त द्रव्योंको अलग-अलग बारीक करके उसमें मिला लें और महीन चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ माशा दवा लेकर दिनमें दो-तीन बार मुंहमें मल लिया करें। परन्तु इस बातका ध्यान रखें कि दवा कंठके भीतर न जाय।

गुण तथा उपयोग—मुखपाकमें अतिशीघ्र लाभ करता है। हर प्रकारके मुखपाकमें हितकारी और सिद्ध भेषज है।

२—सुनून अहमर

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

गेरू ६ भाग और नीलाथोथा (तूतिया हिंदी) १ भाग (नवीन मुखपाकमें भृष्ट किया हुआ और चिरजमें अभृष्ट ही रहने दें) दोनोंको महीन पीसकर सुरक्षित

रखें। आवश्यकता होनेपर काबुली हड़का बकला, काली हड़का बकला, बहेड़ेका बकला, गुठली निकाला हुआ आमला—प्रत्येक ४ माशा—इनको इतना गुलाबार्क और नीबूका रस समभागमें जो उनको ढँक ले, भिगोकर रख दें। पीछे इसे निथारकर और इसमें उँगली तर करके पूर्वोक्त सुनून अहमर उँगलीमें लत करके व्रणोंपर मलें। मुंहको नीचे करके ढीला छोड़ दें जिसमें राल अच्छी तरह बह जाय। इसी प्रकार दो-तीन बार करके किसी उपयुक्त क्वाथसे कुल्लियां करके मुंहको साफ कर दें। अन्तमें कोई उपयुक्त चूर्ण जो प्रयोजनानुसार कत्था, वंशलोचन, गुलाबके पुष्पका जीरा और गुलनार फारसी आदिसे तैयार किये गये हों, मुंहमें छिड़क दें।

गुण तथा उपयोग आदि—यह उलवीखांके पिताका तजवीज किया हुआ योग है। हर प्रकारके मुखपाकमें उपकारक एवं परीक्षित है।

मुखदौर्गन्ध्य—

१—सुनून चोबचीनी

द्रव्य और निर्माणविधि—

मौलश्रीकी छाल और चोबचीनी—प्रत्येक ७ माशा ; संगजराहत, सफेद कत्था, जलाई हुई सुपारी—प्रत्येक ६ माशा ; पीली हड़का बकला, माजू, नीलाथोथा (जलाया हुआ), मस्तगी, भुनी हुई फिटकिरी—प्रत्येक ३ माशा ; रक्त प्रवालमूल, कहरुवा शमई-प्रत्येक ४ माशा ; पीला कसीस ८ माशा, सावर शृङ्ग और लोहचून—प्रत्येक १३॥ माशा। इनको बारीक पीसकर यथाविधि मंजन (सुनून) प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथानियम दांतों और उनकी जड़ोंपर मलें।

गुण तथा उपयोग—मुखको स्वच्छ और सुगन्धित बनाता और मसूढ़ोंके खूनको रोकता है।

दन्त और दन्तवेष्टगत रोग

१—सुनून कलां

द्रव्य और निर्माणविधि—

नागरमोथा ४। तोला, पीला कसीस, सूखी धनियां, लाहौरी नमक—प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, कत्था सफेद, कुटकी, सफेद जीरा और भुना हुआ नीलाथोथा—

प्रत्येक ३॥ माशा ; कबाबचीनी, सोंठ, कपूरकचरी और बज्रदन्ती—प्रत्येक १॥ माशा। यथाविधि मंजन बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि थोड़ासा मंजन रात्रिमें सोते समय और सबेरे दाँतोंपर मलें।

गुण तथा उपयोग—दाँतोंको चमकदार बनाता, दृढ़ करता और रक्तस्राव को बन्द करता है।

दंतशूल—

१—सफूफ वजउल-असनान

द्रव्य और निर्माणविधि—

अकरकरा, सफेद जीरा, लाहौरी नमक, नौशादर, देशी अजवायन-प्रत्येक २ माशा ; कालीमिर्च ३ माशा, भुनी हुई फिटकिरी, जलाई हुई पीली कौड़ी—प्रत्येक ६ माशा ; अहिफेन ४ रत्ती। सबको कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा और सेवन विधि—आवश्यकतानुसार लेकर दाँतोंपर मलें।

गुण तथा उपयोग—दंतशूलके लिये असीम गुणकारी है। कैसा ही कठिन दंतशूल हो, इसके मंजनसे कुछ ही मिनटोंमें आराम हो जाता है।

दंतवेष्टक और महाशौषिर—

१—जरूर शिब्बी

द्रव्य और निर्माणविधि—

यमनी फिटकिरी (शिब्ब यमानी) २ तोला मिट्टीके बरतनमें रखकर अग्नि पर रखें और थोड़ा-थोड़ा सिरका उसपर डालते जायँ जिसमें उसके दूषित बाष्प निकल जायँ। फिर २ तोला गुलाबके फूलके जीरेके साथ पीसकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार लेकर मसूढ़ोंपर छिड़कें।

गुण तथा उपयोग—दंतवेष्टक अर्थात् मसूढ़ोंसे खून आने (लिस्सा दामिया) को बहुत लाभ पहुंचाता है।

२—सुनून गोश्तखोरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

जलाई हुई प्रवाल शाखा, जलाई हुई सीप, दम्मुलअख्वैन (खूनाखराबा)-

प्रत्येक २ माशा, हलदी, हरा माजू, भुनी हुई फिटकिरी-प्रत्येक ४ माशा, भुना हुआ तूतिया ६ माशा, गिल अरमनी ३ माशा। इन सबको महीन पीसकर कपड़छान चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—इसमेंसे आवश्यकतानुसार मंजन लेकर सवेरे और सायंकाल दाँतोंपर मलें।

गुण तथा उपयोग—महाशौषिर (गोश्तखोरा) और मसूढ़ोंसे खून बहने (दन्तवेष्टक) में लाभकारी है।

स्वरभेद (बुहतुस्सौत)—

१—हब्ब बुहतुस्सौत

द्रव्य और निर्माणविधि—

कतीरा, गेहूँका सत (निशास्ता), बबूलका गोंद, मुलेठीका सत, कद्दूके बीजकी गिरी, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी और मिश्री। इनको सम प्रमाण लेकर कूट-छानकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक गोली सवेरे और एक गोली सायंकाल मुंहमें डालकर लुआब चूसें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियाँ आवाजको खोलती हैं। यह स्वरभेदके लिये उत्कृष्ट भेषज है।

२—लऊक इलकुलअंबात

द्रव्य और निर्माणविधि—

केसर, बोल (मुरमक्की), लोबान-प्रत्येक १। तोला; श्वेत मरिच, बाकला का आटा, चनाका आटा, रेवंदचीनी, गेहूँका सत (निशास्ता), अजवायन, सौसनकी जड़, शिलारस-प्रत्येक २॥ तोला; भुने हुए फिंदककी गिरी, बुत्मका गोंद (इलकुलअंबात), छिली हुई मुलेठी, बबूलका गोंद-प्रत्येक ७॥ तोला; चिलगोजाकी गिरी, छिली हुई मीठे बादामकी गिरी, कडुए बादामकी गिरी—प्रत्येक १५ तोला; भुनी हुई अलसी (बीज), बीज निकाला हुआ मुनक्का

(मवेज)–प्रत्येक ऽ॥ आधा सेर। समस्त द्रव्योंको बारीक पीसकर प्रयोजनानुसार मधु मिलाकर अवलेह (लऊक) बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—माजूके बराबर प्रातःसायंकाल खायँ और सोते समय जिह्वाके नीचे रखकर सो जायँ।

गुण तथा उपयोग—स्वरभेद (बुहतुस्सौत) में अतीव गुणकारी है। इसके अतिरिक्त कंठगत क्षोभ और रक्तष्ठीवन प्रभृतिके लिये लाभकारी है तथा वक्षको श्लेष्मासे शुद्ध करता है।

वातरोगाधिकार ४

पक्षवध या अर्द्धाङ्गवात (फालिज)—

१—रोगन फालिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

अधकुटा कुट (कुस्त नीमकोफ्ता) ७ माशा, गोलमिर्च, फरफियून—प्रत्येक १०॥ माशा; अकरकरा, जुंदबेदस्तर–प्रत्येक ७ माशा, पुराना मद्य २९ तोला २ माशा, जैतूनका तेल २४ तोला ७ माशा। कुट और गोलमिर्चको रात्रि भर पुराने मद्यमें भिगोकर सबेरे पकायें। जब आधा रह जाय, तब जैतूनका तेल मिलाकर इतना पकायें कि मद्य शुष्क हो जाय और केवल तेल शेष रह जाय। पीछे फरफियून और जुंदबेदस्तरको बारीक पीसकर मिला दें और पात्रको चूल्हेसे उतार कर तेलको बोतलमें रखें।

सेवन-विधि—आवश्यकता होनेपर कोष्ण (कुनकुना) करके मर्दन करें।

गुण तथा उपयोग—यह तीव्र प्रभावकारी है। अर्दित और पक्षवधमें अतीव गुणकारी है।

२—हब्ब सम्मुलफार

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत संखिया (सम्मुलफार) ३ रत्ती, श्वेत कत्था, वंशलोचन–प्रत्येक ५ माशा। सबको बारीक पीसकर सोंठके पानीमें खूब खरल करके उड़द प्रमाणकी वटिकायें प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन भोजनोत्तर दोनों काल १-१ बटी सप्ताह पर्यंत रोगीको सेवन करायें। तीसरे दिन बटीसेवनोत्तर यदि मिश्रीका शर्बत (पानक) पिला दिया जाय तो रोगीको खुलकर विरेक आ जाते हैं जिससे अवशिष्ट दोष उत्सर्गित हो जाता है।

गुण तथा उपयोग—संशोधनके उपरांत अर्दित और पक्षवद्धमें इसका सेवन अतीव गुणकारी है। (जामिउस्सिहत २ भा०

३—माजूनसीर उलवीखाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

गीलानी गावजबानपुष्प (गुलगावजबान गीलानी) और बिल्लीलोटनके पत्र (बर्ग बादरंजबूया)—प्रत्येक ६ तोला ४॥ माशा; बसफाइज फुस्तकी, काली हड़, काबुली हड़का बकला और मकोय—प्रत्येक ४ तोला। सबको ऽ६ सेर मीठे जलमें पकायें। जब दो सेर जल रह जाय, तब आधा सेर छिला और साफ किया हुआ लहसुन उसमें डालकर पुनः पकायें जिसमें लहसुन गल जाय। फिर ऽ। एक पाव ताजा गोदुग्ध मिलाकर इतना पकायें कि दूध शोषित हो जाय। फिर शुद्ध गो-घृत आधा पाव डालकर इतना पकायें कि घी शोषित हो जाय। पीछे ऽ१ सेर शुद्ध मधु मिलाकर चाशनी कर लें और सोंठ, कालीमिर्च, सफेद मिर्च, पीपल, लौंग, तज, कबाबचीनी, कुलंजन, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, शकाकुलमिश्री, बाबूनापुष्प, मरजञ्जोश—प्रत्येक २।॥ माशा ; अम्बर अशहब और केसर—प्रत्येक ४॥ माशा। इनको बारीक पीसकर और मिलाकर माजून प्रस्तुत करें और मर्तबानमें भरकर जौ की राशिमें गाड़ दें। चालीस दिनके उपरांत उपयोगमें लेवें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह अर्दित और पक्षवधमें अतिशय गुणकारी है। संशोधनके उपरांत ४० दिन खानेसे रोग दूर हो जाता है। परीक्षित है। शरद्ऋतुमें यदि वृद्ध व्यक्ति ४० दिनतक इसका उपयोग करे, तो अखिल शीतजन्य व्याधियों से सुरक्षित रहे।

४—माजून फलासफा

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, कलमी दारचीनी, गुठली निकाला हुआ आमला, हड़का बकला, चीता, जरावंद गिर्द, सालममिश्री, चिलगोजेकी गिरी, बाबूनाकी

जड़, बाबूनापुष्प और नारियलकी गिरी (खोपड़ा)—प्रत्येक ६ माशा ; बीज निकाला हुआ मुनक्का ३ तोला, शुद्ध मधु २ तोला, मिश्री ४४ तोला। इनका यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—६ माशा माजून मधुशार्कर (माउलअस्ल) या मिश्रेयार्क (अर्क बादियान) इत्यादिके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—अर्दित, पक्षवध, कफज सन्यास (बलगमी छबात) और गृध्रसी प्रभृति व्याधियोंमें परम गुणकारी है।

५—माजून फालिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऊद बलसां, हब्ब बलसां, तगर (असारून), ईरसा, रूमी मस्तगी, कलमी तज, जरावंद मुदहरज, पीपल—प्रत्येक ६ माशा ; जुन्दबेदस्तर, केसर—प्रत्येक ३ माशा ; मीठा सूरंजान, बूजीदान (मीठा अकरकरा), बाबूनामूल—प्रत्येक १ तोला और सोंठ २ माशा। इन सबको बारीक पीसकर रखें। हड़का मुरब्बा (गुठली निकाला हुआ हरीतकीफलखण्ड), बीज निकाला हुआ मुनक्का—प्रत्येक ६ तोला ; मिश्रेयार्क (अर्क बादियान) में पीसकर कपड़ेमें छानकर ६ तोला शुद्ध मधु और चीनी १५ तोला मिलाकर चाशनी तैयार करें। शीतल होनेपर पिसे हुए द्रव्य मिला दें। पीछे शुद्ध कस्तूरी १ माशा महीन पीसकर मिला दें। माजून प्रस्तुत करके शीशा या चीनीके पात्रमें रख लें।

मात्रा और अनुपान ३ माशा माजून मधुशार्कर (माउलअस्ल) से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून पक्षवध आदिके लिये परमोपयोगी है। लखनऊके प्रसिद्ध अजीजी खानदानमें यह चिकित्सामें व्यवहृत होता है।

वक्तव्य—मधुशार्करकी परिभाषा और कल्पनाके लिये लेखक द्वारा लिखित "यूनानी द्रव्यगुण-विज्ञान—पूर्वार्ध" देखें।

अर्दित (लकवा)—

१—हब्ब सुर्ख

द्रव्य और निर्माणविधि—

अकरकरा, सोंठ—प्रत्येक १ तोला ; कालीमिर्च, पीपल, बिरोजा, टोपी दूर

किया हुआ लौंग, शुद्ध बछनाग, शुद्ध शिगरफ—प्रत्येक २ तोला। सबको अलग-अलग कूट-छानकर समप्रमाण लेकर २०० नग पानमें इतना खरल करें कि गोली बन सके। इसके बाद मूंगके प्रमाणकी वटिकायें बनाकर रखें।

मात्रा और अनुपान—अर्दित और पक्षवधमें ४ से ८ बटी तक मधु या आर्द्रकस्वरसमें घोटकर दें। कफज कासमें १-१ बटी बंगला पानमें रखकर खिलायें।

गुण तथा उपयोग—अर्दित, पक्षवध प्रभृति जैसे समस्त शीतल मस्तिष्क-व्याधियों तथा कफज कासमें परम गुणकारी है।

२—हब्ब स्याह

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध आमलासार गंधक, शुद्ध शिगरफ, हीराकसीस, गुठली निकाला हुआ आमला, जायफल, पित्तपापड़ा (शाहतरा) पत्र-प्रत्येक १ तोला; कचूर, सौंफ, सुहागा, नीम-चढ़ा सूखा गुरुच—प्रत्येक ६ माशा। प्रथम पारा और गन्धककी कज्जली बना लें। फिर सिगरफ मिलाकर दो पहर खरल करें। पीछे शेष द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलायें और कागजी नीबूका रस थोड़ा-थोड़ा डालकर चार-चार पहरतक खरल करें। अन्तमें गोली बनाने योग्य होनेपर बाजरे के बराबर गोलियाँ बनाकर रखें।

मात्रा और अनुपान—डब्बा रोग (पसली चलना) में दूधमें घोलकर, कासके लिये पानमें रखकर एक गोली खिलायें। आमवातमें चार-छः गोलियाँ एरण्डमूलके शीराके साथ और अर्दित एवं पक्षवधमें २ माशा गोलियाँ थोड़ासा अर्क-अदरकके साथ देवें।

गुण तथा उपयोग—अनेक व्याधियोंमें लाभकारी एवं शतशोऽनुभूत और चिकित्सामें व्यवहार्य है।

३—हलवाए दारचीनी

द्रव्य और निर्माणविधि—

गेहूंका आटा, गोघृत और गुड़—प्रत्येक ४ तोला; कलमी दारचीनी, जायफल, लौंग—प्रत्येक ४ मांशा। विधिवत् हलवा बनाकर उपयोग करें।

उपयोग और सेवन-विधि—अर्दितमें इसे मुखमण्डल (चेहरे) पर बाँधनेसे उपकार होता है।

४—हब्ब ज़ुंद अजीब

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत त्रिवृत् २ तोला, अयारिज फैकरा, कृष्णबीज और सूरंजान—प्रत्येक १ तोला ; इन्द्रायनका गूदा १॥ तोला, चीता, बूजीदान (मीठा अकरकरा), बच, अकरकरा, पीपल, गूगल-प्रत्येक १० माशा ; जवाशीर, सकबीनज (एक गोंद)-प्रत्येक ६ माशा ; जुन्दबेदस्तर (गन्धमार्जारवीर्य) और लौंग-प्रत्येक ४ माशा । द्रव्योंको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनाकर हरे गन्दनाके यथेच्छ रसमें चना प्रमाणकी बटिकायें बनायें ।

मात्रा और अनुपान—३ माशासे ५ माशातक ६ तोला मिश्रेयार्क (अर्क सौंफ) के साथ उपयोग करें ।

उपयोग—अर्दित, अंगघात वा एकांगवात और पक्षवधके लिये गुणकारी एवं परीक्षित है ।

ऊरुस्तम्भ वा पंगुत्व (अधरंग)—

१—हब्ब फालिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

निशोथ, अयारज फैकरा—प्रत्येक १ तोला ; सूरंजान, कृष्णबीज-प्रत्येक ६ माशा ; इन्द्रायनका गूदा, चीता-प्रत्येक ४ माशा ; बूजीदान, बच, अकरकरा, दारचीनी—प्रत्येक १॥ माशा ; सकबीनज, जवाशीर, गूगल रक्त (मुकल अर्जक), फरफियून, जुन्दबेदस्तर-प्रत्येक १ माशा । इन द्रव्योंको कूट-छानकर जलमें चना प्रमाणकी बटिकायें प्रस्तुत करें ।

मात्रा और अनुपान—७ माशासे ९ माशातक मधुशार्कर (माउलअस्ल) के साथ देवें ।

उपयोग—पक्षवधके लिये गुणकारी एवं परीक्षित है ।

वक्तव्य—यह गोलियाँ प्रधानतया दक्षिण पार्श्वगत ऐसे पक्षवधके लिये लाभकारी हैं जिसमें रोगी भाषण करनेमें असमर्थ होता है ।

अङ्गघात या एकांगवात (इरितरखा)—

१—बरशाशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

कृष्ण और श्वेत मरिच, खुरासानी अजवायन—प्रत्येक ७॥ तोला ; अहिफेन ३ तोला, केसर १ तोला १०॥ माशा, बालछड़, अकरकरा, फरफियून—प्रत्येक ४ माशा। समग्र द्रव्योंको पृथक्-पृथक् कूट-छानकर तिगुने मधुमें मिला लें और तीन मासतक जौकी राशिमें दवायें। इसके उपरांत उपयोग करें।

मात्रा और अनुपान—६ रत्ती यह औषध अर्क गावजबान १२ तोलाके साथ प्रातःकाल सेवन करें। शीतल, भारी (गलीज) और बादी वा बाष्पकारक (मुबख्खर) पदार्थोंसे परहेज करें।

गुण तथा उपयोग—विस्मृति, कम्पवायु, पक्षवध, मालीखोलिया (उन्माद भेद), प्रतिश्याय (नजला व जुकाम), आमाशय और यकृत्शूलमें लाभकारी है।

विशेष उपयोग—अंगघात या एकांगवात (इस्तिरखा) के लिये विशेष गुणकारी है।

२—रोगन सुर्ख

द्रव्य और निर्माणविधि— 2

मजीठ पाव भर, कायफल, तज, छड़ीला—प्रत्येक ४ तोला ; बालछड़, नागरमोथा—प्रत्येक २ तोला ; तेजपत्ता, लौंग, कलमी दारचीनी—प्रत्येक १ तोला ; नरकचूर २ तोला, छोटी इलायची ३ तोला, कुचला २ तोला, जावित्री ६ माशा, शुद्ध कस्तूरी ६ माशा, मेदा लकड़ी २ तोला, श्वेतचन्दनका बुरादा २ तोला, केसर ४ माशा, हल्दी, दारुहल्दी, कृष्ण अगर (ऊदगर्की)—प्रत्येक १ तोला ; प्रथम श्रेणीका गुलाबार्क ऽ१ सेर और तिल तेल ऽ२ सेर। इन समस्त द्रव्योंको यवकुट करके रात्रिमें गुलाबार्कमें भिगो दें। सवेरे उसे कलईदार देगचीमें पकायें। जब आधा अर्क जल जाय, तब तिलका तेल मिलाकर इतना पकायें कि जलमात्र जल जाय और केवल तेल शेष रह जाय। उस समय उतारकर तेलको कपड़ेमें छानकर बोतलोंमें भर लें। एक सप्ताह तक इसे भूमिके नीचे गाड़ रखें। इसके बाद निकालकर व्यवहार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार सुहाता गरम करके शरीरावयवोंपर इसका अभ्यंग करें।

गुण तथा उपयोग—अर्दित, अंगघात वा एकांगवात, पक्षवात, आमवातमें और वातनाडियोंको बल देनेके लिये अनुपम गुणकारी है।

कम्पवात (रेअशा)—

१—माजून रेअशा बारिद (उलवीखाँका परीक्षित)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्दना बीज ३॥ तोला, अकरकरा, नारियलकी गिरी—प्रत्येक २। तोला; चिलगोजाकी गिरी, हब्बतुलखजराकी गिरी—प्रत्येक १॥ तोला; कलौंजी १३॥ माशा, राई २२॥ माशा। सबको कूट-पीसकर तिगुने मधुमें मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा और अनुपान आदि—६ माशा सप्ताहमें तीन बार सेवन करें और कुक्कुटाण्डकी जर्दी और कबाब आदि आहार सेवन करें।

उपयोग—यह कम्पवायुनाशक है।

२—हब्ब रेअशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग, बालछड़, उस्तूखूद्दूस—प्रत्येक १०॥ माशा; दारचीनी, शुष्क पुदीना, काबुली हड़—प्रत्येक ७ माशा; हींग, गारीकून (खुमी), निशोथ, जुन्दबेदस्तर—प्रत्येक ४ माशा; अकरकरा और केसर—प्रत्येक ३ माशा; संखिया २ रत्ती। सब द्रव्योंको बारीक पीसकर मधुके साथ कालीमिर्च प्रमाणकी गोलियां बना लें।

मात्रा और अनुपान आदि—२ से ४ गोलीतक प्रातःकाल और सायंकाल भोजनोत्तर सेवन करें।

३—दवाए अर्जाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

तारपीनका तैल, मालकंगनीका तैल, रोगन मोम, धतूरका तैल—प्रत्येक ५ तोला; लौंगका तैल १ तोला। इनको मिलाकर पीड़ित अंगपर लेप करें और रूईका फाहा बांध दें।

गुण तथा उपयोग—कम्पवात, आक्षेप और वातज शूल इत्यादिके लिये गुणकारी है।

आक्षेप (तशन्नुज) और अपतंत्रक एवं धनुर्वात (तमद्दुदव कुजाज)

१—दवाए अजाराकी

द्रव्य और निर्माणविधि—

आवश्यकतानुसार कुचला लेकर किसी चीनीके पात्र—प्याला आदिमें डालकर ऊपरसे घीकुवारका रस इतना डालें कि कुचलोंसे दो अँगुल ऊपर आ जाय। फिर उसे सायामें रखें। जब घीकुवारका रस सूख जाय तब इसी प्रकार दो बार आर्द्रक-स्वरस डालकर तर एवं शुष्क करें। पीछे बारीक पीसकर रख लें।

मात्रा और सेवन विधि आदि—२ रत्ती यह चूर्ण मलाईमें रखकर या दूधके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह आक्षेप, कम्पवात, अंगघात, पक्षवध, अर्दित, आमवात और क्लैब्य (कामावसाय) के लिये गुणकारक औषधी है, साथ ही निरापद भी है।

विशेष गुण तथा उपयोग—वातनाडीदौर्बल्यके लिये अतीव गुणकारी है तथा संग्राही (काबिज) और पाचक भी है।

वक्तव्य—इसके सेवनकालमें स्निग्ध आहार सेवन करना चाहिये। यह निरापद भेषज है। शरदृतुमें इसका सेवन परम गुणकारी है।

२—रोगन

द्रव्य और निर्माणविधि—

कालीमिर्च, जुन्दबेदस्तर (गन्धमाजारवीर्य), अकरकरा, इन्द्रायनका गूदा, [illegible]) प्रत्येक ७ माशा। सबको कूटकर ऽ॥ आधा सेर रोगन [illegible] एक शीशोमें डालकर दस दिन तक धूपमें रखा रहने दें। प्रदि दिन शीशीको भलीभाँति हिला दिया करें। इसके बाद छानकर पुनः उतना ही प्रमाणमें उक्त द्रव्य डालकर दस दिन तक धूपमें रखें और प्रति दिन हिला दिया करें। पीछे तेलको छानकर रख लें। बस तैयार है।

सेवन विधि—अभ्यंग रूपसे व्यवहार करें।

गुण तथा उपयोग—हकीम अजमलखांके परीक्षित गुप्तयोग-ग्रन्थसे अनूदित है। यह वातज आक्षेप, पक्षवध और अन्यान्य समस्त शीतल व्याधियोंमें गुणकारी है।

३—दवाए गरगरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

अकारिज फकरा, कालीमिर्च, अकरकरा—प्रत्येक ६ माशा जल ऽ॥ आधा सेरमें उबालकर और छानकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार क्वाथ लेकर दिनमें दो-तीन बार गण्डूष (गरगरा) करें।

गुण तथा उपयोग—अर्दितमें यह औषधि असीम गुणकारी है। वात-नाड़ियोंमें उष्णता आविर्भूत करती है और आक्षेप निवारण करती है।

शून्यता व प्रसुप्तता (खद्र)—

१—शर्बत उस्तूखूदूस

द्रव्य और निर्माणविधि-

उस्तूखूदूस, बिल्लीलोटन, तगर (असारून), ईरसा, अफ्तीमून, हब्ब बलसां, जादा, मेथी, हाशा (पहाड़ी पुदीना), दरूनज अकरबो—प्रत्येक ६ माशा। अफ्तीमूनके सिवा शेष समस्त द्रव्योंको ड़ेढ़ सेर जलमें पकायें। जब आधा सेर जल रह जाय तब उतार कर अफ्तीमूनको पोटलीमें बांधकर उसमें डाल दें और थोड़ी देर पश्चात् खूब मलें। शीतल होनेपर भी पोटलीको भलीभांति मलकर छोड़ दे। फिर थोड़ी देरके बाद काढ़ेको छानकर मधुकृत गुलकन्द (गुलकन्द असली) ऽ॥ आधा सेर मिलाकर पुनः दो उबाल दें। फिर उतार कर गुलकन्द उसमें खूब मलें। इसके पश्चात् भलीभांति छानकर उसमें ऽ॥ [illegible]के समाविष्ट करके मृदु अग्निपर शर्बतकी चाशनी कर लें।

मात्रा—२॥ तोला।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम मुअतमिदुल मुल्क अलवीखां का परीक्षित कफज सुप्तता (खद्र बलगमी) के लिये परम अनुभूत है।

२—रोगन जरनीख

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीत हरताल (जरनीख जर्द) १॥ तोला लेकर पित्तपापड़ाके स्वरसमें खरल

करके गोलियाँ बना लें और इन गोलियोंको आतशीशीशीमें डालकर दोलयन्त्र की विधिसे बारह सेर उपलोंकी अग्निपर तेल निकालें।

उपयोग और सेवन-विधि—यथावश्यक विकारी स्थलपर उक्त तेलका पतला लेप (तिला) करके ऊपर पानका पत्ता बांध दें। जब व्रण पड़ जाय तब शतधौत गोघृत लेप करें। इसी तेलमेंसे एक सींकसे पानपर रेखा खींचकर खिलायें और ऊपरसे गोघृतमें खूब आप्लुत किया हुआ दो ग्रास आहार निगलवायें।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम शरीफखांका परीक्षित है और स्पर्शाज्ञान (शून्यता या खदर), पक्षवध और सन्धिवातके लिये गुणकारी है।

३—माजून

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऊदसलीब, दारचीनी-प्रत्येक २ माशा; मस्तगी, बूजीदान (मीठा अकरकरा)—प्रत्येक २ माशा; सुरंजान मिस्री ४ माशा; शकाकुल, कुलंजन—प्रत्येक २ माशा; श्वेत और रक्त बहमन ४ माशा; गावजबान, बिल्लीलोटनपत्र, बालछड़, छड़ीला, जाविश्री—प्रत्येक २ माशा; सालमामिश्री ३ माशा; फरंजमुश्कपत्र, नागरमोथा—प्रत्येक २ माशा; केसर १॥ माशा, खसबीज (तुख्मखशखाश) ४ माशा, पीपल, कालीमिर्च, दरूनज अकरबी, इन्द्रजौ, पुदीना (नाना), तगर (असारून), उस्तूखुद्दूस, तेजपत्ता, तज—प्रत्येक ६ माशा; नरकचूर (जुरंबाद) १॥ माशा, कस्तूरी २। माशा, शुद्ध मधु समस्त द्रव्योंके प्रमाणसे तिगुना। सबको कूट-पीसकर यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह हकीम हाजिकुलमुल्कका परीक्षित है और मस्तिष्कको पुष्ट करनेके लिये और सुप्तता (खदर) में अतीव गुणकारी है।

वातनाडी शोथ—

१—सफूफ सुरंजान

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठा सुरंजान १॥ तोला, सनायमक्कीपत्र १० माशा, श्वेत त्रिवृत् ४ माशा, कृष्ण जीरक ४ माशा, शुष्क पुदीना ४ माशा, कालीमिर्च ४ माशा—इन सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—रातको सोते समय ५ माशा यह चूर्ण ताजा जलके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह वातनाडीशोथ और आमवातमें लाभकारी है, एवं कब्जकुशा (मलावरोधहर) भी है।

२—जिमाद इल्तिहाबुल आसाब

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, कालीजीरी, कडुआकुट, कड़वा सूरंजान, मन्दारपुष्प, सूखा मकोय, मेंहदीके पत्र—प्रत्येक ६ माशा। आवश्यकतानुसार औषधिको सिरकामें पीसकर और किसी कदर गुलरोगन मिलाकर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—वातनाडीशोथके लिये लाभकारी है।

सुषुम्नावरण शोथ—

१—हब्ब अफ्तीमून

द्रव्य और निर्माणविधि—

सकमूनिया २॥ माशा, अयारिज फैकरा, इन्द्रायनका गूदा, गारीकून, अफ्तीमून (विलायती अकाशबेल), गूगल, हजरअरमनी—प्रत्येक ७ माशा; श्वेत त्रिवृता १॥। तोला। सबको कूट-छानकर जलमें गूंधकर वटिकायें बनायें।

मात्रा आदि—१ माशासे २ माशा तक उपयुक्त अनुपानसे।

उपयोग—यह चिरज सुषुम्नावरणशोथ और चिरकालानुबन्धी शिरोव्याधियोंमें लाभकारी है।

२—जिमाद शीरबुज

द्रव्य और निर्माणविधि—

कद्दूके मग्ज, तरबूजके मग्ज, निलोफर, बनफसा—प्रत्येक १ तोला छागीदुग्ध में पीसकर सुषुम्नाके ऊपर लेप करें।

उपयोग—यह सुषुम्नाशोथ और वातज सरसाम (वातोल्वण सन्निपात) में लाभकारी है।

वातवेदना वा नाडीशूल—

१—रोगन मोम

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोम ऽ१ सेर, खारीनमक (नमकशोर) ऽ३ सेर दोनोंको देगमें डालकर अर्कगुलाबवत् अर्क परिस्रुत करें। यही 'रोगन मोम' के नामसे प्रसिद्ध है।

मात्रा और सेवन-विधि—इसे सुहाता गरम विकारी स्थलपर मर्दन करें।

गुण तथा उपयोग यह पक्षवध, अर्दित, वातज वेदना प्रभृतिके लिये लाभकारी और दोषविलीनकारी है।

२—रोगन दर्द अमबी

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारुहल्दी, देवदार, मुलेठी, कालीमिर्च, फरफियून—प्रत्येक ६ माशा। सबको जलमें पीसकर तिगुने तिलके तेलमें मिलाकर अग्निपर पकायें। जब औषध-द्रव्य जल जायँ तब उतारकर छान लें।

मात्रा और सेवन-विधि—इसे आवश्यकतानुसार वेदनास्थलपर मालिश करके रूईसे सेकें।

गुण तथा उपयोग—यह वातजशूल और कटिशूलके लिये गुणकारी है।

३—रोगन हफ्तबर्ग

द्रव्य और निर्माणविधि—

अर्कपत्र, महानिंब (बकाइन) पत्र, एरण्डपत्र, निर्गुण्डीपत्र, शोभांजनपत्र, कृष्ण धत्तूरपत्र और स्नुहीपत्र—प्रत्येक १ तोला २ माशा। इन सबको कूटकर ऽ१ सेर तिलके तेलमें जलायें और तेल छानकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—थोड़ा यह तेल कुनकुना करके विकारी अङ्ग पर मलें।

गुण तथा उपयोग—नाडीशूल वा वातवेदना, पक्षवध, अर्दित, कम्पवायु और आमवातके लिये यह तेल परम गुणकारी है।

४—अक्सीर औजाअ

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

संखिया, शोरा, सुहागा, नौशादर—प्रत्येक १ तोला। सबको ५ तोला फिटकिरीमें रखकर ५ सेर उपलोंकी अग्नि दें। फिटकिरीको पीसकर ऊपर-नीचे बिछा दें और अग्नि देनेके पश्चात् सबको पीस लें।

मात्रा और अनुपान—एक चावल यह औषध माजून सुरंजान ७ माशामें मिलाकर खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह वातवेदनाओं और आमवातमें परम लाभकारी है।

वातनाडीदौर्बल्य (महांगद रोग)—

१—हब्ब जालीनूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

पालतू नर चटकका मस्तिष्क (मग्ज सरेकुन्जश्क नर खानगी), शाकाकुल मिश्री, पलाण्डु बीज, गंदना बीज, छुहारेका छिलका (पोस्त खुरमा), सालम-मिश्री, जिर्जीरबीज (तारामीराके बीज) और रेगमाही—प्रत्येक १ तोला; कस्तूरी ३ रत्ती; आवश्यकतानुसार मधु और तारामीराका रस मिलाकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—प्रतिदिन सवेरे १ गोली खाकर ऊपरसे ५ तोला काबुली चनोंका हिम (आब जुलाल) लेकर २ तोला मिश्री मिलाकर पी लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियाँ बाजीकरण हैं; अवयवोंको शक्ति प्रदान करती हैं और शरीरमें बल और स्फूर्ति उत्पन्न करती हैं।

२—हब्ब अजाराकी

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

शुद्ध कुचला १ तोला, कालीमिर्च, पीपल—प्रत्येक ६ माशा। इन सबको पान्यकमें घोटकर चना प्रमाणकी वटिकायें प्रस्तुत करें।

हिदायत—दारचीनी, जावित्री, जायफल, अकरकरा और लौंग—प्रत्येक

१ तोला ; शुद्ध कुचला २ तोला। इन सबको यमान्यर्कमें घोटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—ताजा जलसे १ गोली लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह सम्पूर्ण शरीरकी वातनाड़ियोंको बलप्रद है, आमाशय और अँत्रकी गतिको तीव्र करती और कफज रोगोंको लाभकारी है।

विशेष गुण—यह वातनाड़ी-बलदायक है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त हब्बअंबरमोमियाई, हब्ब मुकव्वी (जदीद), माजून जालीनूस लूलुवी और माजून लूलुवी प्रभृति योग भी इस रोगमें लाभकारी हैं।

गृध्रसी (इरकुन्नसा)—

१—माजून सूरंजान

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत सूरंजान १ तोला ६ माशा, बूजीदान, माहीजहरज, कबरकी जड़, श्वेत जीरा और चीता—प्रत्येक ७ माशा ; पीली हड़ २ तोला ४ रत्ती, अजमोदा (तुख्मकरफ्स), सौंफ, श्वेत मरिच, एलुआ, सातर, सैंधव लवण (नमक हिंदी), मेंहदीके पत्र, समुन्दरझाग—प्रत्येक ५। माशा ; गुलाबके फूल, सोंठ, सकमूनिया और तिल—प्रत्येक १०॥ माशा ; श्वेत त्रिवृता ४ तोला ४॥ माशा, मधु ४३ तोला ६ माशा, बादामका तेल १॥ तोला। त्रिवृता वा निशोथको कपड़छान चूर्ण कर बादामके तेलमें स्नेहाक्त करें। फिर शेष द्रव्योंको कूट-छानकर मधुके साथ माजून बनायें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा माजून जलसे अथवा अर्क उसबासे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह कफज और पित्तज गृध्रसीके लिये गुणकारी है तथा आमवात और वातरक्तमें भी लाभकारी है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त इस ग्रन्थमें आये हुए बरशाशा, जौहर मुरक्का (देखो—उपदंश) और हब्ब सूरंजान (देखो—आमवात) प्रभृति योग भी इस रोगकी विविध दशाओंमें गुणकारी हैं।

कटिशूल—

१—हब्ब असगन्द

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत मुसली, पीपल, देशी अजवायन, पीपलामूल-प्रत्येक १ तोला ; मैदा लकड़ी, सोंठ, असगन्ध नागौरी, सतावर-प्रत्येक २ तोला ; पुराना गुड़ (आवश्यकता सार) में मिलाकर चना प्रमाणकी बटिकायें बनायें।

मात्रा और अनुपान--२ गोली अर्क सौंफ १० तोलाके साथ उपयोग करें।

२—अकसीर दर्दकमर

द्रव्य और निर्माणविधि—

कतीरागोंद, श्वेत कत्था, वंग भस्म, तालमखाना, लिसोढा, खस, कुन्दुर, मुलेठी, गुलनार, रेवंद, काला तिल, मेंहदीपत्र, कबाबचीनी, गुडूची सत्व, सत शिलाजीत, बड़ी इलायचीके बीज, छोटी इलायचीके बीज, वंशलोचन और निशास्ता (गेहूंका सत)। इन सबको समप्रमाण लेकर कूटकर कपड़छान चूर्ण तैयार करें। पीछे इस चूर्णको तौलें। जितना यह चूर्ण हो उतना मिश्री मिलाकर चूर्ण कर लें।

मात्रा और अनुपान—१ तोला यह चूर्ण गोदुग्धके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग-यह बाजीकरण, वीर्यस्तम्भनकर्त्ता और शुक्रप्रमेह-नाशक है तथा कटिकी निर्बलताको दूर करती और वीर्यको शुद्ध करती है।

३—जुवारिश जरऊनी सादा

द्रव्य और निर्माण विधि—

गाजरके बीज, अजमोदा (तुख्म करफ्स), तुख्म इस्पिस्त, अजवायन, बादियान खताई, चिलगोजेके बीजकी गिरी, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी और अजमोदेकी जड़की छाल—प्रत्येक १ तोला १० माशा; अकरकरा, कलमी तज, केसर, रूमी मस्तगी और अगर (ऊदखाम)—प्रत्येक ७ माशा ; जावित्री, लौंग, कबाबचीनी, काली मिर्च—प्रत्येक १० माशा। समस्त द्रव्योंको कूटकर छान लें। समस्त द्रव्योंके चूर्णके समप्रमाण मिश्री और दुगुना मधुकी चाशनीमें मिलाकर यथाविधि जुवारिश (खाण्डव) प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा यह खाण्डव २ तोला अर्क सौंफके साथ सवेरे खायें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रपिण्डों और कटिको बल प्रदान करती, शुक्र उत्पन्न करती और वाजीकरण करती है।

४—रोगन दर्दकमर

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारुहल्दी, देवदार, काली मिर्च, मुलेठी, फरफियून-प्रत्येक ६ माशा। सबको जलमें पीसकर तिगुना तिलके तेलमें मिलाकर अग्निपर पकायें। जब औषध जल जाय तब उतारकर छान लें।

मात्रा और अनुपान—आवश्यकतानुसार वेदनास्थलपर मर्दन करके रूईसे सेंक करें।

गुण तथा उपयोग—यह कटिशूलके लिये परमोपयोगी है।

अपतन्त्रक (इख्तिनाकुर्रिहम—हिस्टीरिया)—

१—शर्बत इख्तिनाकुर्रिहम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कासनीकी जड़ १० तोला, खीरा-ककड़ीके बीज ८ तोला, खरबूजाके बीज, कसूसबीज (पोटलिका बद्ध), अन्जलक मग्ज और सूखा मकोय—प्रत्येक ४ तोला; रक्त तुल्थ ३ तोला, गावजबानपुष्प २ तोला, शुद्ध सिरका एक बोतल, मिश्री ऽ१॥ सेर। यथाविधि शर्बत (शार्कर) कल्पना कर लें।

मात्रा और अनुपान—४ तोला शर्बत १२ तोला अर्कसौंफमें मिलाकर या मतबूख हब्ब कुतम (कुसुमबीज क्वाथ) में मिलाकर उपयोग करायें।

उपयोग—यह अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में लाभकारी है।

२—माजून इख्तिनाकुर्रिहम

द्रव्य और निर्माणविधि—

अवीद्ध मोती, प्रवालशाखा, तृणकांतमणि (कहरुवा), दरूनज, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, नरकचूर, श्वेत बहमन, रक्त बहमन—प्रत्येक ७ माशा; लौंग २ माशा, छ[illegible]ोला, बालछड़, तु[illegible]ला बीज, तमालपत्र, दालचीनी, [illegible]

प्रत्येक ३॥ माशा ; बंशलोचन, काश्मीरी केसर, रूमी मस्तगी, श्वेत चन्दन, रक्त-चन्दन, शुष्क धनिया प्रत्येक ७ माशा ; अम्बरअशहब ३ माशा, कस्तूरी २ माशा, मिश्री देशी १६ तोला, शुद्ध मधु ७ तोला। इन सबका यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—२ से ४ माशा तक गुलाबपुष्पार्क और गावजबानार्क के साथ उपयोग करायें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून मृगी और अपतन्त्रकके सिवाय हृदयदौर्बल्य और दिलकी धड़कनको भी लाभ पहुंचाता है।

विशेष उपयोग—यह अपतन्त्रककी प्रधान महौषधि है। इसे कमसे कम दो मास तक खिलायें।

३—हब्ब इख्तिनाकुर्रिहम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कस्तूरी १ रत्ती, हींग, कपूर, तगर, (असारून), बालछड़-प्रत्येक १ माशा—सबको बारीक पीसकर चना प्रमाणकी गोलियां बनायें।

मात्रा और अनुपान—१ गोली उपयुक्त अनुपानसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—अपतन्त्रकके लिये इससे उत्कृष्ट कोई अन्य औषधि अबतक अनुभवमें नहीं आई।

४—द्वितीय (हब्ब इख्तिनाकुर्रिहम)

द्रव्य और निर्माणविधि—

जुन्दबेदस्तर ७ माशा ; हींग, कस्तूरी, ऊदसलीब—प्रत्येक ४॥ माशा। सबको पीस कर अर्क दारचीनी या अर्क सौंफके साथ उड़द प्रमाणकी वटिकाएं प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—२ गोली प्रतिदिन सवेरे अर्क सौंफके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—अपतन्त्रकके लिये अतिशय गुणकारी है।

५—दवाउश्शिफा

योग आदिके लिये उन्मादान्तर्गत 'दवाए जुनून' देखें। दवाउश्शिफा उसका दूसरा नाम है। २ वटी दवाउश्शिफा सायंकालको जलसे खिला दिया करें।

—

प्रतिश्याय-कास-श्वासाधिकार ५

प्रसेक व प्रतिश्याय (नजला व जुकाम)—

१—अकसीर नजला

द्रव्य और निर्माणविधि—

कलमी शोरा ६ माशा, कपूर ६ माशा, अहिफेन २ माशा, शुद्ध बछनाग १॥ माशा। इन सबको बारीक खरल करके जलसे मुंग प्रमाणकी गोलियां बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक गोली सबेरे या रातको खा लें।

गुण तथा उपयोग—कैसा ही प्रसेक (नजला) हो, इसके उपयोगसे दूर हो जाता है।

२—अतूस नजला व जुकाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

उस्तूखूदूस पुष्प, सफेद इलायची, नीमके पत्र, तमाकूके पत्र, धनियाके सूखे पत्र, सिरसके बीज—प्रत्येक २ माशा। इन सबको कूट-पीसकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—थोड़ीसी औषधि चुटकीमें लेकर नस्यकी भांति प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह प्रसेक व प्रतिश्याय (नजला व जुकाम)के लिये गुणकारी है। यह रुके हुए नजलाको पतला करके उत्सर्गित करती है और उसकी आगामी उत्पत्तिको रोकती है।

३—तिरियाक नजला

द्रव्य और निर्माणविधि—

उस्तूखूदूस १ तोला ५॥ माशा, गावजबानपुष्प, विलायती मेंहदीके बीज (तुख्म मोरद), शुष्क धनिया प्रत्येक २ तोला ११ माशा; काहूके बीज ५ तोला १० माशा, खुरासानी अजवायन और पोस्तेकी डोंडी (कोकनार)—प्रत्येक ८ तोला ९ माशा; सफेद खशखाशके बीज (श्वेत खसबीज) ११ तोला

८ माशा। समस्त द्रव्योंको रात्रिभर जलमें भिगोकर सवेरे पकायें। फिर मल-छानकर तिगुनी मिश्री मिलाकर चाशनी करें। पीछे गुलाबपुष्प, शुष्क धनिया, मुलेठीका सत, गेहूंका सत (निशास्ता), बबूलका गोंद, कतीरा, बोल (मुरमकी)—प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा बारीक पीसकर मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा यह तिरियाक, २ तोला शर्बत खशखाश और १२ तोला अर्क गावजबानके साथ प्रातःकाल निहारमुख खायें। भारी और अम्ल पदार्थोंसे परहेज करें।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारके सर्द व गरम नजलाके लिये लाभकारी और सिद्ध भेषज है।

४—तिरियाक नजला दायमी

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

सफेद धतूरके बीजोंको पोस्तेकी डोंडी (पोस्त खशखाश) के पानीमें सात बार भिगोयें और सुखायें। फिर पोस्तेकी डोंडीके पानीमें उबालें। जब सम्पूर्ण जल शोषित हो जाय, तब उतारकर धतूरके बीजोंको काममें लेवें। इस प्रकार शुद्ध किये हुए धतूरके बीज, बिनौलेकी गिरी, सफेद जीरा, छिला हुआ धनिया (कशनीज मुकश्शर) समभाग लेकर महीन करके त्रिफलाके पानीसे खरल करें और चनाप्रमाणकी गोलियां बनाकर सायामें सुखा लें।

मात्रा और सेवन-विधि रात्रिमें सोते समय १ गोली सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह दायमी प्रसेक व प्रतिश्याय (जुकाम और नजला) के लिये रामबाण औषधि है।

५—माजून नजला व जुकाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिली हुई मुलेठी १४ माशा, उस्तूखूदूस १४ माशा, गावजबान ७ माशा, गावजबानपुष्प, जूफा खुश्क, मेथी, बाकला—प्रत्येक १४ माशा; सौंफ, खीरा-ककड़ीके बीज, सूखा पुदीना—प्रत्येक ४ माशा; बनफशापुष्प ६ माशा, हँसराज (परसियावशाँ) ६ माशा, अन्जीर जर्द २२॥ माशा, खतमी बीज २२॥ माशा, अलसी बीज ४॥ माशा, उन्नाब ४० दाना, लिसोढ़ा ७० दाना, पोस्तेकी डोंडी १ तोला। इन सबको ऽ॥ आध सेर जलमें इतना पकायें कि आधा जल (१ पाव)

रह जाय। फिर मल-छानकर ऽ॥ आध सेर मिश्रीको चाशनी कर लें। चाशनीके अन्तमें ६ माशा बादामकी गिरी और ६ माशा पोस्ताके दानेका शीरा मिलायें तथा मुलेठीका सत २ माशा, शकरतीगाल २ माशा, बबूलका गोंद, कुन्दुर, मग्ज बिहदाना—प्रत्येक ३ माशा और बोल (मुरमक्की) १ माशा पीसकर मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—३ माशासे ६ माशा तक गावजबानके अर्कसे खिलायें।

गुण तथा उपयोग—जिनको बार-बार जुकाम व नजला होता हो, उनके लिये हितकर है।

६—लऊक नजली (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

... २ तोला ११ माशा, खतमी बीज, बिहदाना—प्रत्येक ४ तोला १ माशा। सबको ऽ१॥ सेर उष्ण जलमें भिगोयें और सवेरे क्वाथ करें। जब आधा जल रह जाय तब १७॥ तोला चीनी मिलाकर चाशनी करें। अन्तमें मग्ज बिहदाना और बबूलका गोंद—प्रत्येक १ तोला ६ माशा, कतीरा २ तोला ४ माशा; सफेद पोस्तेका दाना (श्वेत खसबीज) और काले पोस्तेका दाना—प्रत्येक २ तोला ११ माशा पीसकर मिलायें। बस अवलेह (लऊक) तैयार है।

मात्रा और सेवन विधि—२ तोला अवलेह १२ तोला गावजबानके अर्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह नजलाके लिये असीम गुणकारी है तथा प्रतिश्यायजन्य कास (नजली खांसी) को दूर करता है।

७—शर्बत फरयादरस जदीद

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजबान, गुलाबपुष्प, खतमी बीज, सौंफ—प्रत्येक १ तोला; पोस्तेका दाना (खसबीज), श्वेत चन्दन, ऊदसलीब, हंसराज (परसियावशाँ), मुलेठी—प्रत्येक २ तोला; बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवेज मुनक्का) २५ दाने, मिश्री ऽ॥ आध सेर। इन सबका यथाविधि शार्कर (शर्बत) प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला शार्कर १२ तोला गावजबानके अर्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह प्रसेक व प्रतिश्याय (नजला व जुकाम) तथा कासमें अतिशय गुणकारी है।

८—हब्ब जुकाम मुज्मिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखियाका सत्व (जौहर) १ माशा, शिलाजीत १॥ माशा, लोह भस्म ६ माशा, अम्बर अशहब २ माशा किसी कदर गावजबानके अर्कमें घोटकर काली-मिर्चके प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली सवेरे और १ गोली सायंकाल खायें।

गुण तथा उपयोग—चिरज प्रतिश्यायके लिये परम गुणकारी है।

९—हब्ब नजला

द्रव्य और निर्माणविधि—

खुरासानी अजवायन, अहिफेन, बबूलका गोंद, कतीरा, काहूके बीज, लुफाह की जड़, मुलेठीका सत, गेहूंका सत (निशास्ता), केसर—प्रत्येक समभाग लेकर महीन पीसकर चनाप्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि – प्रयोजनानुसार १ गोली जलसे निगल लें।

गुण तथा उपयोग—दायमी नजला और जुकामके लिये लाभकारी एवं सिद्ध भेषज है।

१०—हब्ब सुआल नजली

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

बबूलका गोंद, कतीरा, मुलेठीका सत, सकरतीगाल, सफेद पोस्तेके दाने, मीठे बादामका मग्ज—प्रत्येक ६ माशा ; अहिफेन और केसर—प्रत्येक २ माशा। इनको बारीक पीसकर बिहदानेके लुआबमें मूंगके प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन विधि—१ गोली निरन्तर मुखमें डाले रहें और लुआब चूसते रहें।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त 'बरशाशा', 'लऊक तुर्बुज' और 'दियाकूजा' प्रभृति योग भी इस रोगमें गुणकारी हैं।

कास (सुआल-खाँसी)—

१—कुश्ता नौशादर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादर १ तोला, पिसा हुआ लवण ऽ। एक पाव। नौशादरको लवणके बीच तवेपर रख दें और ऊपर प्याला औंधा कर दें। फिर तवेको चूल्हेपर रखकर दो घंटातक मध्यम अग्नि दें। जब शीतल हो जाय तब नौशादरको निकालकर बारीक पीस लें।

मात्रा और सेवन-विधि—दो रत्ती यह भस्म जरासा मक्खनमें मिलाकर शुष्क कासमें और आर्द्र (तर) कासमें बताशामें रखकर दें।

गुण तथा उपयोग—कास और श्वासमें अतीव गुणकारी है।

२—कुश्ता सदफ मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुक्ताशुक्ति (सदफ सादिक) २ तोला, वंग (कलई) ६ माशा। वंगके बारीक-बारीक टुकड़े काटकर और मोतीसीप (सदफ) के टुकड़े करके एक मिट्टी के सकोरेमें डालें और ऊपरसे घीकुआरका रस इतना डालें कि चार अंगुल उनसे ऊपर रहे। फिर कपड़मिट्टी करके गड्ढेमें एक मन उपलोंकी अग्नि दें। स्वांग-शीतल होनेपर निकालें और पीसकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—आधी रत्तीसे २ रत्तीतक प्रयोजनानुसार कफज कृच्छ्रश्वासमें २ तोला मधु या २ तोला शर्बत जूफाके साथ, उष्ण श्वासमें शर्बत निलोफरके साथ, सूजाक और वृक्करोगोंमें ४ तोला शर्बत बजूरीके साथ और कासमें अर्क गावजबानके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग— —कफज कृच्छ्रश्वास और अन्यान्य कफज व्याधियों, जैसे—कास, श्वास आदिमें गुणकारी है। अश्मरीको तोडता है और वृक्क एवं वस्तिगत रोगोंमें लाभ पहुंचाता है।

३—कैरूती

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोम १ तोला, रोगन बनफशा और रोगन कद्दू प्रत्येक १॥ तोलामें पिघला कर काहूका रस और हरे धनियाका रस-प्रत्येक १ तोला मिलाकर वक्ष (सीने) पर मालिश करें।

पथ्यापथ्य—हरीरे, यवमंड (आशेजौ) और अन्यान्य तरी उत्पन्न करने-वाले पथ्य-आहार सेवन करें। रूक्ष पदार्थ बिल्कुल न खायें।

गुण तथा उपयोग—शुष्क कासमें सीनाको तर रखनेके लिये गुणकारी है।

४—खमीरे खशखाश

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्तेकी डोंडी (कोकनार) १०० नगको ॥२ सेर जलमें भिगोयें। सवेरे यथाविधि क्वाथ करके ॥१ सेर चीनीके साथ खमीराकी चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि— ७ माशा खमीरा अर्क गावजबान १२ तोला या अन्य उपयुक्त अनुपानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह कास और उष्ण प्रतिश्यायके लिये गुणकारी है; फुफ्फुससे रक्त आनेको रोकता है; संताप शमन करता है; प्रतिश्यायजन्य शिरोशूलको लाभ पहुंचाता है और अतिरजको बन्द कर देता है।

५—दियाकूजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

समूचा पोस्तेकी डोंडी (कोकनार मुसल्लम) २० नग, खतमी बीज, कतीरा, बबूलका गोंद, खीरा-ककड़ीके बीज, बिहदाना—प्रत्येक १ तोला ५ माशा; छिली हुई मुलेठी और इसबगोल—प्रत्येक ३ तोला; चीनी ।। एक पाव। पोस्तेकी डोंडी, मुलेठी, बिहदाना और खतमीके बीजोंको रात्रिमें तिगुने उष्ण जलमें भिगो कर सवेरे क्वाथ करें। जब आधा जल रह जाय तब उतार-छानकर उसमें चीनी मिला चाशनी करें। पीछे उसमें कतीरा और बबूलका गोंद पीसकर मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ या दो तोला मुखमें रख कर चूसें।

गुण तथा उपयोग—कास और नजलाके लिये गुणकारी है।

६—लऊक बादाम (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिलका उतारी हुई मीठे बादमकी गिरी, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी—प्रत्येक ३५ माशा; बबूलका गोंद, कतीरा, निशास्ता (गेहूँका सत), मुलेठीका सत—प्रत्येक ७० माशा, चीनी ७० माशा। सबको कूट-पीसकर मीठे बादामके तेलमें स्नेहाक्त करके यथावश्यक गुलाबपुष्पार्क मिलाकर अवलेह (लऊक) बनालें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ से ६ माशातक यह अवलेह प्रातःसायंकाल चटायें।

गुण तथा उपयोग—यह शुष्क कास तथा कंठ और स्वरयन्त्रस्थ प्रदाह दूर करनेके लिये उत्कृष्ट एवं गुणदायक औषधि है।

७—लऊक बीहदाना (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीहदाना, इसबगोल, खतमी बीज—प्रत्येक ३ तोलाका लुआब निकालकर मीठे अनारके रस, ककड़ीका स्वरस, लौकीका रस, फाड़ा हुआ कुलफापत्र-स्वरस—प्रत्येक २० तोलामें समाविष्ट करें और छानकर ऽ॥ आधा सेर चीनी मिलाकर चाशनी करें। चाशनीके अन्तमें बबूलका गोंद, कतीरा, छिली हुई मीठे बादामकी गिरी, सफेद पोस्तेके दाने—प्रत्येक २ तोला ; मुलेठीका सत, शकरतीगाल—प्रत्येक ६ माशा बारीक पीसकर मिला दें।

मात्रा और सेवन विधि—६ माशासे १ तोलातक दिनभरमें कई बार चटायें।

गुण तथा उपयोग—शुष्क कास एवं उरःक्षतमें परम गुणकारी है।

८—लऊक सपिस्ताँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

लिसोढ़ा ५० नग, उन्नाब २० नग, पोस्तेकी डोंडी २ तोला, मुलेठी १ तोला, सफेद खतमी बीज, खीरा-ककड़ीके बीज—प्रत्येक ४ माशा ; बीहदाना ३ माशा। इन सबको ऽ२ सेर जलमें क्वाथ करें और ऽ॥ आधा सेर चीनीमें चाशनी तैयार करें। चाशनीके अन्तमें निष्तुषीकृत जौका शीरा, छिलका उतारी हुई बादामकी गिरीका शीरा, पोस्ताके दानेका शीरा—प्रत्येक १ तोला मिलायें। चाशनी तैयार हो जानेके बाद मुलेठीका सत, कतीरा, बबूलका गोंद—प्रत्येक तीन माशा पीसकर मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा या १ तोला प्रातः और सायंकाल चाट लिया करें।

गुण तथा उपयोग—नजला, कास और जुकामके लिये परम गुणकारी है तथा श्लेष्माका उत्सर्ग करता है।

९—लऊक सुआल

द्रव्य और निर्माणविधि—

भृष्ट अलसीके बीज और मीठे बादामकी गिरी—प्रत्येक ३ तोला पीसकर १२ तोला मधुमें मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि २ तोला अवलेह सवेरे १२ तोला गावजबा-नार्कके साथ लेवें।

गुण तथा उपयोग—कफज कृच्छ्रश्वास और श्वासको बहुत गुणकारक है एवं शुष्क व आर्द्र उभय प्रकारके कासके लिये लाभकारी है।

१०—शर्बत उन्नाब

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब विलायती ऽ१ सेर, मिश्री ऽ३ इनका यथाविधि शर्बत प्रस्तुत करें।

उपयोग और सेवन-विधि—४ तोला शर्बत (शार्कर) १० तोला अर्क शाहतरा या अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तप्रसादक है, रक्तप्रकोपको शमन करता और मसुरिकामें लाभकारी है।

११—शर्बत खशखाश

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्तेकी डोंडी (कोकनार) ऽ१ सेर रातको आठगुना उष्ण जलमें भिगोयें और सवेरे क्वाथ करें। जब चौथाई जल शेष रह जाय तब ऽ१ सेर चीनी मिला कर शर्बत (शार्कर) की चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला शार्कर अर्कगावजबान जदीद ६ तोला के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—उष्ण नजला (पित्तज प्रतिश्याय) को दूर करता है और कासमें लाभकारी है।

१२—शर्बत जूफा जदीद

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब ६० नग, लिसोढा १०० नग, सफेद अंजीर ४८ नग, बनफशापुष्प २८ माशा, खतमी बीज, खुब्बाजी बीज—प्रत्येक ३५ माशा, हँसराज (परसिया-वशाँ) २४॥ माशा, छिली हुई मुलेठी, जूफा शुष्क—प्रत्येक ४ तोला ८ माशा। इन सबको जलमें क्वाथ करके छान लें और काढ़ेमें ऽ॥ आधा सेर चीनी मिलाकर शर्बतकी चाशनी कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ से २ तोला तक यह शार्कर अर्क या औषधियोंके क्वाथ या फाण्टमें मिलाकर पिलायें या यूंही थोड़ा-थोड़ा चटायें।

गुण तथा उपयोग—यह वक्षको गाढ़े दोषोंसे शुद्ध करता है ; कासके लिये परम गुणकारी है और श्वासके लिये भी उपकारक है।

१३—शर्बत बनफशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

बनफशापुष्प ३ तोला रातको जलमें भिगोयें। सवेरे उबालकर छान लें और ऽ१ सेर चीनी मिलाकर चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ तोला यह शार्कर १२ तोला गावजबाना के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह प्रतिश्याय (नजला व जुकाम), कास और ज्वरमें गुणकारी है तथा शिरोशूल, नेत्रशूल और कर्णशूलमें भी उपकारी है।

१४—हब्ब सुआल खासुलखास

द्रव्य और निर्माणविधि—

अन्तर्धूमदग्ध मन्दारपुष्प, अन्तर्धूमदग्ध कदलीपुष्प, शकरतीगाल–प्रत्येक २ माशा ; मुलेठीका सत ४ माशा, काकड़ासिंगी, शिलारस–प्रत्येक १ माशा ; बंशलोचन ३ माशा, कालीमिर्च २ माशा। इन सबको पीस-कपड़छान कर बँगला पानके फाड़े हुए स्वरसमें तीन घण्टे घोंट-खरलकर चना प्रमाणकी वटिकायें बनाकर सायामें सुखा लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली दिनमें कई बार मुखमें डालकर चूसते रहें।

गुण तथा उपयोग—यह कफज कासके लिये रसायन है, श्लेष्माका उत्सर्ग करती है और कासको जड़से खो देती है।

वक्तव्य—यह कफज कृच्छ्रश्वासके लिये भी बहुत गुणकारी एवं परीक्षित है।

श्वास (दमा)—

१—अकसीर जीकुन्नफस

द्रव्य और निर्माणविधि—

तीक्ष्ण तमाकू ५ तोला, अहिफेन १ तोला, सफेद संखिया २ माशा, अर्कक्षार

१० तोला। इन सबको खूब भलीभांति खरल करें। फिर २ तोला एलुआ डाल कर खुरासानी अजवायनका चूर्ण २ तोला और धतूरके बीज २ तोला मिलाकर पुनः खरल करें। जब शुष्क हो जाय सुरक्षित रखें। चार रत्ती उक्त औषधिमें ३ से ५ तोलातक बादामका तेल डालकर खूब भलीभाँति खरल करें और सोलह मात्रायें बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ या २ मात्रा प्रति दिन उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह कृच्छ्रश्वास और श्वास (दमा) में परम गुणकारी है।

२—रोगन लोबान खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

कौड़िया लोबान ५ तोला, दारचीनी, लौंग, जायफल, जावित्री, अजवायन—प्रत्येक ३ माशा। इन सबको यवकुट करके आकाशयन्त्रसे तेल निकालें। प्यालेमें दो प्रकारका तेल मालूम होगा। ऊपरवाला तेल पतला होगा और नीचेका गाढ़ा। दोनोंको अलग-अलग रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—ऊपरवाला तेल वाह्य रूपसे फुरेरीसे कनपुटी और मस्तकपर लगानेके काममें आता है। नीचेवाला गाढ़ा तेल लोबानका तेल है। इसे एक सींक पान आदिपर लगाकर खिलायें।

गुण तथा उपयोग—पतला तेल शिरोशूल आदिमें मस्तकपर लगानेसे अति शीघ्र लाभ होता है। नीचेवाला तेल उपयुक्त अनुपानके साथ कफज रोग, नजला, श्वास और नपुंसकता तथा आमवातमें परम गुणकारी है।

३—हब्ब जीकुन्नफस

द्रव्य और निर्माणविधि—

बबूलका गोंद, कतीरा, केसर, मुलेठीका सत (विलायती), शकरलीगाल—प्रत्येक १॥ माशा; शुद्ध अहिफेन ३ माशा, दारचीनी, जावित्री, काला पोस्ताके दाने, सफेद पोस्ताके दाने, मीठे बादामकी गिरी, अम्बर अशहब, तिक्त जदवार, छिले हुए बाकलाके बीज, मुलेठी, बोल (मुरमक्की), शिलारस, गावजबान बीज, जहरमोहरा खताई, नीली झाईके बंशलोचन, शुद्ध कस्तूरी, रक्त प्रवालमूल, प्रवालशाखा, हरा यशब, माणिक (याकूत रुम्मानी), जरावंद मुदहरज, रूमीमस्तगी, छोटी इलायचीके बीज, गावजबानपुष्प—प्रत्येक १ माशा; मुक्तापिष्टी (मरवा-

रीद महलूल), काकड़ासिंगी—प्रत्येक २ माशा। इन सबको पीसकर गावजबान का लुआब मिलाकर चना प्रमाणकी वटिकायें प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक-एक गोली सवेरे, दोपहर और सोते समय मुखमें डालकर लुआब चूसें।

गुण तथा उपयोग—यह कृच्छ्रश्वासके लिये परम गुणकारी एवं परीक्षित है और उत्तमांगोंको बल प्रदान करती है। यह श्वास अर्थात् दमाको जड़से खो देती है।

कुक्कुरकास (शहीका)—

१—दवाए शहीका

द्रव्य और निर्माणविधि—

फिटकिरी १ तोला, केलेके खम्भा (वृक्षकाण्ड) का रस १० तोला। फिटकिरीको एक लोहेके तवे या कड़ाहीमें पिघलायें और केलेके रसका चोआ देते जायँ। जब समस्त रस समाप्त हो जाय तब चूल्हेसे उतारकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक वर्षीय शिशुको १ रत्ती, दो वर्षीय शिशुको २ रत्ती और तीन वर्षके बालकको ३ रत्ती औषधि अजवायनके अर्कसे दिनमें एक या दो बार खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह कुक्कुरकास (काली खाँसी) के लिये परम गुणकारी है।

रक्तष्ठीवन (नफ्सुद्दम)—

१—अकसीर नफ्सुद्दम

द्रव्य और निर्माणविधि—

संगजराहत ५ तोला, नीमकी हरी पत्ती ऽ। एक पाव। नीमके पत्तोंके भुर्ता (कल्क) में संगजराहत रखकर ऊपर कपड़ा लपेट दें और निर्वात स्थानमें सात सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर खरल करके रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ माशा सवेरे और सायंकाल मक्खन या मलाईमें रखकर खावें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तष्ठीवन, रक्तवमन, मूत्ररक्त, रक्तार्श, नासागत रक्तपित्त, असृग्दर और रक्तामाशय (रक्त प्रवाहिका) के लिये अनुपम औषधि है। सारांश यह कि हर प्रकारके रक्तस्रावके लिये यह अतीव गुणकारी एवं सिद्ध औषधि है।

२—कुर्स कहरुवा

द्रव्य और निर्माणविधि—

कहरुवा (तृणकांत), प्रवालमूल, मुक्ता, छिले हुए कुलफाके बीज–प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा ; अन्तर्धूमदग्ध सावरश्रृङ्ग, अन्तर्धूमदग्ध कुक्कुटाण्डत्वक्, कतीरा, बबूलका गोंद–प्रत्येक १०॥ माशा ; भृष्ट शुष्क धनियाँ, सफेद पोस्ताके दाने–प्रत्येक १ तोला ६ माशा, अन्तर्धूम जलाई हुई कौड़ी, श्वेत खुरासानी अजवायन–प्रत्येक ७ माशा। इनको कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें। फिर बारतंगके रसमें घोटकर चार-चार माशाकी टिकिया बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा दवा ताजा जल या अन्यान्य उपयुक्त भेषजके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—रक्तष्ठीवन और प्रत्येक अङ्गजात रक्तस्रावके लिये विशेष रूपसे कृतप्रयोग और परीक्षित है।

३—कुर्स गुलनार

द्रव्य और निर्माणविधि-

गुलनार, गिल अरमनी, बबूलका गोंद–प्रत्येक १ तोला २ माशा ; गुलाब-पुष्प, अकाकिया–प्रत्येक १०॥ माशा और कतीरा ७ माशा। इनको कूट-छानकर गुलनारके रसमें घोटकर टिकियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक टिकिया उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—रक्तष्ठीवन और रक्तस्रावके लिये असीम गुणकारी है।

४—दवाए नफसुद्दम

द्रव्य और निर्माणविधि—

१—शुद्ध आमलासार गंधक १ माशा महीन पीसकर रखें।

२—वंशलोचन, छोटी इलायची, गेहूंका सत (निशास्ता), बबूलका गोंद

कतीरा, खूनाखराबा (दम्मुलअख्वैन), संगजराहत, अलसी (तीसी) समूची, *बड़े दानेकी मोतीकी भस्म, गेरू, मुक्ताशुक्तिकी भस्म, गुलनार, बिहदाना-प्रत्येक* ६ माशा ; असली गुडूचीसत्व ६ माशा, *पेठेके बीजोंकी गिरी ३ तोला,* कृष्णाभ्रक भस्म और कहरुवा शमई-प्रत्येक १ तोला ; चाँदीके वरक १० नग। इन सबको धूलके समान महीन पीसकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रथम नम्बर एकका योग जलसे खिलायें। पीछे नम्बर दोके योगमेंसे १ माशा औषध लेकर एक घंटा पश्चात् बकरीके दूधके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग-हर प्रकारके रक्तष्ठीवन (मुंहसे रक्त आने, रक्त थूकने) में लाभकारी है। रोगी चाहे कितना ही रक्त थूकता हो, इसके उपयोगसे लाभ हो जाता है।

५—लऊक़ अञ्जबार

द्रव्य और निर्माणविधि—

अञ्जबारकी जड़ २ तोला, पोस्तेकी डोंडी सम्पूर्ण ५ नग, खुब्बाजीके बीज १७॥ माशा, खतमीके बीज १७॥ माशा, लिसोढा ३० दाना, छिली हुई मुलेठी १४ माशा, बिहदाना ६ माशा, उन्नाब २० दाना। रात्रिमें सबको कद्दूके फाड़े हुए रस ऽ॥ आधा सेर और पेठेके फाड़े हुए रस ऽ॥ आधा सेरमें भिगोकर सवेरे क्वाथ करें। फिर मल-छानकर ऽ॥ आधा सेर मिश्री मिलाकर चाशनी कर लें। पीछे कहरुवा शमई, गिल अरमनी, मुलेठीका सत, खूनाखराबा (दम्मुल् अख्वैन), वंशलोचन, अन्तर्धूम जलाया हुआ केंकड़ा-प्रत्येक ७ माशा ; बबूलका गोंद, कतीरा-प्रत्येक ६ माशा कपड़छान चूर्ण कर मिलायें।

मात्रा—७ माशासे ९ माशातक।

गुण तथा उपयोग—रक्तष्ठीवन, कास और उरःक्षतके लिये लाभकारी है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त कुर्स तबाशीर काफूरी लूलुवी, कुर्स सरतान, कुश्ता मिरजान, खमीरे खशखाश प्रभृति योग भी इस रोगमें लाभकारी हैं।

हृद्रोगाधिकार ६

हार्दिक संताप—

१—जुवारिश आमला सादा

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुठली निकाला हुआ आमला ५ तोला एक दिन-रात गोदुग्धमें भिगोयें। पश्चात् धोकर जलमें उबालें। फिर छानकर ऽ२ दो सेर मिश्री मिलाकर चाशनी करें। पीछे पिस्ताका बाहरी छिलका ५ माशा, बंशलोचन, बिजौरेका छिलका, श्वेत चन्दन-प्रत्येक १ तोला; मस्तगी और छोटी इलायचीके दाने-प्रत्येक ६ माशा कूट-छानकर समाविष्ट करें।

मात्रा और अनुपान-७ माशा जुवारिश १२ तोला गावजबानके अर्कसे सवेरे खायँ।

गुण तथा उपयोग-यह हृदय और यकृत्‌की बढ़ी हुई ऊष्माको प्रशमित करती है; आमाशय और हृदयको बल वा पुष्टि प्रदान करती है; पैत्तिक अतिसार और बाष्पारोहणको रोकती है तथा शीघ्रहृदयता (इख्तिलाज) को विशेष रूपसे लाभकारी है।

अपथ्य—उष्ण और बाष्प उत्पन्न करनेवाली वस्तुओंसे परहेज आवश्यक है।

२—अर्क बहार

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताजे गुलाबके फूल ५ सेर, गुलाबका अर्क ऽ१ सेर, सौंफ, बीज निकाला हुआ मुनक्का (मवीज मुनक्का)-प्रत्येक १५ तोला; अगर (ऊद), तालीसपत्र (जर्नब), श्वेत बहमन, रक्त बहमन, शकाकुल मिश्री-प्रत्येक १ तोला; अम्बर १॥। तोला। पन्द्रह सेर जलमें रातभर भिगोकर सबेरे ऽ५ सेर अर्क परिस्रुत करें। कभी ताम्बूलपत्र १०० नग, इलायची, दारचीनी, लौंग—प्रत्येक १४ माशा और सम्मिलित करते हैं।

मात्रा और अनुपान—१० तोलेकी मात्रामें अन्यान्य हृदयको बल देनेवाले भेषजोंके अनुपान स्वरूप उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह दिलकी धड़कनके लिये कामकारी है, प्यास बुझाता है; संताप (हरारत) शमन करता है तथा हृदय और मस्तिष्कको उल्लसित करता है।

३—अक्सीर क़ल्ब

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीली झाईंका वंशलोचन, धनिया, श्वेत चन्दन, सफेद इलायची, तृणकांत (कहरुवा), जहरमोहरा खताई (हरिताश्म)—प्रत्येक ५ तोला, दरियाई नारियल ३ तोला, अकीक भस्म २ तोला, प्रवालशाखा भस्म १ तोला, चांदीके वरक ३ माशा। इन सबको कूट-छानकर आटेकी तरह महीन चूर्ण बना लें।

मात्रा और अनुपान—२ माशासे ३ माशातक अनारके सत (रुब्ब अनार) या बिहीके सत (रुब्ब बिही) २ तोलामें मिलायें और थोड़ा-थोड़ा रोगीको चटायें। मस्तिष्ककी पुष्टिके लिये पोस्ताके दाने या बादामके मग़जके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह चूर्ण हृदयको उल्लसित करता, हृदयको पुष्ट करता और उसके संतापको शमन करता है तथा मस्तिष्क, आमाशय और यकृत्को पुष्टि प्रदान करता है एवं दिलकी धड़कन, शीघ्रहृदयता और विराग (वहशत) को दूर करता है।

विशेष उपयोग—हृदयदौर्बल्यके लिये खास दवा है।

४—शर्बत गुड़हल

द्रव्य और निर्माणविधि—

जवापुष्प १०० नग, नीबूका रस ऽ। एक पाव, मिश्री ऽ१ एक सेर। चीनीके पात्रमें नीबूका रस डालकर उसमें जवापुष्प बारीक करके भिगो रखें और सवेरे ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) ग्रहण कर लें। फिर ऽ२ दो सेर जलमें ऽ१ एक सेर मिश्रीकी चाशनी करके पूर्वोक्त जुलाल (निथारा हुआ जल) डालकर कई बोतलें आधा-आधा भरें। बोतलोंका मुंह खूब बन्द करके पानीके टब या मटके में डाल दें। दो-चार दिन पीछे निकालकर छानकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला उक्त औषधि शीतल जल या १२ तोला अर्क गावजबानसे पियें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयको उल्लसित करता और संताप शमन करता है तथा हृदयकी धड़कन और विराग (वहशत) को दूर करता है।

विशेष उपयोग—विराग (वहशत) निवारक है।

हृत्स्पन्दन (खफकान)—

१—जुवारिश शाही

द्रव्य और निर्माणविधि—

अबरेशम खाम १४ तोला ७ माशाको जलसे धोकर साफ करें। फिर ऽ१ एक सेर १३॥ छटाँक जलमें तीन दिन-रात भिगोयें। इसके बाद इतना पकायें कि पाँचवाँ हिस्सा जल शेष रह जाय। इसको मल-छानकर मीठा सेबका रस, खट्टे सेबका रस, मीठे अनारका रस, खट्टे अनारका रस, मीठे अंगूरका रस, बिहीका रस, उन्नाबका शीरा (रस), गावजबानका शीरा (उन्नाब और गावजबानको उबालकर शीरा निकालें) और श्वेत चन्दनका अर्कगुलाबमें निकाला हुआ शीरा—प्रत्येक २ तोला ११ माशा; अर्क गुलाब और मिश्री—प्रत्येक १४ तोला ७ माशा मिलाकर खमीराकी चाशनी प्रस्तुत करें। पीछे उसमें केसर ३॥ माशा अर्क गुलाबमें हल करके और अम्बर अशहब और तिब्बती कस्तूरी—प्रत्येक १॥। माशा सम्मिलत करें।

मात्रा-५ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयकी धड़कन और विराग (वहशत) को दूर करता है।

२—दवाउलमिस्क बारिद जवाहरवाली

द्रव्य और निर्माणविधि—

बंशलोचन ४ माशा, मुक्ता और तृणकांत (कहरुबा शमई)—प्रत्येक ९ माशा; अर्क केवड़ा, सेबका सत (रुब्ब सेब)—प्रत्येक २० तोला; कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, श्वेत चन्दन, सूखा धनिया, गुलाबके फूल, कद्दूकी गिरी, गावजबानपुष्प, अम्बर अशहब, शुद्ध कस्तूरी—प्रत्येक ४॥ माशा; चाँदीके वरक ६ माशा, मिश्री ऽ॥ आधा सेर। द्रव्योंको कूट-छानकर और मुक्ताको अर्क केवड़ा ५ तोलामें खरल करके, सेबके सत और मिश्रीकी चाशनी शेष अर्क केवड़ा मिलाकर बनायें। फिर औषधद्रव्योंका चूर्ण मिलाकर अग्निसे उतार लें। पीछे उसमें चाँदीके वरक, अम्बर अशहब और शुद्ध कस्तूरीको अर्क केवड़ामें हल करके मिलायें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा सवेरे १२ तोला गावजबानार्क और मीठे अनारका शर्बत २ तोला या केवल जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह दिलकी धड़कन, विराग (वहशत) और घबराहटके लिये अतीव गुणकारी है; हृदयके संतापको शमन करती है और हृदय, मस्तिष्क तथा ओजको पुष्ट करती है।

३—नोशदारू लूलुवी

द्रव्य और निर्माणविधि—

अम्बर २। माशा, केसर ६ माशा, मुक्ता, प्रवालमूल (बुस्सद), संग यशब, इजखिर, नागरमोथा—प्रत्येक ११। माशा; कैंचोसे कतरा हुआ अबरेशम, बंशलोचन, तेजपत्ता (साजिज हिंदी), बालछड़, गिल अरमनी—प्रत्येक १३॥ माशा; अगर (ऊद खाम) १५॥ माशा, आमलाका शीरा ८ तोला। समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत कर लें। मिश्री समस्त द्रव्योंसे डेढ़गुनी और मधु सम प्रमाण लेकर चाशनी बनाकर चूर्ण मिला लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा ताजा जलसे सवेरे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशयको बल देनेवाला है और दिलकी धड़कनको भी लाभ पहुंचाता है;

४—दवाए खफकान

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत चन्दन, गावजबानपुष्प-प्रत्येक १ तोला; शुष्क धनिया, कहरुवा (तृणकांत)—प्रत्येक ६ माशा; यशब ७ माशा (२ तोला अर्क बेदमुश्कमें खरल किया हुआ), मुक्ता ३ माशा (३ तोला अर्क केवड़ामें खरल किया हुआ), मुक्ताशुक्ति (सदफ सादिक) २ माशा, किशमिश ५ तोला। समस्त द्रव्योंको बारीक पीसकर एकजीव करलें।

मात्रा और अनुपान—२ माशा यह चूर्ण ५ तोला अर्क केवड़ा, टिंक्चर डिजिटेलिस और टिंक्चर स्टील प्रत्येक ५ बूंदके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह दिलकी धड़कनके लिगे गुणकारी है।

५—शर्बत सेब

द्रव्य और निर्माणविधि—

सेबका रस ऽ। एक पाव, मिश्री ऽ॥ आधा सेर। इनका यथाविधि शर्बत (शार्कर) कल्पना कर लें।

मात्रा और अनुपान—१ तोला यह शर्बत अर्कगावजबान ५ तोलाके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयको पुष्ट और उल्लसित करनेवाला है, दिल की धड़कनको लाभकारी, अतिसार और वमनमें गुणकारी है।

वक्तव्य—इन योगोंके अतिरिक्त जवाहरमोहरा अम्बरी, खमीरा अबरेशम जदीद, खमीरा गावजबान अम्बरी जदीद, खमीरा मरवारीद जदीद, रईसी, शर्बत मालीखोलिया प्रभृति योग भी लाभकारी हैं।

हृदयदौर्बल्य—

१—जवाहरमोहरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

जहरमोहरा खताई १॥। तोला, अवीध मोती, कहरुबा शमई, प्रवालमूल (बुस्सद), धोया हुआ (मगसूल) लाजवर्द, रक्त माणिक (याकूत सुर्ख), नीलवर्ण माणिक (याकूत कबूद), पीतवर्ण माणिक (याकूत असफर), हरा यशब, पन्ना, लाल अकीक, चाँदीके वरक और मस्तगी—प्रत्येक ७ माशा ; सोनेके वरक, जदवार खताई, दरियाई नारियल, मकोय, कस्तूरी, मोमियाई (सत शिलाजीत)—प्रत्येक ३ माशा। अर्क गुलाबमें दो सप्ताह खरल करके सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—२ चावल खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा या लुबूब कबीर ५ माशा या खमीरा गावजबान सादा १ तोलाके साथ उपयोग करें। बादी और अम्ल पदार्थसे परहेज करायें।

गुण तथा उपयोग—यह निर्बलताको दूर करता है तथा हृदय, मस्तिष्क और यकृत्को शक्ति व पुष्टि प्रदान करता है।

विशेष उपयोग—प्राकृत शरीरोष्माका पोषक है।

वक्तव्य—जनाब मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखाँ महाशयके खानदानकी प्रधानतम महौषधि है। यह अद्भुत एवं चमत्कृत द्रव्योंमेंसे है और आसन्नमृत्यु रोगीमें भी अपना आश्चर्यजनक प्रभाव प्रदर्शित करता है।

२—अक्सीर खफकान

द्रव्य और निर्माणविधि—

जहरमोहरा खालिस, अबीध मोती, अकीक भस्म, यशब भस्म, छुद्र इला बीज, कमलाक्ष (कमलगट्टा) की गिरी, चाँदीके वरक। इन सबको समप्रमाण लेकर प्रथम जहरमोहरा और मुक्ताको अर्क केवड़ामें खरल करें। फिर शेष द्रव्योंको बारीक पीसकर रूह केवड़ामें हल करके शीशीमें रखें।

मात्रा और अनुपान—तीन रत्ती यह भेषज स्वनिर्मित खमीरा गावजबान ६ माशामें मिलाकर खिलायें। ऊपरसे गोदुग्ध, शर्बत अबरेशम या शर्बत सन्दल पिलायें।

गुण तथा उपयोग—शीघ्रहृद्‌यता (इख्तिलाज कल्ब) या दिलकी धड़कनके लिये अतीव गुणकारी है और तत्क्षण शान्ति प्रदान करती है। इसे कुछ कालके सेवनसे पूर्ण लाभ होता है। यह हृदयको शक्ति प्रदान करती है।

३—कुश्ता जमुर्रद (पन्ना भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि—

पन्नाको गुलाबार्कमें खरल करके खूब बारीक कर लें। फिर मिट्टीके प्यालेमें घीकुवारका लुआब भरकर उसके भीतर उक्त पन्ना चूर्णको रखकर १० सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वाँङ्गशीतल होनेपर निकालकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—२ चावल भस्म ताजा जल या किसी उपयुक्त अनुपानसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह भस्म हृद्योल्लासकारी है ; यकृत् और मूत्रपिंडोंको बल प्रदान करती है ; कास और कासजन्य ज्वरको लाभकारी है तथा बहुमूत्र और उदकमेहमें उपकारी है।

४—कुश्ता मिरजान (प्रवालशाखा भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि—

मिट्टीके सकोरेमें प्रवालशाखाओंको डालकर ऊपरसे इतना घीकुवार डालें कि प्रवाल ढँक जाय। फिर उसे कपड़मिट्टी करके २० सेर जंगली उपलोंकी अग्नि दें। पीछे उसे अर्कगुलाबमें बारह घण्टे खरल करके उसी प्रकार अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—२ चावल भस्म खमीरा गावजबान अम्बरी जवाहरवाला ५ माशाके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मस्तिष्कको पुष्ट करती है, शुक्रतारल्य और शीघ्रस्खलन दोषके लिये गुणकारी है तथा प्रसेक और प्रतिश्याय (नजला व जुकाम) एवं कास और रक्तष्ठीवनमें भी लाभकारी है।

५—कुश्ता नुकरा (रौप्य भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

थूहड़की डण्डियोंके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें और कूण्डी-सोंटेसे घोटकर रस निकालें। इस रससे चाँदीके २ तोले बुरादाको चार पहर तक खरल करें। फिर उसे मिट्टीके सकोरेमें रखकर उसका मुंह बन्द करके १५ सेर उपलोंकी अग्नि दें। जब उपले राख हो जायँ तब चाँदीके बुरादाको निकालकर पुनः चार पहर तक थूहड़की डण्डियोंके रसमें खरल करके १५ सेर उपलोंकी अग्नि दें। इसी प्रकार तीन आँच देवें। फिर निकालकर खरल कर लें। भस्म तैयार हो गई।

मात्रा और अनुपान—प्रतिदिन सबेरे १ रत्ती भस्म मक्खन या मलाईमें मिलाकर खा लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह भस्म शुक्रमेह (जरयान), शुक्रतारल्य, शीघ्रपतन, स्वप्नप्रमेह और वस्तिगत ऊष्माको दूर करती है, काम (बाह), आमाशय, हृदय, मस्तिष्क, यकृत् आर वृक्कोंको बलिष्ट बनाती और शरीरको पुष्ट करती है।

विशेष उपयोग—यह मस्तिष्क और हृदयको बलिष्ट बनाती है और हस्तमैथुनके लिये अतीव गुणकारी है।

६—खमीरा जमुर्रद

द्रव्य और निर्माणविधि—

बारीक पीसा हुआ पन्ना (पन्ना पिष्टी) २ तोला, अम्बर अशहब ४॥ माशा, चाँदीके वरक, सोनेके वरक—प्रत्येक ५। माशा; लाजवर्द, श्वेत बहमन, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, गावजबानपुष्प—प्रत्येक ३॥ माशा; अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, मीठे अनारका रस—प्रत्येक २॥ तोला; श्वेत मधु ७ तोला, शर्बत सेब ८ तोला, मिश्री १॥ पाव। मधु, शर्बत और मिश्रीको जलमें घोल कर अग्नि पर रखें और मन्दाग्निसे पकायें जिसमें झाग उत्पन्न न हो। फिर अर्क गुलाब,

अर्क बेदमुश्क और अनारका रस मिलाकर चाशनी करें। फिर नीचे उतारकर औषध-द्रव्य मिलायें और मर्तबानमें सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—७ माशासे ९ माशा तक उपयुक्त अनुपानसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयको उल्लसित करता है, दिलकी धड़कनको दूर करता है और वातिक अन्यथाज्ञान (वसवास) को लाभकारी है।

७—खमीरा तिला

द्रव्य और निर्माणविधि—

बारीक पीसे हुए सोनेके वरक १७॥ माशा, अवीध मोती ८॥। माशा, अंबर अशहब १०॥ माशा, माणिक रुम्मानी (याकूत रुम्मानी), लाल बदख्शी, हरा पन्ना—प्रत्येक ३॥ माशा ; सेबका सत (रुब्ब सेब), बिहीका सत (रुब्ब बिही), नाशपातीका सत (रुब्ब अमरूद); गाजरका सत (रुब्ब गजर), अनारका सत (रुब्ब अनार)—प्रत्येक १० तोला ; मधु २० तोला। इन सबका यथाविधि खमीरा प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान—३ माशासे ७ माशातक अर्कमाउल्लहम अम्बरी के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—हृदय और मस्तिष्कको पुष्टि और शक्ति प्रदान करता और शीतल हृद्रोगोंमें गुणकारी है।

८—गुलकन्द सेवती

द्रव्य और निर्माणविधि—

सेवतीके पुष्प १०० नग और मिश्री ३० तोला। पुष्पोंपर किसी कदर अर्क गुलाब छिड़क दें। फिर उन्हें हाथसे मलकर मिश्री मिलाकर ४ दिनतक सायामें रखें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला गुलकन्द १० तोला अर्क गावजबान और ५ तोला अर्क बेदमुश्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह उष्ण हृत्स्पन्दन और हृदयकी पुष्ट्यर्थ अतिशय गुणकारी है।

९—दवाउलमिस्कमोतदिलजवाहरवाली

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबके फूल, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, दारचीनी, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, दरूनज अकरबी, केसर—प्रत्येक ७ माशा ; अगर (ऊद हिन्दी), बिल्लीलोटन—प्रत्येक ५॥ माशा ; मस्तगी, छड़ीला, छुद्र ैला—प्रत्येक ३॥ माशा ; जरिश्क १ तोला ५॥ माशा, श्वेत वंशलोचन, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, शुष्क धनियाँ, गावजबानपुष्प, गुठली निकाला आमला, प्रवालमूल(बुस्सद), छिले हुए कुलफाके बीज-प्रत्येक १०॥ माशा ; तिब्बती कस्तूरी १ माशा ७ रत्ती ; मीठे सेबका सत (रुब्ब), मिश्री (कन्द सफेद), श्वेत मधु—प्रत्येक कुल औषधियोंके समप्रमाण ; चाँदीके वरक १०॥ माशा, अबीध मोती, कहरुबा शमई—प्रत्येक ४। माशा ; अम्बर अशहब १ माशा ७ रत्ती। इन सबका यथाविधि माजूनकी चाशनी करके चाशनीके अन्तमें कस्तूरी, अम्बर, मुक्ता और वरक इत्यादि समाविष्ट कर दें।

मात्रा—५ माशा।

१०—शर्बतसन्दल

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत चन्दन २ छटाँक, अर्क गुलाब ऽ॥ आधा सेर, मिश्री ऽ१ एक सेर। चन्दनको रात्रि भर अर्क गुलाबमें भिगोकर सवेरे पकाकर छान लें और मिश्री डालकर चाशनी कर लें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला, १२ तोला अर्क गावजबानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयोल्लासकारी और हृदयको बल देनेवाला (हृद्य) है तथा उष्ण शिरोशूलमें परीक्षित है।

११—सफूफजवाहिर खासुल्खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

रक्त माणिक, हरा पन्ना, अबीध मोती—प्रत्येक ६ माशा। सबको अर्क बेदमुश्क और अर्क केवड़ा—प्रत्येक ५ तोलामें खरल करके रख लें।

मात्रा और अनुपान—६ रत्ती खमीराअबरेशम (हकीम इरशादवाला) या खमीरागावजबानअम्बरी ५ माशामें मिलाकर अर्कगावजबान और शर्बत अनारसे खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह परम हृदयोल्लासकारी और हृदयबलदाता (हृद्य) है। आसन्नमृत्युकालमें भी यह स्वल्प कालके लिये हृदयकी गतिको तीव्र कर देता है।

१२—सफूफुल् जवाहिर

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुक्ताशुक्ति, हरिताश्म (जहरमोहरा खताई), प्रवालमूल (बीख मिर्जान), कहरुबाशमई (तृणकांत), यमनी अकीक, हरा यशब—प्रत्येक १ तोला। सबको अर्कगुलाबमें इतना खरल करें कि १५ तोला अर्क शोषित हो जाय। शुष्क होनेपर शीशीमें सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—३ माशासे ४॥ माशा तक खमीरागावजबान अम्बरी एक तोलामें मिलाकर अर्कगावजबान दस तोला और शर्बतअनार दो तोलासे खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयोल्लासकारक और हृदय-बलदायक (हृद्य) है।

वक्तव्य—इसके अतिरिक्त खमीरागावजबान, खमीरामरवारीद, खमीरा मरवारीद अदीद, अकसीर कल्ब, कुश्ता मिर्जान जवाहिरवाला, याकूती मुरक्कब प्रभृति योग भी इस रोगमें उपयोगी हैं।

मूर्च्छा (गशी)—

१—अर्क गजर

द्रव्य और निर्माणविधि—

गाजर ऽ१ एक सेर, गावजबान २ तोला, गुल गावजबान १ तोला, श्वेत चन्दन २२॥ माशा, रक्त तोदरी, श्वेत बहमन—प्रत्येक १२॥ माशा। इनसे यथाविधि २० बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा और अनुपान—१० तोला अनुपानके रूपमें उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मनःप्रसादकर, बल्य और संतापहारक है तथा दिलकी धड़कन और विराग (वहशत) को दूर करता है।

२—अर्क गावजबान (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजबान ʃ२॥ सेर रातमें पानीमें भिगोयें। सवेरे यथाविधि अर्क परिस्रुत करें। फिर ʃ२॥ सेर गावजबान उक्त अर्कमें भिगोकर अगले दिन पुनः अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा—२ तोले।

गुण-कर्म तथा उपयोग—हृद्योल्लासकारक और हृदयबलदायक होनेसे मूर्च्छाके योगोंके अनुपानरूप व्यवहार किया जाता है।

३—वजूर गशी

द्रव्य और निर्माणविधि—

कस्तूरी, अम्बर, दरियाईनारियल, जहरमोहरा खताई (हरिताश्म)—प्रत्येक १ रत्ती; अर्क गुलाब, अर्कबेदमुश्क, स्पिरिट ईथर—प्रत्येक १ तोला। प्रथम चारों द्रव्योंको पीछेके तीनों द्रव्योंके साथ पीसकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आध-आध या एक-एक घण्टा बाद तीन बार करके उपयोग करें।

उपयोग—यह प्रायः हर प्रकारकी मूर्च्छामें उपकारक है।

४—हब्बूब मुजर्रबा उलवीखाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

नागरमोथा, नरकचूर, बालछड़, दारचीनी, गावजबान पुष्प, ऊदगर्की (अगर), अकरकरा, बिल्लीलोटन—प्रत्येक ४॥ माशे, मस्तगी ३॥ माशे, इलायची, जायफल, केसर—प्रत्येक ६ माशे; शुद्ध कस्तूरी १ माशा। सबको कूट-पीसकर पानीके साथ चनेके बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२-३गोलियाँ ५ तोले अर्क अम्बरके साथ उपयोग करें।

उपयोग—यह मूर्च्छा, हृत्स्पंदन और सर्द पसीनेमें लाभकारी है।

अतिसार-प्रवाहिका-ग्रहण्यधिकार ७

अतिसार (इसहाल) और संग्रहणी

१—कुर्स अञ्जबार (x१८४)

द्रव्य और निर्माणविधि—

अञ्जबारकी जड़ १ तोला २ माशा, गुलाबके फूल, गोंद कीकर, कुलफाके बीज, कहरुबा प्रत्येक १०॥ माशा, गुलनार, गेहूँका सत (निशास्ता), गिल अरमनी, प्रवालमूल (बुस्सद) पिष्टी, सफेद वंशलोचन, मुलेठीका सत प्रत्येक ७ माशा, अफ़ाकिया ५। माशा। इनको कूट—कपड़छानकर केलेके रसमें टिकिया बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—शर्बतअंजबार २ तोलेके साथ ६ माशा वजनकी एक टिकिया खायँ।

गुण तथा उपयोग—रक्तातिसार, रक्तवमन, और अति आर्त्तवशोणितस्राव (कसरत तम्स) में उपकारी है।

२—कुर्स तबासीर काबिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

वंशलोचन, गुलाबके फूल, कासनीके बीज काहूके बीज, कुलफाके बीज, समाक—प्रत्येक ६ माशा; गुलनार, श्वेत चंदन, चुक्रबीज (तुख्म हुम्माज)—प्रत्येक ३ माशा, अहिफेन १॥ माशा। सबको कूट-कपड़छानकर गुलाबार्कके साथ टिकिया बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—तीन माशा उपयुक्त अनुपानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह पैत्तिक अतिसार और जीर्ण ज्वरोंमें गुणकारी है।

३—जुवारिशआमला सादा

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुठली निकाला हुआ आमला ५ तोला एक रात-दिन गोदुग्धमें भिगोयें। फिर धोकर जलमें उबालें और छानकर ﾀ२ दो सेर चीनी मिलाकर चाशनी

करें। पीछे पिस्ताके बाहरका छिलका ५ माशा, बंशलोचन, बिजौरेका छिलका, श्वेत चन्दन—प्रत्येक १ तोला ; मस्तगी और छुद्र ला बीज—प्रत्येक ६ माशा। इनको कूट-कपड़छानकर समाविष्ट करें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा जुवारिश अर्कगावजबान १२ तोलेके साथ सवेरे खायें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदय और यकृत्की बढ़ी हुई ऊष्माको शमन करती है ; हृदय और आमाशयको बल प्रदान करती है ; पैत्तिक अतिसार एवं बाष्पकी उत्पत्तिको रोकती है और शीघ्रहृदयता (ख़फ़्क़ान) में विशेष रूपसे कामकारी है।

अपथ्य—इसके सेवनकालमें उष्ण एवं बाष्पोत्पादक द्रव्योंसे परहेज अनिवार्य है।

४—जुवारिशआमला कलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

जरिशक बेदाना २ तोला और गुठली निकाले हुए आमलेका रस (शीर आमला मुकश्शर) ७ तोला दोनोंको रात्रिमें उपयुक्त अर्कोंमें भिगोकर सवेरे छान लें। फिर ڊ१ मिश्री मिलाकर चासनी करें। पीछे सोनेके वरक, चाँदीके वरक, अम्बर अशहब—प्रत्येक ३ माशा, अबीध मोती, माणिक (याकूत रुम्मानी), कहरुवा शमई, दारचीनी, रूमीमस्तगी—प्रत्येक ६ माशा ; बिजौरेका पीला छिलका (पोस्तउतरुज जर्द) ६ माशा, छोटी इलायचीके दाने, बंश-लोचन, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, श्वेत चन्दन, गावजबानपुष्प, छिला हुआ शुष्क धनिया—प्रत्येक १ तोला कूटकर कपड़छानकर चाशनीमें मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशासे ७ माशातक जल या गावजबानके अर्कसे पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और हृदयको शक्ति देती है ; पैत्तिक अति-सारको लाभ प्रदान करती है और आमाशयका सुधार करके क्षुधा उत्पन्न करती है।

५—जुवारिश जालीनूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

बालछड़, छुद्र ला, कलमीतज, दारचीनी, कुलञ्जन, लौंग, नागरमोथा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, कडुआकुट (मतांतरसे मीठा कुट), उदबलसाँ, तगर (असा-

क्स), विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस), मीठा चिरायता, केसर—प्रत्येक ७ माशा ; रूमी मस्तगी १ तोला ५॥ माशा, चीनी समस्त द्रव्योंके समप्रमाण, मधु समस्त द्रव्योंके प्रमाणसे द्विगुण। चीनी और मधुकी चाशनी करके शेष द्रव्योंका कपड़छानकर चूर्ण करके मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि-७ माशा जुवारिश १२ तोला अर्क सौंफके साथ भोजनोत्तर सेवन करें अथवा ६ माशासे १३॥ माशातक उपयुक्त अनुपानसे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और अन्त्रको बलवान् बनाती और रुचिवर्द्धक है तथा मलावष्टंभ (कब्ज) को दूर करती और वायुको उत्सर्गित या नष्ट करती है। यह आहार पाचन करती और वातार्शके लिये परम गुणकारी है तथा बालोंको काला करती है।

६—जुवारिश तीवराज

द्रव्य और निर्माणविधि—

तीवराज (संभवतः तीवाज*) १३॥ माशा, अञ्जबारकी जड़की छाल, बंशलोचन और मुक्ता इनको लेकर बारीक खरल करें। गिलमख़तूम, खूनाखराबा (दम्मुलअख्वैन) और कतीरा—प्रत्येक २। माशा, इनको कूटकर चूर्ण कर लें। विलायती सेबका शर्बत, विलायती बिहीका शर्बत, शर्बत अञ्जबार, शर्बत हब्बुलआस औषधियोंके चूर्णकी तौलका आधा लेकर चाशनी प्रस्तुत करें और शेष द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला लें।

मात्रा तथा सेवन-विधि—५ माशासे ७ माशातक खशखाश और कुलफाके बीजका शीरा (जलके साथ पीसकर तैयार किया हुआ दुधिया रस)—प्रत्येक ५ माशाके साथ लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह अर्शोगत अतिसार और यकृज्जन्य रक्तातिसारके लिये बहुत गुणकारी है।

वक्तव्य—इस माजूनके प्रवर्त्तक हकीम उलवी खाँ हैं।

७—शर्बत अञ्जबार (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

अञ्जबारकी जड़ २ तोला, मीठे अनारका छिल्का, विलायती मेंहदीके बीज

* यह संभवतः संस्कृत त्वक्‌से व्युत्पन्न है। यूनानी निघंटुकर्त्ताओंके मतसे तीवाज विलायती कुड़ेकी छाल (कुटज त्वक्) को कहते हैं।

(इम्बुलआस)—प्रत्येक १ तोला, श्वेतचन्दनका बुरादा ६ माशा। सबको जलमें क्वाथ करके छान लें और कीकरके पत्तोंका रस (फाड़ा हुआ) ४ तोला निचोड़कर उसमें मिलायें। फिर अग्निपर रखकर पाव भर मिश्री डालकर यथाविधि चाशनी कर लें।

मात्रा और सेवन विधि—१ तोला शर्बत ५ तोला गावजबानके अर्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदय और यकृत्के संतापको परम लाभकारी है; रक्तस्रावको बंद करता है और रक्तातिसारमें विशेषरूपसे लाभकारी है।

८—शर्बत फालसा

द्रव्य और निर्माणविधि—

फालसाका रस ३० तोला, चीनी ऽ१। सेर मिलाकर शार्कर (शर्बत) की चाशनी बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ तोला शर्बत शीतल जलसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—आमाशय और हृदयको बलप्रद और यकृत्की ऊष्मा (हरारत) का शामक है। यह तृष्णाको शमन करता तथा वमन और अतिसार नाशक है।

९—हब्ब काबिज

द्रव्य और निर्माणविधि—

अहिफेन, कतीरा, झाऊ (कजमाजज), इस्पिस्तके बीज, अकाकिया, गुलाबपुष्प, मटर (करस्ना) और विलायती मेंहदीके बीज (इम्बुलआस) सम भाग। इनको बारीक पीसकर कपड़छानकर चूर्ण बनायें। फिर बबूलके गोंदके लुआबमें मूंगके बराबर गोलियां बनायें।

मात्रा और अनुपान—२ गोली जलसे।

गुण तथा उपयोग—इसके सेवनसे एक मिनटमें अतिसार बंद हो जाता है।

१०—हबूब इसहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

खरगोशका पनीरमाया, हरा माजू, छोटी माई—प्रत्येक ६ माशा; पोस्त

सुमाक, विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस), भृष्ट बारतंग, पिस्ताके बाहरका छिल्का, मोठे और खट्टे दोनों अनारोंका छिल्का, जलाया हुआ प्रवाल-मूल, जलाई हुई छुहारेकी गुठली, कहरुबाशमई—प्रत्येक १४ माशा ; जलाया हुआ पोस्तसंगदानामुर्ग, जलाई हुई आमकी गुठलीकी गिरी—प्रत्येक ३ तोला ; जामुनकी गुठलीकी गिरी २ तोला, सिरकामें तर करके भुने हुए अंगूरके बीज ४॥ तोला, सबको कूटकर कपड़छानकर चूर्ण बना मोठे बिहीके रसमें घोटकर चनाप्रमाणकी वटिकायें बनायें ।

मात्रा और अनुपान—६ से ८ गोली तक उपयुक्त अनुपानके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—यह संग्रहणीके कारण उत्पन्न हुए अतिसारके लिये गुणकारी है । स्वर्गवासी हकीमनूरुद्दीन महाशय भैरवी इसका प्रयोग प्रायः करते थे ।

संग्रहणी—

१—अकसीर संग्रहणी

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपर्दिका भस्म, शंख भस्म—प्रत्येक २ तोला ; शुद्ध आमलासार गंधक, कालीमिर्च और शुद्ध पारद—प्रत्येक १ तोला । इन सबको कागजीनीबूके रसमें घोटकर १-१ रत्तीकी गोलियां बनायें ।

मात्रा और अनुपान—१ गोली छाछ (लस्सी) के साथ खिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह संग्रहणीके लिये अकसीर है ।

२—सफूफ संग्रहणी मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

तज, पत्रज, छुटी इलायची, सतुवा सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, पीली हड़का बकला, बहेड़ेका छिल्का, सूखा आमला, आमलासार गंधक, शुद्ध पारद, अजमोदा, सौंफ, बादरंग, दारुहल्दी, बेलगिरी, पोस्त चतावर, श्वेत जीरा, लौंग, सूखा धनिया, गजपीपल, छिली हुई मुलेठी, कंजाकी गिरी, इन्द्रानी लवण, साम्भर लवण, लाहौरी नमक, काला नमक, नमक चूढ़ी (मनिहारी नमक), जवाखार, गुलाबी सज्जी—प्रत्येक ३ माशा ; भांगकी पत्ती २ तोला, सैकोक, पेपसीन—प्रत्येक

८ माशा ; बिस्मथ-सब-नाइट्रास ३॥ मासा ; सोडा-बाई-कार्ब १०॥ माशा ; डोवर्स पाउडर ५॥ माशा । सबको कूट-पीसकर ४० पुड़िया बनायें ।

मात्रा और सेवन विधि—१-१ पुड़िया दिनमें तीन बार खिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह संग्रहणीरोगमें परम गुणकारी है । (तिब्बी फार्माकोपिया)

विसूचिका (हैजा)—

१—अर्क हैजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

जरिश्क, खट्टा अनारदाना—प्रत्येक ҈। एक पाव ; रक्तचन्दनका बुरादा, आलूबुखारा, सौंफ-प्रत्येक ҈॥ आधा सेर ; हरा पुदीना, दारचीनी-प्रत्येक ҈१ एक सेर ; बंशलोचन ७ तोला, कपूर ४ माशा, बृहदेला (बड़ी इलायची) ҈= आधा पाव, जल ।҈ दस सेर । द्रव्योंको जलमें भिगोकर यथानियम ҈५ पाँच सेर अर्क परिस्रुत करें । अर्क खींचते समय नैचेके मुँहमें २ माशा कपूर रख दें ।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला अर्क दो-दो घंटा बाद पिलाते रहें ।

गुण तथा उपयोग—यह महामारीके रूपमें होनेवाले हैजाके लिये अतिशय गुणकारी है । यह उग्र तृषाको तत्क्षण शमन कर देता है और पित्तकी उल्बणताका संहार करता है ।

२—अन्य (अर्क हैजा)

द्रव्य और निर्माणविधि—

दरियाई नारियल, बिजौरेका पीला छिलका, गुलाबके फूलकी कली, पपीता, कागजीनीबूके बीज, पियारांगा, नीमके वृक्षकी छाल, सौंफ—प्रत्येक ६ तोला । सबको यवकुट करके गुलाबपुष्पार्कमें भिगोयें । सत्रेरे शुद्ध सिरका ҈- एक छटाँक, बिजौरेका रस (आब तुरंज), कागजी नीबूका रस, हरे कुकरौंधाका रस, फाड़ा हुआ हरे पुदीनाका रस-प्रत्येक ҈। एक पाव मिलाकर अर्क परिस्रुत करें ।

मात्रा और सेवन-विधि—२-२ तोला सायं-प्रातःकाल सिकंजबीनलीमू (निबुकीय शुक्तमधु) मिलाकर या अकेला पिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह विसूचिकाके लिये अत्यन्त गुणकारी है ।

३—हब्बहैजावबाई

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठा तेलिया, अहिफेन, शिगरफ, अकरकरा, पीपल, सुहागा, लौंग, कालो-मिर्च-प्रत्येक ६ माशा। सबको पीसकर अदरकके रसमें चना प्रमाणको गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन विधि—१ से ३ गोली हरे पुदीनेके आध पाव अर्कके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह महामारीरूप विसूचिकामें लाभकारी है।

४—हबूब हैजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

मदार (अर्क) की कली १ भाग, बिना बुझा हुआ चूना ½ भाग, लौंग २ भाग, सबको मिलाकर मसूर प्रमाणकी वटिकायें बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ वटी आवश्यकतानुसार दिनमें दो-चार बार दें।

गुण तथा उपयोग—यह वटिकायें वैसूचिकीय अतिसारको बन्द करती हैं। इसके अतिरिक्त गोलीको पीसकर खिलानेसे वमन भी रुक जाता है।

प्रवाहिका (जहीर)

१—अक्सीर पेचिश

द्रव्य और निर्माणविधि—

असली मस्तगी, शिगरफ, जदवार (निर्विषी), कच्चा अफीम—प्रत्येक १ तोला, सुहागा (खील किया हुआ) ३ माशा। सबको बारीक पीसकर मूंग प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन विधि—एरण्डतैलका विरेचन देनेके बाद १ गोली ताजा जलसे दें।

गुण तथा उपयोग—यह जीर्ण प्रवाहिकामें परम गुणकारी है।

२—जहीरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर, पीली हड़का छिल्का, हरा माजू, गुठली निकाला हुआ आमला—प्रत्येक १ तोला, केशर ६ माशा। इनको कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें। पीछे आवश्यकतानुसार शराब बरांडी या गुलाबपुष्पार्कमें खरल करके चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

माात्रा और सेवन विधि—एक गोली जलसे खायें।

गुण तथा उपयोग—यह प्रत्येक प्रकारकी प्रवाहिकाके लिये उपादेय है।

३—दवाएस्याहपेचिश

द्रव्य और निर्माणविधि—

काली हड़ १ तोला आवश्यकतानुसार गोघृतमें स्नेहाक्त करें और समभाग चीनी मिलाकर कपड़छान चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा यह चूर्ण साठी चावलके धोवन ६ तोलाके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—विबंधयुक्त प्रवाहिका (पेचिश खुश्क) हो अथवा खून आता हो, उभय दशाओंमें इससे बहुत उपकार होता है।

४—सफूफ मिकलियासा

द्रव्य और निर्माणविधि—

अलसी, गंदनाके बीज, काली हड़—प्रत्येक ९ माशा; मस्तगी ४॥ माशा, तारामीरा बीज (तुख्म जिरजीर) ५ तोला १० माशा, जीराकिरमानी (कुल्या) १ तोला १० माशा। तारामीराबीजके अतिरिक्त शेष समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर तारामीराबीज मिलाकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशा चूर्ण गोघृतमें स्नेहाक्त करके खतमी की जड़का लुआब ७ माशाके साथ सवेरे-सायंकाल उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—पेचिश, मरोड़, आमाशयनैर्बल्य (अजीर्ण—मन्दाग्नि) और वातार्शके लिये उपकारक है।

५—हब्ब पेचिश

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध अहिफेन, सुहागा (खील किया हुआ), रूमीमस्तगी, शिगरफ—प्रत्येक २ माशा। इन चारों द्रव्योंको खरल करके जलसे चनाप्रमाणकी वटिकायें बना लें।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली प्रातः-सायंकाल जलसे या खतमीकी जड़का लुआब १ तोलाके साथ दें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियां यकृज्जन्य अतिसार या अर्शजन्य अतिसारको रोकती हैं।

विशेष उपयोग—यह प्रवाहिका (जहीर सादिक) के लिये प्रधान औषधि है। यदि विबंध अर्थात् सुद्दा न हो तो प्रायः एक ही दिनमें दूर हो जाती है।

अग्निमांद्य-अजीर्णाधिकार ८

१—अकसीर मेदा

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलासार गंधक, जौहर नौशादर—प्रत्येक १ तोला लेकर ५ तोले मूलीके रसमें फिर ५ तोले परिस्रुत सिरकामें खरल करें। जब शुष्क हो जाय सावधानीके साथ शीशीमें रखें।

वक्तव्य—इस योगमें अजवायनका सत १ माशा और पुदीनाका सत १ माशा और मिला लेनेसे यह अधिक गुणकारक हो जाता है।

मात्रा और सेवन-विधि—१ रत्तीके प्रमाणमें प्रतिदिन सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह प्रायः आमाशयिक रोगोंको लाभ पहुंचाती है। (तिब्बी फार्माकोपिया)

२—अमरूसिया

वक्तव्य—इस योगके आविष्कर्त्ता बुकरात बतलाये जाते हैं। यह ख्याल किया जाता है कि उन्होंने इसकी कल्पना किसी राजाके लिये की थी जो अग्नि-

मांद्य या अजीर्ण (आमाशयिक निर्बलता) से पीड़ित था। मन्दाग्नि (जोफ मेदा) के अतिरिक्त यह यकृत्, प्लीहा एवं वृक्कके लिये भी परम गुणकारी है।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कड़वाकुट, श्वेत मरिच, पीपल—प्रत्येक १॥। माशा ; किरमानी जीरा (कारवी—कुल्या), जंगली गाजरके बीज, ऊदबलसाँ, सज, कालीजीरी, इज-खिरका गोफा (शिगूफा), अजमोदा—प्रत्येक ३॥ माशा ; बच और केशर—प्रत्येक ७ माशा ; बोल (मुरमक्की) १०॥ माशा, हब्बुलगार १० नग। सबको महीन कूटकर कपड़छान चूर्ण करें और जितना यह चूर्ण हो उससे तिगुना मधु मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—४॥ माशा यह औषधि १२ तोले सौंफके अर्कके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय, यकृत्, प्लीहा, वृक्क और सम्पूर्ण शरीरको शक्ति प्रदान करता है और जलोदरमें लाभकारी है। यह विबंधको नाश करने और शीतल व्याधियोंको लाभ पहुंचानेके लिये विलक्षण औषधि है। यह अश्मरीको तोड़कर उत्सर्गित करता है।

३—अर्क अजवायन

द्रव्य और निर्माणविधि—

अजवायन २॥ सेर रातको भिगोकर सबेरे १० बोतल अर्क खींचें और पुनः २॥ सेर अजवायन उस अर्कमें डालकर रातको तर कर दें और सबेरे दोबारा १० बोतल अर्क खींच लें।

मात्रा और अनुपान आदि—आमाशय और अन्त्रगत व्याधियोंमें जुवारिशबसबासा ५ माशाके साथ और यकृत्के रोगोंमें माजून दबीदुल्वर्दके साथ यह अर्क १॥ तोलाके प्रमाणमें पी लें।

गुण तथा उपयोग—अमाशयशूल, मन्दाग्नि एवं अजीर्ण, आध्मान, जलोदर और यकृत्की सरदीके लिये यह अर्क परम गुणकारी और शीघ्र प्रभावकारी है।

४—अर्क हाजिम (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

कीकरकी छाल १० सेर, किशमिश, चीनी—प्रत्येक ≤५ सेर, लहसुन

(शोहलिका बद्द), लौंग—प्रत्येक १ तोला ; कृष्ण अगर (ऊदगर्की) २ तोला, श्वेतचन्दन १ तोला १० माशा, बनफशाकी जड़ १८ माशा, नागरमोथा १० माशा, बिजौरेका छिलका (पोस्त तुरंज) ४ तोला, श्वेत और रक्त बहमन, अकाकुल, सालबमिश्री, तेजपत्ता, दारचीनी, गावजबानपुष्प—प्रत्येक २ तोला, खस ४ तोला, बड़ी इलायचीके दाने ५ तोला, जायफल, जावित्री—प्रत्येक २ तोला, केसर १ तोला, अम्बर ६ माशा, केसर और अम्बरकी पोटली बनाकर नचेके मुँहके भीतर रखें और अर्क परस्तुत करें। इस अर्कमें पुनः उतना ही औषध-द्रव्य भिगोकर दूसरे दिन दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा—१॥ तोला।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशयके समस्त रोगोंको दूर करके उसका सुधार करता है। यह खूब आहार पाचन करता और भूख लगाता है, शरीरमें शक्ति, पुष्टि और स्फूर्ति उत्पन्न करता और चित्तको प्रफुल्लित एवं स्वस्थ रखता है।

५—अल्कासिर

द्रव्य और निर्माणविधि—

खार भंग, खार नकछिकनी, खार पुदीना, खार मूली, कटाईकी पत्तियोंका खार—प्रत्येक २ तोला, अजवायनका सत १ तोला। समस्त द्रव्योंको कूट-कपड़छानकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—चार रत्ती चूर्ण जुवारिश कमूनी सात माशाके साथ सवेरे-सायंकाल खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह पाचनकर्त्ता और क्षुधावर्धक है, मलावरोध-नाशक (कब्जकुशा) एवं दीपन-पाचन (मुकव्वी मेदा) है।

६—जुवारिशऊदतुर्श

द्रव्य और निर्माणविधि—

बालछड़, छोटी इलायची, केसर, बिरौजेका छिलका (पोस्त उतरुज), लौंग, रूमीमस्तगी दारचीनी, बिल्लीलोटन और वंशलोचन श्वेत—प्रत्येक ३॥ माशा, अगर १ तोला ५॥ माशा, खट्टे सेबका सत (रुब्ब) १८॥। तोला, गुलाबपुष्पार्क ९॥ तोला, मिश्री, शुद्ध मधु-प्रत्येक २६। तोला, नीबूका रस ३३॥। तोला। यथाविधि जुवारिश प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा जुवारिश, २ तोला सिकंजबीनसादा (सादा शुक्तशार्कर) और १२ तोला गावजबानार्कके साथ खायें ।

गुण तथा उपयोग—यह आहारपाचक और दीपन-पाचन है, क्षुधा उत्पन्न करती है, आमाशयस्थ श्लेष्मजद्रव्योंको विलीन करती है और आमाशयके पैत्तिक विकारोंको नष्ट करती है ।

७—जुवारिशकमूनी (जीरकादि खाण्डव

द्रव्य और निर्माणविधि—

सिरकामें शुद्ध किया हुआ किरमानीजीरा (कुल्या, विलायती काला जीरा) १४ तोला ७ माशा, सुदाबके पत्र, सोंठ—प्रत्येक ५ तोला १० माशा, बूरेए अरमनी १ तोला ५॥ माशा, कालीमिर्च ४ तोला ४॥ माशा । इन समस्त द्रव्योंके समप्रमाण मिश्री और द्विगुण मधु । समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर मिश्री और मधुकी चाशनीमें मिलायें ।

मात्रा और अनुपान—७ माशा जुवारिश १२ तोला अर्क सौंफके साथ खायँ ।

गुण तथा उपयोग—यह पाचनशक्तिको तीव्र करती, मलावष्टंभ (कब्ज) को दूर करती, आमाशयगत द्रवोंको शुष्क करती और अजीर्णका नाश करती है ।

८—जुवारिशमस्तगीमुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

रूमी मस्तगी, कबाबचीनी, कालीमिर्च, देसी अजवायन, शुद्ध किरमानी जीरा, जीरा सब्ज, कुल्या, गुलाबपुष्प, बिजौरेका छिलका (पोस्त उतरुज), कासनीके बीज, सौंफ, कुंदुर, धनियाँ शुष्क, बिल्लीलोटन, गावजबानपुष्प—प्रत्येक ३॥। तोला, शुद्ध मधु और चीनी एक द्रव्यके प्रमाणसे तिगुनीकी चाशनी करके औषधद्रव्योंको कूट-छानकर उसमें मिलायें । पीछे यथाविधि किसी चीनी की तश्तरी आदिमें जमाकर कतले काट लें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण तथा उपयोग—यह अजीर्ण, अग्निमांद्य और श्लेष्मातिसारके लिये गुणकारी है तथा शीतल हृत्स्पंदन (खफकान) और यकृत्की निर्बलताको भी लाभकारी है ।

९—दवाए नौशादर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादरको केलेकी जड़के रसमें खरल करके सत्व उड़ा लें। यह सत्व या जौहरनौशादर ३ तोला, पुदीनाका सत ६ माशा, कालीमिर्च, पीपल, जवाखार, मूलीखार (नमक तुर्ब), अपामार्ग क्षार (नमक चिरचिटा), छोटी कटाईका खार-प्रत्येक १ तोला, कल्मीशोरा, बड़ी इलायचीके बीज, लाहौरी नमक-प्रत्येक ३ तोला, शुद्ध हुरमुची (एक रक्तवर्णमृत्तिका) ५ तोला। समस्त द्रव्योंको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और अनुपान—४ रत्ती चूर्ण उष्ण जल या सौंफके अर्क आदिके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह अजीर्ण और उदरस्थ वायुके लिये लाभप्रद है।

१०—माजूननानखाह हकीम अली गीलानी

द्रव्य और निर्माणविधि—

अजवायन, गाजरके बीज, सोंठ—प्रत्येक २ तोला ११ माशा, अजमोदाकी जड़ १ तोला ५॥ माशा, मस्तगी ८॥ माशा, अगर ७ माशा, अकरकरा ५। माशा, केसर, बसफाइज—प्रत्येक ३॥ माशा। सबको कूट-छानकर तिगुने मधुमें मिलाकर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—३ माशा माजून सौंफके अर्कके साथ सेवन करें। इसका सेवनकाल बारह बजे दिनसे बारह बजे रात तक है।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और यकृत्‌को शक्ति प्रदान करती है तथा कफघ्न, क्षुधाजनक और मुखदौर्गन्ध्यनाशक है। यह मुँहसे लालास्रावको रोकती है, उदरस्थ विबंध (सुद्दा) एवं अवरोधका उद्घाटन करती, उदरज क्रिमियोंको नष्ट करती, वायुको विलीन करती और मूत्रपिंडोंको शक्ति देती है। यह वृक्क एवं बस्तिको शर्करा तथा सिकतासे शुद्ध कर देती और वाजीकरण भी है।

११—सञ्जरीना

द्रव्य और निर्माणविधि—

केशर १॥ माशा, जुंदबेदस्तर (गंधमार्जारवीर्य), दारचीनी, अहिफेन तगर (असारून), मजीठ (फुव्वा), दूकू-प्रत्येक ३॥ माशा; कालीमिर्च,

रोजा—प्रत्येक २१ माशा। बिहरोजाको तिगुने मधुमें मिलायें। पीछे का महीन कपड़छान चूर्ण थोड़ा-थोड़ा मिलाकर गूँधें। कोई-कोई इसमें १॥। तोला हीराबोल (मुरमक्की) अधिक मिला दिया करते हैं। इसे तैयार करके सुरक्षित रखें। तैयार होनेसे छः सप्ताह उपरांत इसका सेवन उचित है।

मात्रा—४ रत्तीसे ६ माशा तक।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन (मुकव्वी मेदा) है, अजीर्णमें लाभप्रद है और यकृत्‌के अवरोधका उद्घाटन करती है। यह वातानुलोनकर्त्ता, आमाशय और अन्त्रके शोथको उतारनेवाली तथा शूल (कुलंज) और मूत्रावरोधमें लाभकारी है।

वक्तव्य—कतिपय प्राचीन आचार्योंने इसका नाम 'सजरीना' भी लिखा है। इसका अर्थ "आरोग्यदायनी" है। इसके और भी कई योग हैं। परन्तु उनमें जो अधिक गुणकारी एवं प्रयोगकृत योग है उसे ऊपर लिखा गया है।

१२—सफूफ नमक सुलेमानी खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

सांभर नमक ɔ१, लाहौरी नमक, इंदरानी नमक (सैंधव लवण), नौशादर—प्रत्येक ६ तोला, कालीमिर्च, इजखिर मक्की - प्रत्येक २ तोला १॥ माशा, अजमोदा ३ तोला, श्वेत मरिच, बालछड़, हीराहींग (घीमें भृष्ट की हुई)—प्रत्येक १०॥ माशा, शुद्ध कृष्णजीरक, दारचीनी, सूखा पुदीना, सोंठ, अनीसूँ—प्रत्येक ७ माशा और केसर ६ माशा। इन सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और अनुपान—२ या ३ माशा भोजनोत्तर जलके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह मंदाग्नि और अजीर्णको नष्ट करता, रुचि एवं क्षुधा उत्पन्न करता है।

१३—सफूफ शीरीं

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारचीनी. सोंठ, लौंग, मिर्च कंकोल, तज, पीपल, नागेसर, छोटी इलायची के बीज, नेत्रवाला, श्वेत और कृष्ण जीरक, अगर, तगर, तेजपात, कमलगट्टेकी

गिरी, वंशलोचन–प्रत्येक १० माशा, कपूर २ माशा। समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर जितना यह चूर्ण हो उतना ही चीनी बारीक करके मिला लें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा भोजनसे पूर्व जलसे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन है और आमाशयातिसारको बंद करता है तथा पाचन सुधारता और क्षुधाकी वृद्धि करता है।

१४—सफूफ हाजिम

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिली हुई इमली, पोस्त सुमाक, मीठा अनारदाना, सोंठ, पीपर, छोटी इलायचीके बीज, बड़ी इलायचीके बीज, सफेद जीरा, काला जीरा, केसर, सोंचरनमक, सूखा धनियाँ—प्रत्येक ३॥ माशा, मिश्री ८ तोला। सबको बारीक करके कपड़छान चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—३-३ माशा प्रातःसायंकाल खाया करें। सामान्य रोगमें १॥ माशा भोजनोपरांत खा लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन (मुकव्वीमेदा), आमाशयशूल-हारक, अजीर्णनाशक, वातानुलोमनकर्त्ता और क्षीरपाचक है।

विशेष गुण—यह आमाशयको बल प्रदान करनेके लिये उत्कृष्ट भेषज है।

१५—हब्ब किबरोत (गंधक बटी)

द्रव्य और निर्माणविधि—

दूधमें शुद्ध किया हुआ आमलासार गंधक, कालीमिर्च, वायविडंग, अजमोदा, जवाखार—प्रत्येक २ तोला ४ माशा, कालानमक, पीपल, समुन्दरझाग-प्रत्येक १४ माशा, सेंधानमक ३ तोला, पीली हड़का बकला ४ तोला ८ माशा। समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर आर्द्रकस्वरसमें खरल करके सुखायें। फिर नीबूके रसमें खरल करके चना प्रमाणकी गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली सवेरे खायँ।

गुण तथा उपयोग—यह अजीर्ण, अरुचि एवं भूख न लगनाके लिये लाभकारी है और कफज विसूचिकाके लिये भी खास चीज है।

———

शूलाधिकार ६

१—अतरीफल जमानी

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद निसोथ, शुष्क धनियाँ—प्रत्येक ७॥ तोला; पीली हड़का बकला, काबुली हड़का बकला, कालीहड़, भुलभुलाया हुआ (मुशव्वी) सकमूनिया, बनफशा पुष्प,—प्रत्येक ३ तोला ९ माशा; बहेड़ेका बकला, गुठली निकाला हुआ आमला, वंशलोचन, गुलाबपुष्प, निलोफरपुष्प—प्रत्येक २२॥ माशा; श्वेतचन्दन, कतीरा—प्रत्येक १२॥ माशा। द्रव्योंको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें और ११ तोला ३ माशा बादामके तेलमें स्नेहाक्त (चर्ब) करें। फिर उन्नाब, लिसोढा—प्रत्येक १०० नग, बनफशा पुष्प २ तोला ९ माशाको जलमें क्वाथ करें। फिर छानकर औषधद्रव्योंसे डेढ़ गुना हड़के मुरब्बाका शीरा मिलाकर अतरीफल तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—रात्रिमें सोते समय ७ माशा यह अतरीफल १२ तोले गावजबानार्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मस्तिष्कका शोधन करता है, शिरोशूल, उदरशूल (कुलंज), मलावष्टंभ (कब्ज), मालीखोलिया, बार-बार होनेवाला नजला और उदरमें बाष्प-उत्पत्ति (तबखीर) होनेको अतिशय गुणकारी है।

२—अर्क तंबूल (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबपुष्प, गावजबानपत्र, सूखा पुदीना, देशी पान (ताम्बूल) के पत्र—प्रत्येक ४० तोला, अजवायन, सातरफारसी, दारचीनी, लौंग, कुलंजन, सोंठ, छोटी इलायची—प्रत्येक २० तोला; गुलाबपुष्पार्क ऽ६ छः सेर, वेतसार्क (अर्क बेदमुश्क) ऽ३, वर्षा जल ऽ३। द्रव्योंको यवकुट करके अर्कोंमें भिगोकर सवेरे ७ सेर अर्क परिस्रुत करें। इस अर्कमें पुनः पूर्वोक्त द्रव्य उतना ही प्रमाणमें रातभर भिगोकर दोबारा ७ सेर अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—पौने दो तोला उपयुक्त शार्कर (शर्बत) मिलाकर सवेरे-शाम दोनों समय पिलायें। उदाहरणतः हृद्रोगोंमें सेबका शर्बत, गुड़हलका शर्बत या केवड़ाका शर्बत मिलाकर उपयोग करें। आमाशयशूल, उदरशूल (कुलंज) और वातिक वेदनाओं (रोही दर्दों) में सादा सिकंजबीन या नीबूकी सिकंजबीन मिलाकर दें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और हृदयको शक्ति प्रदान करता है, उदरशूल (दर्द कुलंज) और आमाशयिकशूलमें लाभकारी है। यह वायुजन्य वेदनाको निवारण करता है तथा हृदयको उल्लसित करनेवाला (मुफर्रेहकल्ब) और शामक है।

३—जिमाद कुलंज

द्रव्य और निर्माणविधि—

इन्द्रायनका गूदा, सौंफ—प्रत्येक १ तोला। इनको गोपित्तमें पीसकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—नाभिके नीचे अर्थात् पेड़ूपर सुहाता गरम लेप करें।

गुण तथा उपयोग-यह मार्दवकर और विलायक है तथा शूल (दर्द कुलंज) को शमन करता है।

४—जुवारिश शहरयाराँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

सकमूनिया १०॥ माशा, लौंग, तज (किरफा), दारचीनी, कलमी तज, बालछड़, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, रूमीमस्तगी, बड़ी इलायची, हब्ब बलसाँ, केसर—प्रत्येक १४॥ माशा; छिली हुई और बीचसे अस्थि दूरकी हुई सफेद निशोथ (तुर्बुद सफेद मुजव्वफ खराशीदा), कृष्णबीज (काला-दाना)-प्रत्येक २ तोला ४ माशा, सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। पुनः जितना यह चूर्ण हो उतनी चीनी और शुद्ध मधु एक भागकी चाशनी करें और यथाविधि जुवारिश बनायें।

मात्रा और अनुपान—१॥ तोलासे २॥ तोलातक उष्ण जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग-यह शूल, (कुलंज) की विशिष्ट और प्रयोगकृत औषधी है तथा आमाशय और यकृत्की सर्दीको दूर करती है।

५—दवाए वजउल्फुवाद

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऊँटनीका दूध पक्का ऽ१॥, लाहौरी नमक ८ तोला। हाँडीमें नमकको ऊँटनीके दूधमें डालकर बहुत मृदु अग्निपर धीरे-धीरे पकायें जिसमें उबले नहीं। जब गाढ़ा होनेके लगभग हो तब ६ माशा केसर पीसकर उसमें मिला दें और नीचेसे अग्नि निकाल दें। केवल कोयलोंका सेंक औषधको पहुंचता रहे। जब हलुआके समान हो जाय तब उतारकर सायामें शुष्क करें और चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशा यह चूर्ण शीतल जलसे उपयोग करें।

अपथ्य—दूध, दही, चावल, चर्बी (वसा) इत्यादिसे परहेज करायें।

उपयोग—कलेजेके दर्द (वजउलफुवाद) में अत्यन्त लाभकारी है।

६—नकूअ करनूफुल (लवङ्गफाण्ट)

द्रव्य और निर्माणाविधि—

अधकुटा लौंग १। तोला, उबलता हुआ परिस्रुत जल १० छटाँक। लौंग को जलमें डालकर पन्द्रह मिनटके लिये ढँककर रख दें। इसके बाद छानकर काममें लेवें।

मात्रा और अनुपान—१। तोलासे २॥ तोला तककी मात्रामें नमकीन करके या वैसे ही पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह उदराध्मान और शूल (कूलंज) में लाभकारी है तथा उत्तेजक और वातानुलोमक है;

७—माजून कुलञ्ज

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, तज (किरफा), दारचीनी, लौंग, तज (सलीखा), नारमुश्क, बालछड़, छोटी इलायचीके बीज, बड़ी इलायचीके बीज, रूमोमस्तगी, तेजपत्ता, अजवायन, अजमोदा, अनीसून—प्रत्येक ६ माशा ; चीता, केसर—प्रत्येक ४ माशा ; भुलभुलाया हुआ (मुशब्वी) सकमूनिया बादामके तेलमें स्नेहाक्त की हुई तथा छिली और अस्थि दूर की हुई त्रिवृता (निशोथ) का चूर्ण, विलायती अफतीमून, कालादाना (हब्बुन्नील) ८ माशा, बसफाइज फुस्तकी ५ माशा, नमक हिंदी (सेंधानमक) ३ माशा। सबको कूट-छानकर दुगुनी चीनी और द्रव्यका एक भाग शुद्ध मधुकी चाशनी करके यथाविधि माजून बनावें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

उपयोग—यह शूल (कुलंज) के प्रायशः भेदोंमें लाभकारी है।

८—माजून यहयाबिनखालिद

द्रव्य और निर्माणविधि—

तगर (आसारून), सोंठ, किरमानी जीरा और पीपल—प्रत्येक ७ माशा, सनायमक्की १ तोला ५॥ माशा, सुरंजान २ तोला ११ माशा। सबको कूट-छानकर तिगुने श्वेत मधुमें मिलाकर माजून बनायें।

मात्रा और अनुपान—६ माशा माजून उष्ण जलसे खिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह आमवातके लिये असीम गुणकारी है और शूलमें भी उपकार करती है ।

वक्तव्य—यदि इसकी बटिकायें बना ले तो वह भी बहुत लाभकारी होती हैं । उक्त अवस्थामें मधु समप्रमाण डालकर गोलियाँ बनायें और ४॥ माशाकी मात्रामें दें । इसका चूर्ण भी गुणकारी होता है । उक्त अवस्थामें मधु न डालें । केवल द्रव्योंका चूर्ण ४॥ माशा उष्ण जलसे दें

९—माजून सकमूनिया

द्रव्य और निर्माणविधि—

सकमूनिया २ तोला आधा माशा, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ किरमानी जीरा, सुदाब, तज (किरफा), कुलंजन—प्रत्येक २ तोला ११ माशा ; शुद्ध मधु ४० तोला १० माशा । द्रव्योंको पीसकर मधुमें मिलाकर यथाविधि माजून बनायें ।

मात्रा और अनुपान—४॥ माशा माजून उष्ण जल या सौंफके अर्कके साथ खिलायें ।

गुण तथा उपयोग-यह एक मिनटमें शूलका नाश करती है और अतिशय गुणकारी एवं सिद्धयोग है ।

१०—हब्ब शहमहञ्जल

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग, छोटी इलायची, केसर, बोल (मुरमक्की), सनायमक्की, एलुआ, पीलीहड़का छिलका, सोंठ, रूमीशिगरफ—प्रत्येक ३॥ माशा ; इन्द्रायनका गूदा, श्वेत त्रिवृत्–प्रत्येक १०॥ माशा । सबको बारीक पीसकर गुलाबपुष्पार्कमें घोटकर चना प्रमाणकी बटिकायें बनायें ।

मात्रा और सेवन-विधि—६ गोलीसे १० गोलीतक प्रकृति और रोगके बलाबलानुसार न्यूनाधिक करके सौंफके अर्कसे खिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह शरीरके आभ्यंतरिक भागोंसे दोषोंका उत्सर्ग करनेके लिये प्रबल प्रभावकारी है, विशेषतया शूल (कूलंज) नष्ट करने और वेदना शमन करनेके लिये अनुपम औषधि है ।

आनाहा (कब्ज-मलावष्टंभा) धिकार १०

१—अकसीर वजउलफ़ुवाद

द्रव्य और निर्माणविधि—

तुख्म कासनी, रूमी मस्तगी, जरावंद तवील, बादियान रूमी, छोटी इलायचीके बीज, गुलाबपुष्प, दारचीनी—प्रत्येक १ तोला ; रेवंदखताई ६ माशा, खानेका सोडा ३ तोला । समस्त द्रव्योंको अलग-अलग कूट-छानकर मिलालें ।

मात्रा और सेवन-विधि—६-६ माशा सवेरे-शाम ३ तोला शर्बत-अफसंतीन और १२ तोला सौंफके अर्कके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—यह चूर्ण आहार पाचन करता है, आमाशयको बलवान बनाता, और मलोंको बिलीन करता है ; क्षुधाकी वृद्धि करता, आनाह और आटोपका नाश करता है ।

२—जुवारिश ऊदशीरीं

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

तज (किरफा), लौंग, रूमी मस्तगी, बालछड़, दारचीनी, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, 'जावित्री, केसर, जायफल—प्रत्येक ७ माशा ; नागकेसर, अगर, बिजौरेका छिलका (पोस्त उतरूज)-प्रत्येक ४॥ माशा, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ-प्रत्येक ३॥ माशा, नागरमोथा १॥। माशा, कस्तूरी १ माशा । समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर शुद्ध मधु और चीनी-प्रत्येक ͡॥ की चाशनी करके यथाविधि जुवारिश बनायें ।

मात्रा—७ माशा उपयुक्त अनुपानसे देवें ।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशयको बल प्रदान करती है, श्लेष्माको बिलीन करती और पाचनको सुधारती है ।

३—तिरियाक शिकम

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीपल, सोंचर नमक—प्रत्येक ४ तोला ; छोटी इलायचीके बीज १ तोला, सूखा पुदीना, श्वेत और कृष्ण जीरक, पिस्तेका बाहरका छिलका, सौंफ, काली-

मिर्च, अजवायन, कलमी दारचीनी, सेंधवलवण, नमक चूड़ी (मनिहारी नमक), काला नमक, तन्त्रीक, गेरू—प्रत्येक २ माशा ; इनको पीसकर नीबूका सत और जहरमोहरा खताई—प्रत्येक १ रत्ती मिलाकर शीशीमें सुरक्षित रखें ।

मात्रा और सेवन-विधि—सामान्य रोगोंमें १-१ माशा सवेरे-शाम देवें । पर यदि उदरशूल या हैजा हो तो उक्त मात्रामें २-२ घंटा पश्चात् देते रहें ।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय शूल, अजीर्ण और आटोपको निवारण करता है तथा विसूचिका, वमन, उत्क्लेश, वायगोला, अजीर्ण-अग्निमांद्य, अम्लोद्गार और क्षुधा कम लगनेको लाभकारी है ।

विशेष उपयोग—यह आमाशयशूल और अजीर्णके लिये विशेष रूपसे लाभप्रद है तथा दीपन-पाचन है ।

४—नमक शैखुर्रईस

द्रव्य और निर्माणविधि—

साँभर नमक ऽ॥, श्वेत मरीच ७ तोला १०॥ माशा, नौसादर, सोंठ, कालीमिर्च, सूखा पुदीना—प्रत्येक ५। तोला ; अजवायन, तारामीराके बीज (तुख्म जिरजीर), बालछड़—प्रत्येक २ तोला ७॥ माशा ; अजमोदा ३ तोला ११। माशा । इनको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें ।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशा तक सवेरे ताजा जलसे लेवें ।

गुण तथा उपयोग—यह वायुनाशक (वातानुलोमन), दीपन-पाचन (मुकव्वी मेदा) और यकृत्को बलप्रद, पाचनकर्त्ता और शुद्ध रक्त उत्पन्नकर्त्ता है ।

५—पयामे शिफा

द्रव्य और निर्माणविधि—

कालीमिर्च, नौशादर, हुरमुची—प्रत्येक १ तोला ; धतूर बीज ६ माशा, मयूर भस्म ३ माशा । इनको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें ।

मात्रा और सेवन-विधि—चार चावल चूर्ण ताजा जल, सौंफके अर्क ६ तोला या गुलाबपुष्पार्क ६ तोला, सिकंजबीन २ तोलाके साथ सवेरे-शाम या आवश्यकतानुसार उपयोग करें ।

परहेज—चिरपाकी और आध्मानकारक पदार्थोंसे परहेज करें ।

गुण तथा उपयोग—यह उत्क्लेश, वमन, उदराध्मान, अजीर्ण, भूखकी कमी या बिल्कुल भूख न लगना आदिको बहुत गुणकारी है।

विशेष उपयोग—वमन और उदरशूलके लिये प्रधान औषधि है।

६—पयामे सेहत

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादरको केलेकी जड़के रसमें खरल करके जौहर उड़ायें। इस प्रकार उड़ाया हुआ यह नौशादरका जौहर (सत्व) ३ तोला, पुदीनाका सत ६ माशा, कालीमिर्च, पीपल, जवाखार असली, मूलीखार (नमक तुर्ब), अपामार्ग क्षार, क्षुद्रकटाईका खार-प्रत्येक १ तोला ; कलमीशोरा, बड़ी इलायचीके बीज, लाहौरी नमक (सेंधव)—प्रत्येक ३ तोला ; शुद्ध इरमुची ५ तोला। समस्त द्रव्योंको अलग-अलग कूटकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—आधा माशा यह चूर्ण सौंफके अर्क या उष्ण जलसे भोजनोपरांत या यथावश्यक उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह वातानुलोमन और आहारपाचक है ; खूब क्षुधा उत्पन्न करती है; अजीर्ण, आमाशयशूल, वृक्कशूल और शूलरोग (कुलंज) को लाभकारी है। यह पाचनदोषजन्य समस्त आमाशयिक व्याधियोंको लाभदायक है।

विशेष गुण—आध्माननिवारणके लिये यह उत्कृष्ट औषधि है।

मलावष्टंभ (कब्ज)

१—अतरीफल मुलय्यिन (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

काबुली हड़का बकला, बहेड़ेका बकला, काली हड़, गुठली निकाला हुआ आमला, श्वेत त्रिवृता—प्रत्येक १॥ तोला ; रेवंदचीनी, सौंफ, रूमीमस्तगी, उस्तूखूदूस—प्रत्येक ३॥। तोला ; सकमूनिया विलायती ११। तोला। सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बना आवश्यकतानुसार बादामके तेलमें मर्दन (चर्ब) करके तिगुना मधुके साथ यथाविधि अतरीफल बनायें।

मात्रा—१ माशा।

गुण तथा उपयोग—मलावष्टंभ (कब्ज) और आमाशयांत्रशूल तथा शिरोशूलमें भी लाभकारी है।

२—माजून मुलय्यिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद निशोथ, अँगरेजी सकमूनिया—प्रत्येक २ तोला ; पीपल, कालीमिर्च, सोंठ—प्रत्येक ६ माशा ; जावित्री ६ माशा, देशी शकरतरी (बारीक खांड) ७ तोला। सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें। पीछे तिगुने झाग उतारे हुए शुद्ध मधुमें मिलाकर माजून बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ माशासे ३ माशा तक यह माजून गरम दूधके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह कब्जनिवारणके लिये अनुपम है। ज्वरकी दशामें भी इसका उपयोग लाभदायक सिद्ध होता है। दायमी कब्जके लिये प्रतिदिन १ माशा खिलानेसे कब्जकी शिकायत जाती रहती है।

३—माजून संगदाने मुर्ग

द्रव्य और निर्माणविधि—

पोस्त संगदाने मुर्ग, बंशलोचन—प्रत्येक ६ माशा ; सूखा पुदीना, पिस्ताके बाहरका छिलका, बिजौरेका छिलका (पोस्त तुरंज) और पीली हड़का बकला—प्रत्येक ४॥ माशा ; गुलाबपुष्प १०॥ माशा, श्वेत बहमन, रक्तबहमन, श्वेत-चन्दन, रक्तचंदन, भुना हुआ सूखा धनिया, सातर, हब्बुलआस (विलायती मेंहदीके बीज)-प्रत्येक ७ माशा। सबको कूटछानकर फलशार्कर (शर्बतफवाके) या तिगुना मधुके साथ माजून बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा माजून सौंफका अर्क ६ तोला और मकोयका अर्क ६ तोलाके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून दीपन-पाचन (मुकव्वी मेदा), वातानुलोमन और आहार-पाचनकर्त्ता है। यह अति शीघ्र प्रभावकारक और अव्यर्थ महौषधि है।

४—शर्बत मुलय्यिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

बिहदाना ४ तोला, गावजबान ६ तोला, बनफशापुष्प ८। तोला, गुलाब पुष्प ८। तोला, उन्नाव ८ तोला, इसबगोल १० तोला, लिसोढ़ा ५ तोला, तर-

ञ्जबीन (यवासशर्करा)]॥ आधा सेर। तरंजबीनके सिवाय शेष द्रव्योंको भिगोकर क्वाथ करें। फिर छानकर तरञ्जबीन मिलाकर यथाविधि शर्बत (शार्कर) कल्पना करें।

मात्रा और अनुपान—१॥ तोला शर्बत ५ तोले गावजबानके अर्कके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह मलावष्टंभनिवारक (कब्जकुशा) और वातानुलोमनकर्त्ता है।

५—शर्बत शीरखिश्त मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

१० भाग सनायमक्की और १ भाग सौंफ दोनोंको कूटकर ६० भाग जलमें चौबीस घंटे तक भिगोये रखें। इसके बाद उसे छानकर अग्निपर इतना उड़ायें कि चालीस भाग द्रव्य शेष रह जाय। फिर उसमें १० भाग शीरखिश्त घोल दें और शीतल होनेपर पाँच भाग सुरासार ९० प्रतिशत शक्तिका मिलाकर एक ओर रख दें। चौबीस घंटा उपरांत ऊपर निथरा हुआ स्वच्छ द्रव लेकर उसमें समप्रमाण चीनी मिला और उबालकर शर्कराकी चाशनी कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—रोगीकी अवस्थाके अनुसार १ से ३ तोले तक जल या किसी उपयुक्त अर्कमें मिलाकर दें।

गुण तथा उपयोग-यह अत्युत्तम सारक (मुलय्यिन) और विरेचक औषध है। बालक और कोमल प्रकृतिके लोगोंका मलावष्टंभ (कब्ज) निवारण करनेके लिये उपयोग किया जा सकता है।

६—सफूफ मुलय्यिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

सनाय मक्की ७ माशा, अनीसून ३॥ माशा, सौंफ ३॥ माशा, छिली हुई मुलेठी ६॥। माशा, शुद्ध गन्धक ७ माशा, क्रीम ऑफ टारटार ५ माशा, चीनी २॥ तोला। समस्त द्रव्योंको अलग-अलग बारीक पीसकर भलीभाँति मिलाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक बड़े चमचा भर प्रतिदिन रात्रिमें सोते समय जल या दूधके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मलावरोध (कब्ज) निवारण करता, पञ्चनेन्द्रियोंको शक्ति प्रदान करता और रक्तको शुद्ध करता है।

७—सफूफ असलुस्सूस मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

बारीक कूटकर कपड़छानकी हुई सनायमक्की ५ तोला, मुलेठीका चूर्ण ५ तोला, चूर्ण किया हुआ सौंफ २॥ तोला, शुद्ध गंधक बारीक पिसी हुई २॥ तोला, शर्करा १५ तोला। समस्त द्रव्योंको अच्छी तरह मिलाकर रखलें।

मात्रा और सेवन-विधि—३॥ से ७ माशा तक जल आदिके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मृदुसारक (हलका मुलय्यिन) है। अर्शमें कब्ज निवारण करनेके लिये इसे देते हैं।

वक्तव्य—वैद्यगण इसे यष्ट्यादि चूर्ण या मधुकादि चूर्ण कहते हैं। कई फार्मेसीवाले इसको स्वादिष्ट विरेचन के नामसे बेचते हैं। पाश्चात्य मेटीरिआ मेडिकामें इसका पल्विसग्लिसर्‌हाइजाकम्पाउण्ड नाम दिया है।

९—हबूब मुलय्यिन

द्रव्य और निर्माणविधि—

एलुआ पीत (सिब्र जर्द), उसारगेवंद—प्रत्येक ६ माशा ; रूमी मस्तगी १ तोला। सबको बारीक पीसकर अर्क गुलाबमें घोंटकर मूंगके बराबर गोलियाँ बनाकर सायामें सुखाकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ गोली से ८ गोली तक सुहाता गरम दूध या सौंफके अर्कके साथ खायँ।

गुण तथा उपयोग—निरापद और कृतप्रयोग मृदुसारक औषधि है।

१०—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध जमालगोटेके बीजकी गिरी ३ माशा, एरण्डके बीजकी गिरी (रेंडीकी गुद्दी) ६ माशा, मीठे बादामकी गिरी ६ माशा और मिश्री १ तोला। सबको बारीक पीसकर कालीमिर्चके बराबर गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान—१ से २ गोली तक उष्ण जल या दूधके साथ देवें।

गुण तथा उपयोग—यह कब्ज दूर करनेके लिये उत्कृष्ट योग है। इससे सवेरे खुलकर दस्त आ जाता है।

११—हब्ब कब्जकुशा

द्रव्य और निर्माणविधि—

अँगरेजी सकमूनिया, पीत एलुआ (सिब्रजर्द), उसारारेवंद, दारचीनी, नौशादर—प्रत्येक १ तोला ; रूमीमस्तगी ६ माशा, बबूलका गोंद २ माशा। समस्त द्रव्योंको बारीक करके बूंद-बूंद गुलाबका अर्क डालकर खरल करें। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब चना प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ या २ गोली रात्रिमें सोते समय खा लें। यदि उदरमें दर्द भी हो तो तीन गोलियाँ जलके साथ खा लें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियाँ उदरके शूलको मिटाती और कब्जको खोलती हैं।

विशेष उपयोग—यह कब्ज दूर करनेके लिये विशेष रूपसे प्रयोग की जाती हैं।

१२—हब्ब मिस्कींनेवाज

[१]

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासारगंधक, हड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, चीता, गोलमिर्च, बहमन सफेद और बहमन लाल (आयुर्वेदमें मेदा और महामेदा), सुहागा (खील किया हुआ), रेवंदचीनी, शुद्ध बछनाग, हड़ताल वरकी शुद्ध और जमालगोटा शुद्ध-प्रत्येक १ तोला। प्रथम पारा और गंधककी कज्जली करें। फिर समस्त द्रव्यों (का कपड़छान चूर्ण) को भँगरे या पान (मसालेदार) २४० नगके रसमें ४८ घण्टा तक खरल करके मूंगके दानेके बराबर गोलियाँ बनायें।

१३—हब्ब मिस्कींनेवाज

[२]

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गंधक, हड़ (हलेला जर्द), बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, सुहागा, (सज्जी लोटा, रेवंदचीनी), शुद्ध बछनाग, शुद्ध हड़ताल वरकी—प्रत्येक १ तोला ; शुद्ध जमालगोटा ८ तोला। पूर्वोक्त विधिसे

गोलियाँ बना लें। कोई-कोई सबको समप्रमाण लेते हैं। कोई-कोई सज्जीलोटा और रेवंदचीनी नहीं मिलाते।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोलीसे ३ गोलीतक कोष्ण मिश्रेयार्कके साथ खिलायें। अर्श और अग्निमांद्य एवं अजीर्णमें १२ तोला सौंफके अर्कके साथ और कब्जनिवारणके लिये रात्रिमें सोते समय इसी मात्रामें सुहाता गरम दूधके साथ खायें।

गुण तथा उपयोग-यह आमाशय और अन्त्रका शोधन करती है। आमाशयको बलवान बनाती, कब्ज, प्रवाहिका और अतिसारको नष्ट करती एवं अर्शमें गुणकारी है।

वक्तव्य—यह आयुर्वेदोक्त अश्वकञ्चुकीरस है जिसे यूनानी चिकित्सा-चार्योंने हब्ब मिस्कींनेवाज नामसे ग्रहण किया है। वे इसे घोड़ाचढ़ी या घोड़ाचोली भी कहते हैं।

१४—हब्ब तंकार

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुहागा (भुना हुआ) ७ माशा, खुरासानी अजवायन ८॥ माशा, काली-मिर्च ३॥ तोला, सकोतरी एलुआ ४ तोला ८ माशा। सबको कूट-पीसकर घीकुआरके रसमें घोटकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ गोली जलसे सोते समय खायँ।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन और क्षुधाजनक है तथा दायमी कब्ज और आमाशयगत गौरवको दूर करती है।

विशेष उपयोग—यह दायमी कब्जको दूर करती है।

१५—हब्बुस्सलातीन

द्रव्य और निर्माणविधि—

कालादाना, सफेद निशोथ, रेवंदखताई–प्रत्येक १ तोला; शुद्ध जमालगोटेके बीजकी गिरी २० दाना। इनको कूट-छानकर बिहीदानेका लुआब ६ माशामें खरल करके मुद्ग-प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि–२ गोली से ६ गोलीतक ताजे पानीसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह अत्यन्त सरलतापूर्वक कब्जको दूर करती है। स्वर्गवासी हकीम आजमखांके गुल्का कृतप्रयोग औषध है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त अकसीर मेदा, अतरीफल जमानी, अतरीफल मुलय्यिन, अर्क इलायची, अर्क पुदीना, अर्क बादियान, अलकासिर, जुवारिश कमूनी, जुवारिश जालीनूस, सफूफ नमक सुलेमानी खास, सफूफ हाजिम, प्रभृति योग भी इस रोगमें गुणकारी हैं।

अर्शोधिकार ११

१—जिमाद बवासीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसवत, यशद भस्म, सफेद मोम—प्रत्येक १ तोला; खतमीके पुष्प और गुग्गुल—प्रत्येक २ तोला; सोंठ, जावशीर—प्रत्येक ५ तोला १० माशा; गुलरोगन ५ तोला, तिल तैल ७ तोला। तेलोंको अग्निपर रखकर उसमें खतमीके पुष्प और गुग्गुल कूटकर और शेष द्रव्योंको वैसे ही डाल दें और हल करके उतार लें।

मात्रा और सेवन-विधि—अर्शके मस्सोंपर लेप करके भाँगके पत्तोंकी टिकिया बाँधकर लंगोट कस दें।

गुण तथा उपयोग—यह अर्शांकुरोंमें होनेवाली वेदनाको तथा कब्जको भी दूर करती है।

२—मरहम बवासीर

[१]

द्रव्य और निर्माणविधि—

अहिफेन ६ रत्ती, माजू २ नग, छागवसा, सरसोंका तेल—प्रत्येक ५ तोला और शुद्ध मोम १ तोला। शुष्क द्रव्योंको पीसकर रखें। तेलमें शुद्ध मोम और बकरीकी चर्बी समाविष्ट करके अग्निपर गरम करें। पीछे शेष द्रव्य मिलाकर मरहम बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार अर्शांकुरोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह ठंडक डालता है इसके कुछ दिनोंके उपयोगसे अर्शांकुर शुष्क हो जाते हैं।

३—मरहम बवासीर

[२]

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद मोम ६ माशाको २ तोला तिलके तेलमें गलाकर ६ तोला गायका मक्खन मिलायें। फिर नीमकी छाल २ माशा, बकाइनकी छाल २ माशा, बकाइनके बीजकी गिरी २ माशा, नीमके बीजकी गिरी २ माशा, रसवत २ माशा गुग्गुल (मुकल अरजक) ३ माशा, सफेदा काशगरी २ माशा और कपूर २ माशा। सबको कूट-छानकर उसमें मिलाकर मरहम बनायें।

सूचना—यदि अधिक रक्तस्राव होता हो तो इसमें अञ्जरूत और गिल-अरमनी—प्रत्येक २ माशा और मिलायें।

गुण तथा उपयोग—मस्सोंमें वेदना और दाह होनेपर इसे लगानेसे वे तत्काल शमन हो जाते हैं।

४—रोगन बवासीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

भिलावाँ (टोपी दूर किया हुआ) ५ दाना, मैनसिल ६ माशा, तिलका तेल २॥ तोला। प्रथम तिलके तेलको पीतलके बरतनमें डालकर अग्निपर रखें। जब उबाल आ जाय तब भिलावाँ दो-दो टुकड़े करके उसमें डाल दें। जब भिलावाँ जल जाय तब उसे तेलसे निकाल लें और तेलको नीचे उतार लें। जब तेल शीतल हो जाय तब मैनसिलको बारीक करके उसमें डालें और किसी लोहेके सोंटेसे उसे तेलमें हल कर दें। फिर उसमें पक्का दो सेर जल डाल दें। अब जो तेल थोड़ी देर पश्चात् जलके ऊपर आये उसे हाथसे उतारकर शीशीमें सुरक्षित रखें।

सूचना—यह तेल पीतलके बरतनमें बनाना चाहिये।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकतानुसार यह तेल दिनमें दो बार मस्सोंपर लगा दिया करें।

गुण तथा उपयोग—शरीरमें कहीं भी मस्से प्रगट हो गये हों यह तेल सभी स्थानके मस्सोंको सुखाता है। परन्तु अर्शांकुरोंको सुखानेमें इसका चमत्कृत प्रभाव होता है और उसके लिये प्रधान औषधी है। यह थोड़े दिनोंमें मस्सोंको शुष्क कर देता है।

५—हब्ब बवासीर

[१]

द्रव्य और निर्माणविधि—

काबुली हड़का बकला ६ माशा, पीली हड़का बकला ६ माशा, बहेड़ाका छिलका ६ माशा, सूखा आमला ६ माशा, सौंफ ५ माशा, रसवत ५ माशा और अनीसून ५ माशा। इनको कूट-छानकर चूर्ण बनायें और मीठे बादामके तेलसे स्नेहाक्त (चर्ब) करें। फिर गुग्गुल रक्त (मुकल अरजक) १॥ तोला और गंदनाके बीज १ तोला। इनको जलमें घोलें और बीज निकाला हुआ मुनक्का २ तोला, पीला अंजीर २ तोला और अमलतासका गूदा २॥ तोला योजितकर सबको मिला लें और चनाप्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान आदि—आवश्यकतानुसार ४ गोलियाँ रात्रिमें सोते समय ५ तोला सौंफके अर्क और ५ तोला गावजबानके अर्कके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह वातार्श और रक्तार्श दोनोंके लिये लाभकारी है।

६—हब्ब बवासीर

[२]

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसवत ५ तोला और चाकसू २॥ तोलाको मूलीमें बन्द करके उसपर मोटे कपड़ेकी सात तह लपेट देवें। फिर उसे कपड़मिट्टी करके तीन सेर जंगली उपलों-की अग्नि देवें। स्वांगशीतल होनेपर औषध निकालकर चनाप्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा—१-२ गोली।

गुण तथा उपयोग—यह अर्शमें परमोपयोगी है। हकीम नूरुद्दीन साहब भैरवी इसका प्रयोग किया करते थे।

७—हब्ब रसवत

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसवत, गुग्गुलु रक्त (मुकल अरजक), गेरू, नीमके बीजकी गिरी, बकाइनके बीजकी गिरी और गंदनाके बीज। इनको हरे गंदनाके रसमें पीसकर चना-प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और अनुपान आदि—वातार्शमें सवेरे-शाम एक-गोली और रक्तार्शमें २ गोलियाँ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह गोलियाँ हर प्रकारके अर्शके लिये गुणकारी हैं। इनका निरन्तर सेवन उत्तम प्रभाव प्रदर्शित करता है।

८—हब्ब बवासीर खूनी

द्रव्य और निर्माणविधि—

भीमसेनी कपूर ३ माशा, नागेसर, नीमके बीज (निबौली) की गिरी, रसवत, बीज निकाला हुआ मुनक्का—प्रत्येक ६ माशा। प्रथम चारों द्रव्योंको पीसकर कपड़छान चूर्ण करें। फिर उनमें मुनक्का डालकर खूब घोंटें और जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम जलके साथ निगल लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तार्शकी सिद्ध और अव्यर्थ महौषधि है। प्रायः बीस दिनमें ही लाभ हो जाता है। परन्तु रोगके उन्मूलनके लिये चालीस दिन तक इसका सेवन करना चाहिये।

९—हब्ब सुन्दरूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुक्कुटाण्डत्वक्, सुन्दरूस (चन्द्रस), चीना—प्रत्येक ५ माशा ; नौसादर ५ रत्ती। सबको कूट-छानकर काशमीरी (फिंदक) के बराबर गोलियां बनायें।

मात्रा और अनुपान—५ से ६ गोलीतक ताजा जलसे सेवन करें।

उपयोग—दिल्लीके स्वर्गवासी शिफाउल्मुल्क हकीम रजीउद्दीन अहमद महोदय रक्तार्शमें इसका उपयोग करते थे।

१०—हब्ब बवासीर रीही

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीला रसवतको गुलाबके अर्कमें भिगोकर निथार (मुकत्तर कर) लें। फिर निबौलीकी गिरी, बकाइनके बीजकी गिरी, गंदनाके बीज, गुग्गुल रक्त, पीली हड़ का छिलका, काली हड़, काबुली हड़, सूरजमुखीका फूल और सोंठ समभाग बारीक कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण करें। पीछे इसे इसबगोलके लुआबमें घोंटकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनाकर सायामें सुखायें।

मात्रा और अनुपान—२ से ४ गोली तक ताजा जलके साथ ।

गुण तथा उपयोग—यह वातजार्शको विशेष रूपसे और रक्तार्शको सामान्य रूपसे लाभकारी है ।

११—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का छिलका, काली हड़, काबुली हड़, गुलाबके फूल, सोंठ, गंदनाके बीज, गुग्गुलु रक्त, नीमकोलीकी गिरी, बकाइनके बीजकी गिरी, रसवत पीत, सूरजमुखीके पुष्प और कलमी तज समभाग । इनको बारीक पीसकर हरी मूलीकी पत्तीके रस और हरे कुकरौंदाकी पत्तीके रसमें तीन दिन आलोडन करके रीठाके बराबर गोलियाँ बना लें और सायामें सुखाकर सुरक्षित रक्खें ।

सेवन-विधि—प्रति दिन रात्रिमें सोते समय ताजा जलसे सेवन करें ।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त अकसीर नफसुद्दम, जुवारिश जालीनूस, जुवारिश तीवराज, कुर्स कहरुवा, सफूफ अल्लुस्सूस मुरक्कब और हब्ब मिस्कीनेवाज प्रभृति योग भी उक्त रोगमें लाभकारी हैं ।

कृमिरोगाधिकार १२

१—अतरीफल दीदान

द्रव्य और निर्माणविधि—

काबुली वायविडङ्ग २ तोला १० माशा, छिली हुई और हड्डी निकाली हुई श्वेतत्रिवृता अर्थात् सफेदनिशोथ, कालादाना, कड़वा कुट—प्रत्येक १ तोला ५ माशा ; तुर्मुस, अफसन्तीनरूमी, दिरमना तुर्की (बस्त्रियाज बीज), विलायती अकाशबेल (अफतीमून), सांभर नमक (या काला नमक), इन्द्रायनका गूदा (या इन्द्रायनकी जड़), रासन बीज, नागरमोथा (मतांतरसे राई भी)—प्रत्येक १०॥ माशा । इन सबको कूट-छानकर तिगुने मधुके साथ अतरीफल तैयार करें ।

मात्रा और अनुपान—सबेरे या शाम ५ माशा यह अतरीफल १२ तोले गावजबानके अर्कके साथ तीन दिन तक खायें । इसके अनन्तर एक हलका सा विरेचन ले लें ।

गुण तथा उपयोग—यह अतरीफल आमाशयको श्लैष्मिक द्रवोंसे शुद्ध करता है। हर प्रकारके उदरज कृमियोंको नष्ट करके उत्सर्गित करनेके लिये यह प्रधान औषधि है। केंचुओं और कद्दूदानोंमें इससे विशेष लाभ होता है।

२—दवाउल् कर्अ

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धक २ तोला, राई और अजवायन प्रत्येक ३ तोला; वायविडंग ४ तोला, शुद्ध कुचला ५ तोला; तुख्ममेदा ६ तोला। इनको छरमा सा करके रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—दिनमें एक बार ३ माशा खिलाया करें।

गुण तथा उपयोग—यह कद्दूदानेके लिये उत्तम औषधि है। हकीम नूरुद्दीन महाशयका अनुभूत योग है।

३—हब्ब अफसंतीन

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफसंतीनरूमी, कमीला, वायविडङ्ग, पलासपापड़ा—प्रत्येक १ तोला। सबको कूट-छानकर हरे सफताल्रू (आडू) की पत्तीके रसमें आलोडन करके जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली प्रातःसायंकाल खिलायें।

उपयोग—यह हर प्रकारके उदरजकृमियोंको मारकर निकालती है।

४—हब्ब खरातीन

द्रव्य और निर्माणविधि आदि—

एलुआ, निशोथ, सोंठ, कालादाना, बिडङ्ग काबुली (वायबिडङ्ग), अफसंतीन प्रत्येक १ तोला। इन सबको बारीक पीसकर शफताल्रू (आडू) के पत्रके रसमें घोटकर गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—३ माशासे ६ माशातक खायँ और ऊपरसे काली मिर्च ५ दाना और शफताल्रूके पत्ते १॥ तोला जलमें पीसकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह उदरज कृमि और केंचुओंके लिये अत्यन्त लाभकारी है।

५—सफूफ किर्म अम्आ

द्रव्य और निर्माणविधि—

१ तोला शुद्ध वंग (कलई) को बारीक पत्तर बनाकर कैंचीसे कतर लें। फिर उसमें ६ माशा पीपल मिलाकर इतना कूटें कि चूर्ण हो जाय।

मात्रा और सेवन विधि—रात्रिमें थोड़ा सा गुड़ मिलाकर सवेरे ९ माशा यह चूर्ण पाव भर दहीके साथ उपयोग करें।

सूचना—रोगीको सूचित कर दें कि औषधको कण्ठके भीतर डालनेके उपरांत अपनी नासिका, दन्त और नेत्रको बन्द कर ले।

गुण तथा उपयोग—इसके उपयोगसे हर प्रकारके अन्त्रस्थ कृमि मृत होकर या जीवित निस्सरित हो जाते हैं।

वमनाधिकार १३

१—कुर्स कुहल

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुरमा असफहानी, दम्मुलअख्वैन, धोया हुआ शादनज—प्रत्येक ३ माशा; हरा माजू, गुलनार फारसी—प्रत्येक २ माशा; अन्तर्धूम जलाया हुआ सावर शृङ्ग, अकाकिया-प्रत्येक १ माशा; धोई हुई काक्षा (लुक मग्सूल) १॥ माशा, अहिफेन, शुद्ध केसर—चार-चार रत्ती। सबको बारीक पीसकर बारतंग या कुलफाके रसमें मिलाकर टिकिया बना लें।

मात्रा—३ माशा।

गुण तथा उपयोग—यदि वाहिनी फट जानेसे रक्तस्राव होनेका रोग हो तो उसके लिये यह विलक्षण प्रभावकारी भेषज है।

२—जुवारिश तबाशीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबपुष्प, वंशलोचन, श्वेत चन्दन, सूखा धनियाँ, गुठली निकाला हुआ आमला—प्रत्येक २ तोला ११ माशा; विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस), बिजौरेका छिलका (पोस्त उतरुज), पोस्त इमाक, रूमीमस्तगी—प्रत्येक

५॥ माशा और कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी) ४॥ माशा। समस्त द्रव्योंसे तिगुना मीठे बिहीका सत (रुब्ब); गुलाबपुष्पार्क आवश्यकतानुसारमें चासनी करें और शेष द्रव्योंको पीसकर मिला लें।

माशा और सेवन-विधि—५ माशा जुवारिश १२ तोला गर्जराकके साथ सवेरे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन (मुकव्वी मेदा) है तथा पित्तज-वमन और अतिसारको बन्द करती है। बाष्पोत्पत्ति रोकनेके कारण यह शिरोभ्रमणमें लाभकारी है।

विशेष उपयोग—यह आमाशयस्थ बाष्पोत्पत्तिको रोकती है।

३—माजून नानखाह

द्रव्य और निर्माणविधि—

अजवायन, गर्जर बीज, सोंठ—प्रत्येक २ तोला ११ माशा; अजमोदाकी जड़ १ तोला ५॥ माशा, मस्तगी ८॥ माशा, अगर ७ माशा, अकरकरा ५। माशा; केसर और बसफाइज फुस्तकी—प्रत्येक ३॥ माशा। इन सब द्रव्योंको कूट-छानकर तौलें। जितना यह हो उससे तिगुने मधुमें मिलाकर माजून बनायें।

मात्रा और अनुपान—१॥ माशा उपयुक्त अनुपानसे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और यकृत्को बलवान बनाती है। श्लेष्माको नष्ट करती और क्षुधाकी वृद्धि करती है। मुखसे लालास्राव और उत्क्लेश एवं वमनको रोकती है तथा कृमियोंको नष्ट करती है।

४—लऊक कै

द्रव्य और निर्माणविधि—

वंशलोचन, पिस्ताके बाहरका छिलका, छुद्रैला सम्पूर्ण, गुलाबकेसर, पोस्त सुमाक, जहरमोहरा और अनारदाना—प्रत्येक १ माशा। सबको बारीक पीसकर रखें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला नीबूके शर्बतमें मिलाकर थोड़ा-थोड़ा चटायें।

उपयोग—पित्तज वमनमें लाभकारी है।

५—शर्बत तमरेहिंदी जदीद

द्रव्य और निर्माणविधि—

इमलीका रस या फाण्ट (आब तमरहिंदी) ऽ॥ सेर लेकर ऽ॥ सेर चीनी मिलाकर चाशनी कर लें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला शर्बत ४ तोला गावजबानार्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह क्षुधा उत्पन्न करता, आमाशयको शक्ति प्रदान करता और कब्ज दूर करनेके लिये परम गुणकारी है तथा वमन और पित्तके प्रकोपको शमन करता है।

६—हब्ब कैउद्दम

द्रव्य और निर्माणविधि—

सन्दरूस (चन्द्रस), भृष्ट बबूलका गोंद, दम्मुलअख्वेन, पिस्ताके बाहरका छिलका, कहरुबाशमई पिष्टी, जहरमोहरा खताई पिष्टी, प्रवाल शाखा पिष्टी और अन्तर्धूम दग्ध कतरा हुआ अबरेशम, भुने हुए मुनक्काके बीज—प्रत्येक ३ माशा। इन सबको बारीक पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें। फिर मुक्तापिष्टी, हरा पन्ना पिष्टी, हरा यशब पिष्टी और काफूरी यशब पिष्टी—प्रत्येक १ माशा। सबको खरल करें और अबरेशमके अर्कमें गूँधकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें। फिर छायामें सुखाकर चाँदीका वरक लपेट कर रखें।

मात्रा और सेवन विधि—१-१ गोली मुंहमें डालकर लुआब चूसते रहें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तवमनको बन्द करती है तथा परम परीक्षित और लाभकारी सिद्ध भेषज है।

उत्क्लेश (मतली)—

१—अर्क पुदीना मुरक्कब

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुदीना ऽ१। सेर लेकर रात्रिमें भिगो दें और सवेरे बीस बोतल अर्क खींचे। फिर इस अर्कमें उतना ही और पुदीना मिलाकर आगामी दिन दो बार अर्क

खींचे। पीछे इस अर्कमें १ छटांकमें २० बूंदके हिसाबसे कैम्फोरोडाइन घोलकर रख लें।

मात्रा और अनुपान—आध-आध छटांक प्रति चार-चार घण्टाके पश्चात् पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह छर्दिघ्न है।

२—शर्बत अनार शीरीं

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठे अनारका रस ऽ२ सेरको इतना पकायें कि ऽ१ सेर रह जाय। फिर उसमें ऽ१ सेर जल और ऽ१ सेर चीनी मिलाकर चाशनी करें।

मात्रा और अनुपान—२ तोला शर्बत ताजा जलसे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह मनःप्रसादकर तृष्णाशामक, दीपन-पाचन और उत्क्लेशनाशक है।

३—शर्बत जदीद फवाके

द्रव्य और निर्माणविधि—

सेवका रस, मीठे अनारका रस, खट्टे अनारका रस, अमरूदका रस, बिहीका रस, अश्मिकका रस, सुमाकका रस, कच्चा अंगूर (गोरा) का रस और मिश्री ऽ१ सेर। यथाविधि शार्कर (शर्बत) प्रस्तुत करें।

मात्रा और अनुपान आदि—२ तोला ताजा जलसे या ५ तोला गावजबानार्कसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह पाचनकर्त्ता, दीपन-पाचन और हृदयबलदायक (हृद्य) है और उत्क्लेशको रोकता है।

तृष्णारोगाधिकार १४

१— अर्क कासनी (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

कासनी बीज ऽ१। सेर रात्रिमें जलमें भिगोकर सवेरे बीस बोतल अर्क परिस्रुत करें। फिर इस अर्कमें कासनीके बीज ऽ१। सेर डालकर दोबारा २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा और अनुपान आदि—तीन-तीन तोला सवेरे-शाम दोनों समय सिकंजबीन सादा या शर्बतनीलोफर एक तोला मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तप्रकोप और पित्तकी तीक्ष्णताको शमन करता है। यह तृष्णा शमन करता है और उष्ण शिरोशूलमें लाभकारी है।

२—अर्क गजर

द्रव्य और निर्माणविधि—

गाजर ऽ२ सेर, गावजबान ४ तोला, गावजबानपुष्प २ तोला, श्वेत चन्दन ३ तोला ६ माशा, रक्त तोदरी, रक्त बहमन, श्वेत बहमन—प्रत्येक २ तोला ३ माशा। सबको जलमें भिगोकर बीस बोतल अर्क खींचें। फिर उतना ही औषधि उक्त अर्कमें भिगोकर दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ तोला अन्य औषधोंके अनुपानस्वरूप सेवन करें।

३—शर्बत नीलोफर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीलोफरपुष्प १० तोला रात्रिमें तर करें। सवेरे क्वाथ करके छान लें और ऽ॥ सेर चीनी मिलाकर शर्बतकी चाशनी कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला शर्बत शीतल जल या गावजबानार्क १२ तोलाके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह पित्तकी तीक्ष्णता, पिपासा और संताप शमन करता और हृदयको बल प्रदान करता (हृद्य) है।

४—सिकंजबीन सादा

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध सिरका ऽ। पाव, चीनी ऽ१ सेर। चीनीमें सिरका डालकर अग्निपर चाशनी करें। जब तार बंधने लगे तब उतारकर शीतल करके बोतलमें डालें।

मात्रा तथा सेवन-विधि—२ तोला सिकंजबीन १२ तोला गावजबानार्क या जलसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह पित्तकी तीक्ष्णताको शमन करती है; यकृत्को लाभकारी है; तृष्णाशामक और पित्तज ज्वरमें उपकारक है।

वक्तव्य—इसके अतिरिक्त अर्क जयाबीतुस जदीद, कुर्स तबाशीर मुलय्यिन, खमीरा गावजबान, शर्बत अनारशीरीं और शर्बत फालसा प्रभृति योग भी उक्त रोगमें गुणकारी हैं।

शीतपित्ताधिकार १५

१—दवाए शिरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुदीना ६ माशा, चीनी १ तोला। पुदीनाको जलमें घोटकर चीनी मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह एक मात्रा है। सवेरे-शाम दोनों समय ऐसी एक-एक मात्रा पिलायें।

गुण तथा उपयोग—शीतपित्त (शिरा) में यह अत्यन्त गुणकारी है।

२—हब्ब मुसफ्फीखून

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसवत, चाकसू, मुण्डी, ब्रह्मदण्डी, नीलकंठी, नीलोफरपुष्प, सरफोका, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, पित्तपापड़ा (शाहतरा), मेंहदीके पत्र, जवासा, नीमके पत्ते, बकाइनके पत्ते और कांचनारपुष्प—प्रत्येक १ तोला। इनको कूट-छानकर चनाप्रमाणकी गोलियां बनायें।

मात्रा और अनुपान—छः मासके बालकको आधी गोली और इससे बड़े बालकोंको १ गोली माताके दूधमें घिसकर दें। बड़े लड़कोंको २ गोलियाँ २ तोला शर्बत उन्नाबके साथ और जवानोंको ३ गोलियाँ ४ तोला शर्बत उन्नाब के साथ देवें।

गुण तथा उपयोग- यह रक्तविकारको दूर करती है और बड़ोंको तथा बालकोंको एक समान लाभकारी है।

विशेष उपयोग—यह शीतपित्त और खर्जूकी प्रधान औषधि है

रक्तपित्त-वातरक्ताधिकार १६

वक्तव्य—यूनानीमें रक्तपित्तके लिये कोई एक ठीक प्रतिशब्द नहीं है। उक्त पद्धतिमें रक्तविकारप्रधानरोगों (अमराज दमवी) और पित्तविकारप्रधानरोगों (अमराज सफरावी) का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया मिलता है। जिन रोगोंमें इन दोनोंके मिलित लक्षण पाये जाते हैं उनमें इन उभय प्रकरणोंमें वर्णित उपक्रम प्रधान विकारके बलाबलका विचार करते हुए काममें लाया जाता है। अस्तु, मैंने रक्त और पित्त-विकारप्रधानरोगमें वर्णित योगोंमेंसे कुछ उत्तम योगोंको यहां देनेका यत्न किया है। वैद्यगण सुविचारपूर्वक उनका अपनी चिकित्सापद्धतिमें उपयोग करें।

१—अतरीफल शाहतरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पित्तपापड़ा (शाहतरा) १४ तोला ७ माशा, पीली हड़का बकला ११ तोला ८ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का १० तोला, काबुली हड़का बकला ८॥ तोला, बहेड़ेका छिलका और आमला-प्रत्येक ६ तोला १० माशा; सनायमक्की २ तोला ११ माशा, गुलाबपुष्प १ तोला ५ माशा, मुनक्का (दाख) के अतिरिक्त शेष समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर बादामके तेल (यथावश्यक) में स्नेहाक्त (चर्ब) करें और मुनक्काको सिलपर पीसें। पीछे तिगुना मधुमें समस्त द्रव्य मिलाकर यथाविधि अतरीफल बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन सवेरे ७ माशा अतरीफल १२ तोले अर्क मुसफ्फाखूनके साथ खायें।

गुण तथा उपयोग—यह अतरीफल रक्तविकारनाशक है; फिरंगजन्य मस्तिष्कगत उष्णताके लिये लाभदायक है और दिमाग (मस्तिष्क) को बल देनेवाला है।

२—अर्क उशबा

द्रव्य और निर्माणविधि—

उशबा मगरबी ऽ१। सेर और चोबचीनी ऽ१। सेर उष्ण जलमें भिगोकर सवेरे ५० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ तोला अनुपानकी भाँति प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह वातिक रोगोंमें लाभकारी है; आमवात, फिरङ्ग और औपसर्गिक पूयमेह (सूजाक) के लिये गुणदायक है; रक्तको शुद्ध करता और फोड़े-फुंसीकी व्याधियोंको मिटाता है।

३—अर्क उशबा (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

Sarsaparilla

उशबा मगरबी ऽ२॥ सेर और चोबचीनी ऽ२॥ सेर, उष्ण जलमें रात्रिमें भिगोकर प्रातःकाल ४० बोतल अर्क खींचें। फिर उतना ही द्रव्य और इस अर्कमें भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ या ३ तोला अनुपान रूपसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह वातिक रोग, यथा—फिरङ्ग और पूयमेह (सूजाक) में लाभदायक है; रक्तको शुद्ध और फोड़े-फुंसीकी शिकायत दूर करता है तथा आमवातमें लाभकारी है।

४—अर्क शाहतरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

पित्तपापड़ा (शाहतरा) ऽ१। सेर जलमें भिगोयें और २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—१० तोला अर्क २ तोला शर्बत उन्नाबमें मिलाकर अनुपान रूपसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तप्रसादक है, मुखका वर्ण निखारता (कान्ति-दायक), फोड़े-फुंसीकी शिकायत दूर करता और संतापहारक है।

वक्तव्य—यदि ऽ२॥ सेर पित्तपापड़ाको जलमें भिगोकर २० बोतल अर्क खींचें और इस अर्कमें उतना ही और पित्तपापड़ा भिगोकर दोबारा अर्क खींचें तो यह पूर्वोक्त अर्ककी अपेक्षा अधिक वीर्यवान हो जाता है। इसकी मात्रा ५ तोला होती है। इसे अर्क शाहतरा (जदीद) कहते हैं।

५—अर्क चोबचीनी (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारचीनी, गुलाबपुष्प, रैहाँके बीज—प्रत्येक ११ तोला २ माशा; लौंग, बालछड़, तेजपत्ता, छोटी इलायची, नरकचूर (जुरंबाद), बिल्लीलोटन, गावजबान-पुष्प, कतरा हुआ अबरेशम—प्रत्येक ५ तोला ७ माशा; श्वेत और रक्त बहमन, श्वेतचन्दन, अगर, छड़ीला—प्रत्येक १ तोला ५ माशा; चोबचीनी ऽ१ सेर ४॥ छटाँक, मीठा सेब १०० नग, गुलाबपुष्पार्क ऽ१ सेर ११ छटाँक, मिश्री ११ तोला २ माशा। चोबचीनीको छोटे-छोटे टुकड़े और सेबके टुकड़े-टुकड़े करें। कूटनेयोग्य द्रव्योंको अधकुटा कर लें। फिर समस्त द्रव्योंको रात्रिमें गुलाब-पुष्पार्कमें भिगोयें और सवेरे ८० बोतल और जल मिलाकर परिस्रुत करें। परिस्रावणकालमें केसर १ तोला ६ माशा, मस्तगी और शुद्ध कस्तूरी—प्रत्येक ३॥ माशा; अम्बर अशहब ७ माशा। इन सबकी पोटली बनाकर नैचाके मुँह पर भभकेके भीतर लगा दें। फिर दोबारा उतना द्रव्य और लेकर इस अर्कमें भिगायें और उक्त विधिसे दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला भोजनोपरांत थोड़ा-थोड़ा पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह उत्तमांगोंको बल और पुष्टि प्रदान करता, आमाशयको बलवान बनाता (दीपन-पाचन), वाजीकरण करता, हृदयको उल्लसित करता और आहार पाचनकर्त्ता है। यह बुद्धि और संज्ञा (हवास) को तीक्ष्ण करता और चित्तको प्रफुल्लित रखता है। यह उच्च श्रेणीका रक्तप्रसादक है। इसके उपयोगसे समस्त रक्तविकार दूर हो जाते हैं।

६—अर्क मुसफ्फीखून बनुसखाकलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीम पत्र, नीमकी छाल, बकाइनकी छाल, कचनालकी छाल, मौलश्रीकी छाल, पीली दुद्धी, काले भांगरेके पत्र, यवासा, गूलरकी छाल, मेंहदीके पत्र, मुंडी, पित्त-पापड़ा (शाहतरा), सरफोका, धमासा, विजयसार काष्ठ, निलोफरपुष्प, गुलाब-

पुष्प, शुष्क धनिया, श्वेत चन्दन, कासनीबीज, कासनीमूल, मजीठ, बेतसपत्र (बर्गबेदसादा), शीशमकाष्ठका बुरादा—प्रत्येक १० तोला। इन समस्त द्रव्योंको चौबीस सेर जलमें एक रात-दिन तर करें। फिर १२ सेर अर्क खींचें। कभी-कभी नीमके बीज, बकाइनके बीज, पित्तपापड़ाके बीज, तगर (असारून), अफतीमून (विलायती अकाशबेल), तेजपत्ता, हरी गिलोय, उन्नाब, खस, चिरायता—प्रत्येक १० तोला और मिलाते हैं।

मात्रा और सेवन-विधि—१२ तोला अर्क २ तोला शर्बत उन्नाबके साथ पियें।

गुण तथा उपयोग—इसके सेवनसे रक्तका प्रसादन होता है, फोड़े-फुंसियों के विकार दूर हो जाते हैं और मुखका वर्ण अरुण और कांतिवान हो जाता है। सूजाक और फिरंगमें भी यह गुणदायक सिद्ध हुआ है।

७—माजून उशबा

द्रव्य और निर्माणविधि—

उसबा, बसफाइज फुस्तकी, विलायती अफतीमून, गावजबान, कबाबचीनी, दारचीनी—प्रत्येक २ तोला ; गुलाबपुष्प, चोबचीनी, रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन—प्रत्येक ३ तोला ; सनाय मक्की ४ तोला, बहेड़ाका छिलका, बालछड़—प्रत्येक १ तोला ; काली हड़ ७ माशा, पीली हड़का छिलका ६ माशा, मिश्री ऽ।।। पाव। मिश्री और मधुकी चासनी बनाकर द्रव्योंको कूट-छानकर सम्मिलित करें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह रक्तप्रसादक है तथा रक्तविकार, अर्श, कण्डू (खाज), फिरंग औा आमवातके लिये लाभदायक है। यह विशेष शक्ति उत्पन्न करती है।

८—माजून चोबचीनी

द्रव्य और निर्माणविधि—

बृहद् और क्षुद्र ला बीज, कुलंजन, लौंग, कबाबचीनी, कस्तूरी, बूजीदान (मीठा अकरकरा), सोंठ, बालछड़, नरकचूर (जुरंबाद), तगर (असारून), तेजपत्ता, पीपल, अम्बर, जदवार खताई—प्रत्येक ६ माशा, दारचीनी, सूरंजान मीठा, शकाकुल मिश्री, सालम मिश्री—प्रत्येक १४ माशा ; चिरौंजी, ग्वारचिकनाकी गिरी (मग्ज हब्बुल कुलकुल), बीजविशेषकी गिरी (मग्ज अंजरूक),

कद्दूके बीजकी गिरी (मग्ज बुम्न)—प्रत्येक १॥। माशा ; चिलगोजेकी गिरी, नारियलकी गिरी—प्रत्येक ६ माशा ; चोबचीनी उत्तम १८॥। तोला । चोबचीनी को बारीक-बारीक तराश लें और ऽ४ सेर जलमें तर करें ।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा ताजा जलसे उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—यह अंगवेदना दूर करती, आमाशयको शक्ति प्रदान करती, बाजीकरण करती और रक्तप्रसादक है ।

९—शर्बत मुअद्दिलखून

द्रव्य और निर्माणविधि—

कासनीके बीज अधकुटा और काहूके बीज— प्रत्येक ५ तोला ; गुलाबपुष्प, पित्तपापड़ा (शाहतरा), श्वेत चन्दन—प्रत्येक ७ तोला ; विलायती उन्नाब, आलूबुखारा—प्रत्येक ८० दाना । समस्त द्रव्योंको २४ घण्टा उष्ण जलमें भिगोयें । फिर खूब पकाकर ऽ॥। पाव चीनीमें चाशनी कर लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—शर्बत ५ तोला, सिकंजबीन २ तोला, अर्क निलोफर १२ तोलामें मिलाकर प्रति दिन सवेरे-शाम पिलायें ।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तको समावस्थापर लाता, रक्तके प्रकोपको शमन करता और उसकी तीक्ष्णताको नष्ट करता तथा उसका प्रसादन करता है ।

सूचना—यदि इसमें नीबूका रस २ तोला मिला दिया जाय तो यह अधिक गुणकारी हो जाता है ।

१०—शर्बत मुरक्कब मुसफ्फाखून

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब १ छटांक, पित्तपापड़ा, शीशमका बुरादा, मुंडी बूटी, मेंहदीके पत्र, सरफोका, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, निलोफरपुष्प, कासनीके बीज, मकोय शुष्क—प्रत्येक १॥ तोला ; मिश्री ऽ१ सेर २ छटांक । यथानियम शार्कर (शर्बत) कल्पना करें ।

मात्रा और सेवन-विधि—४ तोला शार्कर ताजा जल या अर्क मुसफ्फी १२ तोलाके साथ उपयोग करें ।

गुण तथा उपयोग—रक्तप्रसादक है और वातिक रोगोंमें तथा फिरंग में गुणदायक है।

वक्तव्य—उपर्युक्त योग रक्तविकारप्रधानरोगोंमें प्रयुक्त होते हैं। पित्त-विकारप्रधानरोगोंमें निम्न योग लाभकारी हैं :—

जुवारिश ऊदतुर्श, खमीरा बनफशा, शर्बत तमरेहिंदी (जदीद), शर्बत निलोफर, अर्क कासनी, शर्बत मुफर्रेह, अर्क हैजा इत्यादि।

वातरक्त (निक्रिस)—

१—रोगन गुलआक

द्रव्य और निर्माणविधि—

मंदारपुष्प, कडुआ सुरंजान, सोंठ और खुरासानी अजवायन–प्रत्येक १ तोला, तिलतैल ५ तोला। समस्त द्रव्योंको तिलतैलमें डालकर जलायें और तेल छानकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—पीड़ित स्थानपर अभ्यङ्ग करें और सेंककर रूई बांध दें।

गुण तथा उपयोग—आमवात, वातरक्त, कटि और शीतजन्य वेदनामें अतीव गुणकारी है।

२—हब्ब निकरिस

द्रव्य और निर्माणविधि—

अफतीमून, कृष्णजीरक, श्वेत मरिच, पीपल, कुसुमके बीजकी गिरी—प्रत्येक ७ माशा ; तज ३॥ माशा, सोंठ, फरफियून – प्रत्येक १४ माशा; मस्तगी २१ माशा, मीठा सूरंजान ५ तोला १० माशा, लिथिआई सेलिसिलास ८॥ तोला। सबको जोरकफांटमें पीसकर ५-५ रत्तीकी गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम ताजा जलके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमवात और वातरक्तमें असीम गुणकारी है।

कण्ठमाला-मेदोरोगाधिकार १७

कण्ठमाला (गण्डमाला)—

१—अक्सीर खनाजीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

एक साही (शल्लकी जन्तु) लेकर उसका पेट मलादिसे शुद्ध करके उसमें २ तोला संखिया रखकर उसके पेटको मजबूत सीकर उसे मिट्टीके बरतनमें बन्द करके ऊपरसे कपड़मिट्टी कर दें। जब भलीभांति सूख जाय तब पांच-छः सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर पीस लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन २ रत्तीकी मात्रामें मक्खनमें मिलाकर खिलायें और ऊपरसे ऽ॥ दूध मिश्री मिलाकर पिलायें।

सूचना—जलके स्थानमें मुंडीका अर्क पिलायें। आहारमें रोटीके साथ मांसरस दें और सीसा (नाग) मक्खनमें घिसकर मरहमकी भाँति लगायें।

गुण तथा उपयोग—कण्ठमालाजन्य पीड़ा - निवारणके लिये मुख्य औषधि है।

२—अतरीफल गुददी

द्रव्य और निर्माणविधि—

काली हड़ ४ तोला ४॥ माशा, अफतीमून २ तोला ११ माशा, बहेड़ा, आमला, हड्डी दूर की हुई सफेद निशोथ, मक्की सनाय-प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती, गारीकून, नरकचूर (जुंबाद), चीता और नौशादर-प्रत्येक १०॥ माशा, अनीसून, तज (किरफा), बालछड़, लौंग, जायफल, पिसी हुई रूमीमस्तगी—प्रत्येक ७ माशा, बकरीके गलेकी शुष्क की हुई ग्रन्थियां १ तोला ४ रत्ती, बसफाइज फुस्तकी और उस्तूखूदूस-प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा। समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर तिगुना मधुमें मिलाकर अतरीफल बनायें।

मात्रा और अनुपान—१ तोला अतरीफल १२ तोला मिश्रेयार्कके साथ सवेरे खायें।

गुण तथा उपयोग—यह कण्ठमालाको लाभकारी है तथा मास्तिष्क और आमाशयिक मलोंको निकालता है

अपथ्य—गुरु एवं विष्टम्भी आहार यथा—मसूर, लोबिया आदिसे बिल्कुल परहेज करें।

३—क़ुर्स अयारिज खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

बालछड़, दारचीनी, ऊदबलसाँ, हब्ब ऊदबलसाँ, तज, मस्तगी, तगर, केसर—प्रत्येक १ भाग, एलुआ २ भाग। इन सबको कूट-छानकर सौंफके अर्कमें आलोडन करके आधा-आधा माशाकी टिकिया बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—खाली पेट सवेरे ४ से १० टिकिया तक प्रथम खाकर ऊपरसे ताजा जल या मिश्रेयार्क (अर्क बादियान) या किंचित् मधु जलमें मिलाकर पियें।

गुण तथा उपयोग—इसके उपयोगसे कुछ दिनोंमें आमाशय सान्द्र दोषोंसे सम्यक् शुद्ध हो जाता है और विवर्द्धित यकृत् अपनी पूर्व दशापर आ जाता है।

विशेष—यदि इन टिकियोंको निरन्तर दो-तीन मास उपयोग किया जाय तो कण्ठमाला रोग पूर्णतया नष्ट हो जाता है। इसके लिये श्रेयस्कर उपाय यह है कि सवेरे ४ बजे वयानुसार तीन-चार टिकिया खिलाकर दिन निकलनेके उपरांत मुफर्रेह निजाम और जुवारिश जालीनूस—प्रत्येक १ माशा मिलाकर चटायें।

४—दवाए खनाजीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीलवर्ण संखिया लगभग चार-पाँच माशेकी एक डली और गायका मक्खन आवश्यकतानुसार। (गायके मक्खनको बीस बार जलमें धोयें जिसमें अम्लता बिल्कुल न रह जाय और उभयद्रव्य प्रस्तुत रखें।)

मात्रा और सेवन-विधि—प्रथम कण्ठमालाके जख्मपर गायका उक्त मक्खन मल दें। फिर संखियाकी डली लेकर धीरे-धीरे जख्मोंपर फेरें। इसी प्रकार कुछ देर यह क्रिया जारी रखें। सेवन-कालमें उस्तूखूदूस ४ माशा जलमें पका-छानकर मिश्री मिला रोगीको पिलाते रहें।

गुण तथा उपयोग—कण्ठमालाके जख्मोंको शुष्क करनेके लिये अतिशय गुणकारी और आशुप्रभावकारी है। दो-तीन सप्ताहमें समस्त जख्म आराम हो जाते हैं।

५—मरहम खनाजीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

काली मिर्च, नीला थोथा, मेंहदी—प्रत्येक १ तोला। समस्त द्रव्योंको एक साथ सूखा ही पीसकर दस तोले मक्खन (शतधौत) में खूब मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार किसी महीन कपड़ेपर लगाकर जख्मपर चिपका दें। यदि जख्म न बने हों और केवल ग्रन्थियाँ ही हों तो उनपर पछने (प्रच्छन) लगाकर मरहम लगायें।

सूचना—जब व्रण भरने लगे हों तब साथ ही कोई रक्तप्रसादक अर्क भी पीना प्रारम्भ कर दें।

गुण तथा उपयोग—यह मरहम कण्ठमालासे मुक्ति दिलानेके लिये वस्तुतः कम खर्च बालानशीं और सर्वोपरि औषधि है। यह प्रारम्भमें व्रणको शुद्ध करता है और अन्तमें उसका पूरण भी करता है।

६—मुहल्लिल आजम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कनेरकी जड़ ५ तोला, उशक ३ तोला, एलुआ २ तोला; जरावंद मुदहरज, मूलीके बीज, राई, रक्त गुग्गुल—प्रत्येक २ तोला; अंगूरी सिरका आवश्यकतानुसार। समस्त द्रव्योंको पत्थरकी कूँडीमें डालकर खरल करें। जब बारीक हो जायँ तब थोड़ा-थोड़ा सिरका डालकर इतना घोंटें कि चाशनी गोली बनाने योग्य हो जाय। फिर गोघृत थोड़ा-थोड़ा मिलाकर आठ पहरतक निरन्तर खरल करें। जब सिरकाकी नमी दूर होकर चिकनाई आ जाय तब आधे-आधे माशेकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन १ गोली लेकर किसी उपयुक्त शर्बत के साथ खायँ। तिल या जैतूनके तेलमें मिलाकर मालिश भी करें। आवश्यकतानुसार सादा कैरूती (मोम) या तेलमें मिलाकर लेप भी करें तथा जलमें मिलाकर बस्ति भी दें।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारकी सूजन उतारनेके लिये अनुपम औषधि है और बाह्याभ्यन्तरिक समस्त कठिन शोथोंकी अव्यर्थ महौषधि है। हर प्रकारके फोड़े (दमामील), कर्कट (सरतान), कण्ठमाला, अर्बुद, अंकुर

(साळील) इत्यादि इसके प्रलेपसे विलीन हो जाते या पक जाते हैं। यह दद्रु और किटिभ कुष्ट (चंबल) के लिये भी गुणकारी है।

विशेष उपयोग—शोथविलयनके लिये परम गुणकारी है।

मेदोरोग (सिमनमुफरित या फर्बही)—

१—सफूफ मुहज़िल

द्रव्य और निर्माणविधि—

बूरए अरमनी, मरजंजोश प्रत्येक ३॥ माशा; धोई हुई लाख (लुक मगसूल) ७ माशा, अजवायन, कृष्णजीरक, सौंफ और सुदाबपत्र—प्रत्येक १ तोला २ माशा। सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशा यह चूर्ण ताजा जलसे सवेरे-सायंकाल खायँ।

उपयोग—यह शरीरकर्षण (शरीरको कृश दुबला करने) के लिये सिद्ध भेषज है।

पाण्डु-कामलाधिकार १८

पाण्डु और कामला—

१—अक्सीर जिगर

द्रव्य और निर्माणविधि—

रेवन्द खताई, देशी नौशादर-प्रत्येक १ तोला; कलमी शोरा २ तोला, लोह भस्म ६ माशा। सबको पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ रत्ती सवेरे और १ रत्ती सायंकाल उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्‌का सुधार करती है तथा जीर्णज्वर और यकृत्‌विकारजन्य व्याधियोंमें उपकारी है।

२—अकसीर यरकान

द्रव्य और निर्माणविधि—

पारा ३ तोला और मीठा तेल ३ तोला। दोनोंको अग्निपर रखें। फिर शुद्ध वंग ५ तोला पिघलाकर उसमें डाल दें। जब दोनों एक जीव होकर गिरह बँध जाय तब उसको निकालकर खरल करें। फिर कलमीशोरा १० तोला मिलाकर दोबारा खरल करें। पीछे मिट्टीके सकोरेमें रखकर उसपर कपड़मिट्टीकर १० सेर उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ रत्ती मलाईमें रखकर प्रातः सायंकाल खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह कामला ((यरकान असफर) के लिये स्वर्गवासी हकीम नूरुद्दीन भेरवीका कृतप्रयोग और परीक्षित है।

३—अर्क गजर अंबरी बनसुख कलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

गाजर ऽ५ सेर; किशमिश, बीज निकाला हुआ मुनक्का—प्रत्येक ऽ२॥ सेर; बिही, सेब—प्रत्येक ऽ॥ सेर; मीठा अनार ऽ१ सेर, गुलाबपुष्प, क्षुद्र एवं बृहद् एला, श्वेत एवं रक्त चन्दन, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, रेहांपत्र, सूखा धनियाँ, गावजबान, फरंजमुश्क बीज, बालंगू बीज—प्रत्येक ऽ४ सेर; वंशलोचन ६ माशा, गावजबानपुष्प, कासनी बीज, खीरा-ककड़ीके बीज—प्रत्येक २ तोला; गुलाबपुष्पार्क, केवड़ापुष्पार्क और गावजबानार्क—प्रत्येक ऽ२ सेर यथाविधि अर्क परिस्रुत करें। केसर १ तोला, कस्तूरी और अम्बर—प्रत्येक ३ माशा, पोटलीमें बाँध कर नैचाके मुंहपर रखें। फिर इस अर्कमें उक्त योगमें दिये हुये अर्कोंके अतिरिक्त शेष समस्त द्रव्योंको डालकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—३ तोले अर्क १ तोला शर्बतअनारके साथ पियें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदय और मस्तिष्कको बल देनेवाला तथा बाजीकरण है; शुद्ध रक्त उत्पन्न करता और मनःप्रसादकर है। यह मुखमण्डलपर लालिमाके लक्षण प्रकाशित करता है।

४—कुर्स काफूरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

वंशलोचन, गुलाबके फूल, श्वेत चन्दन—प्रत्येक १०॥ माशा; कासनी

बीज, कुलफाके बीज, मीठा कद्दूके बीज, काहूके बीज— प्रत्येक ७ माशा ; कतीरा ३॥ माशा और कपूर २ रत्ती। सबको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें। फिर इसबगोलके लुआबमें घोटकर टिकियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा यह चूर्ण १० तोला गुलाबपुष्पार्क और २ तोला सिकंजबीन सिरका (शुक्तमधु) के साथ सवेरे-सायंकाल पिलायें।

गुण तथा उपयोग— कामला और यकृत्के संतापके लिये लाभकारी है। यह तीव्र ज्वरोंमें भी गुणकारी है।

५—कुश्ता खब्सुल्हदीद (मण्डूर भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऽ१ सेर मण्डूर लोहारकी भट्ठीमें गरम करके बारह बार गोमूत्र और खट्टे छाछ (लस्सी) में बुझायें। फिर उसे जलसे धोकर बारीक कूट लें और पुनः जलसे इतना धोयें कि चमकने लगे। इसके पश्चात् इसे कपड़ेमें छानकर चार पहर तक मुंडी बूटीके रसमें खरल करें। फिर त्रिफलाके पानीमें तर करें। शुष्क होने पर नीबू और अनारके रसमें एक बार तर और शुष्क कर। फिर दोबारा हाथी-सुंडी बूटीके रसमें तर और शुष्क कर। अब बारीक खरल करके जलमें डालें। यदि तैरने लगे तो उत्तम उपयोग योग्य समझें अन्यथा फिर उसे एक बार हाथी-सुंडी बूटीके रसमें तर करें और मिट्टीके सकोरेमें रखकर तीक्ष्ण सिरकासे तर करें और कपड़मिट्टी करके कुम्हारकी भट्ठीमें कच्चे बरतनोंके साथ रख दें। स्वांग-शीतल होनेपर निकालें और गन्धकाम्लसे तर करके फिर अग्नि दें। शिंगरफके रंगकी भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन २ रत्ती यह भस्म मलाई या मक्खन में रखकर खायँ।

गुण तथा उपयोग—इसके ४-५ दिनके सेवनसे क्षुधा बढ़ जाती है। जितना भी दूध-घी सेवन किया जाय, सब पच जाता है। पीला और कुम्हलाया हुआ बेरौनक चेहरा अरुण होने लगता है। सामान्य व्याधियाँ जो उत्तमांगोंके दौर्बल्य और रक्ताल्पता आदिके कारण उत्पन्न हो जाती हैं वे दूर हो जाती हैं तथा शरीर परिबृंहित और अरुणवर्ण हो जाता है।

विशेष उपयोग—अग्निमांद्य, अजीर्ण और पाण्डु (रक्ताल्पता) के लिये यह ईश्वरीय वरदान है।

६—कुश्ता फौलाद (लोह भस्म)

द्रव्य और निर्माणविधि—

जौहरदार फौलादके बुरादाको तीन दिनतक कागजी नीबूके रसमें खरल करें। फिर टिकिया बनाकर एक मोटी मूलीमें छेद करके वह टिकिया उसमें रख दें और मूलीके निकाले हुए अंशसे उसका छेद बन्द करके कपड़मिट्टी कर दें। फिर पन्द्रह सेर जंगली उपलोंकी अग्नि दें। इसके बाद निकालकर तीन गुना नीबूके रसमें पुनः खरल करके उसी तरह मूलीमें रखकर अग्नि दें। इसी प्रकार कमसे कम चालीस बार करें। यदि इससे भी अधिक बार करें तो अत्युत्तम होगा।

मात्रा और सेवन-विधि—१ रत्ती यह भस्म छोटी इलायचीके साथ मक्खनमें या ७ माशा जुवारिश जालीनूसके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह भस्म आमाशय और यकृत्‌को बल प्रदान करनेवाली है। पाचनमें सहायक तथा बाजीकरण और क्षुधाजनक है। यह शुद्ध रक्त उत्पन्न करके शरीरको परिवृंहित करता और चेहरेको दीप्तमान बनाता है।

७—दवाए यरकान

द्रव्य और निर्माणविधि—

रेवन्द खताई १ तोला, नौशादर १ तोला, कलमीशोरा २ तोला। सबको कूट-छानकर ६ माशा लोहभस्म मिलाकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ रत्तीकी मात्रामें १० तोला गावजबानार्क और २ तोला शर्बत बजूरीके साथ सवेरे-शाम उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्‌का सुधार करती है। यदि यकृत् या पित्त प्रणाली-शोथ या अवरोधके कारण कामला रोग हो तो उसके लिये अनुपम भेषज है।

८—शर्बत बजूरी (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

कासनी बीज, सौंफ, खरबूजाके बीज, कद्दूके बीजकी गिरी, कष् (तुख्म-कुर्तुम)—प्रत्येक ३ तोला ६ माशा ; कासनीकी जड़की छाल, गाफिस पुष्प, खतमी बीज, छिली हुई मुलेठी, बालछड़, बनफशा और गावजबान—प्रत्येक २ तोला ३ माशा। सबको अधकुट करके एक रात-दिन ऽ२॥ सेर जलमें भिगोयें।

फिर बीज निकाला हुआ मुनक्का ११ तोला ८ माशा मिलाकर क्काथ करें। जब ऽ१ सेर जल शेष रह जाय तब छानकर ऽ१ सेर चीनी मिलाकर शर्बतकी चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि ६ माशासे १॥ तोला तक यह शर्बत अर्क मकोय और अर्क सौंफ--प्रत्येक ६ तोलामें मिलाकर या औषधियोंके क्काथ या फाण्ट इत्यादिमें मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्र और आर्तवशोणितप्रवर्तनके लिये उत्तम औषध है, वृक्क और वस्तिस्थ अश्मरिको निकालता है, कामला और यकृद्वरोधजन्य कामलामें लाभकारी है। जीर्णज्वरोंमें भी इसका उपयोग गुणदायक है।

९—शियाफ यरकान

द्रव्य और निर्माणविधि—

तितलौकीके बीजकी गिरी, उस्तूखूदूस, कुन्दुश और रीठाकी गिरी। इनको समप्रमाण लेकर जलमें बारीक पीसकर तंजेबके कपड़ेमें लगाकर वर्ति (फतीला) बनायें और नासिकाके भीतर स्थापन करें।

गुण तथा उपयोग—इससे छींक आकर कामला रोग नष्ट हो जाता है। उभय प्रकारके पाण्डुके लिये लखनऊके स्वर्गवासी हकीम अब्दुल अजीज महोदय का कृतप्रयोग एवं परीक्षित योग है।

१०—हज्र यरकान

हयातुल् हैवानके निर्माता लिखते हैं कि हज्र् स्सनूकू रोगीके गलेमें लटकाना प्रभावतः गुणकारी है। इसकी प्राप्तिकी यह रीति है कि अबाबीलके बच्चोंको केसर से रंग दें। अबाबील उनको कामला पीड़ित समझकर इष्ट पाषाण खोजकर अपने घोंसलेमें लायेगा। वहांसे लेकर काममें लेवें। राजीने भी किताबुल खवासमें इसका उल्लेख किया है।

११—हब्ब बूअलीसीना

द्रव्य और निर्माणविधि—

एलुआ १॥। माशा, विलायती सकमूनिया ४ रत्ती, काला नमक (नमक निफ्ती) ७ रत्ती, मजीठ और गारीकून—प्रत्येक १॥। माशा। सबको कूट-छान कर गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि - रात्रिमें एक बार बीजोंके क्वाथ (माउल बुजूर) के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह अनुपम कामलानाशक औषधि है और कब्जकी शिकायतको दूर करती है।

हलीमक (मर्ज अखजर)—

१—सफूफ फौलादी

द्रव्य और निर्माणविधि—

क्षार लवण (नमक शोर), साँभर नमक, लाहौरी नमक (सैंधव) और मनिहारी नमक—प्रत्येक १ तोला ; शुष्क आमला, बहेड़ा, काबुली हड़, पीली हड़, सौंफ, कासनी के बीज—प्रत्येक २ तोला ; गुडूची सत्व २ माशा। समस्त द्रव्योंसे आधा प्रमाण फौलादका बुरादा (लोह भस्म)। सबको कूट-छानकर रख लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा ताजा जलसे।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तका प्रसादन करता है, मुखके वर्णको निखारता है, खूब भूख लगाता है, अर्शोजात रक्तको बन्द करता और आमाशयकी शक्ति वर्द्धित करता है।

२—सफूफ सन्दल

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत और रक्त चन्दन, रेवन्दचीनी, गुलाबपुष्प, गेहूँका सत (निशास्ता) और मुलेठीका सत—प्रत्येक १५। माशा ; सावरशृङ्ग और बबूलका गोंद—प्रत्येक ८।।। माशा ; मीठे कद्दूके बीजकी गिरी और कतीरा—प्रत्येक ५। माशा ; खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी १०।। माशा, कपूर और तृणकांत (कहरुवा)—प्रत्येक ६ रत्ती। समस्त द्रव्योंके समप्रमाण चीनी। इनको कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा ताजा जलसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तका प्रसादन करता है और रक्ताल्पतामें उपकारक है।

३—हब्ब कमीखून

द्रव्य और निर्माणविधि—

एलुआ (सिब्रजर्द) और हीराकसीस—प्रत्येक १ तोला ; छोटी इलायचीके बीज २॥ तोला। सबको बारीक पीसकर आवश्यकतानुसार शुद्ध मधुमें मिलाकर चनाप्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—२-२ गोली सवेरे-शाम उपयुक्त अनुपानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह पाण्डु वा रक्ताल्पतानिवारक है।

दुष्टपाण्डु—

१—दवाए जिगर

द्रव्य और निर्माणविधि—

भेड़की ताजी कलेजी ऽ१ सेर लेकर उसपर १ तोला नमक और १ तोला कालीमिर्च पीसकर छिड़क दें और सिरका ऽ= आधा पाव डालें। फिर दो घंटे पश्चात् एक सेर जलमें उसे भलीभांति मल लें और कलेजीके टुकड़े निकालकर शेषको मृदु अग्निपर उड़ायें। जब जलांश पूर्णतया उड़ जाय तब उतारकर शुष्क करके पीस लें। पीछे उसमें सफेद संखिया प्रति तोला एक चावलके हिसाबसे मिला लें।

मात्रा और अनुपान—२ माशासे ६ माशा तक जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह रक्ताल्पता और पाण्डुके लिये परम गुणदायक है ; बालकोंके पाण्डुके लिये उपकारक है और अर्श एवं शोथ (इस्तिस्का) में भी लाभकारी है।

द्वितीयक पाण्डु—

१—माजून फंजनोश

द्रव्य और निर्माणविधि—

काबुली हड़का बकला, पीली हड़का बकला, काली हड़, बहेड़ा, आमला—

प्रत्येक ३ तोला; जावित्री, छोटी इलायची, ऊद कमारी, कस्तूरी—प्रत्येक ७ माशा; काली मिर्च, पीपल, शुद्ध कृष्णजीरक, सोंठ, सोआ, अजमोदा, गन्दनाके बीज, तारामीराके बीज (तुख्म जिरजीर), शलगमके बीज, खरबूजाके बीज, तज, दारचीनी, लौंग, जायफल—प्रत्येक ३॥ माशा, इस्पन्द सफेद ६ तोला, शुद्ध मण्डूर (वा मण्डूर भस्म) समस्त द्रव्योंके समप्रमाण। इनको कूट-पीस कर कपड़छान चूर्ण बनाकर तौलें। जितना यह चूर्ण हो उससे दूना मधुमें माजून बनावें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा यह माजून १२ तोले सौंफके अर्कके साथ सवेरे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग-यह शरीर और मुखके वर्णको निखारती और उन्हें कांतिमान बनाती है। यह आमाशयकी शक्तिको दुरुस्त करती, बाजीकरण भी करती और अर्शको नष्ट करती है।

२—शर्बत मवीज

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीज निकाला हुआ मुनक्का ऽ२॥, बालछड़, शुद्ध केसर, सोंठका आटा, जायफल—प्रत्येक १॥। माशा; लौंग, मस्तगी—प्रत्येक १ माशा। समस्त द्रव्योंको रात्रिमें उष्ण जलमें भिगो दें। सवेरे क्वाथ करके छान लें और ऽ। एक पाव मधु मिलाकर यथाविधि शार्कर (शर्बत) प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—२-२ तोले शर्बत प्रातः-सायंकाल ताजा जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है, मुखका वर्ण निखारता है, शरीरको बलवान और स्थूल करता और बाजीकरण करता है। चालीस दिनके निरन्तर सेवनसे यह हर प्रकारकी कफज व्याधियोंको जड़से खो देता है।

यकृत्-प्लीहा-उदर-शोथाधिकार १६

यकृतप्लीहागतरोग—

१—अकसीर तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

डूयाम्रिक (दो बार खिंचा हुआ) अंगरेजी मद्य ऽ। एक पाव, एलुआ और लहसुनका रस—प्रत्येक १ तोला, पुराना सिरका ४ तोला। तीनों द्रव्योंको मद्यमें डालकर बोतलमें काग लगाकर ४० दिन धूपमें रखें। पीछे छानकर दूसरी बोतलमें सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—बालकोंको १० बूंद, जवानोंको २० बूंद तक दिनमें तीन बार सवेरे, दोपहर और सायंकाल पिलावें। औषधि पिलानेसे पूर्व कुछ मीठी चीज खिला लें।

गुण तथा उपयोग—विवृद्ध प्लीहाकी यह अव्यर्थ महौषधि है। एक सप्ताहके उपयोगसे पुरातन प्लीहा आराम हो जाती है।

२—अर्क तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

चौकिया सुहागा, कालीमिर्च प्रत्येक २ तोला। इनको पीसकर खानेका नमक (नमक ताम), सेंधानमक, काला नमक, पाढ़ा नमक (नमक तल्ख), नमक सुलेमानी, हरे अदरकका रस, घीकुआरका रस, कागजी नीबूका रस, शुद्ध सिरका—प्रत्येक ६ तोलामें मिलाकर शीशाके पात्रमें डालकर दस दिनतक धूपमें रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला यह अर्क १२ तोले सौंफके अर्क और १ तोला नीबूकी सिकंजबीनमें मिलाकर सवेरे पियें।

गुण तथा उपयोग-यह प्लीहाके लिये गुणकारी और आशुप्रभावकारी है। कुछ दिनोंमें इसके सेवनसे प्लीहा नष्ट हो जाती है।

३—आनन्द-रसायन

द्रव्य और निर्माणविध—

सत सिलाजीत ५ तोला, शुद्ध कुचला ५ तोला, लोह भस्म ४ तोला, कालीमिर्च २ तोला, काशमीरी केसर १ तोला। सबको कूट-छानकर मधुमें १-१ रत्ती प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली प्रति दिन दूधके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृतके दौर्बल्यके लिये विशेष रूपसे गुणकारक है, प्रधानतः जो शीत और स्निग्धता (रतूबत) जन्य हो।

४—कब्दी

द्रव्य और निर्माणविधि—

रेवन्दचीनी, नौशादर, कलमीशोरा, बालछड़, तेजपत्ता—प्रत्येक समभाग। इनको पीसकर कपड़छान चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ रत्ती उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृतवृद्धिमें लाभकारी है।

५—जिमाद उशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

उशक, गूगल, बूरेअरमनी, लाहौरी नमक (सैंधव)—प्रत्येक १ तोला २ माशा; सुदावके पत्ते २ तोला ४ माशा, झाऊ १॥। तोला, छड़ीला (उशना) १॥। तोला, पीला अंजीर १० दाना और गन्धक ७ माशा। पहले अंजीरको सिरकामें पकायें। जब गल जाय तब उशक और गूगलको पिघलाकर इसमें डाल दें और शेष द्रव्य कूट-छानकर मिलाकर लेई सी बनाकर उतार लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथावश्यक तेज सिरकामें मिलाकर गरम-गरम उक्त स्थानपर लेप करें।

गुण—शोथविलयन।

विशेष गुण तथा उपयोग—प्लीहागत शोथ विलीन करनेके लिये प्रधान औषधि है।

६—जिमाद् कबिद

द्रव्य और निर्माणविधि—

बोल (मुर), पहाड़ी पुदीना (हाशा), अफसंतीन, मकोय, इकलीलुलमलिक (नाखूना), बाबूनापुष्प, नागरमोथा, बिरंजासफ, बालछड़—प्रत्येक ६ माशा; रसवत १ माशा, जदवार १ माशा। इनको कूट-छानकर हरे मकोयके रसमें लेप प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—हरे मकोयके रसमें घिसकर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्की सूजन और कड़ापनके लिये बहुत गुणकारक है।

७—जिमाद तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुदाबके पत्र १० माशा, उशक ७ माशा, बूरे अरमनी ३ माशा और पुदीना ३ माशा। इनको सिरकामें पीसकर लेप प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथावश्यक विकारी स्थानपर लेपकी भाँति लगायें।

गुण तथा उपयोग—प्लीहाकी कठोरताके लिये लाभकारी है।

८—जुवारिश आमला लूलुवी

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुठली निकाले हुये आमलेका रस ४ तोला, छिला हुआ सूखा धनिया, कुलफाके बीज—प्रत्येक ६ माशा; सफेद बंशलोचन, पोस्त सुमाक, जरिश्क, मुनक्का, गुलाबपुष्प, बिल्लीलोटन, श्वेत चन्दन, पिस्ताके बाहरका छिलका—प्रत्येक ४॥ माशा; अवीध मोती २ माशा, अम्बर अशहब, चाँदीके वरक, सोनेके वरक—प्रत्येक १ माशा; मिश्री, मीठे बिहीका रस—प्रत्येक द्रव्योंसे द्विगुण यथाविधि जुवारिश तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—३-३ माशा प्रातःसायंकाल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और यकृत्को शक्ति देती है; आहारका पाचन करती है; क्षुधाजनक है; यकृत्की गरमीको शमन करती और पित्तज अतिसारको रोकती है।

९—जौहर नौशादर खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादर २० तोला, जवाखार ५ तोला, मनिहारी नमक ५ तोला, लाहौरी नमक ५ तोला। सबको पीसकर कागजी नीबूका रस ५॥ में मिलाकर चीनीके बरतनमें डालकर धूपमें रखें। जब रस सूख जाय तब उसे कोरी मिट्टीकी हाँडीमें डालकर दूसरी हाँडी उसपर औंधा रखकर कपड़मिट्टी करके चूल्हेपर चढ़ाकर तीव्राग्नि करें। सत्व (जौहर) ऊपरकी हाँडीमें उड़कर लग जायगा। उसे लेकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ रत्ती यह सत्व भोजनोपरांत ताजा जलसे लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह पाचनशक्ति बढ़ाता है और बढ़ी हुई प्लीहाको छाँटता है।

१०—तिरियाकुत्तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

चिलगोजेकी गिरी, अञ्जुराके बीजकी गिरी—प्रत्येक १ माशा; रेवन्द, हीराबोल (मुरमक्की)—प्रत्येक ७ माशा; कबरकी जड़की छाल, माई, बिरोजा, उशाक, गारीकून, जंगली गाजरकी जड़ (बीख गजर दश्ती), केशर, बल्लूत, शिलारस, अनार—प्रत्येक १०॥ माशा; तेजपात, कालीजीरी, जावशीरमूल, मिश्कतरामशीअ, सोसनकी जड़, जंगली गाजरके बीज, अनीसून, अञ्जुदानरूमी, मजीठ, बच-प्रत्येक १४ माशा; हब्ब बलसाँ, हब्बुलबान, उस्कूलूकंदरियून, लबलाबकी जड़, भुना हुआ जंगली प्याज (काँदा), बालछड़, श्वेत मरिच, जदरा की जड़की छाल—प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा; बारतंगके पत्र, उलक पत्र, किरमानी जीरा—प्रत्येक २ तोला ११ माशा, जंगली गदहे (गोरखर) की प्लीहा, अश्वकी प्लीहा और लोमड़ीकी प्लीहा—प्रत्येक ४ तोला ४॥ माशा और केसर के तेलकी तलछट (कर्कूमग्मा) ५ तोला १० माशा। इनमें जो कूटने योग्य हों उनको कूटें और गूँधकर मद्यमें हल करें। पीछे साफ किये हुए मधुमें गूँधकर माजून बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—रक्तमोक्षण (फसद खोलने) और समस्त नियमोंके पालन करनेके उपरांत प्लीहा काठिन्यके लिये सिकंजबीन बजूरीके साथ, प्लीहाशोथ दूर करनेके लिये जड़ोंके काढ़े (माउल उसूल) के साथ, प्लीहागत रक्तज एवं पित्तज शोथ-निवारणके लिये सिकंजबीन सादा और यवमंड (आशे जौ) के साथ दें।

गुण तथा उपयोग—समस्त प्लैहिक रोगों, यथा—वेदना, कठिनता और शोथ आदिके लिये उत्कृष्ट योग है। (जामिउल् हिकमत भा० २ पृ० ५०६)

११—तिरियाकुल्कबिद

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुष्क रासन, कालीमिर्च, किरमानी जीरा, बालछड़, नील सोसनकी जड़–प्रत्येक ३॥ माशा; इन्द्रायनका गूदा, सँभालूके बीज, बारतंगकी जड़, हलियूनके बीज, हलियूनकी जड़, गारकी जड़की छाल, गाफिसकी जड़की छाल, लूफाकी जड़, मीठे बादामकी गिरी, कडुए बादामकी गिरी, जुअदा, गारीकून, बाबूना, हब्बुल्बान और केसर–प्रत्येक ५। माशा; मीठी विहीका छिलका, शुष्क किया हुआ नारदीन, कूमू–प्रत्येक ५॥। माशा; बूरए अरमनी, लाहौरी नमक, शुष्क जूफा. पहाड़ी पुदीना, तेजपात, रूमीमस्तगी, मुलेठीका सत, मेथीके बीज, कनौचाके बीज—प्रत्येक ७ माशा; सरख्स Male fern), सोआके पत्ते–प्रत्येक ८॥। माशा; अजमोदा बीज, हुसबगोल, अफसंतीन रूमी, इय्युलआलम पत्र, कंतूरियून बारीक, हीराबोल (मुरमक्की), कहरुवा, शिलारस, हब्ब शिलारस तर—प्रत्येक १०॥ माशा; तगर (असारून), फितरासालियून, इजखिरका शिगूफा, इजखिर मूल, अञ्जुरा बीज, अंगूरकी शाखाओंके पेचदार रेशे, अफतीमून (विलायती अकाशबेल)—प्रत्येक १॥। तोले; भेड़ियेका यकृत् शुष्क किया हुआ, हब्बुल आस, मवीज तायफी, तरखश्कूक (जंगली कासनी, दूधल) पत्र, जंगली कासनी (दुग्धफेनी), हब्बकाकनज– प्रत्येक २ तोला ११ माशा; ऐदानुलमुल्क, रेवंद, खीरा-ककड़ीके बीज, खरबूजाके बीज-प्रत्येक ४ तोला ४॥ माशा; जरिश्कका उसारा (जरिश्कका निचोड़ा हुआ रस) और पीली हड़का छिलका—प्रत्येक ५ तोले १० माशा। इन सबको कूट-छानकर तिगुना शुद्ध मधुमें मिलाकर यथाविधि माजून बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—शीतल यकृत्शोथमें १ तोला जड़ोंके काढ़े (माउल् अस्ल) के साथ, उष्ण यकृत्शोथमें फाड़े हुए हरे कासनीके रस ४ तोला और फाड़े हुए हरे मकोयके रस ४ तोलाके साथ तथा यकृच्छूलके संतापहरणके लिये यवमंड (आशे जौ) के साथ उपयोग करें। शीतल कठिन शोथमें हरे मकोयके पत्रमें यथावश्यक किंचित् माजून पीसकर शोथकी जगह लेप करें।

गुण तथा उपयोग—उष्ण और शीतल यकृद्व्याधियोंमें प्रभावतः लाभदायक है।

१२—दवाए तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

चौकिया सुहागा, कालीमिर्च-प्रत्येक २ तोला; खानेका नमक (नमक तआम), सेंधा नमक (नमक संग), काला नमक, पादा नोन (नमक तल्ख), नमक सुलेमानी–प्रत्येक १ तोला। सबको बारीक पीसकर एक बोतलमें डालें और आर्द्रकस्वरस, घीकुआरका रस, कागजी नीबूका रस, शुद्ध सिरका समभाग इतना डालें कि बोतल भर जाय। फिर इसका मुँह बन्द करके धूपमें रखें। जब समस्त द्रव्य पिघलकर जलवत् हो जायँ तब छानकर बोतलमें सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोलाकी मात्रामें सवेरे-शाम उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—प्लीहावृद्धि एवं प्लीहाशोथमें लाभकारी है; मलावरोध (कब्ज) दूर करती है और पाचनके सुधारनेमें अनुपम है।

१३—नौशादर महलुल

द्रव्य और निर्माणविधि—

सज्जी (अशखार आफताबा) ऽ। लेकर बिना बुझा हुआ चूना ऽ४ सेर एक मिट्टीके पात्रमें उसके नीचे ऊपर बिछायें और जंगली उपलोंसे गजपुटकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर सज्जी (अशखार) को निकालकर चूनासे साफ करें और समभाग नौशादर मिलाकर खरल करें। जब किसी कदर नमी पैदा हो तो प्रयोग किये हुए मिट्टीके सकोरेमें रखकर खूब कपड़मिट्टी करें। फिर ऽ१० सेर जंगली उपलोंकी अग्नि दें। पुनः खरल करके आर्द्रता उत्पन्न होनेपर उसी प्रकार दोबारा और तिबारा अग्नि दें। इसके बाद चीनीके पात्रमें रखकर ओसमें रखें। दो-तीन दिनमें द्रवीभूत होकर जलवत् हो जायगा। इस द्रवको टपकाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—पाँच बूँद जल या किसी अन्य उपयुक्त अनुपान के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग-यह यकृत्वृद्धिमें अत्युपयोगी है।

१४—लऊक तिहाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

पपीता (एरण्डखरबूजा) २॥ तोला, मूली २॥ तोला, ताजा अदरक

१। तोला, पीला अंजीर १। तोला, सूखा पुदीना ३॥ माशा, कलौंजी ३॥ माशा, भुना हुआ सुहागा ३॥ माशा, नौशादर ३॥ माशा, राई ३॥ माशा, कालीमिर्च ३॥ माशा, लाहौरी नमक ३॥ माशा और सज्जी ३॥ माशा। इन सबको बारीक पीसकर ऽ। एक पाव सिरकामें मिलाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—भोजनोपरांत तीन माशाकी मात्रामें चटायें।

गुण तथा उपयोग—यह प्लीहाशोथ तथा प्लीहावृद्धिके लिये गुणकारी एवं कृतप्रयोग भेषज है।

१५—सिकञ्जबीन बजूरी मोतदिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध सिरका ५ तोला १० माशा, कासनी बीज, सौंफ और अजमोदा—प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती। समस्त द्रव्योंको कूटकर रात्रिमें ऽ१॥ सेर जलमें भिगो रखें। सवेरे क्वाथ करके छान लें। फिर मिश्री ऽ१ सेर डालकर चाशनी कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला सिकंजबीन अर्क गावजबान १२ तोला के साथ दिनमें ३ बार उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्र प्रवर्तनकर्त्ता है और यकृत् एवं प्लीहाको लाभ पहुंचाता है।

१६—सिकञ्जबीन लीमू

द्रव्य और निर्माणविधि—

सिरका, गुलाबपुष्पार्क और नीबूका रस—प्रत्येक ५ तोला; बिहीका रस ४ तोला और मिश्री ऽ१ सेर। यथाविधि शर्बत (शार्कर) की चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला सिकंजबीन सौंफका अर्क १२ तोला के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय और यकृत्को बल देनेवाली है तथा यकृत् के अवरोधका उद्घाटन करती है।

१७—हब्ब कबिद नौशादरी

द्रव्य और निर्माणविध—

नौशादर, लाहौरी नमक, साँभर नमक, काला नमक, सुहागा, नरकचूर, सोंठ, काली हड़, पीली हड़का छिलका, काबुली हड़का छिलका, वायबिडंग, कालीमिर्च—प्रत्येक समभाग। इनको कूट-छानकर यथावश्यक गुलाबपुष्पार्कमें खरल करके चना प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—दो-दो गोली सवेरे-शाम पुदीना या सौंफके अर्क १२ तोलेके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्‌की कठिनताको दूर करती; यकृतीय वाहिनीगत अवरोधोंको उद्‌घाटित करती और यकृत्‌के रोगोंमें अतीव गुणकारी है। यह मलावष्टंभ (कब्ज) और उदरस्थ गौरवको नष्ट करती है।

१८—हब्ब जिगर

द्रव्य और निर्माणविधि—

नौशादर, लाहौरी नमक, सुहागा, नरकचूर, काली हड़, पीली हड़का छिलका, काबुली हड़का छिलका, वायबिडंग, कालीमिर्च, सोंठ—प्रत्येक समभाग। सबको कूट-छानकर गुलाबपुष्पार्कमें खरल करके चना प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—सवेरे-शाम दो गोली जलके साथ उपयोग करें। ग्रीष्म ऋतुमें कासनी बीजका शीरा ३ माशा, खीरा-ककड़ीके बीजका शीरा ३ माशा या शर्बत बजूरी ४ तोलामेंसे किसीके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्‌के रोगोंमें अत्यन्त गुणकारी है। यकृत् वृद्धि एवं काठिन्य और कफाधिक्यजन्य यकृतीय नलिका और वाहिनी-अवरोध दूर करनेके लिये लाभकारी है। यह मलावष्टंभ (कब्ज) को दूर करती है और उदरस्थ गौरवको नष्ट कर देती है।

विशेष उपयोग—यकृत्‌को बल देनेवाली है।

१९—माजून दबीदुलवर्द

द्रव्य और निर्माणविधि—

बालछड़, वंशलोचन, रूमीमस्तगी, केसर, कलमी दारचीनी, इजखिर मक्की,

तगर (असारून), मीठा कुट, गुलगाफिस, कुसूस बीज, मजीठ, धोई हुई लाक्षा (लुक मगसूल), कासनी बीज, अजमोदा बीज, जरावंद तवील, हब्ब बलसाँ, ऊदगरकी—प्रत्येक ३ माशा ; गुलाबपुष्प ४। तोला। सबको कूट-छानकर शुद्ध मधुमें माजून बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशासे ६ माशातक ताजा जलसे उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह शीतल शोथ और यकृत्की कठोरता तथा सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्का) में गुणकारी है।

२०—अर्क खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

कलमी शोरा ४ तोला, आमलासार गन्धक १ तोला, गोखरू १ तोला। सबको ऽ६ सेर जलमें भिगोकर अर्क परिस्रुत करें। पुनः इस अर्कमें झाऊके पत्र ८ तोले, गाफिसपुष्प, रूमी अफसंतीन, बालछड़, खरबूजाके बीज, कासनीके बीज, सौंफकी जड़, कासनीकी जड़, अजमोदाकी जड़, इजखिरकी जड़—प्रत्येक ८ तोला। हरे मकोयकी पत्तीका फाड़ा हुआ रस, हरी कासनीकी पत्तीका फाड़ा हुआ रस—प्रत्येक ऽ२ सेर ; सिरका शुद्ध ऽ१ सेर मिलाकर यथाविधि अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ तोला अर्क सवेरे २ तोले शर्बत दीनार डालकर पिलायें।

उपयोग—यकृत्के रोगोंमें प्रयुक्त योगोंके अनुपान स्वरूप इसका उपयोग करें।

उदर-शोथ-जलोदरादि—

१—अकसीर जिगर

द्रव्य और निर्माणविधि—

मण्डूर (जलसे धोकर साफ किया हुआ), पीली हड़का छिलका, बहेड़ाका छिलका और आमला—प्रत्येक ऽ। एक पाव। अन्तिम तीनों द्रव्योंको बारीक करके मण्डूरमें मिला लें और उनपर गायका दही इतना डालें कि चार अंगुल ऊपर आ जाय। इसके बाद भी चार दिन हिलाकर थोड़ासा दही डाल दिया करें। फिर सबको छायामें सुखाकर बारीक कर लें। पीछे पीपल, कालीमिर्च और सोंठ—प्रत्येक ३ तोला बारीक करके उसमें समाविष्ट कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन ३ माशा सवेरे दहीके साथ खायँ। निर्धन लोग दहीकी लसी (छाछ) से भी उपयोग कर सकते हैं।

गुण तथा उपयोग—यह अकसीर यकृत् और आमाशयको बलवान बनाती है, हस्त-पादशोथको उतारती और पाण्डु (सूउल्‌क़िन्या) को दूर करती है। यह कामला, वस्तिगत ऊष्मा और रक्ताल्पताको लाभदायक है।

विशेष उपयोग—यह पाण्डु (सूउल्‌क़िन्या), यकृत्‌काठिन्य और यकृत्‌के दौर्बल्यके लिये परम गुणकारी है।

२—ज़िमाद इस्तिस्क़ा

द्रव्य और निर्माणविधि—

बाबूना पुष्प, इकलीलुल्‌मलिक, रूमीअफसंतीन, तगर (असारून), बालछड़, पखानभेद (जिन्तियाना), रूमीमस्तगी, नागरमोथा, गुलाबपुष्प—प्रत्येक ४ माशा। इनको बारीक पीसकर हरे मकोयके रसमें घोटकर सुहाता गरम करके लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह पाण्डु (सूउल्‌क़िन्या) और शोथ (इस्तिस्क़ा) के लिये दिल्लीके स्वर्गवासी हकीम रजीउद्दीनखाँ महोदयका कृतप्रयोग एवं परीक्षित योग है।

३—दवाउल् कुर्कुम कबीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

केसर ३॥ तोला, बालछड़ १॥। तोला, रोगन बलसाँ १ तोला ५॥ माशा, तगर १४ माशा, अनीसून १४ माशा, अजमोदा १४ माशा, रेवन्दचीनी १४ माशा, जङ्गली गाजरके बीज १४ माशा, हीराबोल (मुरमक्की) १४ माशा, मुलेठीका सत १०॥ माशा, कलमी तज १०॥ माशा, रूमीमस्तगी १०॥ माशा, गाफिसपुष्प १०॥ माशा, मजीठ ७ माशा, मीठा कुट ३॥ माशा, दारचीनी ३॥ माशा, इजखिर मक्की ३॥ माशा, हब्ब बलसाँ ३॥ माशा। सबको कूट-छानकर तिगुने शुद्ध मधुमें माजून बनायें।

मात्रा और अनुपान—५ माशा यह माजून जड़ोंके काढ़ेके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्के मिजाज (प्रकृति) की शीतजन्य विकृति में लाभ करती है । यदि यकृत् और प्लीहाके शोथके कारण शोथ (इस्तिस्का) रोग उत्पन्न हो गया हो तो उसके लिये यह अमोघ औषधि है ।

४—दवाए इस्तिस्का

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखियाको एरण्ड-तैलमें रखकर अग्निपर गरम करें । जब मोमके सदृश हो जाय तब उतार लें । इस संखियामेंसे १ तोला और कालीमिर्च ७ तोले लेकर बारीक पीसकर मसूर प्रमाणकी गोलियाँ बना लें ।

मात्रा और सेवन विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम ५ तोले गोघृतमें १ तोला मिश्री मिलाकर उसके साथ सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग—यह जलोदरमें परम गुणकारी है । वातनाड़ियोंको शक्ति देती और बाजीकरण करती हैं । (ति० फा०)

५—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धक आमलासार, इन्द्रायनकी जड़का आटा, पीली हड़का छिलका, कमीला, खानेका नमक—प्रत्येक १ माशा ; शुद्ध पारा, छिली और अस्थि दूर की हुई निशोथकी जड़का आटा (आर्द तुर्बुद मुजव्वफ खराशीदा)—प्रत्येक ५ माशा ; शुद्ध जमालगोटेका मग्ज ४ माशा । समस्त द्रव्योंको स्नुहीक्षीरसे पीसकर १-१ रत्तीकी गोलियाँ बाँध लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—इन गोलियोंमेंसे २ माशातक लेकर ऊँटनीके दूधसे सेवन करें और केवल ऊँटनीके दूधके और कुछ न खायें-पियें ।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारके शोथ (इस्तिस्का) विशेषतः सर्वाङ्गशोथ और जलोदरमें लाभदायक है ।

सूचना—उष्ण प्रकृतिवालोंको यह औषधि हानिकर है ।

६—शर्बत इस्तिस्का

द्रव्य और निर्माणविधि—

तगर (असारून), छिली हुई मुलेठी, कुसूस बीज (पोट्टलिकाबद्ध), सौंफ,

सौंफकी जड़, खीरा-ककड़ीके बीज, शुष्क मकोय, अधकुटा खरबूजाके बीज, गोखरू, कासनी बीज, कासनीकी जड़, बनफशापुष्प, गावजबान—प्रत्येक २ तोला, रेवन्दखताई ६ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ४ तोला। इनको मकोयके अर्कमें क्वाथ करके छान लें। फिर हरी कासनीका फाड़ा हुआ रस आध पाव, हरे मकोयका फाड़ा हुआ रस आध पाव और मिश्री ऽ१॥ सेर मिलाकर शर्बतकी चाशनी करें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला शर्बत १० तोले मकोयके अर्कमें मिलाकर सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह शोथमें लाभदायक है तथा वृक्क एवं वस्ति रोगोंमें हितकर है।

७—शर्बत उसूल

द्रव्य और निमार्णाविधि—

सौंफकी जड़की छाल ४। तोला, कासनीकी जड़की छाल २। तोला, कबर (करीर भेद) की जड़की छाल २। तोला, अजमोदाकी जड़की छाल २। तोला, सौंफ २। तोला, अजमोदा २। तोला, कासनी १॥ तोला, ऊदबलसां ३॥ माशा, पोट्टलिकाबद्ध कुसूस बीज १॥ तोला, खरबूजाके बीज १॥ तोला, गुलाबपुष्प १ तोला, गाफिसपुष्प ७ माशा, इजखिरमक्की ७ माशा, बालछड़ ६ माशा, तगर (असारून) ६ माशा, तज ६ माशा, रेवन्दचीनी ६ माशा और हब्बबलसां ३॥ माशा। इन समस्त द्रव्योंको रात्रिमें ऽ॥ सेर मकोयके अर्क और ऽ॥ सेर कासनीके अर्कमें भिगोकर सवेरे क्वाथ करें। फिर छानकर ऽ॥। पाव चीनी मिलाकर शर्बतकी चाशनी करें। शीतल होनेपर रूमीमस्तगी ३॥ माशा और धोई हुई लाक्षा (लुक मगसूल) ३॥ माशा महीन पीसकर मिलायें।

मात्रा और अनुपान—३ तोला शर्बत उपयुक्त अनुपानसे लेवें।

उपयोग—शोथघ्न है।

८—शर्बत दीनार (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

कासनी बीज, गुलाबपुष्प—प्रत्येक १० तोला; कासनीकी जड़की छाल २ तोला ४ माशा, निलोफरपुष्प, गावजबान—प्रत्येक ५ तोला १० माशा; कुसूस बीज (पोट्टलिकाबद्ध) १७ तोला ६ माशा। इनमें जो द्रव्य कूटने योग्य

हैं उनको यवकुट करके अन्य द्रव्योंके साथ जलमें क्वाथ करके छान लें। फिर ऽ॥ सेर चीनी मिलाकर चाशनी कर लें। शीतल होनेपर उसमें रेवन्दचीनी ७॥ तोला कूट-पीसकर मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला शर्बत ५ तोले गावजवानके अर्कमें मिलाकर पीयें।

गुण तथा उपयोग—यह मलावष्टंभ (कब्ज) को निवारण करता है; यकृत्के अवरोधको उद्घाटित करता है तथा पार्श्वशूल, शोथ (इस्तिस्का), उदरशूल, गर्भाशयशूल और यकृत् एवं वस्तिके लिये गुणकारक है। यह खूब प्रवर्तन करता और विषमज्वर (मलेरिया) में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

६—हब्ब इस्तिस्क़ा

(१)

द्रव्य और निर्माणविधि—

निशोथका आटा और कालादाना - प्रत्येक २ तोला; सनायमक्की १॥ तोला, कलमीशोरा, हड़का छिलका, छिला हुआ बादामका मग्ज, मकोयके बीज, गारीकून—प्रत्येक १ तोला; अफसंतीन और बालछड़—प्रत्येक ६ माशा; गुलाबपुष्प ७ माशा। इन सबको बारीक पीसकर अर्कक्षीर ६ तोला और स्नुहीक्षीर १ तोला में खरल करके गोली बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशा यह गोली २ तोले शर्बत दीनार या शर्बत बजूरीके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह शोथमें परम गुणदायक है।

सूचना—सेवन क्रममें कभी-कभी नागा भी कर दिया करें।

(२)

द्रव्य और निर्माणविधि—

गेहूँका आटा १४ माशाको स्नुहीक्षीरमें गूँधकर दो-दो माशेकी टिकिया बना लें और लोहेकी शलाकामें लगाकर कबाबकी भाँति अग्निपर सेकें। जब किसी भाँति ललाई आ जाय और पक जायँ तब निकालकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ टिकिया खिलाकर ऊपरसे आध पाव ऊँटनी का दूध पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह यकृत्के उभारके लिये गुणकारक है और शोथमें असीम लाभ पहुंचाती है। इससे प्रतिदिन दो-तीन दस्त आकर अंगोंमें स्थित जल (इस्तिस्का का पानी) निकल जाता है और रोग समूल नष्ट हो जाता है।

११—हबूब इस्तिस्का

द्रव्य और निर्माणविधि—

कमोला, निशोथका महीन चूर्ण प्रत्येक ६ माशा दोनोंको पीसकर थूहड़के दूधमें खरल करके उड़द प्रमाणकी गोलियां तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली मिलित मिश्रेयार्क (अर्क सौंफ), गुलाबपुष्पार्क और काकमाच्यर्क—प्रत्येक ३ तोलेके साथ खा लिया करें।

गुण तथा उपयोग—तीन दिनके सेवनसे ही लाभ प्रतीत होने लगता है। सर्वाङ्गशोथ एवं जलोदरमें परम गुणदायक है।

वातोदर (इस्तिस्काए तब्ली)—

१—अर्क

द्रव्य और निर्माणविधि—

तज, तगर (असारून), लौंग, कतरा हुआ कच्चा अबरेशम, धोई हुई द्राक्षा, घीकुआरका गूदा, बालछड़, हलियूनके बीज, बीज निकाला हुआ मुनक्का, कुकरौंधाके हरे पत्ते, कासनीके हरे पत्ते, मकोयके हरे पत्ते, रेवंदचीनी, सौंफ, नरकचूर (जुरंबाद)—प्रत्येक ३ तोला। इनको रात्रिमें लौहतप्त जलमें भिगोयें। सवेरे यथाविधि अर्क परिस्रुत करें और नैचापर शुद्ध केसर १ तोलाकी पोटली बांधे। इस प्रकार जो अर्क प्राप्त हो उसे सुरक्षित रखें।

मात्रा और अनुपान—१२ तोले यह अर्क २ तोले शर्बत बजूरीके साथ सवेरे-शाम पिलायें।

गुण तथा उपयोग—वातोदर (इस्तिस्काऽतबली) में यह लखनऊके स्वर्गवासी हकीम अब्दुल् अजीज महोदयका कृतप्रयोग और लाभदायक अर्कका योग है।

———

प्रमेहाधिकार २०

उदकमेह और बहुमूत्र—

१—कुर्स मासिकुल्बौल

द्रव्य और निर्माणविधि—

झाऊ, कुंदुर, अकाकिया—प्रत्येक ३॥ माशा ; काबुली हड़का छिलका भूनकर गोघृतमें स्नेहाक्त (चर्ब) किया हुआ ४॥ माशा, भुना हुआ शुष्क धनिया ५। माशा, गुलनार, गिल अरमनी, गुलाबपुष्प; मसूर—प्रत्येक ७ माशा ; बलूतबीज, बिलायती मेंहदीके बीज—प्रत्येक १०॥ माशा। इनको कूट-पीसकर छोटी-छोटी टिकिया बनाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा बिहीके सत (रुब) के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग – यह तृष्णा शमन करती और बहुमूत्रमें गुणकारी है।

२—जुवारिश मस्तगी (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

मस्तगी ४॥ तोला, गुलाबपुष्पार्क ६ तोला, चीनी ५। छटांक मिलाकर चाशनी करें। शीतल होनेपर मस्तगीका चूर्ण करके मिला लें।

मात्रा और अनुपान—१ माशा केवल या मिश्रेयार्क १२ तोलेके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशयस्थ द्रवोंको शुष्क करके मुखसे लाला-स्रावको रोकती है; बहुमूत्र और अतिसारमें लाभ पहुंचाती है और कफज व्याधियोंमें बहुत गुणकारी सिद्ध हुई है।

३—जुवारिश मासिकुल्बौल

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीली हड़का बक्कल, बहेड़ेका छिलका कूट-पीसकर घृतमें स्नेहाक्त (चर्ब)

किया हुआ, गुलनार और नागरमोथा-प्रत्येक ६ माशा ; कुन्दुर और अजवायन-प्रत्येक ४॥ माशा। इनको कूट-पीसकर यथावश्यक मधुमें मिलाकर जुवारिश (खाण्डव) बना लें।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह बहुमूत्रमें परम गुणकारी एवं परीक्षित है।

४—माजून बुलूत

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुन्दुर, विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस), पीली हड़का छिलका, बहेड़ेका छिलका, आमला, लौंग, अजवायन, कबाबचीनी—प्रत्येक १०॥ माशा, शुद्ध कृष्णजीरक १७॥ माशा ; नागरमोथा, मस्तगी, भंगबीज-प्रत्येक ५। माशा और बुलूत १४ माशा। इनको कूट-पीसकर तिगुनी चीनीकी चाशनी करके उसमें मिलाकर माजून बना लें।

मात्रा—६ माशा।

गुण तथा उपयोग-यह बहुमूत्रमें लाभदायक है।

मूत्रातीत (सलसुलबौल)—

१—सफूफ मासिकुलबौल

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुलंजन, कुन्दुर, रूमीमस्तगी, छपारोका फूल, लौंगका फूल, हब्बतुलखिजरा का मग्ज—प्रत्येक १ माशा। इनको बारीक करके चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि-यह एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा तड़के खाकर ऊपरसे ५ तोला मिश्रेयार्क पियें।

गुण तथा उपयोग—शीतलता और स्निग्धताके प्रावल्यसे जब बहुमूत्र रोग हो जाता है तब इस चूर्णके उपयोगसे असीम उपकार होता है।

शय्यामूत्र (बौलफिलफिराश)—

द्रव्य और निर्माणविधि—

काली हड़, काबुली हड़का छिलका (गोघृतमें स्नेहाक्त करके भुना हुआ)

और सफेद कत्था—प्रत्येक ६ माशा; तुख्म बुलूत और कुन्दुर—प्रत्येक २। माशा; सालममिश्री ४॥ माशा, कहरुवा शमई ६॥ माशा, भंग बीज (शहदाना), विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस)—प्रत्येक १॥ तोला। इनको कूट-छानकर रखें। फिर गुठली निकाली हुई मवीजज (मुनक्का) २२॥ तोलाको कूटकर गुलाबपुष्पार्कमें पकायें जिसमें वे फूल जायँ। पीछे उपर्युक्त द्रव्योंके चूर्णको इसमें गूँधें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा खिलाकर ऊपरसे बिहीका शर्बत २ तोला और गावजबानार्क १२ तोले मिलाकर पिलायें।

उपयोग—यह शय्यामूत्र रोगमें गुणकारक है।

मूत्रावरोध (इहतिबासुलबौल)—

१—जुवारिश कुर्तुम

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिलका उतारा हुआ कद्दू और बादामकी गिरी—प्रत्येक २ तोला; अनीसून, बसफायज फुस्तकी—प्रत्येक १ तोला; मस्तगी २ तोला, मिश्री समस्त द्रव्योंके समप्रमाण और मधु उससे दुगुना। द्रव्योंको कूट-पीसकर मिश्री और मधुकी चाशनीमें मिलाकर जुवारिश (खाण्डव) प्रस्तुत कर लें।

मात्रा और अनुपान—७ माशा जुवारिश १२ तोले मिश्रेयार्कके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रप्रवर्त्तक, आर्त्तवशोणितप्रवर्त्तक, दीपन-पाचन (मुकव्वीमेदा), मृदुसारक (मुलय्यिन) है तथा गर्भाशयिक रोगोंमें परम उपकार करती है।

२—माजून हज्रुलयहूद

द्रव्य और निर्माणविधि—

खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी, कद्दूके बीजकी गिरी, खरबूजेके बीजकी गिरी, हब्ब काकनज—प्रत्येक १॥ तोला और हज्रुलयहूद १५ तोलाको खरलमें खूब पीसकर रख लें और शेष द्रव्योंको कूट-पीसकर कपड़छान चूर्ण बना लें। फिर तिगुने मधुकी चाशनीमें उक्त समस्त चूर्ण मिलाकर माजून बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा माजून सवेरे ताजा जलसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह वस्तिस्थ शर्करा या अश्मरी आदि जन्य मूत्रावरोध का उद्‌घाटन करती और पथरीको टुकड़े-टुकड़े करके निकालती है।

३—सफूफ इन्द्रीजुल्लाब

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धकसे शुद्ध किया हुआ कल्मीशोरा १ माशा, जवाखार ४ रत्ती दोनोंको मिलाकर चूर्ण बना लें।

कलमीशोराका शोधन—गन्धकमें कलमीशोराके शोधनकी रीति यह है कि एक पाव कल्मीशोरेको पिघलायें और उसमें बारीक पिसी हुई आमलासार गन्धककी चुटकी देते जायँ। जब गन्धक बिलकुल गल जाय तब दूसरी चुटकी दें। इस प्रकार २ तोले गन्धक समाप्त कर दें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ रत्ती चूर्णको गोखरूके फाण्ट और शर्बत बजूरीके साथ दिनमें तीन बार दें। कमसे कम तीन दिनतक सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—पूयमेहकी प्रारम्भिक अवस्थामें यह चूर्ण बहुत लाभ पहुँचाता है। व्रणको धोकर शुद्ध कर देता है।

मधुमेह (जयाबेतुस)—

१—अर्क जयाबेतुस

द्रव्य और निर्माणविधि—

चुक्रबीज (तुख्म हुम्माज), श्वेत खसबीज (सफेद पोस्ताके दाने), गुलनार फारसी, गुलाबपुष्प, शुष्क धनिया, श्वेत चन्दनका बुरादा, रक्तचन्दनका बुरादा, विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुलआस), नीलोफरपुष्प, शुष्क आमला, कमलगट्टेकी गिरी, छिले हुए काहूके बीज, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, पेठाके बीज की गिरी, बबूलका छाल, बबूलकी फली, जरिश्क बेदाना, गिर्द हमाक, आमकी बौर और कचनारकी कोंपल (शिगूफा)—प्रत्येक ६ तोला; ताजा कसेरू, कच्चा गूलर, कच्ची गोंदनी, कच्चा करौंदा और कच्चा अमरूद—प्रत्येक ऽ॥ सेर। सबको अधकुट करके रात्रिमें ऽ४॥ सेर मीठा छाछके पानी और ऽ४॥ सेर निलोफरपुष्पार्क मिलितमें तर करके सवेरे कलई किये हुए देगचेमें डालकर ऽ॥ सेर

फालसाका रस मिलाकर अर्क खींचें और ३ तोला वंशलोचन पीसकर पोटलीमें बाँधकर नैचाके मुंहमें लटका दें।

मात्रा और अनुपान आदि—१० तोले यह अर्क शर्बत अनार या किसी अन्यान्य उपयुक्त शर्बतमें मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—मधुमेह (जयाबेतुस) में यह अर्क परम गुणकारी है; शर्करा आनेको रोकता है; यकृत् और वृक्कको बलवान बनाता, तृष्णा और बढ़े हुए संतापको शमन करता है।

२—जयाबेतसी

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुलेठीका सत, रेवन्दचीनी, कतीरा गोंद, दम्मुलअख्वैन, गिल अरमनी, गिल मख्तूम, वंशलोचन, हब्ब काकनज, खशबीज (पोस्ताके दाने)—प्रत्येक २ तोले; गेहूँका सत (निशास्ता), कद्दूके बीजकी गिरी और कुलफाके बीज—प्रत्येक ३ तोले। प्रत्येक द्रव्यको अलग-अलग कूट-छानकर मिला लें। जितना यह चूर्ण हो उतना प्रमाणमें सफेद खाँड मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा चूर्ण १० तोले दहीके तोड़के साथ सवेरे शाम निहार पेट खिलायें।

गुण तथा उपयोग—वृक्कको बल देनेवाला और मधुमेहमें गुणकारी है।

३—सफूफ जयाबेतुस

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पुरानी ईंट ४ तोले, नील वंशलोचन, जहरमोहरा खताई—प्रत्येक १ तोल, कपूर ६ माशा, जुफ्त बुलूत ७ दाना, कहरुबा शमई, बबूलका गोंद—प्रत्येक १ तोला; पोस्त मुसल्लम (पोस्तेका ढोंढ़) ४ नग महीन पीसकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और अनुपान—६ माशा चूर्ण उपयुक्त अर्कके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह लखनऊके अजीजी खानदानका कृतप्रयोग योग है और वृक्कके उष्ण प्रकृति-विकारजन्य मधुमेहमें परम गुणकारी है।

४—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

सूखा हुआ मकोय, छोटा गोखरू, बबूलका कच्चा फूल, बबूलकी जड़, बबूलकी छाल और बबूलका गोंद—प्रत्येक १ तोला ; कासनी ४ तोले, कुलफा १० तोले, छोटी इलायची, वंशलोचन, सतशिलाजीत, गुडूची सत्व, कपूर, कुनैन–प्रत्येक २ माशा ; जलाकर राख किये हुए बबूलके कांटे १ तोला, जामुनके बीजकी गिरी २ तोला, अन्तर्धूम जलाया हुआ कलगा (ताज खुरूस) ४ नग। सबको परस्पर मिलाकर कपड़छान चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि–प्रतिदिन ३ माशा चूर्ण निलोफरपुष्पार्क ५ तोले, बेतसपुष्पार्क (अर्कबेदसादा) ५ तोला और गावजबानार्क ५ तोलाके साथ सेवन करें।

पथ्य—इसके सेवनकालमें घृताक्त मांस और गेहूंकी रोटीका आहार करें।

गुण तथा उपयोग—यह चूर्ण वृक्क और वस्तिको बलवान बनाता और शर्करा आनेको रोकता है।

विशेष उपयोग—मधुमेहकी अन्तिम अवस्थाकी उत्कृष्ट औषधि है।

५—अकसीर जयाबेतुस

द्रव्य और निर्माणविधि—

अहिफेन १ माशा, फौलाद भस्म २ माशा और जामुनकी गुठलीका कपड़छान चूर्ण १४ माशा। सबको पीसकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और अनुपान—१ माशासे २ माशातक १२ तोले गावजबानार्कके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह मधुमेहके लिये परम गुणकारी सिद्ध हुई है।

अश्मरी-मूत्रकृच्छ्राधिकार २१

वृक्काश्मरी और वस्त्यश्मरी—

१—अकसीर संगेगुर्दा व मसाना

द्रव्य और निर्माणविधि—

जंगली कबूतरकी बीट एकत्र करके जलायें और यथाविधि नमक निकालें। एक रत्ती यह नमक और एक रत्ती हज्रुलयहूद (बेर पत्थर) की भस्म मिलाकर रख लें। इस कार्यके लिये यदि हज्रुलयहूदको कलमीशोराके द्वारा भस्म करके योगमें मिलाया जाय तो अधिक श्रेयस्कर है।

मात्रा और सेवन-विधि—२ रत्ती चूर्ण मूलीके रसके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह वस्त्यश्मरी और वृक्काश्मरीके लिये गुणकारक है। एक सप्ताहके उपयोगसे व्यक्त लाभ देखनेमें आता है।

२—अर्क अनन्नास (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिलकायुक्त अनन्नास १२ नग, सौंफ ऽ१ सेर, सफेद प्याज ऽ२ सेर सबको एकत्र देगमें डालकर उसपर इतना जल डालें कि चार अंगुल ऊपर रहे। फिर यथाविधि अर्क परिस्रुत करें। इस अर्कमें पुनः उतना ही और औषधद्रव्य डाल कर यथानियम दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन-विधि—८ तोला अर्कमें मिश्री या शर्बत बजूरी २ तोले मिला लें।

गुण तथा उपयोग—यह वस्त्यश्मरीके लिये अत्यन्त गुणकारी है।

३—कुश्ता हज्रुल्यहूद

द्रव्य और निर्माणविधि—

५ नग बड़ा बिच्छू कूटकर लुगदी बनायें और उसमें १ तोला हज्रुलयहूद रखकर दो सकोरोंसे ढँककर ऊपरसे कपड़मिट्टी करके सुखा लें। फिर इस संपुटको ऽ५ सेर जंगली उपलोंकी अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकालें और बिच्छूकी राखसहित हज्रुलयहूदकी भस्मको पीसकर रखें।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात—

१—दवाए मुदिर्र

द्रव्य और निर्माणविधि—

जौकी राख, अंगूरकी लकड़ीकी राख, तिलके पौधेकी लकड़ीकी राख, मूली की राख, कलमी शोरा, नौशादर—प्रत्येक ऽ। एक पाव। इन समस्त द्रव्योंको पचीस गुना जलमें भिगोयें और दो-तीन बार प्रति दिन हिलाते रहें। तीन दिनके बाद ऊपर स्थिर हुआ जल (जुलाल) निथार लें। उक्त निथरे हुए जल (जुलाल) में कद्दूके बीजकी गिरी, कासनीके बीज, कुलफाके बीज, काहूके बीज—प्रत्येक आधा पावका शीरा (जलमें पीसकर लिया हुआ रस) निकाल लें। फिर छान कर मिट्टीके किसी कोरे पात्रमें डालकर किसी वृक्ष या छतमें लटका दें। कुछ दिन के बाद उस पात्रके बाहर एक प्रकारका श्वेत सत्व निकलना प्रारम्भ होगा। उसको प्रति दिन अलग करते जायँ और किसी शीशीमें रखते रहें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ रत्तीसे ८ रत्तीतक मिश्रेयार्क इत्यादिके साथ दें।

गुण तथा उपयोग—यह औषधि मूत्र और आर्त्तवशोणितप्रवर्तनकर्त्ता है तथा प्लीहावृद्धिमें भी गुणदायक है। इसे नेत्रमें सुरमाकी भाँति लगानेसे दृष्टि-दौर्बल्य और दृष्टिमांद्य (धुन्ध) इत्यादिको दूर करता है।

विशेष उपयोग—यह स्त्रियोंके आर्त्तवशोणितप्रवर्तन करनेके लिये चमत्कृत औषधि है।

२—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

कलमी शोरा, श्वेतजीरा, बड़ी इलायचीके दाने, हज्रुल्यहूद—प्रत्येक ३ माशा; पोटास बाईकार्ब, पोटास एसीटास—प्रत्येक ३ माशा ; मिश्री समभाग। समस्त द्रव्योंको कूट-छानकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशाकी मात्रामें दिनमें तीन बार सेवन करायें।

उपयोग—यह मूत्रावरोधमें गुणकारी है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त जुवारिशकुर्तुम, सङ्गरीना और सफूफइन्द्री-जुल्लाब प्रभृति योग भी इस रोगमें गुणकारी हैं।

मूत्रदाह (तक्तीरुल्बौल और सोजिशबौल)—

१—सफूफ मासिकुलबौल

द्रव्य और निर्माणविधि—

खीराके बीजकी गिरी, बादरंग (खीरा) के बीजकी गिरी, कद्दूके बीजकी गिरी-प्रत्येक ३ तोले ; खुब्बाजीके बीज, खतमीके बीज-प्रत्येक १ तोला ; मीठे बादामकी गिरी ४ माशा, एक गोंद विशेष (समगआलूस्याह) और कतीरा—प्रत्येक ८ माशा तथा मुलेठीका सत २ माशा। समस्त द्रव्योंको कूट-पीसकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—११ माशा चूर्ण कुलफाके बीजका शीरा या तरबूजका रस ८ तोलाके साथ खा लिया करें।

उपयोग—यह कष्टके साथ बूंद-बूंद पेशाब होना (तक्तीरुल् बौल) और मूत्रदाह (हुर्कत बौल) में गुणदायक एवं परीक्षित है।

वृक्कशूल—

१—अकसीर गुर्दा

द्रव्य और निर्माणविधि—

कलमीशोरा ɔ। एक पाव, भिलावाँ २१ नग। प्रथम कलमीशोराको लोहे की कड़ाहीमें डालकर अग्निपर रखें। थोड़ी देरमें शोरा पिघलकर पानी हो जायगा। अब उसमें भिलावाँ डाल दें। भिलावाँके डालनेसे उसमें अग्नि लग जायगी। अग्नि बुझनेपर उस प्रवाही यौगिकको लोहेके एक तवेपर डाल दें। यह योगसमुदाय एक सफेद टुकड़ेकी भांति उसपर जम जायगा। उसको कूटकर बारीक करके शीशीमें रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—वृक्कशूलीको प्रथम १ रत्ती अहिफेन जलमें घोल कर पिला दें। फिर १ माशा अकसीरगुर्दा और १ माशा सोडा जलमें घोलकर ऊपरसे पिला दें। रोगीको एक सुहाता गरम जलके टबमें बिठला दें।

गुण तथा उपयोग—इससे वृक्कशूल तत्क्षण शमन हो जाता है। यह मूत्ररोध और वृक्कस्थ सिकताके लिये भी महौषधि है।

२—अकसीर दर्दे गुर्दा

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलदाउदी ४ माशासे ६ माशातक। वेदनाके समय गुलदाउदीको जलमें क्वाथ करके पिलायें।

गुण तथा उपयोग—इससे प्रायः एकही बारके उपयोगसे तुरत वृक्कशूल शांत हो जाता है।

३—अकसीरुल् कुलिया

द्रव्य और निर्माणविधि—

जवाखार, पापड़ाखार, कच्चा सुहागा, कच्चा नौशादर, कालीमिर्च, कालानमक, सफेद नमक, हीराहींग और कलमीशोरा समभाग। इनको बारीक पीसकर तेज विलायती सिरका मिलाकर अवलेह तैयार कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ माशासे २ माशेतक वेगके समय आधा-आधा घंटाके अन्तरसे दो-तीन मात्रा पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह वृक्कशूलके लिये असीम गुणकारी भेषज है। वेदनाको तत्काल दूर करती है। प्रायः एक ही दिनमें पूर्णतया आरोग्य लाभ होता है।

४—सफूफ दर्दे गुर्दा

द्रव्य और निर्माणविधि—

कबूतरकी बीटकी सफेदीको अलग कर लें। अवकाशाभाव हो तो समस्त बीटको कूट-छानकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ माशा चूर्ण उष्ण जलसे खिलायें। मात्रा बढ़ा भी सकते हैं।

गुण तथा उपयोग—वृक्कशूलके लिये अत्यन्त गुणदायक और अद्भुत औषधि है। कुछ ही बारका उपयोग पर्याप्त होता है।

वृक्कवास्तिव्रण—

१—कुर्स काकनज

द्रव्य और निर्माणविधि—

काहूबीज ४ तोले १० माशा, कुलफाके बीज ४ तोला ४॥ माशा, वंशलोचन,

मुलेठीका सत—प्रत्येक २ तोला ११ माशा ; गुलाबपुष्प, शुष्क धनिया—प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा ; अकाकिया, श्वेतचन्दन, गिल अरमनी, गुलनार—प्रत्येक ७ माशा और कपूर १॥। माशा । इनको कूट-छानकर गुलाबपुष्पार्कमें गूँधकर टिकियां बनायें ।

मात्रा और अनुपान-१०॥ माशा खट्टे अनारके रससे सेवन करें ।

उपयोग—इससे वृक्क एवं वस्तिगत व्रण शीघ्र आराम होता है ।

२—बुनादकुल्बुज़ूर

द्रव्य और निर्माणविधि—

खरबूज़ाके बीजकी गिरी २ तोला ११ माशा. खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी-प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा ; काकनज, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी, तरबूजके बीज की गिरी और छिले हुए कुलफाके बीज—प्रत्येक १४ माशा ; खसबीज (पोस्ता-दाना), छिली हुई मीठे बादामकी गिरी, कतीरा, गेहूंका सत (निशास्ता), दम्मुलअख्वैन, अकाकिया, मुलेठी और बंशलोचन—प्रत्येक १०॥ माशा ; अजमोदा और अजवायन खुरासानी— प्रत्येक ३॥ माशा । सबको कूट-छानकर इसबगोलके लुआबमें गूँधकर रीठेके बराबर गोलियाँ (बुनादक) बनायें ।

मात्रा और सेवन-विधि—१४ माशा यह गोलियाँ (बुनादक) खाकर ऊपरसे काहूबीज और और गोखरू—प्रत्येक ७ माशाका जलमें शीरा (जलमें पीसनेसे प्राप्त क्षीरवत् रस) निकालकर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर पियें ।

गुण तथा उपयोग—यह वृक्क और वस्तिस्थव्रण एवं मूत्रदाहके लिये परम गुणदायक है ।

औपसर्गिकमेहा (सूजाका) धिकार २२

१—अकसीर सूजाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलासार गन्धक १ तोला, कलमीशोरा ४ तोला, रक्त हड़ताल १ तोला, बिना बुझा चूना (चूना कली) और असली शुक्ति – प्रत्येक ८ तोला ; सफेद संखिया १॥ तोला और फिटकिरी २ तोला । सबको महीन पीसकर दो पहर घीकुआरके गूदामें खरल करें । फिर टिकिया बनाकर सकोरेमें रखकर खूब कपड़मिट्टी करके शुष्क कर लें । पीछे पाँच सेर जंगली उपलोंकी अग्नि देकर स्वांगशीतल होनेपर निकालें और पीसकर शीशीमें सुरक्षित रखें ।

मात्रा और सेवन-विधि—आधी रत्तीसे १ रत्तीतक मलाईमें लपेटकर खिला दिया करें ।

गुण तथा उपयोग—यह औपसर्गिक मेह (सूजाक) के लिये चोटीकी चीज है ; व्रणको शुद्ध करती है ; पूयको निस्सरित करती और व्रणको पूरण करती है । बहुधा दो सप्ताहका उपयोग पर्याप्त होता है । (ति० फा०)

(२)

द्रव्य और निर्माणविधि—

बकाइनके नवपल्लव और मेंहदीके पत्र दोनोंको पीसकर लुगदी बनायें और दो वजनी कंडोंके भीतर लुगदीको रख दें । मध्यमें २ तोला बंगके जौ बराबर टुकड़े करके रखें । फिर सबको किसी सुरक्षित निर्वात स्थानमें रखकर अग्नि लगा दें । यथाप्रमाण भस्म प्राप्त होगी । इस भस्ममें वंशलोचन, छोटी इलायची—प्रत्येक १ माशा बारीक पीसकर मिलायें और जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बना लें ।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम दूधकी लस्सीके साथ खिलायें ।

उपयोग—यह सूजाकमें परम गुणकारी है ।

सूचना और पथ्यापथ्य—औषध सेवनकालमें घृताक्त गेहूँकी रोटी या मालीदा बनाकर खायें । (ति० फा०)

अर्क सूजाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

सूखा धनिया ५ तोला रात्रिमें जलमें भिगोयें और सवेरे क्वाथ करके छान लें। शीतल होनेपर ३ तोला ब्रांडी और ६ माशा चन्दनका तेल मिलाकर रखें। बस अर्कसूजाक तैयार है।

मात्रा और सेवन-विधि—सवेरे, दोपहर-शाम १-१ तोला।

गुण तथा उपयोग—यह सूजाकके लिये अतिशय गुणदायक सिद्ध हुआ है। इसके प्रयोगसे मूत्रमें दाह, वेदना, रक्त और पूय एवं व्रणके समस्त दोष दूर हो जाते हैं।

वक्तव्य—मान्य मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखाँ महोदयके भांजे हकीम गुलाम किबरियाखाँ साहब उर्फ भूरेखाँ साहब रईस दिल्लीको सर्वश्रेष्ठ औषधि है जो हिन्दुस्तानी दवाखानामें प्रचुरतासे विक्रय होती है। दिल्लीमें बहुतसे लोग उक्त योगके जिज्ञासु थे। यद्यपि हकीम गुलाम किबरियाखाँ साहब सिद्ध योगोंको गुप्त रखनेके समर्थक नहीं हैं; तथापि यह योग हिन्दुस्तानी दवाखाना को प्रदान कर देनेके हेतु वे इसे गुप्त रखते थे।

४—दवाए कड़ाहीवाली

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धक और कलमीशोरा-प्रत्येक १ तोला, दोनोंको पीसकर लोहेकी कड़ाही में डालें और एक दूसरी कड़ाही उसपर ढककर दोनोंको कपड़मिट्टी करें। फिर देगदानपर रखकर नीचे मन्द-मन्द अग्नि दें। जब माइदाकी तरह हो जाय तब उतारकर भुनी हुई फिटकिरी १ तोला चूर्ण करके मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१॥ माशा चूर्ण २ तोला शर्बत बजूरीके साथ खिलायें।

गुण तथा उपयोग– यह औषधि नवीन एवं पुरातन सूजाकके लिये परम गुणकारक है।

वक्तव्य—स्वर्गवासी जनाब मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखाँ महोदयकी यह कृतप्रयोग एवं चिरपरीक्षित औषधि है। हिन्दुस्तानी दवाखाना, दवाखाना यूनानी और दवाखाना हमदर्दमें यह प्रचुरतासे विक्रय होती है।

५—हब्ब सूजाक खास

द्रव्य और निर्माणविधि—

चन्दनका इत्र और बंशलोचन—प्रत्येक २ तोला ; शुद्ध कस्तूरी १॥ माशा, सबको खरल करके चना-प्रमाणकी गोलियाँ बनायें। फिर एक चौड़े मुंहके कोरे घड़ेमें जल भरकर बारीक कपड़ा उसके मुंहपर तान दें। इस कपड़ेपर यह गोलियाँ रखकर सम्पूर्ण रात्रिभर ओसमें पड़ा रहने दें। सवेरे उसमेंसे एक गोली खाकर ऊपरसे एक प्याला जल उस घड़ेका पी लें। इसी प्रकार एक-एक घंटाके अन्तरसे गोली खाकर जल पीते रहें। दिन भरमें सब गोलियाँ समाप्त कर दें।

सूचना— दिनभर निराहार रहें।

गुण तथा उपयोग–यह सूजाकके लिये एक दैनिक औषधि समझी गई है।

उपदंश-फिरंगाधिकार २३

१—जौहर आतशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसकपूर, दारचिकना, संखिया (सम्मुलफार बिल्लौरी), शिङ्गरफ और मुरदासंख—प्रत्येक १ तोला लेकर एक दिन मद्य (ब्रांडी) में खरल करके छोटी-छोटी टिकियां बना लें। सूखनेपर उन्हें एक मिट्टीके प्यालेमें रखकर उसके ऊपर एक दूसरा मिट्टीका प्याला उलटा रखकर संधियोंको बन्द करके मजबूत कपड़मिट्टी कर दें। इसके बाद उसे चूल्हेपर रखकर नीचे अंगूठेके बराबर मोटी बेरकी लकड़ियोंकी अग्नि जलायें। ऊपरके प्यालेपर कई तह किया हुआ कपड़ा जलमें भिगो-भिगोकर रखते रहें जिसमें सत्व ऊपरके प्यालामें एकत्रित होता जाय। जब तीन सेर लकड़ियाँ जल चुकें तब लकड़ी जलाना बन्द कर दें। शीतल होनेपर ऊपरके प्यालासे सत्व उतार लें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक से दो चावल मक्खन या बीज निकाले हुए मुनक्कामें इस प्रकार रखकर खिलायें कि सत्व दाँतोंसे न लगने पाये।

गुण तथा उपयोग—यह फिरंग, कुष्ट, अर्श और भगंदरमें गुणदायक है।

२—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

उपर्युक्त योगमें संखियाके बदले नीलाथोथा ६ माशा डालकर समस्त द्रव्यों को बरायडी (मदिरा विशेष) में खरल करें। इसको एक प्यालामें रखकर ऊपर दूसरा प्याला औंधा करके दोनोंकी संधियोंको कपड़मिट्टीसे खूब बन्द करके उसे चूल्हेपर चढ़ायें और नीचे बड़ (वट) की लकड़ीकी मृदु अग्नि दें और सत्व उड़ा लें। फिर इस सत्वको गाय या बकरीकी नलीकी हड्डीमेंसे गूदा निकालकर उसमें भर दें और छेद भलीभाँति बन्द करके आध सेर जलमें पकायें। जब सम्पूर्ण जल शुष्क हो जाय तब शीतल होनेपर नलीमेंसे वह सत्व निकाल लें। फिर उसे एक अंडेकी जर्दीमें घोटकर एक मुर्गीके अंडेके आवरण (कोष या खोल) में भरकर उड़द या गेहूँके आटेसे बन्द करके ऊपरसे कपड़मिट्टी कर दें। इसके बाद उसे चार पहर तक भूभल (गरम राख) में दबा दें। फिर निकालकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—चौथाई रत्तीसे १ रत्तीतक मक्खनमें रखकर खिलायें। यह अधिक गुणदायक है।

३—जौहर कलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसकपूर, संखिया, दारचिकना, पारा, शिंगरफ—प्रत्येक १ तोला। सबको शुद्ध मद्यमें खरल करके फिर गुलाबपुष्पार्कमें खरल करके यथाविधि सत्व उड़ायें।

मात्रा और सेवन-विधि—दो चावलकी मात्रामें यह जौहर पेड़ेके भीतर रखकर इस प्रकार खिलायें कि दाँतोंसे उसका स्पर्श न हो।

गुण तथा उपयोग—यह वातिक रोगों (सौदावी अमराज) और आतशक (फिरंग) के लिये लाभदायक है तथा रक्तका प्रसादन करता है। संशोधनके बाद उपयोग करनेसे अधिक गुणदायक होता है।

४—जौहर मुनक्का

द्रव्य और निर्माणविधि—

रसकपूर, सफेद संखिया, दारचिकना, (कोई-कोई इसमें हड़ताल वरकी १ भाग भी मिलाते हैं)—प्रत्येक १ तोला। इनको प्रथम श्रेणीकी ब्रांडी (मद्य) में कई पहरतक खरल करके चीनीके प्यालामें यथाविधि सत्व उड़ायें।

मात्रा और सेवन-विधि—संशोधनोपरांत १ चावलसे दो चावलतक बीज निकाले हुए मुनक्कामें रखकर मुनक्काको बन्द करके कंठसे इस प्रकार उतार दिया जाय कि औषध- दाँतोंको न लगे। इसी प्रकार किसी अन्य उपयुक्त अनुपानसे भी दे सकते हैं।

पथ्यापथ्य—अम्ल और बादी पदार्थ इसके सेवनकालमें वर्जित हैं। पाचन और बलाबलके अनुसार घृत और दुग्ध खूब खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यहवातज व्याधियोंमें और फिरंग, आमवात और गृध्रसी में लाभ पहुँचाता है। वातिक ज्वरजन्य आकुलता और विराग (वहशत) भी इसके सेवनसे दूर होता है। यह शोणितजन्य व्याधियोंमें भी लाभकारी है। यह बलाजर (Pellagra) के लिये लाभदायक है।

विशेष उपयोग—फिरंगके लिये प्रधान औषधि है।

वक्तव्य—दिल्लीके हिन्दुस्तानी दवाखानामें यह औषधि 'औहरी' नामसे प्रसिद्ध है। कभी-कभी सलवरसानकी पिचकारियोंसे भी जब फिरंग रोगमें उपकार नहीं होता तब इसके उपयोगसे लाभ होता है।

५—मतबूख हफ्तरोजा

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीमकी छाल, कचनालकी छाल, इन्द्रायनकी जड़, कीकरकी फली, पत्र और फलयुक्त छोटी कटाई, पुराना गुड़—प्रत्येक १० तोला। इनको तीन सेर जलमें क्वाथ करें और पाद शेष रहनेपर छानकर रख ले।

मात्रा और सेवन-विधि—एक बोतलमें ७ मात्रा बनाकर प्रतिदिन सवेरे एक मात्रा पियें। विरेक आनेपर प्रत्येक विरेकके बाद सौंफका अर्क और मकोय का अर्क सुहाता गरम करके पियें। तीसरे पहर मूँगकी मुलायम खिचड़ी खायँ। इसी प्रकार पूरा सप्ताह भर करें। यदि पेचिस हो जाय तो अर्क पीना बन्द कर दें। आराम होनेपर पुनः पीना प्रारम्भ कर दें। पेचिस होनेपर यह प्रयोग काम में लेवें—बिहीदानेका लुआब ३ माशा, खतमीकी जड़का लुआब और सौंफका शीरा—प्रत्येक ५ माशा जलमें निकालकर बिहीका सत (रुब्ब) २ तोला मिलाकर इसबगोल सम्पूर्ण ७ माशा प्रक्षेप देकर पी लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह समस्त वातज व्याधियों, रक्तविकार, फिरंग और आमवातमें लाभदायक है तथा वातिक दोषोंको शरीरके भीतरसे विरेक द्वारा उत्सर्गित करता है।

६—मरहम आतशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

गर्द चोबचीनी १ तोला ६ माशा, धोया हुआ नीलाथोथा (तूतियाए हिंदी शुस्ता) ६ तोला, शिंगरफ ३ तोला सबको कूट लें। मुर्गीके अंडेको राखकी अग्निमें भूनकर जर्दी निकालें और द्रव्योंके चूर्णको उस जर्दीमें हल करें। बस मरहम तैयार है।

मात्रा और सेवन-विधि—मरहमकी भाँति उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह फिरंगीय व्रणोंको बहुत लाभदायक है।

७—मरहम आतशक काफूरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध मोम २ तोला गोघृत २ तोलामें पिघलाकर सफेदा काशगरी २ तोला, कत्था सफेद और कपूर—प्रत्येक १ तोला; मुरदासंख और संगजराहत—प्रत्येक ८ माशा बारीक पीसकर मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि इसे फिरंगीय व्रणोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह फिरंगीय व्रणोंको बहुत शीघ्र पूरण करता और दाह शमन करता है।

८—मरहम राल

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद मोम, कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी), राल, कत्था—प्रत्येक १॥ तोला। सबको अलग-अलग महीन कपड़छान चूर्ण बनाकर रखें। फिर ६ तोला गोघृतमें मोम मिलाकर अग्निपर हल कर लें। प्रथम राल मिलायें, फिर कत्था और अंतमें कपूर मिलाकर घोटकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—व्रणको नीमके पानीसे धोकर मरहम लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह नाडीव्रण और फिरंगीय व्रणोंको शुद्ध करता और नवीन मांस उत्पन्न करता है।

९—शर्बत आतशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

उन्नाब ५ तोला, श्वेत और रक्त चन्दन, सरफोंका, मेंहदीके पत्र, पित्तपापड़ा (शाहतरा), निलोफरपुष्प, शुष्क मकोय, कासनीबीज, शीशमका बुरादा और

मुण्डी—प्रत्येक १॥ तोला। समस्त द्रव्योंको रात्रिमें जलमें भिगोयें। सवेरे क्वाथ करके छान लें। फिर एक सेर दो छटांक चीनी डालकर शर्बतकी चाशनी कर लें। पीछे उसमें प्रति ४ तोलामें ५ रत्तीके हिसाबसे पोटासियम आयोडाइड घोलकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ तोला ताजा जलमें घोलकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह समस्त वातिक रोगोंमें गुणदायक है तथा फिरंगमें विशेष रूपसे लाभ करता है।

१०—हब्ब आतशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुरदाशंख और गुलाबी कत्था—प्रत्येक १॥ माशा; रसकपूर २ माशा, जमालगोटेकी गिरी १० नंग। जमालगोटाके अतिरिक्त शेष समस्त द्रव्योंको खरलमें बारीक कर लें। फिर सब द्रव्योंको मुर्गीके अण्डामें थोड़ा सा छेद करके डाल दें और खूब हिलायें जिसमें वे जर्दीमें परस्पर मिल जायँ। फिर अण्डेपर दो अंगुल मोटा आटेका लेप करके उसे भूमलमें गाड़ दें। जब आटा लाल हो जाय तब निकालें और खरल करके चनाप्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१गोली सवेरे-शाम घीके साथ सेवन करें। यदि इस प्रकार अकेला घी खानेसे चित्तमें अन्यमनस्कता प्रतीत हो तो गोलीको मलाईमें रखकर निगल लिया करें।

पथ्यापथ्य—इसके सेवनकालमें कुक्कुटमांस, चनेका रसा और घृताक्त रोटी खायँ। लालमिर्च कम खायँ।

गुण तथा उपयोग—यह गोली फिरंगके लिये अतीव गुणदायक है।

११—मरहम आतशक

द्रव्य और निर्माणविधि—

अन्तर्धूम जलाई हुई पीली कौड़ी ६ माशा, सफेद कत्था ६ माशा, मुरदासंग ४ माशा, भुना हुआ नीलाथोथा १ माशा, कपूर २ माशा, सफेद मोम ७ माशा और गोघृत ६ तोला ८ माशा। गोघृतको २१ बार जलमें धो लें। फिर मोमको उसमें पिघलायें और शेष द्रव्योंका बारीक कपड़छान चूर्ण करके मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—मरहमकी भाँति फिरंगीय व्रणोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह फिरंगीय व्रणोंमें अतीव गुणदायी है।

———

पुरुषरोग (वाजीकरण) धिकार २४

मूत्रमार्गविस्तृति (बंदकुशाद)—

१—सफूफ बंदकुशाद

द्रव्य और निर्माणविधि—

सालममिश्री, सिरसके बीजकी गिरी और धोई हुई लाख (लुक मग्सूल)—प्रत्येक २ तोला। इनको कूट-पीसकर एक पाव वट-क्षीरमें खरल कर लें। जब गाढ़ा होकर गोलियाँ बँधने योग्य लुगदी हो जाय तब जंगली बेरके बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन सवेरे १ गोली ७ दिनतक खायँ।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रमार्गविस्तृत (बंदकुशाद) और शुक्रस्रावमें परम गुणकारी और परीक्षित है।

२—सफूफे मुजर्रब उस्ताद हकीम आजमखाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीजबन्द, पीपल, कमरकस, समुन्दरसोख, उटङ्गनके बीज, ब्रह्मदण्डी, तालमखाना, गोखरू, सतावर, सोंठ, काली मुसली और कोंचके बीज—प्रत्येक समभाग, इनसे दुगुनी खाँड़ (शकरतरी)। समस्त द्रव्योंको कूट-पीसकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन मुट्ठीभर (६ माशा) गोदुग्धके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रमार्गविस्तृतिमें हकीम आजमखाँका कृतप्रयोग और परीक्षित है।

३—सफूफे मुजर्रब हकीम बकाउल्लाखाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

कीकरकी कोमल फलियाँ, कीकरके फूल, सिरसके बीज, आमकी मौर, सुपारीके फूल, पिस्ताके फूल, छोटी इलायचीके बीज, आलूबुखारेका गोंद—प्रत्येक ७ माशा। सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशा चूर्ण दूध आदिके साथ सेवन करें।

उपयोग—यह मूत्रमार्गविस्तृतिमें परम गुणदायक है।

वृषणगत व्रण (कुरूहखुसया)—

१—जिमाद जालीनूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

चन्दन, गुलाबके फूल, कपूर, सीसेका बुरादा (नागचूर्ण) और तांबेके पत्थर का बुरादा (बुरादे संगमिस)—प्रत्येक समभाग। सबको महीन पीसकर मकोय के रसमें मिलाकर लेप प्रस्तुत करें और व्रणोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह वृषणगत व्रणोंमें लाभदायक एवं परीक्षित हैं। जालीनूस कहते हैं मैंने स्वयं एक ऐसे व्यक्तिको देखा जिसके वृषणोंके ऊपरसे खाल बिल्कुल उतर गई थी और वृषणद्वय आवरणरहित हो गये थे। मैंने इस लेपसे उसकी चिकित्सा की जिससे रोगी बिलकुल आरोग्य हो गया। उसके वृषणोंपर असली त्वचाके समान त्वचा उत्पन्न हो गई।

२—दवा मुजर्रबा मीर एवज

द्रव्य और निर्माणविधि—

माजू, शियाफ मामीसा, अञ्जरूत, गुलनार, गुलाबके फूल, अकमाउर्रुम्मान (अनारकी कली), मुरदासंख, एलुआ और कुन्दुर—प्रत्येक समप्रमाण। इनको बारीक पीसकर कपड़छान चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—व्रणको शुद्ध करके उसपर इसका अवचूर्णन करें।

गुण तथा उपयोग—वृषण एवं शिश्नके दुष्ट व्रणोंमें लाभदायक है।

वृषण प्रकोप—

३—जिमाद कैसूम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कैसूम, बाबूनापुष्प और नाखूना (इकलीलुल्मलिक)—प्रत्येक २ तोला; बनफशापुष्प और खतमीपुष्प-प्रत्येक १ तोला २ माशा; गुलाबके फूल १ तोला। इनको कूट-छानकर अलसीके लुआबमें मिलाकर प्रलेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह शोथविलयन है और विशेषतः वृषणप्रकोपमें अतीव लाभदायक।

वृषणवृद्धि—

४—ज़िमाद् इ़जम ख़ुसया

द्रव्य और निर्माणविधि—

बीज निकाला हुआ मुनक्का, मुर्गेकी चर्बी, वृक्ककी चर्बी और पीला मोम—प्रत्येक ७ माशा; मुर्गीके एक अण्डेकी जर्दी, महीन पीसी हुई मस्तगी १७॥ माशा। चर्बीको मोम और तिलके तेलमें पिघलायें और मुर्गीके अण्डेकी जर्दीमें मिलाकर ओखलीमें भलीभांति घोटें। फिर उसमें मस्तगीका चूर्ण मिलाकर पीसें। मुनक्काको महीन कूट-पीसकर उसमें मिलाकर मन्द-मन्द अग्निपर पकायें जिसमें नरम होकर सब एक जीव हो जायँ।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार लेकर विवृद्ध वृषणोंपर लेप कर दिया करें।

उपयोग—यह लेप वृषणवृद्धिमें गुणदायक और जरज़ानी का परीक्षित है।

शुक्रप्रमेह (जरयान)—

१—अकसीर जरयान व एहतिलाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

तालमखाना, कौंचके बीज, काली मुसली, सफेद मुसली, बीजबन्द, गोखरू, उटंगनके बीज, तेजबल, नाखूना (इकलीलुलमलिक), साठी चावल, कमरकस, काहूके बीज, मीठा इन्द्र जौ, सतावर, समुन्दरसोख, सिंघाड़ेका आटा, सिरियारीके बीज (तुख्मसरवाली) और ऊँटकटाराकी जड़की छाल—प्रत्येक ६ माशा; बंग भस्म ३ माशा और चीनी १० तोला। समस्त द्रव्योंको अलग अलग कूटकर समभाग खांड मिलाकर चूर्ण तैयार कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन सवेरे ६ माशा चूर्ण गोदुग्ध या छागीदुग्धके साथ सेवन करायें।

गुण तथा उपयोग—यह चूर्ण शीघ्रपतनको दूर करता है और वीर्यको पुष्ट वा गाढ़ा करता है।

विशेष गुण - प्रयोग—शुक्रमेह और स्वप्नदोषके लिये यह विशेष रूपसे लाभदायक है।

२—असवद

द्रव्य और निर्माणविधि—

यथावश्यक सीसा (नाग) लेकर एक लोहेकी कड़ाहीमें पिघलायें और सहिजनकी लकड़ीके डंडेसे हिलाते रहें। इस बीचमें थोड़ीसी कच्ची चीनी (शर्करा) छिड़कते रहें। जब राख हो जाय तब निकालकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ रत्ती प्रमाणमें यह औषधि १ तोला मक्खन या मलाईमें मिलाकर खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह शुक्रमेह और स्वप्नदोषके लिये विशेष रूपसे गुणदायक और सिद्ध भेषज है।

३—दवा जरयान कुहना

द्रव्य और निर्माणविधि—

इसबगोलकी भूसी १ तोला, बबूलका (कीकरका) पञ्चाङ्ग (फूल, गोंद, छाल, कली और पत्ते)—प्रत्येक ६ माशा और बंग भस्म १ रत्ती। समस्त द्रव्योंको ऽ॥ आधा सेर गोदुग्धमें डालकर अग्निपर पकायें और मिश्री मिलाकर मधुर बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा प्रतिदिन सवेरे तैयार करके खिलाया करें।

गुण तथा उपयोग—यह शुक्रमेहमें लाभदायक है और बाजीकरण भी है।

४—दवा डिप्टी साहबवाली

द्रव्य और निर्माणविधि—

दक्खिनी श्वेत मरिच १० तोला, मीठा तेलिया अर्थात् बछनाग (दो सेर दूधमें शुद्ध किया हुआ) ६ माशा, पारा १ तोला, वंग (इरजीर) ६ माशा, पीपल ४ माशा। वंगको पिघलाकर उसमें पारा मिला दें। शेष समस्त द्रव्यों को महीन पीसकर उनके साथ मिलायें। फिर इसे भलीभांति खरल करके रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ चावल यह औषध ७ माशा माजून आर्द-खुरमा या २ तोला मक्खनमें लपेटकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—शुक्रमेह और स्वप्नदोषके लिये परम गुणकारक एवं शतशोऽनुभूत औषधि है।

५—कुश्ता सेहधाता (दवा मुसल्लस)

द्रव्य और निर्माणविधि—

वंग (कलई), यशद और नाग—प्रत्येक समभाग मिलित ऽ। एक पाव लेकर एक लोहेके कड़छेमें डालकर अग्निपर रखें। जब यह पिघल जायँ तब गोघृतमें डालकर बुझायें। इस प्रकार ७ बार हर बार अग्निपर पिघलाकर घृतमें बुझावें। इससे धातुत्रय शुद्ध हो जाती है। फिर इनको किसी लोहेकी कड़ाहीमें डालकर चूल्हे पर रखें और उसके नीचे तीव्र अग्नि जलायें। इससे पूर्व मिलित तीनों धातुओंके प्रमाणसे दुगुनी अर्थात् ऽ॥ आधा सेर पोस्तेकी डोंडी (पोस्त-खशखाश) लेकर बारीक पीसकर रख लें। जब तीनों धातुएं पिघलकर जलवत् प्रवाही हो जायँ तब बारीक की हुई पोस्तेकी डोंडी (पोस्त कोकनार) की चुटकी कड़ाहीमें डाल दें और लोहेकी छड़ या खुरचनीसे हिलाते रहें। जब वह पोस्तेकी डोंडी राख हो जाय तब दूसरी चुटकी डालकर उसी प्रकार लोहेकी छड़से हिलाते जायँ।। तात्पर्य यह कि इस प्रकार पोस्तेकी डोंडीकी चुटकी धीरे-धीरे डालकर हिलाते जायँ। यहांतक कि समस्त डोंडीका चूर्ण समाप्त होकर त्रिधातुएं राख हो जायें। फिर उसे घण्टा-डेढ़ घण्टा तक बिना हिलाये पूर्ववत् तीव्र अग्नि देते रहें। इसके उपरांत कड़ाहीको चूल्हेसे उतारकर शीतल होनेके लिये रख दें। फिर शीतल होनेपर पंखासे वायु करके या फूंक मारकर पोस्तेकी डोंडीकी राखको उड़ा दें और शेष राखको कपड़ेमेंसे छान लें। फिर उसे किसी स्वच्छ और न घिसनेवाले खरलमें डालकर खट्टे दहीके साथ पूरा छः घण्टे खूब जोरदार हाथोंसे आलोडन करके पतली-पतली टिकियां बनाकर सायामें सुखा लें। फिर उन्हें दो सकोरोंके भीतर रखकर संधियों और सम्पुटपर कपड़मिट्टी करके निर्वात स्थानमें गजपुटकी अग्नि दें। स्वांगशीत होनेपर सकोरोंको निकालकर सावधानीपूर्वक टिकियोंको निकाल लें और फिर उनको खट्टे दहीसे पूरा छः घण्टे जोरदार हाथोंसे खरल करके पूर्वोक्त विधिसे अग्नि दें। तात्पर्य यह कि इस प्रकार उसे खट्टे दहीसे खरल करके पांच बार गजपुटकी अग्नि दें। इसके बाद उक्त विधिसे एक बार दहीके बदले जलके साथ खरल करके यथापूर्व एक अग्नि

दे दें। बस इस प्रकार छः आँच देनेसे पीतवर्णका अत्यन्त मनोहर और सूक्ष्म (त्रिवंग) भस्म तैयार हो जाता है।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ रत्ती सवेरे-शाम मक्खन या दूधकी मलाईमें रखकर दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह वीर्यको पुष्ट (सांद्र) करनेके लिये असीम गुण-दायक सिद्ध हुआ है। शुक्रमेहकी सिद्ध अव्यर्थ औषधि है। पुरातनसे पुरातन शुक्रमेहको ईश्वरकी दयासे तीन सप्ताह ही में उन्मूलित कर देता है। इसके अति-रिक्त स्वप्नदोषकी अधिकता और शीघ्रपतनमें भी अन्तिम कक्षाकी औषधि है। इतना ही नहीं; अपितु स्त्रियोंकी योनिसे नाना प्रकारका स्राव (श्वेतप्रदरादि) को भी असीम गुणकारी है।

वक्तव्य—वैद्यगण इसे त्रिवङ्ग भस्म अथवा त्रिधातु भस्म कहते हैं। उपर्युक्त विधि यूनानी है।

६—माजून आर्दखुरमा

द्रव्य और निर्माणविधि—

छुहारेका आटा (आर्द खुरमा), बबूलका गोंद, सूखा सिंघाड़ेका आटा—प्रत्येक ऽ॥ आधा सेर। सबको कूट-छान लें। मीठे बादामकी गिरी, चिलगोजेकी गिरी, फिंदककी गिरी—प्रत्येक ५ तोला; इनको बारीक पीस लें। यवासशर्करा (तरंजबीन) और शुद्ध मधु—प्रत्येक ऽ२॥ अढ़ाई सेरकी चाशनी करके इसमें शेष द्रव्योंको सम्मिलित करें। पीछे बिनौलेकी गिरी १ तोला, लौंग ६ माशा, जावित्री, जायफल—प्रत्येक ३ माशा। इनको कूट-छानकर चाशनीमें मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला दूधके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह सुप्रसिद्ध योग है जो स्वप्नदोष और शुक्रमेहके लिये निःसन्देह परम गुणदायक एवं सिद्ध भेषज है।

७—माजून फलकसेर

द्रव्य और निर्माणविधि—

भंग, अहिफेन, मीठे बादामकी गिरी, फिंदककी गिरी, चिलगोजाकी गिरी, अखरोटकी गिरी, मीठे कद्दूके बीजकी गिरी और काहूकी गिरी—प्रत्येक ६ माशा; जायफल, जावित्री—प्रत्येक ४ तोला; कस्तूरी, अम्बर—प्रत्येक ६ रत्ती; मधु ३० तोला। सबको मिलाकर यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ माशा माजून सवेरे या सायंकाल गोदुग्ध के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून वातसंस्थानको उत्तेजित करने और रक्तमें शुक्रधातुके घटकोंकी वृद्धि करनेके कारण बाजीकर है। इसमें अहिफेन होनेके कारण शुक्रस्तम्भनका कार्य भी सम्पन्न होता है। यह मैथुनानन्ददायक और वल्य है।

८—रफीक बदन

द्रव्य और निर्माणविधि—

रक्त बहमन, श्वेतबहमन–प्रत्येक ८ तोला ; कुलंजन, अकरकरा, जुफ्त बलूत प्रत्येक १ तोला ; भंगबीज २ तोला, कुन्दुर, मायेशुतुर ऐराबी–प्रत्येक ३ तोला ; सालममिश्री, अकाकिया, जायफल, सोआके बीज, नागरमोथा—प्रत्येक ५ तोला ; अहिफेन २ तोला, ऐट्रोपीन १ माशा, अर्गट आफ राई ४ रत्ती, मण्डूर भस्म ७ तोला, अकीक भस्म २ तोला, त्रिवंग भस्म (कुश्ता सेहधाता) २ तोला, वंग भस्म ५ तोला, सुवर्ण भस्म २ माशा, केसर २ तोला; मिश्री और शुद्ध मधु—प्रत्येक ऽ॥। तीन पाव और यवासशर्करा (तरंजबीन) ऽ१ एक सेर। मिश्री, मधु और यवासशर्कराकी चाशनी बनायें और शेष द्रव्य बारीक कूट-पीस कर यथाविधि माजून प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशासे १ तोला तक बलाबलानुसार (२ माशासे प्रारम्भ कर ४ रत्ती प्रति दिन बढ़ायें)।

गुण तथा उपयोग—यह माजून आमाशय और अँत्रको शक्ति प्रदान करती है, पाचन शक्तिकी वृद्धि करती, शुक्रमेहको नष्ट करती, बाजीकरण करती, शरीरको पुष्ट, बलवान एवं स्थूल बनाती, उत्तमांगोंको बल प्रदान करती, मलावष्टम्भ (कब्ज) को निवारण करती और सामान्य स्वास्थ्यकी वृद्धि करती है।

वक्तव्य—स्वर्गवासी हकीम फीरोजुद्दीन महाशयका चिरपरीक्षित शतशोऽनुभूत प्रधान योगरत्न है। वस्तुतः यह एक अत्यन्त गुणकारी औषधि है, जो अब भी उनके यहाँ तुमुल परिमाणमें विक्रय होती है।

९—सफूफ कलई

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुडूची सत्व, सत शिलाजीत, छोटी इलायची, पखानभेद, छिली हुई मुलेठी,

तालमखाना, बंशलोचन, वंगभस्म—प्रत्येक सम-प्रमाण ; मिश्री समस्त द्रव्योंके प्रमाणके बराबर। इनको कूट-पीसकर परस्पर मिलाकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशासे १ तोला तक चूर्ण प्रति दिन जल या दूधके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह शुक्रमेह और प्रोष्टेटग्रन्थिस्राव (जरयान मजी) में गुणकारक और कृतप्रयोग है। पुरातन और नवीन सूजाकमें भी लाभदायक है।

१०—हब्ब कीमियाए इशरत

द्रव्य और निर्माण विधि—

सोनेके वरक, चाँदीके वरक, कस्तूरी, अम्बर अशहब-प्रत्येक १ माशा ; साफ किया हुआ जरिश्क (जरिश्क मुनक्का) ७ तोला १ माशा ; जदवार खताई १ तोला १० माशा, जावित्री, कबाबचीनी, तगर (असारून), हब्ब सनोबर, हीराबोल (मुरमक्की), जायफल—प्रत्येक २ तोला ; तेजपात २ तोला ३ माशा, पीपल, बालछड़, दरूनज अकरबी, ऊद कमारी, लौंग, इलायची-प्रत्येक ३ तोला ४ माशा ; दारचीनी, नरकचूर (जरंबाद), नागरमोथा, शिलारस (मीआ-साइला)—प्रत्येक २ तोला ; सोंठ, मस्तगी, कालीमिर्च, अजमोदा (तुख्म करफ्स)—प्रत्येक ५ तोला ; केसर, अहिफेन—प्रत्येक १ तोला ; प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, यशब भस्म, कहरुवा शमई-प्रत्येक ६ माशा ; वंग भस्म ३ माशा, कस्तूरी, केसर, अम्बर, शिलारस (मीआ साइला), सोनेके वरक इत्यादिको वेतसार्क (अर्क बेदमुश्क) में खरल करें। भस्मोंको गुलाबपुष्पार्कमें खरल करें। शेष द्रव्योंको कूट-छानकर मिला दें। फिर शुद्ध रोगन बलसाँ ३ माशा सम्मिलित करके पुनः खरल करें और रुह गुलाब और बबूलका गोंद यथावश्यक मिलाकर चना-प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली शुद्ध गोदुग्धके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह वीर्यपुष्टिकारक, वीर्यस्तम्भनकर्त्ता, मैथुनानन्द-दायक और बाजीकर है ; मस्तिष्कको बल देनेवाली (मेध्य), हृदयको उल्लसित करनेवाली और प्रकृत शरीरोष्मा (हरारते गरीजी) को उद्दीप्त करनेवाली है।

विशेष कर्म—यह बाजीकर है।

स्वप्नदोष—

१—सफूफ एहतिलाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुन्दुर, गुलनार, फारसी, भंगबीज, जुफ्त बलूत, बबूलकी छाल और जामुन

की छाल—प्रत्येक ६ माशा। इनको कूटकर कपड़छान चूर्ण बनायें। पीछे ९ माशा इसबगोलकी भूसी मिलाकर चूर्ण प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा चूर्ण खाकर ऊपरसे बकरीका दूध पी लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह स्वप्नमेहमें परम गुणदायक है।

(२)

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुरानी छपारी, सफेद कत्था, ढाकका गोंद, कालीहड़, सफेद पोस्ताकी डोंडी (पोस्त खशखाश सफेद), अखरोटकी गिरी, खीराके बीजकी गिरी, नारियलकी गिरी, बीजबन्द, गेहूंका सत (निशास्ता), वंग भस्म, गुलनार फारसी—प्रत्येक ६ माशा और छिली हुई इमलीके बीजकी गिरी १ तोला। इनको कूटछानकर १ तोला इसबगोलकी भूसी मिलाकर चूर्ण तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशा चूर्ण जल या दूधके साथ खायँ।

गुण तथा उपयोग—यह स्वप्नदोषके लिये अतिशय गुणकारी है।

३—सफूफ दाफ़े एहतिलाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कहरुबा शमई १ तोला, प्रवालमूल (बुस्सद) १ तोला, बंशलोचन, सूखा धनिया, बीजबन्द, खुरासानी अजवायन, बबूलका गोंद, छपारीका फूल, कुलफाके बीज, छिले हुए काहूके बीज, निलोफरपुष्प, गुलनार फारसी—प्रत्येक १॥ तोला; खूनाखराबा (दम्मुलअख्वैन), गिल अरमनी, यशद भस्म—प्रत्येक १ तोला; मिश्री ऽ१ सेर। सबको बारीक पीसकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन ४ बजे सायंकाल ६ माशासे १ तोला तक यह चूर्ण लेकर गोदुग्धके साथ खा लिया करें।

उपयोग—यह स्वप्नदोषनिवारक है।

कामावसाय और क्लीवता—

१—अलअहमर

द्रव्य और निर्माणविधि—

प्रथम श्रेणीके शिंगरफकी डली (किता) २ तोला, सफेद बछनाग महीन

पीसा हुआ, सूरण (जमीकन्द) यथावश्यक। प्रथम जमीकन्दको कुचलकर रस निचोड़ें। उस रसमें बछनाग गूँध लें। फिर उसके मध्यमें शिंगरफकी डली रखकर गोला बनायें और उस गोलेपर एक मोटा कपड़ा लपेटकर सी दें। फिर एक ताँबेकी देगचीमें तीन सेर कुसुमका तेल डाल उक्त गोला इसमें डाल दें। देगचीका मुंह किसी बरतनसे ढँककर ऊपर पत्थर रख दें और उसके नीचे एक पहरतक मृदु अग्नि दें। पश्चात् तीन पहर तक खूब तीव्र अग्नि जलायें। भाफ (बाष्प) न निकलने दें। इस बीचमें देगचीमें तुमुल ध्वनि होगी। चार पहर के उपरांत शिंगरफकी डली निकाल लें और पीसकर रख लें। इसका नाम 'अल्अहमर' है।

मात्रा और सेवन-विधि—१ चावलसे २ चावल लुबूब कबीर ७ माशा या माजून कर्कों ५ माशाके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह बाजीकरण करता और प्रकृत शरीरोष्मा (हरारते गरीजी) की रक्षा करता है।

विशेष उपयोग—बाजीकरण है।

२—जदेजामइश्क बुजुर्ग

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, कस्तूरी—प्रत्येक २ माशा ; केसर, दारचीनी, जायफल, पीपल, जावित्री, अहिफेन, मुक्ता (मोती), अकरकरा, अम्बर, शिंगरफ–प्रत्येक १ माशा ; नागौरी असगन्ध ४ माशा, शकाकुल ६ माशा, लौंग ३ माशा और शुद्ध कुचला १॥ माशा ; कस्तूरी, केसर, मोती, अम्बर और अहिफेनको रूहबेदमुश्कमें न घिसनेवाले पत्थरके खरलमें डालकर खूब घोंटे। शेष द्रव्योंको अलग-अलग महीन कूटकर कपड़छान चूर्ण करके मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ या २ रत्ती एक चम्मच मछलीके तेलके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह वीर्यस्तम्भनकर्ता और बाजीकर है।

३—जौहर सीन

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखिया २ तोलाको मद्य (प्रथम श्रेणीकी बरांडी) में खूब खरल करके सत्व उड़ा लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ चावल या २ चावल। यदि पुंस्त्वशक्तिके लिये दें तो ७ माशा लुबूब कबीर या ५ माशा माजून जालीनूस लूलुवीके साथ २ चावलके बराबर उपयोग करें। जलोदर (इस्तिस्काऽ) के लिये ७ माशा माजून दवीदुल्वर्दके साथ २ चावलके बराबर दें। ज्वरके लिये एक दाना मुनक्का लेकर बीज निकालें। फिर उसके भीतर इसे रखकर उसे बन्द करके जल या किसी अर्कके घूंटके साथ कंठसे उतार दें। अम्ल, बादी और गुरु पदार्थोंके खाने-पीनेसे परहेज करायें। जलोदर (इस्तिस्काऽ) के लिये हर ऋतुमें पुंस्त्व शक्तिके लिये शारदऋतुमें दें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन, पाचन, बाजीकरण और जलोदरके लिये गुणकारक है तथा कफज ज्वरोंको रोकता है।

४—माजून जालीनूस लूलुवी

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोती, प्रवालमूल (बुस्सद)–प्रत्येक ४॥ माशा ; इजखिरका शिगूफा (फुक्काह इजखिर), नागरमोथा, तज, झाऊ, दारचीनी, तगर (असारून) और मस्तगी—प्रत्येक २। माशा ; अनीसून, श्वेत बहमन–प्रत्येक १०॥ माशा ; काकनज, लबलाबकी जड़–प्रत्येक ३॥ माशा ; कीकरकी गोंद और कतीरा—प्रत्येक—१॥। माशा। इनको कूटकर कपड़छान चूर्ण करें। फिर जितना यह चूर्ण हो उतना प्रमाणमें मधु लेकर चाशनी करके उक्त द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशासे ७ माशा तक जल या दूधके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह लिंगको स्थूल और दृढ़ बनाती है, बाजीकरण करती और वातनाड़ियोंको शक्ति प्रदान करती है।

५—हब्ब अम्बर मोमियाई

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध मोमियाई और रूमीमस्तगी–प्रत्येक ४ रत्ती ; अम्बर अशहब १ माशा, इन तीनोंको चीनीकी एक लम्बी प्यालीमें रखकर ३ माशा पिस्ताके तेलमें मिलायें। फिर इस प्यालीको एक ताँबाके बरतनमें रखकर बरतनमें गुलाबपुष्पार्क, अर्क बहार नारंज इतना डालें कि प्यालीके ऊपरके किनारेसे नीचे रहे। फिर एक

देगचीमें जल भर दें और उस जलमें तीन पायाके सहारे जलसे ऊपर प्यालीरखें। फिर देगचीके मुंहपर ढक्कन रखकर सन्धियोंको आटेसे मजबूत कर दें। अब उस देगचीके नीचे अग्नि जलायें जिसमें मोमियाई प्रभृति पिघल जायँ। तब उसमें जहरमोहरा खताई (फादेजहर मादनी) और शुद्ध कस्तूरी—प्रत्येक १ माशा ;. अवीध मोती, लौंग, सफेद वंशलोचन, जायफल, जावित्री, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, दारचीनी, शकाकुल मिश्री, सोंठ, दरूनज अकरबी, ऊद हिंदी, ऊद सलीब, सालम मिश्री, जदवार खताई-प्रत्येक ४ रत्ती कूट-कपड़छानकर प्यालीकी औषधिमें मिलाकर चना-प्रमाणकी गोलियां बनायें और सोनेके वरक लपेटकर रख दें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ गोली रात्रिमें सोते समय अर्क गावजबान ७ तोला, अर्क बेदमुश्क ३ तोला, अर्क केवड़ा ३ तोला और मिश्री २ तोला डालकर और बालंगू बीज ३ माशा प्रक्षेप देकर केवल दूधके साथ ही उपयोग करायें।

गुण तथा उपयोग – पुंस्त्व शक्तिके लिये यह गोलियां परम गुणकारी हैं। यौवनकालीन दुष्कृत्योंसे या उत्तमांगोंके दौर्बल्यसे होनेवाले पुंस्त्वहीनता आदि विकारमें यह उत्तमांगोंको बल प्रदान करके दौर्बल्यका नाश करती है। स्त्री समागमके बाद इसका उपयोग अतिशय लाभदायक है।

६—हब्ब अहमर

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखिया, हड़ताल, शिंगरफ-प्रत्येक १ तोला और कागजी नीबू १०० नग। द्रव्योंको कूटकर नीबूका रस डाल-डालकर खरल करें; यहांतक कि सब नीबू समाप्त हो जायँ। तब मूंगके दानाके बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—जवान आदमी आधी गोली और वृद्ध १ गोली गोदुग्धके साथ सेवन करें।

पथ्यापथ्य—इसके सेवनकालमें यथाशक्य स्त्रीसमागमसे बचें और घृतादि से स्नेहाक्त आहार सेवन करें। यदि इनके सेवनसे क्षुधा जाती रहे तो एक तोला शुद्ध आमलासार गन्धक बढ़ाकर फिरसे गोलियां बनायें।

गुण तथा उपयोग–यह गोलियाँ पुंस्त्व शक्तिको स्थिर रखने और कामावसाय वा नपुंसकता दूर करनेके लिये अनुपम गुणकारी हैं; जवानीके बहुमैथुन, हस्तमैथुन प्रभृति कुकर्मों या जराजन्य मैथुनिक शक्तिकी कमी या दौर्बल्यको दूर करके पुनः शक्ति उत्पन्न करानेमें चमत्कृत प्रभावकारी हैं।

७—हब्ब जालीनूस

द्रव्य और निर्माणविधि—

पालित नरचटक—मस्तिष्क (पालतू नर चिडेके सिरका गूदा), शकाकुल मिश्री, प्याजके बीज, गन्दनाके बीज, छुहारेका पराग (कुशन खुरमा), सालम मिश्री, तारामीराके बीज (तुख्म जिरजीर) और रेगमाही—प्रत्येक १ तोला और कस्तूरी ३ रत्ती। मधु और तारामीराके रसमें चना-प्रमाणकी गोलियां बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रथम यह गोली खायँ और ऊपरसे काबुली चनोंके भिगोये हुए पानी (जुलाल) ५ तोलामें २ तोला मिश्री मिलाकर पी लें।

गुण तथा उपयोग—यह वाजीकरण करती और वातनाडियोंको बलवान एवं पुष्ट करती ; शरीरको शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करती है।

८—कैरूती मुकव्वी

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोम, बत्तखकी चर्बी, मुरगाबीकी चर्बी, बकरीकी पिण्डलीका गूदा—प्रत्येक २ तोला ; खतमीकी जड़का लुआब १ तोला, कतीरा ६ माशा, राल १ तोला, रोगन बनफशा ८ तोला। चर्बियोंको पिघलाकर और शेष द्रव्य पीसकर तेल (रोगन) और लुआबमें मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ माशा गरम करके दस मिनटतक शिश्नपर मर्दन करें।

गुण तथा उपयोग—यह शिश्नको मृदु बनाता है। उत्तेजक लेपों (तिलाओं) से पूर्व इसका उपयोग गुणकारक है। हकीम राजीने इसकी प्रशंसा की है।

९—तिला बेनजीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

संखिया, पारा, लौंग—प्रत्येक १ तोला ; किर्मंमखमल (बीरबहूटी), केंचुआ, जोंक-प्रत्येक २ तोला ; तेलनीमक्खी (जरारीह) ६ माशा, केसर १॥ तोला, तिलका तेल आवश्यकतानुसार। समस्त द्रव्योंको पीसकर तेलमें अच्छी तरह मिला लें और गोलियां बांध लें। फिर इनको शुष्क करके आतशीशीमें पतालयन्त्रकी विधिसे तेल निकालें। पीछे इसमें नरसिंहवसा १ तोला और सांडाकी चर्बी २ तोला मिलावें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ रत्ती लेकर छपारी और सीवन छोड़कर

जिस्मपर अभ्यंग करें और ऊपर पानका पत्ता बांध दें। यदि छोटी-छोटी फुंसियां निकलें, तो कोई हरज नहीं। यदि बड़ी फुंसियां निकलें और अधिक दाह प्रतीत हो तो तिला (पतला लेप) लगाना बन्द करके चमेलीका तेल लगायें। फुन्सियों के दबनेपर पुनः तिला उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह सुस्ती और दौर्बल्य, वक्रता और मृदुताके लिये उत्तम भेषज है।

वक्तव्य—यह चश्मे जिन्दगी लाहौरका प्रसिद्ध तिला है जो अपने गुणोंके कारण बहुमूल्य है और तुमुल प्रमाणमें विक्रय होता है।

शीघ्रपतन—

१—खुशवक्ती

द्रव्य और निर्माणविधि—

रौप्य भस्म ४ माशा, जावित्री, केसर, रेगमाही—प्रत्येक १॥ तोला ; जायफल, समुन्दरसोख—प्रत्येक ६ माशा ; जहरमोहरा १। माशा और कस्तूरी १॥ माशा। सबको पीसकर सौंफके अर्कमें घोटकर जंगली बेरके बराबर गोलियां बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—रमागमसे १ घण्टा पूर्व १ गोली आधे नीबूपर छिड़ककर अग्निपर रखें। जब पकने लगे तब थोड़ी देरके उपरांत उसका रस कण्ठके भीतर निचोड़ें। यदि नीबू न मिले तो १ गोली एक पाव दूधसे खायें।

गुण तथा उपयोग—यह गोली उच्च श्रेणीकी निरापद वीर्यस्तम्भन औषधी है। यह शीघ्रपतनको निवारण करती है और किसी प्रकार हानि नहीं करती जैसा कि इस प्रकारकी (स्तम्भक) अन्यान्य औषधियां करती हैं। इसके उपादानोंमें कोई मादक द्रव्य नहीं है। यह शुक्रमेहको गुणदायक और वाजीकर है।

विशेष उपयोग—यह निरापद मैथुनानन्ददायिनी औषधि है।

वक्तव्य-दिल्लीके हिंदुस्तानी दवाखानावाले इसको हब्बेनिशात कहते हैं

बहुमैथुनजन्य निर्बलता—

१—हब्व मोमियाई (मुर्जरवा साहब मुफर्रेहुन्नफस)

द्रव्य और निर्माणविधि—

असली मोमियाई (सतशिलाजीत) २ भाग, बबूलका गोंद १ भाग, मिश्री दोनोंके बराबर। इनको गुलाबपुष्पार्कमें घोटकर छोटी-छोटी गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२। माशा औषधि मूलार्क (माउल् अस्ल) या मांसरसार्क (अर्क माउल्लहम) के साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह बहुमैथुनजनित दौर्बल्यमें गुणकारी है।

हस्तमैथुन—

१—सफूफ शंखुरईस

द्रव्य और निर्माणविधि—

काहूके बीज, खुरासानी अजवायन, खीराके बीज, कासनीके बीज, शुष्क धनिया—प्रत्येक ६ माशा ; निलोफरपुष्प ३ माशा सबको पीस लें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशा यह चूर्ण और ६ माशा समूचा इसबगोल मिलाकर शर्बत खशखाश या शीतल जलसे फांकें।

२—हब्ब अकसीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

अहिफेन, लोह (फौलाद) भस्म, रौप्य भस्म—प्रत्येक ४ रत्ती ; सत-शिलाजीत, कस्तूरी, मोती (पिष्टी), वंशलोचन, प्रवालशाखा भस्म—प्रत्येक १ माशा। सबको पीसकर चना-प्रमाणकी गोलियां बनायें और चांदीके वरकमें लपेट दें।

मात्रा और सेवन-विधि—२-२ गोली सवेरे-शाम खिलायें।

३—माजूनकलाँ

द्रव्य और निर्माणविधि—

रूमी मस्तगी, इक्लकुलबुल्म, सोनेके वरक, चांदीके वरक और अम्बर अशहब प्रत्येक २। माशा ; मोती (पिष्टी), अन्तर्धूम जलाया हुआ कहरुबा, भाऊ, पिस्ताके फूल, छपारीके फूल, भंग बीज, जावित्री, ऊदसलीब, कुलंजन, वंश-लोचन, धोया हुआ सफेद कत्था, जुफ्त बलूत, बबूलका गोंद, सेमलका गोंद (मोचरस), छपारीका गोंद, श्वेत बहमन, रक्त बहमन, शकाकुल मिश्री, गुलनार फारसी, कीकड़की जड़की छाल, सूखा धनिया, सालममिश्री, गुठली निकाला हुआ आमला, किर्फा, श्वेत चन्दन, बलूतका आटा (आर्द बलूत)—प्रत्येक ४॥ माशा ; पिस्ताकी गिरी, नारियलकी गिरी, बादामकी गिरी, फिंदक (काश्मीरी बादाम) की गिरी, चिलगोजाकी गिरी, हब्बतुलखिजराकी गिरी, पोस्ताका दाना (तुख्म खशखाश), कुलफाके बीज (तुख्मखुरफा स्याह),

काबुली हड़का छिलका, भुनी हुई काली हड़, गुलाबकी कली—प्रत्येक ६ माशा ; बीज निकाला हुआ मुनक्का, मीठे मेवोंका शर्बत (शर्बत फवाके शीरीं), शर्बत सेब (शर्बत कटल) और गुलाबपुष्पार्क—प्रत्येक ७ तोला ६ माशा, मिश्री ११ तोला ३ माशा, सेबका रस, बिहीका रस, मीठे अनारका रस, अमरूदका रस—प्रत्येक १५ तोला । यथाविधि माजून बनायें ।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशासे ७ माशातक सबेरे दूध या जलसे सेवन करें ।

गुण तथा उपयोग—यह पुरुषोंके शुक्रमेह और स्त्रियोंके नाना प्रकारके योनिस्रावके लिये लाभदायक है ।

स्त्री-रोगाधिकार २५

योनिकण्डू—

१—तिला जरब

द्रव्य और निर्माणविधि—

राल, सिन्दूर, कपूर, सफेदा काशगरी, सफेद कत्था, कमीला, गिल अरमनी, रसवत और धवांसा (धमासा)—प्रत्येक ३ माशा ; मुरदासंग, नीलाथोथा भुना हुआ-प्रत्येक २ माशा । सबको महीन पीसकर शतधौत गोघृतमें मिलाकर मरहम बनायें ।

गुण तथा उपयोग—इसे लगानेसे सम्पूर्ण शरीरगत कण्डू (खाज) विशेषकर योनिगत कण्डू और कच्छू शीघ्र आराम हो जाता है ।

गर्भाशयशोथ—

१—मरहम दाखिलयून

द्रव्य और निर्माणविधि—

मेथी, कनौचाके बीज, अलसीके बीज, खतमीके बीज और सम्पूर्ण इसबगोल—प्रत्येक १ तोला । इनको रात्रिमें उष्ण जलमें भिगोयें और सबेरे गाढ़ा लुआब

छान लें। फिर २ तोला मुरदासंग बारीक पीसकर ४ तोला जैतूनके तेलमें डाल कर मृदु अग्निपर पकायें और किसी चीजसे हिलाते रहें जिसमें मुरदासंग नीचे न बैठ जाय। जब तेलका रंग काला हो जाय तब अग्निपरसे उतार कर औषधियोंका उक्त लुआब इसमें मिलायें और फिर मृदु अग्निपर इतना पकायें कि मरहमके समान गाढ़ा हो जाय।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोला यह मरहम मुर्गीके एक अण्डेकी सफेदी, हरे मकोयका रस एक तोला और गुलरोगन १ तोला मिलाकर दाईसे गर्भाशयके भीतर स्थापन करायें।

गुण तथा उपयोग—यह गर्भाशयशोथ और गर्भाशयके अन्यान्य बहुशः व्याधियोंमें गुणदायक है।

२—जिमाद मुहल्लिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

गूगल, उशक, शिलारस, बाबूना, मेथीके दाने—प्रत्येक ३ माशा; कर्नबकल्ला (करमकल्ला) के हरे पत्तोंका निचोड़ा हुआ रस, अलसीके बीजोंका लुआब और पीसा मोम—प्रत्येक १ तोला; गुलरोगन २ तोला। यथाविधि प्रलेप तैयार करके सुहाता गरम काममें लेवें।

गुण तथा उपयोग—यह कफज प्रकारके शोथमें परम लाभकारी एवं परीक्षित है। हकीम अरजानीने इसकी बहुत प्रशंसा की है।

३—जिमाद शीरशुतुर

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऊँटनीका दूध, भैंसका दूध और एरण्ड तैल—प्रत्येक ऽ१ सेर। सबको मिला कर अग्निपर रखें। जब गाढ़ा हो जाय तब अग्निपरसे उतारकर सोंठ और देशी अजवायन—प्रत्येक १ तोला कूट-पीसकर और कपड़छान करके उसमें मिलाकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—थोड़ासा उक्त लेप सुहाता गरम नाभिके नीचे पेड़ूपर लेप करके फलालैनका टुकड़ा बांधे।

गुण तथा उपयोग—यह गर्भाशयकी कठोरता और सूजन उतारता है।

कृच्छ्रार्त्तव और आर्तवनिरोध—

१—शर्बत मुदिर्र हैज

द्रव्य और निर्माणविधि—

सौंफ, अनीसून, सोआबीज, मजीठ, खरबूजाके बीज, खीरा-ककड़ीके बीज, मेथीके दाने, अजमोदा, कासनी, कासनीकी जड़, कड़के बीज, अबहल (हाऊबेर), सातर फारसी, तगर (असारून) और गोखरू—प्रत्येक ६ माशा ; चीनी ऽ॥ सेर। यथाविधि शार्कर प्रस्तुत करें और प्रति ऽ॥ सेर शार्करमें ८ माशा पोटासियम आयोडाइड और १२ माशा भक्षणीय टिंचर आयोडिन भलीभांति हल करके रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ तोला दिनमें तीन बार १२ तोला मिश्रेयार्क (अर्क सौंफ) में मिलाकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह आर्त्तवशोणितप्रवर्तनके लिये अत्यन्त गुणकारी है।

२—शाफा मुदिर्र हैज

द्रव्य और निर्माणविधि—

महुआके बीजकी गिरी, पीला एलुआ, कड़वा कुट और हीराबोल (मुरमक्की) प्रत्येक ४ माशा ; फिटकिरी २ माशा, सज्जी १ माशा। इनको जलसे पीसकर छुहारेकी गुठलीके बराबर मोटाईमें वर्ति (फलवर्ति) बनाकर रखें।

सेवन-विधि—इसको एरण्ड तैलसे चिकना करके गर्भाशयके मुंहमें रखें।

गुण तथा उपयोग—यह आर्त्तवशोणितप्रवर्तनके लिये परम गुणकारी है।

३— मतबूख हब्व कुर्तुम

द्रव्य और निर्माणविधि—

कड़ (कुसुम बीज) ५ माशा, सौंफ, गावजबान, खरबूजाके बीज और हंसराज-प्रत्येक ७ माशा ; खरबूजेका छिलका ९ माशा। समस्त द्रव्योंको तीन पाव जलमें क्वाथ करें। जब तृतीयांश जल शेष रहे तब उतारकर छान लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह एक मात्रा है। ऐसा एक मात्रा क्वाथ ४ तोला शर्बत बजूरीमें घोलकर गरम-गरम रोगिणीको पिला दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह कफजन्य कृच्छ्रार्त्तव और निरुद्धार्तवमें अत्यन्त गुणदायक है।

४—अन्य क्वाथ योग

द्रव्य और निर्माणविधि—

अमलतासकी छाल, बांसकी गांठ, अखरोटकी छाल—प्रत्येक १ तोला ; हंसराज, वायबिडंग, कपासका डोडा—प्रत्येक ७ माशा ; गंदना बीज, गोखरू, मूली के बीज, गाजरके बीज, कलौंजी—प्रत्येक ३॥ माशा ; पुराना गुड़ ५ तोला। इनको जलमें क्वाथ करके छान लें। गरम-गरम रोगिणीको सवेरे पिला दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह आर्त्तवशोणितप्रवर्तक है।

५—हबूब मुदिर्र हैज

द्रव्य और निर्माणविधि—

हीराबोल, जावशीर, सकबीनज, हींग और मजीठ—प्रत्येक ६ माशा। इनको महीन पीसकर विसखपरा (सांठ) की ताजी जड़के रसमें घोटकर चना-प्रमाणकी गोलियां बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—तीन माशा ताजा जलसे निगल लिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह कफज प्रकारके निरुद्धार्तवमें परम गुणकारक है।

६—हब्ब मुदिर्र हैज

द्रव्य और निर्माणविधि—

सकोतरी पीला एलुआ २ माशा, सफेदी लिये हुए हीराकसीस और काश्मीरी केसर—प्रत्येक १ माशा। सबको जलमें महीन पीसकर तीन गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ गोली सवेरे, एक दोपहरको दो बजे और एक रात्रिमें सोते समय जल या अर्क सौंफ ५ या ८ तोलेके साथ ४-५ दिन खिलायें। यदि इससे उष्णता प्रतीत हो तो मात्रा कम कर दें या ऊपरसे कस्सी (छाछ) पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह कृच्छ्रार्त्तव और निरुद्धार्तवमें परम गुणदायक और परीक्षित है।

असृग्दर एवं रक्तप्रदर—

१—जिमाद हाबिस

द्रव्य और निर्माणविधि—

मेंहदीके पत्र २ भाग और जिंतियाना (पाखानभेद) १ भाग। दोनोंको कूट-छानकर जलमें गूँधें।

मात्रा और सेवन-विधि—स्त्रणाकी हथेली और तलवोंपर लेप करके एक प्रहर उसे धूपमें बिठायें।

गुण तथा उपयोग—यह आर्तवशोणित और प्रसवकालीन रक्तस्राव (नफास) बन्द करनेके लिये सिद्ध भेषज है।

श्वेतप्रदर—

१—बत्तीसा

द्रव्य और निर्माणविधि—

बायबिडंग, छोटी माईं, बड़ी माईं, छोटा गोखरू, सफेद तोदरी, लाल तोदरी, सफेद बहमन, लाल बहमन, काली मुसली, सफेद मुसली, मूसला सेमल, पिस्ताका फूल, सुपारीका फूल, धयईके फूल (गुल धावा), सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री, चुनिया गोंद, मंदा लकड़ी, तज, तालमखाना, मजीठ, छोटी इलायची, सतावर, पखानभेद, हरा माजू, चिकनी सुपारी, सिरियारीके बीज (तुख्म सरवाली), गुजराती बीजबन्द, समुन्दरसोख, लोध पठानी, संगजराहत, इमलीके बीज, बहुफली—प्रत्येक १ तोला। घीमें भुना हुआ बबूलका गोंद ऽ। एक पाव, मीठे बादामकी गिरी, पिस्ताकी गिरी—प्रत्येक ऽ- एक छटाँक; नारियलकी गिरी (खोपरा) ऽ= आधा पाव, छुहारा, सफेद मखाना, सिंघाड़ेका आटा, गेहूँका आटा, मूंगका आटा चारों घीमें भुने हुए—प्रत्येक ऽ। एक पाव; चीनी ऽ२ सेर। चीनीकी चाशनी करके शेष समस्त द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण करके मिलायें और एक-एक छटाँकके लड्डू बनाकर रखें।

वक्तव्य—यदि प्रकृति शीतप्रधान हो तो इसमें नागौरी असगन्ध, सोंठ, जायफल, जावित्री और पीपल—प्रत्येक १ तोला और मिलायें। यदि हृदयको

उल्लसित एवं शक्ति प्रदान करनेकी अधिक आवश्यकता हो तो गाजरका आटा ऽ॥ सेर मूंगके आटेके स्थानमें मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि–एक-दो लड्डू सवेरे कलेवाके रूपमें सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह अङ्गोंको बलप्रद है तथा योनिसे विविध प्रकारके स्रावों और शुक्रमेहको रोकनेके लिये असीम गुणकारी है तथा प्रसवोत्तरकालीन निर्बलताको दूर करनेके लिये बहुत लाभकारक एवं परीक्षित सिद्ध भेषज है। प्रसूतिके पश्चात् स्त्रियोंको इसका सेवन कराया जाता है।

२—माजून सुपारीपाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

मजीठ १० तोला, सुपारी २० तोला और छुहारा ऽ॥ आधा सेर तीनोंको १० सेर गोदुग्धमें पकायें। जब समस्त द्रव्य गल जायँ और दूधका खोआ बन जाय तब सबको बारीक पीसकर सुरक्षित रखें। फिर मूंगका आटा १० तोला, गोंद भुना हुआ, गेहूँका सत (निशास्ता) भुना हुआ—प्रत्येक ऽ। एक पाव; भुनी हुई बादामकी गिरी ऽ॥ आधा सेर अलग रखें। घी ऽ१ सेर, चीनी ऽ३ सेर। प्रथम आटोंको घी में भूनें फिर चीनीकी चाशनी करके भुने हुए द्रव्य मिलायें। इसके बाद शेष द्रव्य कूट-छानकर सम्मिलित करें। गोखरू ऽ॥ सेर, ढाकका गोंद (चुनिया गोंद), नारियलकी गिरी (खोपरा)–प्रत्येक ऽ। एक पाव; सालममिश्री, दारचीनी, लौंग, छोटी इलायची, सोंठ—प्रत्येक ४ तोला ८ माशा; पिस्ताका फूल और सुपारीका फूल–प्रत्येक १४ माशा; जायफल २ तोला, कचनालकी छाल, कीकरकी छाल, संखाहुलीकी छाल–प्रत्येक ६ माशा। इनका कपड़छान चूर्ण बनाकर उक्त खोआमें मिलाकर समस्त द्रव्योंको एकत्र कर लें। पीछे केसर ४ तोला और कस्तूरी ६ माशा गुलाबपुष्पार्कमें खरल करके सम्मिलित करें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोलासे २ तोलातक दूध या ताजा जलसे प्रातः सायंकाल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह स्त्रियोंकी योनिसे जो नाना प्रकारका स्राव होता है उसे दूर करता है और स्त्रीको गर्भधारणके योग्य बनाता है। यह पुरुषोंके शीघ्र-स्खलन और शुक्रमेहके लिये भी गुणदायक है और वाजीकरण करता है।

वन्ध्यत्व—

१—तिरियाक अकर

द्रव्य और निर्माणविधि—

आतरीकाल, हाथीके दांतका बुरादा, गुलाबांस-प्रत्येक ६ माशा। इनको महीन पीसकर मिला लें और ४२ भागोंमें बांटकर रख लें।

मात्रा और सेवन विधि—इसमेंसे १ भाग दूधमें डालकर ऋतुस्नानके पश्चात् स्त्रीको लगातार तीन दिनतक सेवन करायें।

उपयोग—यह वन्ध्यत्वनिवारक सिद्ध भेषज है।

२—हब्ब अकर

द्रव्य और निर्माणविधि—

खताई कस्तूरी २ रत्ती, अहिफेन, केसर, जायफल-प्रत्येक १ माशा; भंग-तैल २ माशा, सुपारी ३ नग, लौंग ४ नग। इनको कूट-छानकर यथाप्रमाण गुड़ मिलाकर जंगली बेरके बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—ऋतुस्नानके बाद उसी दिनसे आधी या १ गोली प्रति दिन तीन दिनतक खिलायें।

गुण तथा उपयोग—इसके सेवनसे बीस वर्षीया वन्ध्यास्त्री ईश्वरकी दयासे गर्भवती हो जाती है।

गर्भस्राव और गर्भपात—

१—अक्सीर हाफिज़ुज्जनीन

द्रव्य और निर्माणविधि—

असली पत्थरकी करेजी (कल्बुलहज्र असली) १ रत्ती; वंशलोचन १ माशा। दोनोंको अलग-अलग पीसकर मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह सब एक मात्रा है। इसको एक या दो दाना गुठली निकाले हुए मुनक्कामें रखकर गर्भिणी स्त्रीको खिला दें।

गुण तथा उपयोग—यह केवल एक ही मात्रा सेवन कर लेनेसे गर्भपात

होनेकी आशंका दूर हो जाती है। जिन ललनाओंका गर्भ पात हो जाता हो, उन्हें इस रसायन औषधिका उपयोग अवश्य कराना चाहिये। महीनेमें एक बार खिला देना पर्याप्त है।

वक्तव्य-इस प्रयोगको प्रायः लोग गोप्य रखते हैं।

२—सफूफ मानेइस्कातहमल

द्रव्य और निर्माणविधि—

संगजराहत ६ माशा, वंशलोचन ६ माशा, छोटी इलायचीके बीज ३ माशा। सबको महीन पीसकर तौलें। जितना यह चूर्ण हो उतना चीनी मिलाकर चूर्ण बनायें और इस चूर्णको तीन मात्राओंमें बांट लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ माशा प्रति तीन घण्टाके उपरांत गोदुग्ध की लस्सीके साथ ललनाको खिला दिया करें।

उपयोग—यह गर्भपातनिवारक है।

३—माजून नुशारे आज

द्रव्य और निर्माणविधि—

हाथीके दांतका बुरादा (नुशारए आज), सुपारी, गुलनार, कैंचीसे कतरा हुआ अबरेशम, सावरशृङ्ग अन्तर्धूम दग्ध—प्रत्येक १ माशा; अबीध मोती, प्रवालशाखा, प्रवालमूल, सफेद यशब, सूखा धनियाँ, अगर, मस्तगी, नरकचूर (जुरंबाद), कबाबचीनी, गुलाबपुष्प, गिल अरमनी—प्रत्येक २ माशा। सबको कूट-छानकर तिगुना शुद्ध मधुमें मिलाकर माजून बना लें। पीछे कैसूरी कपूर (काफूर कैसूरी) ४ रत्ती सम्मिलित करें।

मात्रा और सेवन-विधि—४ माशा उपयुक्त अनुपानसे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग-यह गर्भपातनिवारक और गर्भसंरक्षक है।

वक्तव्य—उपर्युक्त योगमें यदि गिलअरमनी न डालें और भावुकशर्करा (गजअंगबीन) २॥ तोला और आमलकीके शीराकी चाशनी बनाकर औषधियां कूट-छानकर मिला दें और पीछे यथावश्यक कपूर मिलाकर माजून तैयार करें तो इसे माजूननुशारेआजवाली कहते हैं। गर्भधारणका निश्चय होजानेके दिनसे इस माजूनका सेवन प्रारम्भ करें और प्रसवकालपर्यन्त इसका सेवन जारी रखें। प्रतिदिन ५ माशा यह माजून सवेरे जलसे खायँ। जिन स्त्रियोंका गर्भ पात हो जाता है उनके किये यह माजून बहुत गुणकारक है।

सूतिका रोग—

१—हलवाए सुपारीपाक

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर २॥। माशा, तज, तेजपात, नागरमोथा, सूखा पुदीना, पीपल, खुरासानी अजवायन, छोटी इलायची—प्रत्येक ३॥ माशा ; तालीसपत्र (जरनब), बंशलोचन, जावित्री, श्वेत चन्दन, कालीमिर्च, जायफल—प्रत्येक ५। माशा ; सफेद जीरा ७ माशा, बिनौलाकी गिरी, लौंग, सूखा धनिया, पीपलामूल—१ तोला २ माशा ; निलोफरका फूल ६ माशा, सूखा सिंघाड़ा, सतावर, नागकेसर-प्रत्येक ३॥। तोला ; खिरनीके बीज ४ तोला १ माशा, बादामकी गिरी, पिस्ताकी गिरी, बीज निकाला हुआ मुनक्का-प्रत्येक ५ तोला ; सुपारी ऽ१ सेर, चीनी ऽ१ सेर, मधु ऽ१ सेर, गोदुग्ध ऽ॥ आधा सेर और गोघृत ऽ॥ आधा सेर। मुनक्काको सीलपर पीस लें। सुपारीको टुकड़ा-टुकड़ा करके दूधमें डालें और मृदु अग्निपर रखकर पकायें। जब दूध उसमें शोषित हो जाय तब उन्हें सुखाकर पीस लें और चीनी तथा मधुके अतिरिक्त शेष समस्त द्रव्योंको गोघृतमें भूनकर चीनी और मधुकी चाशनीमें डालकर हलवा बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ से २ तोलातक गोदुग्धके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह बाजीकर है। स्त्री और पुरुष दोनोंके वन्ध्यत्व दोषको दूर करके उन्हें सन्तानोत्पत्तिके योग्य बनाता है। यकृत्‌के दौर्बल्यके लिये लाभदायक है। पाचनशक्तिकी वृद्धि करता है। गर्भाशयको शक्ति देता और उसे संकुचित करता है।

विशेष उपयोग—प्रसूत रोगके लिये अतिशय गुणदायक है।

बालरोगाधिकार २६

१—अकसीर अतफाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

अबोध मोती, जहरमोहरा खताई (हरिताश्म), हज्रुलयहूद (बेरपत्थर), दरियाई नारियल, पीली हड़का छिलका, कँवलगट्टाकी गिरी, बंशलोचन, छोटी इलायचीका दाना और गुलाबपुष्पकेसर—प्रत्येक ६ माशा। समस्त द्रव्योंको महीन पीसकर गुलाबपुष्पार्कमें खरल करें। फिर मूंगके दानाके प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—बालशोष (सूखा) में आवश्यकतानुसार १ गोली (एक वर्षीय शिशुको) माताके दूधमें घोलकर पिलायें। मलावरोध होनेपर शर्बत अंजीरमें १ गोली पीसकर चटायें। अजीर्णमें गुलाबपुष्पार्क या मधुमें घोलकर शर्बत अनारके साथ पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह बालकोंके प्रायः रोगोंमें गुणदायक है विशेषकर जो आमाशयके दोषसे होते हैं, जैसे—शोष (सूखा), अजीर्ण, वमन, अतिसार, कब्ज और विसूचिका इत्यादि। बालकोंका कार्श्य और दौर्बल्य भी इसके उपयोगसे दूर हो जाता है और दाँत सरलतासे निकल आते हैं।

वक्तव्य—इस योगमें यदि मोती ४ रत्ती डाला जाय तो उसे 'हब्ब मरवारीद' कहेंगे। यदि इसमेंसे हज्रुलयहूद निकाल दें और मोती २ रत्ती और शेष द्रव्य और निर्माणविधि यथोक्त रखकर गोलियां बना लें तो इसे 'हब्बसूखीमेली' कहेंगे। यह सूखा (शोष) रोगमें परम गुणकारी है।

२—चुटकी अतफाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

बंशलोचन, सूखा धनिया, तन्त्री (छमाक), यमनी फिटकिरी (शिब्बयमानी), कँवलगट्टाकी गिरी (जिसके बीचसे हरी पत्ती निकाल ली गई हो), कद्दूके बीजकी गिरी, खीरा-ककड़ीके बीजकी गिरी—प्रत्येक २॥ तोला ; गुलाबी कत्था और कपूर—प्रत्येक ४ तोला ; गुलनार ५ तोला, माजू, छोटी और बड़ी इलायची, पीली हड़का छिलका, माईं, विलायती मेंहदीके बीज (हब्बुल आस),

श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, कुलफाके बीज और बनफशा—प्रत्येक १। तोला; कतीरा और कीकरका गोंद—प्रत्येक ७ माशा। इन सब द्रव्योंको अलग-अलग कूट-छानकर मिला लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ चुटकी सवेरे-शाम बालकके मुंहमें डाल दिया करें। यदि उसका मुख आ रहा (मुखपाक) हो तो मुखमें मल दें।

गुण तथा उपयोग—यह बालकोंके प्रायः समस्त कफज रोगोंमें लाभदायक है। वमन, अतिसार, अजीर्ण, मुखपाक, गलग्रन्थि शोथ (वरम लौजतैन), गलशुण्डिकाशोथ (वरम लहात), गलशुण्डिकापात (इस्तरखा लहात) और मसूढ़ोंकी सूजनको दूर करती है।

विशेष उपयोग—बालकोंके अतिसार और अजीर्णके लिये प्रधान भेषज है।

३—जिमाद उताश

द्रव्य और निर्माणविधि—

सूखा आमला और काले कुलफाके बीज (तुख्म खुर्फा स्याह)—प्रत्येक ६ माशा; हरे बारतंगका रस आवश्यकतानुसार लेकर उसमें पूर्वोक्त द्रव्योंको पीसकर मुर्गीके अण्डेकी सफेदी मिलाकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथावश्यक लेकर तालवस्थि पर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह बालकोंके उताश (जिसमें तीव्र पिपासा होती है और तालू नीचे बैठ जाता है) नामक रोगमें अत्यन्त गुणदायक है।

४—तिरियाकुल अतफाल

द्रव्य और निर्माणविधि—

अवीध मोती ४ रत्ती, जहरमोहरा खताई (हरिताश्म), दरियाईनारियल, वंशलोचन, हज्रुलयहूद (बेर पत्थर), पीली हड़का छिलका, छोटी इलायचीके दाने और गुलाबपुष्पकेसर—प्रत्येक ६ माशा; मोतीको प्रथम अकेला खरल करके एक घण्टातक रूह केवड़ामें खरल करें। शेष द्रव्योंको अलग-अलग बारीक करके मोतीकी पिष्टीमें मिलायें। इसे फिर खरल करके मूंगप्रमाणकी गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम माताके दूध या गुलाबपुष्पार्कमें दें। बालक छोटा हो तो गोलीको घिसकर दें।

गुण तथा उपयोग—यह बालकोंके अतिसार और अजीर्णको नष्ट करता है।

विशेष उपयोग— ग्रीष्म ऋतुमें बालकोंको एक व्याधि हो जाती है जिसे यूनानी चिकित्सक उताश या हुलुतउताश (तृष्णाधिक्य) कहते हैं। इसमें अत्यधिक पिपासा होती है, हरे रंगके दस्त आते हैं, तालुपात होता है, कभी-कभी ज्वर भी होता है ; बालक बेचैन रहता है और उसका शरीर दिन प्रतिदिन सूखता जाता है। यह तिरियाक उक्त रोगकी अन्यर्थ औषधि है।

५—हब्ब अकसीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

तुलसीके बीज, कालीमिर्च, वंशलोचन, गुडूचीसत्व और सफेद जीरा—इनको समप्रमाण लेकर बारीक पीसकर मूंगके प्रमाणकी गोलियाँ बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली माताके दूधमें घोलकर बालकको पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह बालकोंके हर प्रकारके ज्वरमें गुणकारी है।

६—हब्ब ऊदसलीब

द्रव्य और निर्माणविधि—

ऊदसलीब, जुंदबेदस्तर और कस्तूरी—प्रत्येक ४ रत्ती ; हींग, गोरोचन (गावरोहन) और केसर—प्रत्येक ३ रत्ती ; सुदाबके पत्तोंका रस ७ रत्ती, करेलाकी पत्तीका रस। द्रव्योंको महीन पीसकर पत्तोंके रसमें खरल करके कुछ गोलियाँ बाजरेके बराबर और कुछ राईके बराबर बनाकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—छः मासतककी आयुके बालकको छोटी गोली और इससे बड़े बालकको बड़ी गोली रात्रिमें सोते समय खिलायें। यह सेवनीय मात्रा उस समयका है जब बिना नागा इसे छः-सात मास निरन्तर सेवन कराना हो। अन्यथा वेग कालमें दो-दो घण्टेके अन्तरसे अर्ध रात्रिसे लेकर मध्याह्न (दोपहर) तक १-१ गोली देते रहें। दूसरी विधि यह है कि गोली बनानेसे पूर्व पिसे हुए द्रव्य एक ऐसे मोतीपर जो लम्बाई लिये हुए हो, लेप करके सुखा लें। फिर उस गोलीको नवजात शिशुका नाभिनाल गिरते ही उसकी नाभिमें रखकर इस प्रकार दबायें कि वह उदरके भीतर प्रविष्ट हो जाय।

गुण तथा उपयोग—जिन लोगोंकी सन्तान बालापस्मार (उम्मुस्सिबयान) ग्रस्त होकर मर जाती हो या ग्रस्त होनेकी क्षमता रखती हो, उन्हें चाहिये कि यह गोलियाँ प्रस्तुत करके निरन्तर सेवन करायें और इसका चमत्कृत प्रभाव अवलोकन करें। इसे वेगकालमें देनेसे बालापस्मारके वेग रुक जाते हैं और इसके निरन्तर सेवनसे रोगकी क्षमता जाती रहती है और पूर्णतया स्वस्थ हो जाती है।

सूचना—गावरोहन (गोरोचन) खोज कर भरसक असली डालें, कृत्रिम और नकली न हो। असलीकी पहचान यह है कि वह नरम होता है और उसके भीतर वरक वर्तमान होता है।

वक्तव्य—यह योग दिल्लीके ख्यातनामा यूनानी चिकित्सक हकीम मौलवी अब्दुलवाहिद साहब उर्फ हकीम नाबीना साहबका प्रधानतम सिद्ध योग है।

७—हब्ब सुलहफात

द्रव्य और निर्माणविधि—

गोलमिर्च और शुद्ध शिगरफ-प्रत्येक ३ माशा; अन्तर्धूम दग्ध कछुएकी अस्थि, अन्तर्धूम जलाई हुई तुर्की वचा, मरोड़फली, बछनाग शुद्ध, गोरोचन (गावरोहन), तबकी हरताल शुद्ध, शुद्ध कस्तूरी और केसर-प्रत्येक १॥ माशा। इनको अदरकके रसमें दो घण्टे खरल करें। फिर दो घण्टे तुलसीकी पत्तीके रसमें और दो घण्टे श्वेत मदार (आक) के फूलके रसमें घोटकर चना प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

सिंगरफके शोधनकी विधि—शिगरफको स्त्रीके दूधमें २१ दिन बराबर तर रखें। प्रति दिन ताजा दूध बदल दिया करें या दो दिनके बाद बदलें।

बछनाग शोधनकी विधि—सफेद बछनागको ऽ। एक पाव गोदुग्धमें सात बार उबाल लें।

मात्रा और सेवन-विधि—$\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{2}$ गोलीतक प्रकृति, वय और ऋतुका विचार करते हुए दूधमें घोंटकर या जलके साथ बालकको खिलायें।

गुण तथा उपयोग-बालकोंके ज्वर, कास, पार्श्वशूल (डब्बा या पसली चलना) और अन्यान्य शीतजन्य व्याधियोंमें यह गोलियां परम गुणदायक हैं।

कुष्ठाधिकार २७

१—दवाए जुज़ाम

द्रव्य और निर्माणविधि—

पारा, संखिया-प्रत्येक ३ माशा ; कुन्दुर १॥ माशा, रेवन्दचीनी ६ माशा और बबूलका गोंद ६ माशा। प्रथम पाराको नीबूके रसमें खरल करें जिसमें मृत हो जाय। फिर शेष द्रव्योंको कूट-छानकर बकरीके पित्तमें मिलाकर मूंग प्रमाणकी गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१-१ गोली सवेरे-शाम खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह कुष्ठके लिये परम गुणदायक है। अम्ल पदार्थ वर्ज्य है।

२—हब्ब आकिला

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध आमलासार गन्धक, शिगरफ, कतीरा, लाजवर्द (राजावर्त) धोया हुआ, चोबचीनी वर्दी—प्रत्येक समभाग। सबको बारीक करके तीन रात-दिन गुलाबपुष्पार्कमें तर रखें। फिर सबको कतीराके लुआबमें मिलाकर चना-प्रमाण की गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन २ गोली खिलाकर ऊपरसे पित्त-पापड़ा (शाहतरा) का अर्क ५ तोला और चोबचीनीका अर्क ५ तोला पियें।

गुण तथा उपयोग-गलित कुष्ठ और आतशक (फिरंग) आदिमें इन गोलियोंके उपयोगसे परम उपकार होता है।

किलास वा श्वित्र—

१—कुर्स बर्स

द्रव्य और निर्माणविधि—

देशी नील, बकुची और चीता—प्रत्येक ३ तोला। इनको महीन पीसकर शुद्ध सिरका मिला माजूके प्रमाणकी टिकियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक टिकिया लेकर जलमें मिलाकर दिनमें दो बार श्वित्रपर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—श्वित्रमें उपयोगी एवं परीक्षित है।

२—ज़िमाद बर्स

द्रव्य और निर्माणविधि—

जंगली अन्जीरकी छाल, बकुची, आमलासार गन्धक, मुरदासंग-प्रत्येक १ तोला। सबको महीन पीसकर अदरकके रसमें घोटकर बड़ी-बड़ी गोलियाँ बनाकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथावश्यक एक गोली अदरकके रसमें घिस कर लेप कर दें।

गुण तथा उपयोग—यह श्वित्र, कुष्ठ और श्वेत एवं श्याम चिह्नोंको दूर करनेके लिये लाभदायक है।

३—दवाए बर्स

द्रव्य और निर्माणविधि—

चाकसू, पँवाड़के बीज, बकुची, जंगली अंजीरके वृक्षकी छाल, नीमकी अंतर-छाल-प्रत्येक २ तोला। सबको कूट-छानकर चूर्ण बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशा चूर्ण रात्रिमें जलमें भिगो रखें। सवेरे उनका निथरा हुआ पानी-छिम (ज़ुलाल) पिलायें और सीठी पीसकर दागोंपर लेप करें और केवल सादी बेसनी रोटी (लवणरहित) के और कोई आहार न करें।

गुण तथा उपयोग—यह श्वित्रके लिये परमोपयोगी भेषज है।

४—रोग़न बर्स

द्रव्य और निर्माणविधि—

बिछुआ घास (काला बिच्छू, कौआ) के फल लेकर पातालयन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यथाप्रमाण लेकर श्वित्रके दागोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—इससे थोड़े दिनके उपयोगसे श्वित्रके दाग जाते रहते हैं और शरीरकी समस्त त्वचाका वर्ण समान हो जाता है।

———

आमवाताधिकार २८

१—खुलासे सूरंजान शीरीं

द्रव्य और निर्माणविधि—

मीठा सूरंजानको ताजी जड़ें आवश्यकतानुसार लेकर इमामदस्तामें कूट लें और कपड़ेमें डालकर उसका रस निचोड़ें। इस रसको कुछ काल पड़ा रहने दें। जब स्थूलांश नीचे बैठ जाय, तब ऊपरसे निथार लें और उसे तीव्र अग्निपर पकाकर फलालैनके छननेमें पुनः लें। इस प्रकार प्राप्त सूक्ष्म द्रवांशको पुनः सामान्य अग्निपर पकायें। जब मृदु रसक्रिया (रुब्ब) का पाक हो जाय तब उतार लें।

मात्रा और सेवन-विधि—¾ ग्रेन (⅜ रत्ती) से १ ग्रेन (½ रत्ती) तक उपयुक्त औषधियोंके साथ गोली बनाकर दें।

गुण तथा उपयोग—यह मूत्रप्रवर्तक है, वातरक्त, आमवात, आमवातिक शिरःशूल, श्वास और अग्निमांद्य एवं अजीर्णमें गुणदायक है।

२—माजून सूरंजान

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद मीठा सूरंजान १ तोला ६ माशा, बूजीदान, माहीजहरज, कबरकी जड़, सफेद जीरा, चीता—प्रत्येक ७ माशा ; पीली हड़ २ तोला ४ रत्ती, अजमोदा (तुख्म करफ्स), सौंफ, सफेद मिर्च, एलुआ, सातर, सेंधा नमक (नमक हिन्दी), मेंहदीके पत्ते, समुन्दर झाग—प्रत्येक ५। माशा ; गुलाबपुष्प, सोंठ, सकमूनिया और तिल—प्रत्येक १०॥ माशा ; सफेद निशोथ ४ तोला ४॥ माशा ; मधु ४२ तोला ६ माशा, बादामका तेल १॥ तोला। निशोथको कपड़छान चूर्ण करके बादामके तेलमें स्नेहाक्त (चर्ब) करें और शेष द्रव्योंको कूट-छानकर मधुके साथ माजून बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा जल, अर्क उशबा या अन्यान्य उपयुक्त अनुपानके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारकी सूजन और संधिवात (औजाअ मफासिल) में गुणदायक एवं परीक्षित है। पित्तज और कफज गृध्रसी एवं वातरक्तमें भी गुणकारक है।

३—रोगन वजउल मफासिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

मदारकी हरी पत्ती, थूहरकी हरी पत्ती, धतूरकी हरी पत्ती, एरंड (रेंड) की हरी पत्ती—प्रत्येक ऽ- एक छटाक ; कड़ुआ सूरंजान २॥ तोला, मीठा तेलिया (बछनाग) २ तोला। सबको एकत्र पीसकर टिकिया बनायें और इसे ऽ॥ सेर तिलके तेलमें जलाकर छान लें। फिर इस तेलमें अहिफेन और कच्ची हींग—प्रत्येक ६ माशा ; एलुआ १ तोला बारीक पीसकर घोलकर रख लें। यदि इसे अधिक वीर्यवान बनाना अभीष्ट हो तो उसमें ऽ= आधा पाव तारपीनका तेल और मिला दें।

मात्रा और सेवन-विधि—शोथ और वेदनाके लिये विकारी स्थानपर कुछ काल मर्दन करके ऊपर पुरानी रूई बांध दें। चार-पांच बारका मर्दन पर्याप्त होता है।

गुण तथा उपयोग—आमवातमें वेदना और और शोथनिवारणके लिये इस तेलका अभ्यंग परमोपयोगी होता है। हब्ब वजउलमफासिल (आमवातघ्न वटी) के साथ इस तेलका बहिर प्रयोग परम गुणदायक होता है।

४—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिला हुआ लहसुन, हलदी-प्रत्येक ५ तोला ; कौड़िया लोबान, कुचला, धतूरके बीज, खानेका नमक - प्रत्येक ३ तोला ; काला बछनाग, कड़वा कूट—प्रत्येक २ तोला ; सफेद संखिया और हींग—प्रत्येक १ तोला। इन सबको महीन पीस लें। प्रथम धतूरकी पत्तीका रस, मदारकी पत्तीका रस—प्रत्येक ऽ= आधा पाव को ऽ। एक पाव तिलके तेलमें डालकर इतना पकायें कि जलांश जलकर केवल तैलमात्र शेष रहे। पीछे औषधद्रव्य मिलाकर मृदु अग्निपर पकायें और छानकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—वेदनास्थलपर सुहाता गरम अभ्यंग करें और ऊपर मदारकी पत्ती सुहाता गरम करके बांधें।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारकी वेदनाके लिये सामान्यतया और गठियाके लिये विशेष रूपसे परम गुणदायक है।

५—हब्ब नारजील

द्रव्य और निर्माणविधि—

भिलावाँ (टोपी दूर किया हुआ) ८ नग, खुरासानी अजवायन, अजवायन और काला तिल—प्रत्येक ७ माशा ; नारियलके गिरी (खोपरा) १ तोला, पारा १४ माशा, श्वेत बंशलोचन ६ माशा, पुराना गुड़ ४ तोला। द्रव्योंको महीन पीसकर और भिलावाँ मिलाकर दोबारा पीसें। फिर पारा मिलाकर भलीभाँति आलोड़न करें। पीछे गुड़ मिलाकर इतना कूटें कि सब एक जीव हो जायँ। फिर समस्त औषधिकी अट्ठाइस गोलियां बना लें और चीनीके बरतनमें सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन एक गोली हलुए या मलाईमें लपेट कर खिलायें। इस बातका ध्यान रखें कि गोली कंठ या जिह्वामें न लगे।

गुण तथा उपयोग—शुद्धिके बाद यह फिरंग और आमवातके दोषोंको हरण करनेमें अतिशय गुणकारी है।

पथ्यापथ्य—खीर (शीर बिरंज) बिना मीठाके अथवा पोलाव या मिर्च-रहित छागमांस उपयोग करायें।

६—हब्ब वजउल्मफासिल

द्रव्य और निर्माणविधि—

पीत एलुआ, अस्थि दूर की हुई निशोथ—प्रत्येक २८ माशा ; पीली हड़का छिलका, बूजीदान (मीठा अकरकरा), सूरंजान—प्रत्येक ७ माशा, गूगल ५॥ माशा। इन सबको पीसकर हरा गन्दनाके पत्र-स्वरसमें गूँधकर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१०॥ माशा यह गोलियां उष्ण जलके साथ खायँ और शरीर पर रोगन वजउल्मफासिलका अभ्यङ्ग करें।

गुण तथा उपयोग—आमवातमें यह गोलियाँ बहुत गुणकारक हैं।

७—हब्ब वजउल्मफासिल (जदीद)

द्रव्य और निर्माणविधि—

अयारज फैकरा ३॥ माशा, मीठा सूरंजान, पीली हड़का छिलका—प्रत्येक ३ माशा ; गुलाबपुष्प, रूमी मस्तगी—प्रत्येक १॥ माशा। सबको कूट-छानकर ऐस्याहरीन २॥ रत्ती मिलाकर चना प्रमाणकी गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—यह सब एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा प्रति दिन-रात्रिमें सोते समय या सवेरे जलसे खिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह आमवात, वातरक्त और अन्यान्य वातज वेदनाओं में बहुत गुणकारक है।

वक्तव्य—इनके अतिरिक्त निम्नलिखित योग भी इस रोगमें गुणकारक हैं—अकसीर औजाऊ, जौहर मुनक्का, तिरियाक औजाऊ, रोगन खास, माजून बेदअञ्जीर (एरंडपाक), माजून लना, जौहर लोबान खास, रोगन गलक्षाक इत्यादि।

वक्तव्य—इन रोगोंमें तथा रोमान्तिका (खसरा) में खमीरे मरवारीद बनुसखाँकलाँ, जवाहरमोहरा अम्बरी, शर्बत उन्नाब, शर्बत फवाके, रोगन अरनीस प्रभृति योग कामकारी है।

ग्रन्थिक ज्वरा (ताऊन-प्लेग) धिकार २६

१—दवाऊत्ताऊन (खास)

द्रव्य और निर्माणविधि—

लज्जालुका पत्र (छुईमुईके पत्र), अर्क बेदमुश्क १२ तोला, गावजबानार्क डेढ़ पावमें पीस-छानकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—तृषा मालूम होनेपर दिन भरमें १-१ या २-२ घण्टाके अन्तरसे थोड़ी-थोड़ी मात्रामें पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह ग्रन्थिक ज्वर (प्लेग) के लिये एक सिद्ध गोपनीय योग है जो अतिशय गुणदायी होनेपर भी स्वल्पमूल्य है।

२—मरहम रुसल

द्रव्य और निर्माणविधि—

जावशीर, जंगार, गन्धाबिरोजा, मुरसाफी, मुरतक (मुरदासंग)—प्रत्येक ७ माशा; कुन्दर, जरावन्द तवील—प्रत्येक १०॥ माशा; रक्त गूगल (मुकल अरजक), सफेद मोम, राल (रातीनज)—प्रत्येक १४ माशा; उशक २ तोला,

मुरदासंग १ तोला ४ माशा। शुष्क द्रव्योंको चूर्ण कर लें और निर्यास (गोंद)-वत् द्रव्योंको मोममें पका लें। तदुपरांत आवश्यकतानुसार जैतूनतैल मिलाकर मरहम तैयार कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—व्रण या ग्रन्थिपर मल्हम लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह हर प्रकारके व्रणका पूरण करता है। कण्ठमाला और प्लेगकी ग्रन्थियोंको नष्ट एवं विलीन करता है।

३—मुफर्रेह आजम

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेत बहमन, रक्त बहमन, बालछड़, तज (किरफा), क्षुद्र और बृहद्एला, गिल अरमनी, गिलमख्तूम, केसर, जदवार खताई, सोनेके वरक, चाँदीके वरक—प्रत्येक ४॥ माशा; कस्तूरी ६ माशा, माणिक (याकूतरुम्मानी), पीत माणिक (याकूत जर्द), काफूरी यशब, तृणकांत (कहरूबा शमई). कबाबचीनी, नारमुश्क, दरूनज अकरबी, नरकचूर (जुरंबाद), रक्त चन्दन, छिला हुआ धनिया, अम्बर अशहब, फादजहर हैवानी—प्रत्येक १३॥ माशा; सोंठ, जरिश्क, तेजपात, नागरमोथा, छाकाकुल मिश्री, निलोफरपुष्प—प्रत्येक १॥ तोला; गावजबान, बिजौरेका पीला छिलका (पोस्त जर्द उतरज), सफेद बंशलोचन, कतरा हुआ कच्चा अबरेशम—प्रत्येक २। तोला; बिल्लीलोटन २ तोला ७ माशा, मीठी बीही का रस, गुलाबपुष्पार्क, मीठे अनारका रस, गावजबानार्क, चन्दनार्क। औषध-द्रव्योंके प्रमाणसे द्विगुण लेकर चाशनी बनायें और औषधियोंको कूट-छानकर मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—७ माशा ताजा जलसे सवेरे सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह हृदयको बल देनेवाला (हृद्य) और हृत्स्पन्दन एवं विराग (वहशत) को दूर करनेवाला है, कामावसाय वा क्लैब्यनाशक है।

विशेष उपयोग—प्लेग (ग्रन्थिक ज्वर) और विसूचिकाके लिये यह अनुपम सिद्ध भेषज है।

४—शर्बत सन्दलैन

द्रव्य और निर्माणविधि—

इमली २० तोला, आलूबुखारा १० तोला, श्वेतचन्दन ५ तोला, रक्त चन्दन ५ तोला, खुर्फा बीज (तुख्म खुर्फा), जरिश्क और दरूनज अकरबी

प्रत्येक ६ तोला ; मेंहदीके शुष्क पत्र १२ तोला। इनको रात्रिमें उष्ण जलमें भिगोकर सवेरे पकाकर छान लें। फिर इसमें ऽ२ सेर चीनी मिलाकर शार्कर (शर्बत) का पाक (चाशनी) कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—२ तोला यह शर्बत गावजबानार्क या काफ-माच्यर्क इत्यादि मिलाकर पिलायें।

गुण तथा उपयोग—यह ग्रन्थिज्वर (ताऊन) के लिये अत्यन्त गुणदायक है।

५—हब्ब ताऊन

द्रव्य और निर्माणविधि—

आककी जड़की छाल, राई, नारियल दरियाई, फादेजहर हैवानी, जहरमोहरा खताई—प्रत्येक ४ माशा ; श्वेत चन्दन ६ माशा, रक्त चन्दन ८ माशा, सोनेके वरक ३ माशा, पपीता (खाकी रंगका एक प्रसिद्ध तिकोनाबीज) और अहिफेन—प्रत्येक १ माशा। सबको धूलिके समान महीन पीसकर प्याजके रसमें घोटकर मूंगके बराबर गोलियाँ बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—तीन-चार दिनतक १-१ गोली सेवके निचोड़े हुए रसके साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—ग्रन्थिकज्वरके प्रकोपकालमें अनागताबाध-प्रतिषेधोपायस्वरूप इन गोलियोंका उपयोग असीम गुणदायक है और परीक्षासिद्ध है। प्रत्येक चिकित्सकको सदैव अपने चिकित्सालयमें इन गोलियोंको प्रस्तुत रखना चाहिये। अनुपम भेषज है। (लि० फा०)

६—हब्ब ताऊन अम्बरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

दरूनज अकरबी, जदवार, नरकचूर (जुरंबाद), श्वेत बहमन—प्रत्येक ६ माशा ; रक्त चन्दन, गिलमख्तूम, गिल अरमनी, दारचीनी, जितियाना (पाखानभेद), जरावन्द मुदहरज, बंशलोचन, हब्ब बलसाँ—प्रत्येक ४ माशा ; केसर, यशब हरा, जहरमोहरा, मोती, हरा माणिक (याकूत सब्ज)—प्रत्येक ३ माशा ; अम्बर अशहब १ माशा, सोनेके वरक १॥ माशा, चांदी वरक ३ माशा, गुलाबपुष्पार्क, केतक्यर्क, वेतसार्क (अर्क वेदमुश्क)—प्रत्येक ५ तोला। दवोंको अलग अर्कोंमें खरल करके पिट्ठी बनायें। अम्बरअशहब और केसरको

अलग केतक्यर्कमें घोट लें। पीछे शेष द्रव्योंको महीन पीसकर मिलायें। अंतमें चांदी और सोनेके वरक मिलाकर भलीभांति खरल करें। फिर १-१ रत्तीकी गोलियां बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—रोगावस्थामें १-२ गोली सवेरे, दोपहर और शामको गुलाबपुष्पार्क ५ तोलाके साथ उपयोग करायें। अनागतावाध-प्रतिषेधोपायस्वरूप दो गोली प्रति दिन सवेरे ताजा जलसे सेवन करायें।

गुण तथा उपयोग—यह ग्रन्थिक ज्वर (ताऊन)में परमोपयोगी है।

वक्तव्य—हिंदुस्तानी दवाखाना दिल्ली, हमदर्द दवाखाना दिल्ली, दवाखाना यूनानी लाहौर, दवाखाना मुअय्यनुश्शिफा लाहौर इत्यादिमें यह गोलियां प्रचुर परिमाणमें बनती और बिकती हैं। वस्तुतः ग्रन्थिकज्वरमें यह बहुत गुणदायक हैं।

व्रण-नाड़ीव्रण रोगाधिकार ३०

व्रण—

१—दाखिली

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुराना जैतूनका तेल १२ तोला, मुरदासंग ६ तोला, खतमी बीज, मरोबीज (कनौचा), अलसी बीज, इसबगोल और मेथी—प्रत्येक २ तोला। बीजोंको रात्रिमें जलमें भिगो दें। सवेरे मल-छानकर लुआब निकालें। फिर मुरदासंग बारीक करके जैतूनके तेलमें सम्मिलित करके अग्निपर पकायें और लकड़ीसे चलाते रहें। पीछे उक्त लुआब मिलाकर पकालें। जब केवल तेल मात्र रह जाय तब छान कर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—थोड़ासा मरहम हरी गिलोय (गुडूची) के पत्र-स्वरस, हरी कासनीके पत्र-स्वरसमें मिलाकर गर्भाशयगत रोगमें दाईके द्वारा उपयोग करायें। प्लीहा-शोथमें कपड़ेपर लगाकर चिपका दें।

गुण तथा उपयोग—व्रणोंको पूरण करता और कठोरता एवं ग्रन्थिको विलीन करता और प्लीहाशोथको उतारता है।

२—तमरीख जंगार

द्रव्य और निर्माणविधि—

जंगार १ भाग, सिरका ७ भाग, मधु १४ भाग। जंगारको सिरकामें घोलकर मधुमें मिला दें और मृदु अग्निपर पकायें। जब चाशनी (किवाम) मधुवत् गाढ़ी हो जाय तब उतारकर रख लें।

सेवन-विधि—मरहमकी भाँति व्रणोंपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—यह दुर्गन्धित व्रणोंको शुद्ध करता है।

३—मरहम अजीब

द्रव्य और निर्माणविधि—

एरण्ड-पत्रस्वरस, अर्क-पत्रस्वरस—प्रत्येक ऽ- एक छटांक; धोया हुआ चूना (सुधा), गुलरोगन-प्रत्येक २॥ तोला; सफेदाकाशगरी, सफेद मोम—प्रत्येक २ तोला; राल १ तोला, तीन मुर्गीके अण्डेकी सफेदी अग्निपर पकाकर ५ तोला वटांकुर स्वरस और समस्त द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलाकर मरहम बना लें।

सेवन-विधि—मरहमकी भाँति उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह क्षत और दग्धमें लाभकारी है।

४—मरहम सफेदाब काफूरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध मोम (मधूच्छिष्ट) १ तोला, गोघृत २ तोला। मोमको गोघृतमें गलाकर कपूर ३ माशा और सफेदाकाशगरी ६ माशा पीसकर मिला दें और मरहम तैयार करके डब्बामें सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—कपड़ेपर लगाकर या यूंही व्रण स्थलपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—नासिकागत व्रण, होंठ फटने और अग्निदग्धके लिये परमोपयोगी है। अर्शमें दाह मिटानेके लिये अर्शांकुरोंपर इसका उपयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

५—मरहम सरतान

द्रव्य और निर्माणविधि—

हरे कपासके पत्र, कीकरके हरे पत्र, चमेलीके हरे पत्र, नीमके हरे पत्र, सेमलके हरे पत्र—प्रत्येक १ तोला ; गोघृत (एक-सौ-एक बार धौत), कटु तैल-प्रत्येक ६ तोला। समस्त पत्रोंको कूटकर टिकिया बना लें और घी एवं तैलमें डालकर अग्निपर रखें। जब जलांश शुष्क हो जाय और टिकिया जल जाय तब उतारकर छान लें। पीछे उसमें सफेदाकाशगरी, मुरदासंग, रसकपूर, काकड़ा-सिंगी, संगजराहत—प्रत्येक ३ माशा ; हरा तूतिया २ माशा, गन्धाबिरोजा, सफेद राल, शुद्ध मोम, अन्तर्धूम दग्ध कुक्कुरजिह्वा—प्रत्येक १ तोला, नरकंकाल (अन्तर्धूम-दग्ध) ३ तोला अत्यन्त महीन पीसकर मिला दें और मरहम तैयार कर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार यह मरहम कपड़ेपर लगाकर व्रणके ऊपर चिपका दें या बत्ती (विकेशिका) बनाकर व्रणके भीतर स्थापन करें।

गुण तथा उपयोग—यह नाड़ीव्रण, भगन्दर और अन्यान्य दुष्ट व्रणोंके लिये अत्युपयोगी है। घातकार्बुद (सरतान) की अव्यर्थ औषधि है।

६—मरहम स्याह

द्रव्य और निर्माणविधि—

सिंदूर ४ तोला, तिल तैल ऽ। एक पाव। प्रथम तेलको कड़ाहीमें उष्ण करें। जब उबाल आ जाय तब देर तक हिलायें। रंग काला होते ही शीघ्रतापूर्वक नीचे उतार कर कड़ाहीको शीतल जलमें रख दें।

सूचना-इस बातका ध्यान रखें कि उबलते समय कहीं सिंदूर जल न जाय।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रतिदिन थोड़ा सा मरहम लेकर कपड़ेपर लगाकर व्रणके ऊपर जमा दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह मरहम हर प्रकारके व्रण-विस्फोटादिके लिये गुणदायक है। अति शीघ्र अंगूर भर लाता है और इसकी पट्टी (कवलिका) के भीतर जल प्रवेश नहीं करता।

७—सफूफ अजीजी

द्रव्य और निर्माणविधि—

सफेद कत्था, शुद्ध कपूर, हरा माजू और भुनी हुई फिटकिरी समभाग। सबको कूट-छानकर रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—प्रति दिन दुष्ट व्रणोंको शुद्ध करके उनपर यह थोड़ा सा चूर्ण लेकर अवचूर्णन कर (छिड़क) दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह दूषित व्रणोंके पूरणके लिये प्रधान औषधि है। लखनऊके स्वर्गवासी हकीम अब्दुल अजीज महोदयका प्रधान सिद्ध योग है। वस्तुतः उत्तम औषधि है।

नाड़ीव्रण नासूर—

१—दवा नासूर (रोगन नासूर)

द्रव्य और निर्माणविधि—

बारूद २ तोला और तिल तेल ४ तोला। दोनोंको खूब खरल करें। जब बारूद भलीभाँति तेलमें लीन हो जाय तब इसे शीशीमें रख लें।

मात्रा, सेवन-विधि—नासूरको नीमके पानी या साबुनसे धोकर रूईके फाहा या पिचकारीसे इसके भीतर यह तेल टपकायें। सवेरे या सायंकाल इसी प्रकार प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—नासूरके लिये उत्कृष्ट औषधि है।

वक्तव्य—हिंदुस्तानी दवाखाना दिल्लीका एक परमोपयोगी योग है। स्वर्गवासी मसीहुलमुल्क हकीम अजमल खाँ महोदयके औषधालयकी प्रधान और विश्वसनीय औषधि है। नाडीव्रणके लिये इससे उत्कृष्टतर औषधिकी प्राप्ति अति दुष्कर है।

२—मरहम नासूर

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलरोगन १॥ तोला, हलदी ३ तोला, मुरदासंग ३ तोला और सफेद मोम ६ तोला। हलदी और मुरदासंगको चूर्ण बनायें। फिर गुलरोगन और मोमको मिलाकर अग्नि पर रखें और थोड़ा जल मिलाकर पकायें। जब जलांश शुष्कीभूत और औषधद्रव्य खूब लीन हो जायँ तब रख लें।

मात्रा और सेवन-विधि—नाड़ीव्रण (नासूर) को नीमके पानीसे धोकर मरहम लगायें।

गुण तथा उपयोग - यह नासूरको सरलतापूर्वक भर लाता है और पुनः व्रण होने नहीं देता।

———

वृद्धिरोगाधिकार ३१

१—माजून सीर

द्रव्य और निर्माणविधि—

लहसुन साफ किया हुआ ऽ॥ आधा सेर लेकर ऽ१ एक सेर गोदुग्धमें इतना पकायें कि लहसुन भलीभांति गल जाय। फिर मधु ५ तोला और घी ८॥ तोला मिलाकर खूब घोटें। इसके बाद अग्निसे उतारकर लौंग, जायफल, जावित्री, कालीमिर्च, रूमीमस्तगी, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, काबुली हड़का छिलका, दारचीनी, सोंठ–प्रत्येक २ तोला ११ माशा; अगर और केसर—प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा मिलाकर माजून बनायें।

मात्रा और सेवन-विधि—५ माशासे ७ माशा तक १२ तोला सुहाता गरम गावजबानका अर्कके साथ उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह पक्षवध, अर्दित और कम्पवातको दूर करती है। श्लेष्माकी वृद्धिको दूर करती और आन्त्रवृद्धि (फतक) के लिये गुणदायक है।

२—जिमाद फतक

द्रव्य और निर्माणविधि—

मस्तगी, अञ्जरूत, कुन्दुर, सरोकाफल (जौजुलसरो), अक़ाकिया, गुलनार, दम्मुलअख्वन, हीराबोल (मुरमक्की), यमनी फिटकिरी (शिब्ब यमानी), एलुआ, हाऊबेर (अबहुल) और रसवत (हुजुज)–प्रत्येक समभाग लेकर बारीक करके सरेशममाही या सरेशमें घोलकर लेप बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—विवृद्ध अन्त्र (फतक) को दबाकर प्रथम अपने स्थानपर लौटा दें। फिर यह लेप लगाकर बांध दें।

उपयोग—यह अन्त्रवृद्धिमें गुणदायक है।

विषाधिकार ३२

भक्षण-पानजन्य विष—

१—तिरियाक अफियून

द्रव्य और निर्माणविधि—

रीठा (बुन्दक) १ नग पाव भर जलमें पकायें। जब झाग आने लगे तब उसे अहिफेन भक्षण किये हुए मनुष्यको पिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक ही बार सब पिला दें।

गुण तथा उपयोग—यह अहिफेनको वमन द्वारा उत्सर्गित करता है और उसके विषाक्त लक्षणोंको निवृत्त करता है।

२—तिरियाक जहर

द्रव्य और निर्माणविधि—

पका हुआ २ नीबू लेकर उनके ४ टुकड़े करें और ताजा गोदुग्ध ऽ१ एक सेर चार प्यालोंमें भर लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आधा नीबू लेकर दूधके एक प्यालेमें निचोड़ें और उसे तुरत पी लें जिसमें दूध फटने न पाये। इसके उपरांत इसी प्रकार एकके बाद दूसरे दूधके शेष प्यालोंमेंसे प्रत्येक प्यालेमें आधा नीबू निचोड़ कर पियें। इस प्रकार प्रतिदिन सवेरे दो नीबू और एक सेर गोदुग्ध समाप्त किया करें। ईश्वरकी दयासे वह पक्ष भरमें आरोग्य हो जायगा।

गुण तथा उपयोग—जब कभी रसकपूर, संखिया, पारा, दारचिकना इत्यादिकी कच्ची भस्म सेवन कर ली जाती है अथवा किसी अवस्था जब इन्हें यूं ही खा लिया जाता है, तब कभी-कभी प्राण बच जाते हैं। परन्तु उनका विष सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर आमवात, सर्वाङ्गशोफ और सूक्ष्म प्रायशः रहनेवाला ज्वर प्रभृति व्याधियोंसे ग्रस्त कर देता है। इस औषधिके उपयोगसे उक्त विष नष्ट हो जाते हैं अर्थात् यह उनके लिये अगदका काम देता है। रोगीको प्रतिदिन एक-दो विरेक आ आया करते हैं और वह स्वस्थ हो जाता है। (ति० का०)

—— ——

मिश्ररोगाधिकार ३३

त्वचागत रोग

दद्रु—

१—जिमाद दाद

द्रव्य और निर्माणविधि—

चौकिसा छहागा १ तोला, पालकजूहीकी जड़की छाल २ तोला और कलौंजी ६ तोला। सबको महीन पीसकर दहीमें घोलकर एक-दो दिन पड़ा रहने दें जिसमें सड़ जाय।

मात्रा और सेवन-विधि—इसमेंसे आवश्यकतानुसार लेकर दादपर लगायें।

गुण तथा उपयोग—दादको बिना कष्टके दूर करता है।

२—अन्य

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुग्गुल रक्त, गन्धक आमलासार और मूलीके बीज—प्रत्येक १ तोला; नीलाथोथा ६ माशा। इनको मूलीके रसमें खरल करके लम्बी-लम्बी वर्तिकाएं (या गोलियां) बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार एक बत्ती (या गोली) जल या मूलीके रसमें घिसकर दादपर लगा दिया करें।

गुण तथा उपयोग—यह दादके लिये चमत्कारी, उत्कृष्ट भेषज है। प्रायः तीन ही दिनमें इसका गुण प्रकाशित हो जाता है। इसे कोमलसे कोमल स्थानपर लगा सकते हैं। इसके कुछ दिनोंके प्रयोगसे दादका नामोनिशां भी नहीं रहता।

३—हब्ब कुबा

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलासार गन्धक, पारा, मुरदासंग, बबूलका गोंद और मिश्री—प्रत्येक समभाग। प्रथम गन्धक और पाराकी कज्जली करें। फिर शेष द्रव्य बारीक पीसकर पानीके साथ गोलियां बना रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—एक गोली थोड़ा जलमें घिसकर सवेरे-शाम दादपर पतला लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह दादके लिये परम सिद्ध भेषज है। इसके उपयोगसे पहले ही दिन खाज बन्द हो जाती है और छः दिनके उपयोगसे दाद बिलकुल जाता रहता है।

कच्छू-खर्ज्जू (.जरब-खाज)—

१—अकसीर जरब

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारा, आमलासार गन्धक, कालीमिर्च, मुरदासंग, तूतिया हरा, हलदी, कमीला, बकुची—प्रत्येक ६ माशा। पाराके अतिरिक्त समस्त द्रव्य कूट-छानकर मुर्गीका एक अण्डा लेकर उसकी सफेदी निकाल लें और पारासहित चूर्ण किये हुए उक्त द्रव्य अंडेके भीतर भरकर कलम इत्यादिसे खूब मिलायें जिसमें अंडेकी जर्दी और औषध भलीभांति मिश्रीभूत हो जाय। इसके बाद अण्डेका मुंह दूसरे अण्डेके छिलकेसे ढांककर उड़दके आटेका आधा इञ्च मोटा स्तर चढ़ा दें। फिर उसे गरम राख (भौरा) में दबा दें और बार-बार उलटते रहें जिसमें एक ओरसे जलने न पाये। जब प्रत्येक ओरसे आटा लाल हो जाय तब राखसे निकाल लें। शीतल होनेपर औषध निकालकर खरलमें बारीक करें।

मात्रा और सेवन-विधि—६ माशाके लगभग औषधि लेकर कई बार जलसे धोया हुआ १ तोला मक्खनमें मिलाकर केवल हाथोंपर मलें और अग्निपर सेकें।

गुण तथा उपयोग—इससे आर्द्र या शुष्क, पुरातन या नवीन चाहे जिस प्रकारकी खाज (कच्छू और कण्डू) हो, दो-तीन बार केवल हाथोंपर मलनेसे सम्पूर्ण शरीरगत खाज दूर हो जाती है। सम्पूर्ण शरीरपर औषध लगाना अनिवार्य नहीं। यही उक्त भेषजका चमत्कृत प्रभाव और गुण है। यद्यपि इसका शरीरपर लगाना किसी प्रकार हानिकर नहीं; तथापि अनावश्यक है। (ति० फा०)

२—अकसीर खारिश

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलासार गन्धक, गेरू, कालीजीरी (जीरी स्याह)—प्रत्येक ६ माशा। तीनोंको खूब महीन कूटकर कपड़छान करें और तीन पुड़िया बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—दो पुड़िया तीन घण्टाके अन्तरसे दहीके साथ खा लें और दिन भर थोड़ा-थोड़ा करके दही पीते रहें। परन्तु दही अम्ल न होना चाहिये। तीसरी पुड़ियाको शुद्ध सरसोंके तेल ५ तोलामें मिलाकर सम्पूर्ण शरीरपर अभ्यंग करें। सायंकाल दही और खशका शर्बत मिलाकर खायें।

गुण तथा उपयोग—इसके प्रयोगसे एक ही दिनमें हर प्रकारकी खाज जाती रहती है। यह रसायन है।

३—अर्क गुलनीम

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताजा नीमका फूल, हरा गुरुच, सरफोका, मुण्डी, पित्तपापड़ा पत्र (बर्ग शाहतरा)—प्रत्येक ४ तोला ; खस २ तोला, काहू बीज, कासनी बीज, निलोफर पुष्प—प्रत्येक १ तोला। यथानियम रात्रिमें औषध-द्रव्य जलमें भिगोयें और सवेरे अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा और सेवन-विधि—बालकोंको २ से ५ तोला तक और जवानोंको आधा पाव तक यह अर्क शर्बत उन्नाव एक-दो तोला मिलाकर खाकसी छिड़कर पिला दिया जाय।

गुण तथा उपयोग—यह रक्तविकार, रक्तज और पित्तज ज्वर, मसूरिका, कुष्ठ और कण्डू एवं कच्छू इत्यादिके लिये बहुत गुणकारक है।

विशेष—खाज प्रभृतिमें कमसे कम बीस दिन यह अर्क पिलाना चाहिये।

४—जिमाद् जरब

द्रव्य और निर्माणविधि—

आमलासार गन्धक, कमीला, नीलाथोथा, मुरदासंग—प्रत्येक समभाग कूट-पीसकर घी में गरम करके प्रलेप बना लें।

मात्रा और सेवन-विधि—१ तोलासे २ तोलातक ५ तोला ताजा मक्खन मिलाकर शरीरपर मालिश करके एक घण्टा धूपमें बैठें। इसके उपरांत स्नान कर लें।

गुण तथा उपयोग यह खाजके लिये सिद्ध भेषज है।

५—दवाए खारिश

द्रव्य और निर्माणविधि—

भुना हुआ तूतिया ३ माशा, पारा, सफेद राल, कमीला, मुरदासंग, सिंदूर, कालीमिर्च, मेंहदीके हरे पत्तेका रस—प्रत्येक ६ माशा। सबको खरल करके इक्कीस बार जलसे धोया हुआ गोघृत ४ तोलामें मिलाकर रखें।

मात्रा और सेवन-विधि—मरहमकी भांति खाजके दानोंपर जरा-जरासा लगायें।

गुण तथा उपयोग—उस आर्द्र खर्जू (कच्छू) के लिये जिसमें पानी निकलता हो, अत्यन्त गुणकारक है।

६—अन्य

चमेलीका तेल १ तोलाको सात बार शीतल जलसे धोकर ६ माशा सफेद राल महीन पीसकर छानकर मिलायें।

मात्रा और सेवन-विधि—खाजके स्थानमें इसका लेप करें।

गुण तथा उपयोग—यह आर्द्र और शुष्क उभय प्रकारके खर्जूके लिये परम गुणकारक है।

॥ समाप्तः ॥

विशुद्धताकी गारंटी

दवाओंकी विशुद्धता और प्रबन्धकी उत्तमताकी रक्षाके लिये कारखानेका सारा काम मालिक लोग खुद अपनी निगरानीमें कराते हैं। कांसलीकी रसायन-शालाका कार्य वैद्यराजजीके बड़े भाई पं० रामकरण जोशीजीकी निजी निगरानीमें होता है, झांसीका निर्माण कार्य और प्रबन्ध वैद्यराजजी स्वयं अपनी निगरानीमें कराते हैं। नागपुरका कार्य पं० रामकरण जोशीके सुपुत्र पं० बिहारीलालजी शर्मा की देखरेखमें होता है। पटनेके हेड आफिस तथा कलकत्तेका काम वैद्यजीके दूसरे बड़े भाई पं० रामदयालजी जोशीके योग्य निरीक्षणमें होता है तथा इनके पुत्र पं० हजारीलाल शर्माके जिम्मे प्रचार-कार्यकी जिम्मेदारी है। इस प्रकार वैद्यराजजीका सारा परिवार ही इस कारखानेका अंग बन गया है और दवाके निर्माण-कार्यसे लेकर प्रचार-कार्यतक सभी काम मालिकोंकी निजी निगरानीमें होनेके कारण किसी प्रकारकी गड़बड़ी नहीं होने पाती—शुद्ध दवा बनती हैं, ग्राहकोंके साथ उत्तम व्यवहार होता है और सत्य प्रचार भी। इसके अतिरिक्त दवाओंके विशेष जानकार और प्रसिद्ध वैद्योंको बुलाकर उनसे आयुर्वेदीय दवाओंके सर्वोत्तम निर्माणके बारेमें सलाह ली जाती है। कार्यालयकी बराबर यह चेष्टा रही है कि डाक्टरी दवाओंके मुकाबले आयुर्वेदीय दवाएं भी उत्तम सिद्ध होकर लोगोंको प्रभावित व आकर्षित करें। इस सच्चे प्रयासमें बहुत अंशोंमें सफलता भी मिल रही है।

हमारा उद्देश्य

आयुर्वेदकी उन्नति "श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन" के मालिकोंका मुख्य उद्देश्य असली दवाओंकी बिक्रीके साथ ही आयुर्वेदको उन्नत बनाना रहा है। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये कार्यालयकी ओरसे काशी हिंदू विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, ऋषिकुल हरद्वार, धन्वन्तरि महाविद्यालय नागपुर, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झांसी, धर्मसमाज संस्कृत विद्यालय मुजफ्फरपुर आदि प्रत्येक संस्थाको सालाना सहायता दी जाती है तथा आयुर्वेद पढ़नेवाले छात्रोंको कार्यालयकी ओरसे छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

लोक सेवा संकटग्रस्त जनताकी सेवा करनेको श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन सतत् प्रस्तुत रहता है। हमारे सभी बिक्री-केन्द्रोंमें वेतन भोगी योग्य वैद्यों द्वारा रोगियोंकी परीक्षा मुफ्तमें कराई जाती है। निर्धन और असहाय रोगियोंकी तो सहायता की ही जाती है साथ ही हर साल मलेरिया, हैजा आ

महामारीके प्रकोपसे हजारोंकी जानें मलेरियाकी अचूक दवा "वैद्यनाथ प्राणदा" तथा हैजेकी अचूक दवा "वैद्यनाथ अर्क कपूर" मुफ्त देकर बचायी जाती हैं। अभी हालमें उत्तर बिहारमें जो भयानक महामारी फैली थी, उससे लाखों असहाय प्राणी अकालमें ही कालके क्रूर गालमें चले गये। उस अवसरपर श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवनने पीड़ितोंकी काफी सेवा की। रोगियोंके पास सिर्फ दवा ही नहीं भेजी गयी बल्कि रोगसे बचनेके उपाय, रोजबरोजकी जिन्दगीके लिये हिदायतें और रोगके चंगुलमें फंस जानेपर दवाके अभावमें घरेलू तात्कालिक इलाज सम्बन्धी पर्चे छपवाकर बंटवाए गये। जिस समय हैजा बहुत जोरोंमें फैला हुआ था, हमारे वैद्यनाथ अर्क कपूरको ६० दर्जन शीशियां प्रति दिन सहायतार्थ भेजी जाती थीं। इस सम्बन्धमें बिहार सहायता समितिके प्रधान मन्त्री, बिहारके प्रसिद्ध कांग्रेस नेता तथा अर्थ मन्त्री श्री अनुग्रहनारायण सिंहका जो वक्तव्य ६ अगस्त १९४४ के "इण्डियन नेशन", "सर्चलाइट" एवं "राष्ट्रवाणी" आदि बिहारके प्रमुख पत्रोंमें प्रकाशित हुआ था उसमें हमारी सेवाओंके बारेमें यों लिखा था :—

"४ जूनको जेलसे छूटनेके बाद भिन्न-भिन्न पीड़ित क्षेत्रोंमें होनेवाले सहायताकार्यकी जानकारी मैंने प्राप्त की। श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवनके मालिकोंने हैजेकी औषधि तथा रोगसे बचनेके लिये छपी हिदायतोंसे मदद करनेका वादा किया, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। दवाएं पीड़ित क्षेत्रोंमें भेजी जाने लगीं। इन दवाओंने काफी लाभ पहुंचाया और इनके लिये मांग-पर-मांग आने लगीं। मांग आनेपर फिर दवाएं भेज दी गईं ....।"

हैजेसे तबाह लोग सांस भी नहीं ले पाये थे कि मलेरियाने अपना संहार शुरू किया। मलेरिया भी भयानक महामारीके रूपमें फैला। सर्वत्र हाहाकार मच गया और दवाके बिना लोग मरने लगे। इस अवसरपर हमारे कारखानेकी ओरसे पीड़ित क्षेत्रोंमें ४ केन्द्र खोलकर दवाएं बांटी गयीं और अनुग्रह बाबूके संचालनमें चलनेवाली बिहार सहायता समितिको लागत मूल्यपर हजारों रुपयेकी दवा दी गयी। इसके अलावा बिहार सहायता समितिको २००) प्रति मासकी नकद सहायता भी दी जाती रही।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय कामोंमें भी हम उत्साहपूर्वक दान देते रहते हैं। राष्ट्रबन्धु महात्मा गान्धीकी स्वर्गीय धर्मपत्नी के लिये जो कस्तूरबा-स्मारक फंड एकत्र किया गया था उसमें हमारे पटना कार्यालयने सबसे अधिक दान दिया विद्यालय, स्कूल, आश्रम एवं पुस्तकालय आदि कई संस्थाएं सिर्फ हमारे ही चल रही हैं।

स्वास्थ्य-रक्षा-केन्द्र हम लोगोंका गिरा हुआ स्वास्थ्य आयुर्वेदका प्रचार से ही उन्नत होगा। श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवनका धर्मार्थ औषधालय एवं स्वास्थ्य-रक्षा-केन्द्र इसी महान उद्देश्यकी पूर्ति के लिये स्थापित हुआ है। रोगियोंको धर्मार्थ या कीमत लेकर दवा सेवन कराकर नीरोग कर देनेमें ही हम अपने कर्तव्यकी इति श्री नहीं समझते, बल्कि रोगोंकी वर्तमान बाढ़को रोकना भी हमारा लक्ष्य है। हमारे स्वास्थ्य-प्रचारक वैद्य घर-घर जाकर लोगोंको यह समझाते हैं कि आपका परिवार किस प्रकार नीरोग बना रहेगा। कागजके अभावसे फिलहाल इस पवित्रकार्यको हम अधिक व्यापक नहीं बना सके हैं। पर अब कागज मिलनेकी आशा है। "सचित्र आयुर्वेद" नामके मासिक-पत्रका डिक्लेरेशन हमने ले लिया है। इसमें बिना औषधि सेवन किये स्वस्थ्य रहनेकी सामग्री काफी मात्रामें रहनेके साथ ही आयुर्वेदकी अनुभूत चिकित्सापर भी मूल्यवान लेख प्रकाशित हुआ करेंगे। वार्षिक मूल्य केवल ३) होगा। इसके अलावे छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित किये जायंगे जो नाममात्रके मूल्यपर हमारे एजेण्टोंके द्वारा बेचे जायगे। पञ्चाङ्ग, सूचीपत्र, डायरी आदि विज्ञापनीय प्रकाशनमें भी स्वास्थ्यरक्षापर अच्छी-अच्छी चुनी हुई बातें आपको मिलेंगी।

ग्रन्थ-प्रकाशन "श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन" के मालिकोंका ध्यान सिर्फ दवा बेचनेकी ओर नहीं है, वे यह भी चाहते हैं कि लोग शरीर-विज्ञान, रोगोंके कारण तथा निवारणका स्वयं ज्ञान प्राप्त करें, ताकि रोगों से यथासम्भव दूर रहनेकी कोशिश करें। साथ ही वे यह भी चाहते हैं कि भारतके घर-घरमें आयुर्वेदका प्रचार हो। इसी उद्देश्यसे उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका प्रकाशन शुरू किया गया है। अबतक हमारे कारखानेसे जो ग्रन्थ छपकर निकल चुके हैं, उनकी उपयोगिता और महत्वकी सबोंने मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। हमारे 'आरोग्य प्रकाश" को तो लोगोंने इतना पसन्द किया कि उसके सात संस्करण छपकर हाथोंहाथ बिक चुके हैं और कागजके इस भयानक महगीके जमाने में भी हमें वाध्य होकर आठवां संस्करण छापना पड़ रहा है।

आरोग्य प्रकाश—इस ग्रन्थको वैद्यराज पं० रामनारायण शर्माने स्वयं बड़ी मेहनतसे लिखा है। इसकी एक-एक बात हजारों रुपयोंका काम देती है। व्यायाम, ब्रह्मचर्य, भोजन, विचार आदि विषयोंको पढ़कर तथा उसके अनुसार आचरण कर निरन्तर रोगी रहनेवाला आदमी बिना दवाके नीरोग हो जायगा इस पुस्तकमें शरीरमें होनेवाले सभी रोगोंके उत्पत्तिके कारण, लक्षण, चिकित्सा

पथ्य आदि बड़ी ही सरल भाषामें लिखे गये हैं। साधारण पढ़ी-लिखी स्त्रियां भी इसकी सहायतासे रोगीके प्राण बचा सकती हैं। इसके ७ संस्करण हो चुके हैं, ८ वाँ छप रहा है। डबल क्राउन १६ पेजी करीब ४०० पेजके ग्रन्थका मूल्य १॥।), एक साथ तीन पुस्तक लेनेसे डाक खर्च नहीं लगता।

उपचार पद्धति—रोगीको आरोग्य करनेके लिये उपचार याने पथ्यापथ्य जानना जरूरी है। बिना उपचारके बहुतसे रोगी मर जाते हैं। उपचारकी सभी जरूरी बातें इसमें लिखी गयी हैं। इसके दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। तीसरे संस्करणकी भी बहुत कम कापियाँ शेष हैं। पेज संख्या ६०। मूल्य ।=)

किशोररक्षा और ब्रह्मचर्य—किशोर बालकोंको हस्तमैथुन रूपी सर्वस्व नाशकारी व्याधिसे बचानेके लिये सफल उद्योग किया गया है। बालकको इसे पढ़ा देनेके बाद संरक्षक इस चिन्तासे निश्चिन्त हो सकते हैं। १०-१२ वर्षके बालकको सबसे पहले यह पुस्तक पढ़ाना जरूरी है। इसका दूसरा संस्करण छप कर तैयार है। पेज संख्या ११० मूल्य—॥)

सिद्धयोगसंग्रह—आयुर्वेदोद्धारक श्रीयादवजी त्रिकमजीको कौन वैद्य नहीं जानता। आपने आयुर्वेद-ग्रन्थमाला प्रकाशित कर ... आयुर्वेदका उद्धार किया। चरक, सुश्रुत आ... और इनके लिखे ... शोधित ... होकर निर्णयसागर प्रेससे प्रकाशित हुई हैं। ... गई ... लिखा हुआ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थरत्नके पढ़नेसे ... कि मलेरि... रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। इसके भी दो संस्करण हो चुके हैं। डिमाई ८ पेजी २०० पेजके ग्रन्थका मूल्य—२॥)

शरीर-क्रिया-विज्ञान—आयुर्वेदके मूल सिद्धान्तोंके आधारपर नये दृष्टिकोणसे लिखी गई "फिजियालोजी" है। लेखकको हमारी तरफसे ५०१) रु० इनाम स्वरूप दिये गये हैं। ग्रन्थ छपकर तैयार है। मूल्य—६)
